146 2545

# समर्पण

सर्व जगत के ज्ञानी गुरुओं और पंण्डितों को यह ग्रंथ समर्पित है।

—कुलदीपा।

0152,1 KUL,1 GO

* दोहा *

छोटी गैवी गायवहिं, किया जगत का भान।
कुलदीपा प्राश्चित मिटा, करि यह यज्ञ महान॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

0152,1KUL,1 3513
GO
Kuldeepa.
Akhanda Bodh
rahasya haribhakti
rasayan.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
0152,1KUL,1 (LIBRARY) 3513
GO JANGAMAWADIMATH, VARANASI
Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged Rs/- per day.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

0152,1KUL,1 3513
GO

Kuldeepa.

Akhanda bodh
rahasya haribhakti
rasayan.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

# शुद्धाशुद्ध पत्रम्

| शुद्ध शब्द | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|
| सनै | २० | १३ |
| मतवारे | २२ | १६ |
| ध्यान | २५ | ११ |
| समझति | ३४ | ११ |
| हाथ-नाथ | ४७ | १–२ |
| कलियुग | ५६ | ११ |
| रखति | ६५ | १६ |
| ताही | ७३ | ७ |
| लखी | ७५ | ६ |
| सुनि | ८२ | ४ |
| छुवन | ८३ | १० |
| तीन चौपाई छूट गई हैं | ८५ | ७ |

सदा सुहागिनि हैं वे नारी * अमर अखण्ड रूप हरि धारी ॥
सखा भाव सब सन्त रहत हैं * सखी भाव सब नारि वसति हैं ॥
पुरुषहुं के अँग भूषण सोहे * जैसे मन मोहन अँग मोहे ॥

| | | |
|---|---|---|
| भूख कर्मन | ८७ | ११–२० |
| मैं | ८८ | ५ |
| व्याधि | ९६ | १७ |
| पारिजात | ८९ | १० |
| न भक्ति | ११७ | १ |
| भक्त | १३३ | १३ |
| ध्रुव | १३८ | |

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

| | | |
|---|---|---|
| धर | १४१ | ११ |
| डारनि | २४६ | १५ |
| कहेगा | १४७ | ११ |
| ठेक | १५६ | ३ |
| हरियाली | २०० | १७ |
| शुद्ध शब्द | पृष्ठ | पंक्ति |
| तुम | १६६ | २० |
| अनुभव | २१७ | १० |
| मेरी | २२५ | १२ |
| भये | २४१ | १५ |
| भोडत | २४६ | १० |
| तुरत | २४६ | १४ |
| सिरफेरो | २५० | २३ |
| वाकी | २५३ | ६ |
| कोऊ | २५७ | ४ |
| पढत | २६० | २४ |
| विधि | २६२ | ११ |
| कर | २६६ | २० |
| तोहि | २७२ | ६ |

0152, 1K06, 1
GO

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc No .....
3513

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

146

* श्रीगणेशाय नमः *

# अखण्ड बोध रहस्य हरिभक्ति रसायन

## * भूमिका *

जो कछु किये सो हरि किये भये कबीर कबीर ( कबीर दास )

दो०—लिखता आपहिं ग्रन्थ है, नाम लिखत जा मोर।
ऐसा ज्ञानी होय कर, ठगता जग चहुं ओर॥

* चौपाई *

ठगहूं के ठग राम कहावें * हैं अस वेद सुयश जग गावें॥
जाके हिरदय राम पधारे * सो अस लिखता ज्ञान अधारे॥
नहिं यह ज्ञान सहज कोइ पावे * कोटि जन्म वेदहुं पढ़ि जावे॥

दो०—गावेगा वह ज्ञानि जन, ज्ञान रूप भा आप।
नहिं गावे ठग धूर्त यह, जो पापिहुं के बाप॥

कुलदीपा हिय राम पधारे * गावति है सब ज्ञान अधारे॥
वे हरि धूर्त्त बसें मम ऊरे * ज्ञान कथा लिखवावत पूरे॥
प्रेम भक्ति के वे भूखे हैं * नाम गाम से प्रभु रूखे हैं॥
देश, भदेश, सुदेश न भावा * प्रेम भक्ति वश वेदहुं गावा॥
कुल अभिमान बोरि जग सारा * जाट जुलाहा लै प्रभु तारा॥
वेद पढ़त पण्डित भव परहीं * जाति चमार पार प्रभु करहीं॥

दो०—देशहिं के अभिमान ते, बुड़िगा नामरु गाम।
मगह निवासिनि तरिगई, कुलदीपा भजुराम॥ (कुलदीपा)

पाठकवृन्द तथा पाठिकायें! मेरी पूर्व की ( १ ) ( अनुभव विलास ) तथा ( जीव ईश संवाद अखण्ड बोध रहस्य ) नामक पुस्तकों के पढ़ने का शायद आप लोगों को अवसर मिला हो। जब से मैं इन पुस्तकों को लिखी हूं तभी से बहुत कुछ चाहा कि अब आगे को ग्रन्थ लिखने के सम्बन्ध में भगवान की आभ्यन्तरिक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रेरणा कुछ रुके परन्तु यह न रुक सकी, कहीं ब्रह्माजी, कहीं सरस्वती, कहीं महालक्ष्मी, कहीं शंकरजी, कहीं स्वयं भगवान आ आ कर क्या जाग्रत, क्या स्वप्न क्या ध्यान में अपने २ मुख से गाकर कभी लेखनी द्वारा बतला कर इस ग्रन्थ के लिखने को समझा जाते थे फिर मुझे विवश होकर विस्तार रूप से न लिखकर अपनी योग्यतानुसार थोड़ा सा लिखना ही पड़ा और जो कोई यह शंका करे या करता है कि इस ग्रन्थ के लेखन में किसी चतुर का हाथ है वह भी ठीक कहता है पर समझता है उलटा, उसको तो होश नहीं है कि ऐसा लेख लिखाने वाला कोई चतुरों का सरदार है या धोखा देने वाला दुनियादार है जो लिखता तो आप है और नाम रखता है किसी और का ऐसे विचार करने वाले जानते हुए भी नहीं जानते कि बिना परमार्थ के बलके संसारी विद्या व बुद्धि युक्त प्राणी ऐसा निरालम्ब व विचित्र लेख, किसी स्त्री के नाम से, जिसको पूर्व काल के महात्मा भी स्पष्ट न करके गुप्त ही रूप से दिखलाया है, कब लिख सकता है ॥ जो कुछ हो श्रीभगवान की प्रेरणा से प्राणियों के कल्याणार्थ मैं इस ( हरि भक्ति रसायन रूपी अनुभव गम्य रहस्य ) को प्रकाशित किये देती हूँ जो लोग परमार्थ के खोजी हैं चाहे किसी मत या मजहब के क्यों न हों उनका इस पक्षपात रहित लेख से अवश्य लाभ होगा और बहकाने वालों के जाल से बच सकेंगे जो हर एक मत या मजहब में प्रवेश कर गये हैं। कहावत है कि ( थोड़ा गाया कबिरा बहुत गाये कबीरपंथी ) सनातन धर्म ही को लीजिये यह है कुछ और पर अधिकांश सनातन धर्मी बनने वाले गुरु ज्ञानियों से विमुख रहकर समझते और करते हैं कुछ और ॥ कलियुग का समय है राधा स्वामी मत के प्रवर्तक अपनी पुस्तक सारवचन पृष्ठ ४५२ में यथार्थही लिखा है (बिना योग ज्ञानी नहिं होई * जन्म मरण से छुटे न कोई ॥) ॥६५॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पिछला योग कभी नहिं पाई। ताते सुरत योग ठहराई ॥ ६६ ॥
वह तो धर्म युगन पिछले का। इन जीवन को बल नहिं बूता ॥ ६७ ॥
जब थे जीव सब ईश्वर कोटी। अब जीवों की बुद्धि है खोटी ॥ ६८ ॥

इसी बात को अपने प्रेम पत्र जिल्द १ वचन २४ में फिर से दोहराया है और खोटी बुद्धिवाले कलियुगी जीवों के लिये पिछला योग का अनअधिकारी समझकर कलियुग में केवल सुरत शब्द योग या प्रेम भक्ति को ही मुख्य ठहराया है ऊपर के सार वचन के ऐसे यथार्थ लेख को देखते हुए भी इस मत के लोग सार वचन के नाम से यह भी लिख डाला है ( राम न जाना कृष्ण न जानी ॥ ध्रुव प्रहलाद न मर्म पिछानी ॥ १ ॥ ऋषी मुनी सब धोखा खाया। क्या व्यास वशिष्ट भ्रमाया ॥ २ ॥ अब कहिये ( थोड़ा गाया कबिरा बहुत गाये कबीर पंथी ) की कहावत चरितार्थ हुई कि नहीं आप किसका सत्य मानेंगे इस प्रकार के अनर्गल बकवाद और महात्मों की निन्दा से चाहे कोई किसी मत का हो सिवाय धोखा खाने और देने के क्या कुछ लाभ उठा सकता है परन्तु जो सच्चे सन्त या महात्मा चाहे किसी मत के हों वे इस ग्रन्थ को पढ़ते ही आनन्द सागर में डुबकी लगाये बिना नहीं रह सकते रहे बीच के संशयात्मा लोग उनकी दशा को मैं क्या कहूँ श्रीभगवान स्वयं कहते हैं ( न भये इतके न गये उतहीं त्रिशंकु समानहिं जा लटके ) विवेकी पाठक इस ग्रन्थ के कविता के गुण दोष को तरफ विशेष ध्यान न देकर केवल भाव को देखेंगे तभी कुछ लाभ होगा। मेरे पतिदेव वर्त्तमान मुन्सरिम जजी काशी के कहने से मुझे मालूम हुआ कि इस पुस्तक के प्रकाशन में विशेष प्रोत्साहन महम्मद मीर साहेब जज सफीफा व भगवत प्रेमी बा० कृष्णचन्द्र मुन्सिफ काशी ने दि[illegible] उनको परमात्मा शान्ति दे।

आप [illegible] की शुभ चिन्तनरता—
कुलदीपा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

# ( विषय अनुक्रमणिका )


| विषय | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|
| श्री गणेश वन्दना | १ | १ से ६ |
| श्री लक्ष्मी जी व शारदा जी का प्रकट होना और ग्रन्थ के गुप्तभेद को बतलाना और कुल के पित्रादिकों से भक्त को मिलाना | १से ४ | ७ से १७ |
| व्यवहार परमार्थ की एकता | ४ से १० | १६ से १३ |
| गृहस्थ के धनका विभाग और दानका महत्व और गुरु व शास्त्र की महिमा | १० से १३ | १६ से १६ |
| नास्तिक आस्तिक की दशा | १३ से १७ | १ से २६ |
| नारी धर्म | १८ से २३ | १ से ८ |
| त्रिकुटी ध्यान का महत्व और नौधा भक्ति से नाद और सिद्धियों का तीन दर्जे तक प्रकट होना | २३ से २५ | ६ से १७ |
| चौथे दर्जे में ज्ञान और ज्ञानी का स्वरूप और ग्रन्थ रचना में लक्ष्मी तथा शारदादि की सहायता | २५ से २६ | १८ से २१ |
| ब्रह्माजी का अपने मोह का वर्णन करना व ग्रन्थ पाठ महिमा | २६ से ३० | २२ से १० |
| धर्मका रहस्य और भक्त और भगवान का ग्रन्थ विषयक परस्पर कथन | ३० से ३५ | ११ से २६ |
| सच्चा गृहस्थ का धर्म और आत्मज्ञानी की महिमा | ३६ से ४१ | १ से २० |
| पूजा विधि तथा भक्त व भक्ती की महिमा | ४१ से ५३ | २२ से २६ |
| स्वतंत्र धर्म ग्रन्थ रचने का अधिकार किसको है | ५४ से ५५ | १ से २० |


CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

| विषय | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|
| श्रीराम कृष्णादि के नाम की महिमा और तीनों देवों की एकता | ५५ से ५९ | २२ से ४ |
| सत्संग की महिमा और गुरु महत्त्व | ५९ से ६३ | ६ से २२ |
| नारी भूषण महिमा और सती धर्म | ६३ से ६७ | २४ से २६ |
| धर्म वही है जिससे हरि की प्राप्ति हो | ६८ से ६९ | १ से ८ |
| दशों नाद का गुण वर्णन और पण्डित ज्ञानियों को ही इनके साधन से परोपकार करने में सहायता | ६९ से ७२ | ९ से १२ |
| ग्रन्थ लेखिका के सिर ग्रन्थ लिखने का भार नहीं है | ७२ से ७४ | १३ से १९ |
| हरि की कथा व लीला सुनने का महत्त्व | ७४ से ८५ | २० से २ |
| ऋद्धियों के गुण | ८५ से ९३ | ४ से २८ |
| राम नाम के जप की महिमा | ९३ से ९७ | २४ से ९ |
| भृकुटी ध्यान महिमा | ९७ से १०७ | ११ से ३ |
| वृद्धावस्था की भजन तथा राजा प्रजा संबंध | १०७ से १११ | ४ से २३ |
| कर्म की प्रधानता | १११ से ११८ | २४ से २ |
| त्रिदेवों की एकता इनके पूजन का महत्त्व | ११८ से १३९ | ४ से २६ |
| राम नाम की महिमा | १४० से १५३ | २ से १४ |
| प्रकृति का स्वरूप और निष्काम धर्म | १५३ से १६१ | १४ से १६ |
| ज्ञानी के तन तजने का महत्त्व | १६१ से १६२ | १८ से २ |
| जीवों का निस्तार बहु प्रकार से होता है | १६२ से १६५ | ४ से १६ |
| श्री रामजी व शंकरजी के भक्तों के बाह्य चिह्न व एकता | १६५ से १६६ | १८ से २४ |
| ग्रन्थ लेखिका का बाह्य विद्या विहीनता पर पश्चाताप | १६६ से १६८ | २६ से २४ |


CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

| विषय | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|
| दया का महत्व और हिंसा करने वालों की दुर्गति | १६८ से १७२ | २६ से ८ |
| जीवका परलोक गमन में कौन सहायक होता है और कौन अपना बदला लेता है | १७१ से १७२ | ६ से २० |
| ज्ञानी के भोजन कराने की महिमा और ज्ञानी की दशा | १७२ से १७६ | २१ से २ |
| पशुओं के बलिदान का रहस्य | १७६ से १७६ | ४ से २६ |
| ज्ञानी की निःस्वार्थता और पित्रादिकों का कलि में दुखी होने से अनर्थ | १८० से १८४ | १ से १३ |
| भेद भाव से हरि की उपासना | १८४ से १८७ | १५ से १६ |
| मन के वेग का वर्णन और साधक सिद्ध में भेद | १८७ से १६१ | १७ से ३ |
| कलियुग में नये २ पंथों का प्रादुर्भाव और राम भक्त का वास्तविक लक्षण | १६१ से २०८ | ४ से २० |
| शिव विष्णु की दया में विलक्षणता वैसे ही इनकी शक्तियों में भेद | २०८ से २११ | २१ से २६ |
| परमात्मा के एक से अनेक होने की कथा | २१२ से २१८ | १ से १२ |
| राजा रघुकुल के धर्मवीर की कथा | २१८ से २२० | १४ से २ |
| कलियुग की महिमा और भक्तों की लीला | २२० से २२२ | ३ से २४ |
| जो ज्ञानी ग्रन्थ लिखता है उसकी नकल परलोक में रहती है और मनुष्यों के कर्म के चित्र बराबर खिचाता रहता है | २२२ से २२६ | २६ से २० |
| ध्यान से तीन पद तक की व्यवस्था और चौथे पद की दशा | २२६ से २३२ | २१ से १४ |
| कलियुग में सिद्धियों के गुण की प्राप्ति और स्थूल शरीर से सुरलोकों में जाना बन्द क्यों है | २२८ से २२६ | १५ से १२ |


CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

| | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|
| ऋषियों के सादा जीवन और पत्तों और छाल से तन छिपाने का महत्व | २२६ से २३३ | १३ से २५ |
| भव सागर से तरने के अनेक उपाय | २३३ से २३७ | २६ से ५ |
| गीता ज्ञान के उपदेश की कथा | २३७ से २३६ | ६ से १६ |
| भगवान व भगवानके भक्त की पुरातन कथा | २३६ से २४२ | १७ से ५ |
| वाम मार्ग के पंच मकार का रहस्य | २४२ से २४६ | ७ से १५ |
| जीव ईश संयोग रहस्य | २४६ से २५६ | १३ से २६ |
| माया ईश भेदाभेद | २५७ से २६३ | १ से १६ |
| कन्यायों के दान का महत्व और इनके निरादर का फल | २६३ से २७३ | १७ से २६ |
| ग्रन्थ के पाठ का महत्व | २७४ | १ से २६ |

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* श्रीगणेशाय नमः *

# ❀ कुलदीपा ईश-संवाद ❀

## अखण्ड बोध रहस्य

## ❀ हरिभक्ति रसायन ❀

### * सवैया *

विनवों गण नायक गौरी नन्दन, शंकर सुवन कहावत हैं।
जेहि बुद्धि कि वार न पार लगी, जनके अभिलाष पुरावत हैं॥
जिनके गुण गायके मूरख हूं, हो पण्डित हरि गुण गावत हैं।
तेहि के बल को लहि पंगू नर, चढ़ि जात शिखर पर धावत हैं॥
गुरु परमानन्द मिलाय तुही, चहुंवेद के भेद बतावत हैं।
कुल दीपा को इस योग्य किये, षट शास्त्र के भेद सुनावत हैं॥
धनि मातु तु धन्य महालक्ष्मी, परभातहिं रूप दिखाय रही।
शिर छत्र विराज महा मकुटा, अरु सिन्दुर भाल सुहाय रही॥
धनि शारद आय दया करिके, करि लेखनि ले बतलाय रही।
हम नारि गँवारि न भाव बुझैं, निज पाणि से लेख लिखाय रही॥
अब जो कछु भाव बताय गई, मम बुद्धि में एकौ न आय रही।
अब आय बसो निज दासि हिये, करजोरि मनाय बुलाय रही॥
मुहिं गंग व घाट दिखाय रही, कछुभेद न पावति क्या जु कही।
मयके ससुराल के लोग मिले, पुनि मोहिं अकेल छिपाय रही॥
मति मन्द महा नहिं भाव बुझे, कहु लेखनि कैसे लिखूँ मैं सही।
जननी जेहि भांति बताय गई, उस भातिहिं आय लिखाव मही॥
मणि बन्द में चार चुणी पहनी, पुनि सीधे भुजा को दिखाय रही।
पित्रादि मिलाय जुदा जो किये, नहिं बूझति भाव कहा जो सही॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

निज दासिहिं जानि गँवारि महा, अब खोलहु भावहिं भेद कहा ।
तोहि बार हजारहिं टेरतिहूँ, इतनी नहिं बुद्धि कह्यो जुगहा ॥
गुरु पूर्णानन्द भुलाय गये, उर में अब आय न वास रहा ।
कुलदीपा कुँआय निहाल करो, तुम दीन दयाल कहा जो महा ॥

दो०—अष्टभुजी विन शीशके, दर्श दिये मुहिं आय ।
उलटा भाव न समझती, नाथ कहो समझाय ॥

* सवैया *

परभात जो रूप दिखाय रही, शिर सिन्दुर विन्दु विराज रही ॥
कमला यह भाव दियो मम अंग, से नारि जुआकर देह गही ।
पुनि शारद लेकर लेखनि सो, तोहि भाव दिया करु लेख सही ।
मणि बन्द में चार चुड़ी जु लई, चहुँ वेद के भाव बताय कही ॥
विन शीश के आय मिली लक्ष्मी, जनु याहि कही विनु माथ मही ।
परमानन्द जी गुरुदेव कहे, मर्याद से हीन भये जनही ॥
विन शीश के देह भयानक है, तप तेज विनाहिं गिरे सबही ।
करु लेखनि लेख यही सबहीं, मर्याद गहे शुभ भक्ति लही ।
तुहिं गंग व घाट दिखाय रही, भव सिन्धु के पार बताय गई ।
मयके ससुराल के लोग मिले, पुनि तोहि अकेल छिपाय लई ॥
मम भक्त प्रताप से स्वर्ग बसे, तुमको हम तो निज रूप दई ।
पित्रादि मिलाय जुदा जु किये, जग है ममता अरु भेद मई ॥
एक बारहिं ए सब तोहि मिले, परलोक विदा दिन जाहि भई ।
मम भक्त चले तज के तन को, सुर लोकहुं आनन्द शोर मची ॥
सब देव निहारत हैं मग को, निज मन्दिर वीथि सुधार रची ।
कहिं फूल तथा फल सङ्ग लिये, कहिं हार गुछे निज हाथ सची ॥
सब देव खड़े मग देखत हैं, सुरलोक यही धुनि धन्य मची ।
पित्रादिहुं औ सुर लोकन में, यहि भाति सबै उत्साह भरी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जहँ ब्रह्म के लोक जु ब्रह्म वसे, उनहूँ हैं निहारत भक्त खरी।
निजपाणि से भक्त बनाय हमी, धनि धन्य सुभाग्य भई हमरी॥
नित देव मनावत भक्तन को, अरु देखन के लिय आस धरी।
उन भक्तन के कुल पित्र जिते, जन से पहले चलि स्वर्ग वसे॥
उत्साह नये नित हैं करते, निज भाग्य सराहि हिये हुल से।
अभिलाष नये वे सदा करते, कब धों जन आय मिले तन से॥
उनके हिय आस पुरावन को, हम भेट करावत हैं जन से।
इकवार सो भेटत अंक भरे, जबहीं जन ईश मिलावत हैं॥
तेहिं भेट की आनन्द नाहिं भुलैं, कितनो चह वे तो भुलावत हैं।
अरु भक्तहिं योग वियोग लहे, सब व्याकुल पित्रहुं धावत हैं॥
करिके मन को मलहीन इसी, विधि कालहुं पा गति पावत हैं।
समझो नर लोक कि वात यही, जिन भक्त से प्रेम लगावत हैं॥
सोइ भक्त प्रताप से शुद्ध हुए, मम लोक में जा जन गावत हैं।
कुलका परताप यही समझो, तेहि ऊचहुं लोक पठावत हैं॥
कुल के जिनके जन भक्त भये, उनके परिवार न जानत हैं।
करि कोटि कला कोउ कोटि कहे, कुल के पर लोग न मानत हैं॥
इनकी मति माया हरी प्रथमें कहुं, भक्त नहीं पहिचानत हैं।
करना पहिचान तो दूर रहा, व्यवहारहुं ठीक न ठानत हैं॥
गुणहीं जनमें लहि अवगुण को, पुनि वन्धन फास फँसावत हैं।
इनको हम स्वर्ग पठावत हैं, निज भक्त के नात जनावत हैं॥
कितने पुनि जन्महुं वाद इन्हें, निज लोकहिं जाइ वसावत हैं।
तुम्हरो मन चाह रही यहिते, इनको हम तोहि दिखावत हैं॥
अब आगे चलो करि लेखनकूँ, मम भक्त दया वस जांचत है।
इनके छल छन्द न जान सके, कुल के वे तो मंगल वांचत है॥
वहि भाव बताय बुझाय दिये, चौथे मग के सुख माचत है।
जग मंगल हेतु तो भक्त भये, कहु कैसे नहीं कुल क्षेम चहैं॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हमहूँ लखि भाव तेरे हिय को, दिखराव छत्री भव भाव कहे ।
मुँहि याद भई जो महा रण की, कुरु वंसी दशा को सुनाय रहे ॥
द्रापदी अवतार महा लक्ष्मी, जो वसे मम हीय जनाय रहे ।
वह मंगल की अवतार रही, कुरु पाण्डव नीति बचाय लहें ॥
इर्षावश कौरव आपुन से, सब कृष्णा के दोष बताय चहे ।
दुःशासन चीर खिच्यो द्रौपदी, हम चीर बढ़ा निज शक्ति दिये ॥
प्रकटे जेहि वंश में भक्त जिते, पहिचान न पावत मूढ़ हिये ।
मुक्ता उपजे गज के शिर में, वह शोभित राज के छत्र लिये ॥
उपजे मणि मानिक खानिन में, जेहि पारिख हूँ पहेचान किये ।
अपने कुल में जन जन्म लिये, कहुं ज्ञानिन में पहिचान भई ॥
द्रौपदी कर मान हरी कुरु ने, हम लाज सभा विच राख लई ।
तिहुँ लोक के नाथ बचाय लियो, मति कौरव वापुर थाकि गई ॥
लखि भीषम मोर दशा विनयो, दल पाण्डव के हिय हर्ष भई ।
लखि द्रौपदि मोहिं झुकाय लई, शिर जा लपटे हमहूँ तन से ॥
तेहि के उर वास सदा हमरो, हम राखत वाहि सदा मन से ।
हम होत सहाय सदा जन के, अह मानत हूँ निज आंखिन से ॥
हम राखत हाथ सदा शिर पै, कुलदीपा सुखी कुल के जन से ॥

## * चौपाई *

व्यवहारहिं परमारथ होता * समुझि चले नर खात न गोता ॥
वेद धर्म मर्याद बतावा * जासो नर चउथा पद पावा ॥
करिके कोटि जतन अब साधो * जाको फल तुहिं होत अगाधो ॥
पर नारी माता सम मानो * निज भगिनी कन्या सम जानो ॥
हाथ पांव धोवो मुख आपन * कर भोजन अपने मन भावन ॥
भूख राखि भोजन नित करिये * वेद बचन अपने हिय धरिये ॥
अच्छे गुण निज हिय में राखो * अवगुण वसे तुरत मुँह भाखो ॥
जाते अवगुण बढ़न न पावे * सद्गुण हिय तुरतहिं चलिआवे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सत्य वचन से हानी होवे * तौ नहिं कहै हृदय महँ गोवै ॥
अपनी हो चाहे औरों की * अहित शब्द कह नहिं गैरों की ॥

दो०—सोच समझ के बोलना, सबकर हितहिं विचार।
जामे हानी होय जन, मौन रहो निर्धार ॥

* चौपाई *

पक्षपात कबहूँ नहिं लेना * स्वारथ वस न धर्म को देना ॥
नियम विचारि अन्न को खाना * नियमहिं से तूकर जल पाना ॥
नियम हिं से तुम बोलो चालो * नियमहिंसे तो पलंग बिछालो ॥
छै घन्टा नितहीं तुम सोवो * चार बजे उठि नित मुख धोवो ॥
ऐसा नियम करो कछु काला * निरमल बुद्धि होय तत्काला ॥
दिन २ बढ़ती बुद्धि तुम्हारी * पांच इंद्रियन कर बल हारी ॥
बाढ़े भाव भक्ति मन गाढ़ी * बल विद्या विचार उर बाढ़ी ॥
जो कछु कारज जगका करिहो * अति शीघ्रहिं सिद्धी फल फरिहो ॥
जो तुम काम करत धरि दो में * सो गृह काज करत छनमों में ॥
प्रथमहिं राम नाम जान लीजै * ता पीछे गृह कारज कीजै ॥

दो०—देखो कैसा होत सुख, या नियमन के बीच।
भूरि भाग्य सो सुख लहत, नहिं तो फँस भव कीच ॥

* चौपाई *

अब कहुं भक्त कि चाल निराली * होत मनोरथ सिद्धहिं हाली ॥
सदा बचो दुरजन के सङ्ग से * सत सङ्गति करु तन अरुमनसे ॥
हरि चर्चा तो बोल सदाहीं * नहिं तो मौन गहो मन माहीं ॥
जो कछु कारज जग में आवे * तब तुम बोल अवश्यक पावे ॥
याको फल मौनहिं सम होता * जग का दुःख सकल वह खोता ॥
कुर्जन सङ्ग बुद्धि हो मैली * सत सङ्गति में दुख हो छैली ॥
छुधा सहित भोजन जन करिये * जाते यहि जग दुख नहिं भरिये ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जीवित यहि जग सुखी रहेगा * अमर लोक पुनि जाय लहेगा ॥
नियम सहित पूजा बहु कीजे * धूप दीप नैवेद्यहिं दीजे ॥
ध्यान करो घण्टा भर जाके * जो बनि पाठ करहु मन लाके ॥

दोहा—ऐसा नियम करे जबहिं, मन निरमल हो जाय ।
देखो कैसा फल मिलत, आनँद उर न समाय ॥

* चौपाई *

मात पिता सबहीं सुख दीजै * बने तो सबका दुख हर लीजे ॥
नहीं बने कर जोर कहोजी * भाग्यहीन सेवा न लहोजी ॥
याको फल सेवा सम होई * कहता वेद रखा नहिं गोई ॥
काहू से छल छन्द न कीजै * सत्य भाव सत वचन कहीजे ॥
बोलो वचन सत्य उर तौली * जाते राम चरण लै लौली ॥
अपने मनहिं सदा यह धरिये * मैं हूँ नीच नित्य हिय भरिये ॥
हरि दासों का दास कहाऊँ * तो बड़भागी हो मैं जाऊँ ॥
राम कथा कतहूँ सुनि पावो * मन हरषित सुनि पुनि उठि धावो ॥

दोहा—नवधा भक्ती उर धरो, जाते हो निर्वाह ।
राम भक्ति तब आइ मन, हृदये अधिक उछाह ॥

* चौपाई *

जो कहुं सुर मन्दिर तुम पावो * करि प्रणाम फल फूल चढ़ावो ॥
कर जोरे पुनि विनय करोजी * याको फल भक्ती मुहिं दोजी ॥
जो कहुं भूले भटके माहीं * शुभहिं कर्म मोसे बन जाहीं ॥
ताकर फल हम हैं यह मांगत * पूरण ब्रह्म चरण रति लागत ॥
भूल भटक हरि यश मुख निसरे * ताकर फल यह जग मुहिं विसरे॥
मैं मतिमन्द गँवार महा है * धोखे मैं शुभ मति न लहा है ॥
हो अब कैसे कहो गुजारा * जाकी मति अवगुण नित धारा ॥
याते देव मनावत तोको * मोहिं कुमारग से तुम रोको ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दोहा—मोसे बन शुभ कर्म जो, भूल भटक जग मांहि।
प्रभु के कमल चरण महँ, अर्पण करुँ हम ताहिं॥

* चौपाई *

ऐसा जो कर नर जग माहीं * ताके पुण्य क्षीण हो नाहीं॥
कितनो अद्य नर कर जग माहीं * सञ्चित पूण्य रहत प्रभु पाहीं॥
जो करि कर्म फलहिं को मांगा * पूर मनोरथ होत अभागा॥
करि करि कर्म फलहिं लैलीया * भव के पार मनहिं नहिं दीया॥
उत्तम पूजा प्रथम कहा है * यह मध्यम जो फलहिं चहा है॥
मरण महा अरु मन्त्र उचाटा * ऐसा पूजा नीच जुराटा॥
करि पूजा जो शत्रू नाशा * महा पतित नरकहिं महँ वासा॥
महा अधम उबरे ना कबहूँ * चौरासी भरमत दुख तबहूँ॥

दोहा—कबहूं जो हरि करि कृपा, देइ मनुज का देह।
कोढ़ी लँगड़ा अन्ध नर, अपनी करनी लेह॥

* चौपाई *

शत्रु मित्र पूरव के कर्मा * होत भवहिं है यह भव भर्मा॥
याको चिन्ता क्या करना है * अलख निरंजन को धरना है॥
लिखगयजोविधि नरहिं लिलारा * सो न टरे कितनो जग टारा॥
याते सुख दुख मन नहिं देना * भव पारहिं चिन्ता नर लेना॥
जापर कृपा भई रघुवीरा * अनायास धरता मन धीरा॥
दुख सुख उनको सूझत नाहीं * एक अलख चिन्ता उरमाहीं॥
क्षण में राव क्षणहिं में रंका * है यह खेल जगत का बंका॥
फिर चिन्ता तू किया वृथाहीं * राव रक होना जगमाहीं॥

दोहा—यहि दुनिया के माहि सब, हैं जड़ जीव समान।
चला चली तुम मानले, आतम अनुभव जान॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

अचल एक है अविगति रूपा * यह दुनिया भूली भव कूपा ॥
पगहिं सम्हार धरो अब धरती * नहिं तो चली जाति अब गिरती ॥
दिन २ आयु घटति है तेरी * शत्रू मित्र कहां तक घेरी ॥
शोच विचार देख मन अपने * तो नहिं मिलत शत्रु कहुं सपने ॥
जो शत्रू कछु हानी करहीं * तौ भी वे अपना मन भरहीं ॥
संगी कर्म मोर कोउ ना है * आपनि करनि आप भरना है ॥
जो शत्रू सो मित्रहिं मानो * खटका दे तोको समझानो ॥
शत्रू फल होता अति नीको * अन्तहिं फल जो देत अमी को ॥
दो०—शत्रू से दूरहिं रहत, यह मन जाता हार ।
अरितो अपना मन भया, ममता लिय उर धार ॥

* चौपाई *

जितने जग में मित्र कहावें * वे परमार्थ शत्रु हो धावें ॥
मनका कहा करिय जो काना * सो नर अवशि नरक महँ धाना ॥
अपनी देह लगत अति प्यारी * जा कारन भवही में धारी ॥
देहियां कारन गेह बनी है * गेहे से पुनि नेह तनी है ॥
नेहे से धन सुत जोरा री * घर में लाख करार धरा री ॥
जोरत ही दिन रैन विहानी * पता नहीं अवधिहुं नियरानी ॥
होत प्रभात चलन के साजू * जुरे सकल अब साज समाजू ॥
कुल की जाति तीर तक जाती * निज नारी पाटी तक आती ॥
जितने निज नाता है ह्यां से * उतने दूर जाय सो ह्यां से ॥
दो०—नहिं कछु बिगड़त शत्रु से, रे मन देख विचार ।
बिगड़ा तो निज नारि से, हर परमारथ सार ॥

* चौपाई *

अधिक लिखों लिखनी बढ़ि जाई * करो विचार आप लखि पाई ॥
नारी से अवगुण अपनो है * कर विचार तो अभि लखनो है ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अन्तर प्रेम करो हरि से जा * धन व धर्म व्यवहार करे जा ॥
जैसे सेवक कर सेवकाई * स्वामी धन ममता नहिं लाई ॥
वैसे धन कामिनी सँवारो * पर ममता इनमें नहिं धारो ॥
घर से काज अधिक वह करता * पर घर पर ममता नहिं धरता ॥
सेवक की गति आपन मानो * ममता से मन दूर वसानो ॥
भक्तहुं काम करत जग माहीं * अधिक इतर जनसे कर जाहीं ॥

दो०—पर ममता नहिं मानता, हृदय वसें भगवान।
अति शीघ्रहिं वह करत है, झूठी दुनिया मान ॥

* चापाई *

जो कोउ काम करत घरि दिन में * सो तो भक्त करत इक छिन में ॥
इक तो तेज बुद्धि है उनकी * दूजे खबर लेत प्रभु जन की ॥
भक्त हमारे काम करत हैं * यहि दुनिया का दुःख भरत हैं ॥
सहि नहिं सक यह कारज करते * भक्तन सहित सैत घर धरते ॥
देखत भक्त हँसत हैं चालें * नन्दलाल की ऐसी हालें ॥
कबहूँ दुखित होत जन मन में * लखि पावत जु चाल प्रभु छनमें ॥
इन कर चाल देखि सकु चाहीं * तब तजि देत काज घर माहीं ॥
सखा सखिन की लेकर जोड़ी * करत काम भक्तन मन मोड़ी ॥

दो०—भक्त करत जग काज हैं, उनहीं के बल पाय।
पर शंकट कहुं आपरे, प्रभु करते तब धाय ॥

* चौपाई *

भक्त उन्हें पहिचानत जाई * नहिं दुनिया लखि पावत भाई ॥
सारा जगत उन्हीं का है रे * नहीं अकेल भक्त उनकै रे ॥
जब तक बाल मातु के आसे * जननी छोड़ कबी नहिं पासे ॥
वैसे गति भक्तों की जानो * प्रेम भक्ति बसहीं वे मानो ॥
जो जन प्रेम लगावत उनसे * ताके वशीभूत प्रभु मन से ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कर पद से जग काम सँवारो * हृदय में प्रभु वलले धारो ॥
कितनो दुख सुख हो जगमाहीं * हरि इच्छा समझो मन माहीं ॥
सुख पाये नहि हर्ष करो जी * दुख पाये नहिं शोक भरो जी ॥
स्वामी की इच्छा है जैसी * सुखी होत है जन तव तैसी ॥
भक्त भरोसे प्रभु के होते * दुख सुख दोनों जग से खोते ॥

सोरठा—यह परमारथ सार, भक्तन का यह चाल नित ।
मन उज्ज्वल हो पार, ऐसी रहनी गहत जो ॥

* चौपाई *

परमारथ नहिं हाट विचाता * नहिं कोउ मोल लेइ घर आता ॥
यह सब वसत तुम्हारे हिय में * करो जतन तो मिलि हैं जियमें ॥
वर्षा ऋतु में भरत तलावे * वैसे सद्गुण तो पहँ आवे ॥
हरी कथा वर्षा ऋतु मानो * आपन उर तलाव करि जानो ॥
हरि भक्तों की संगति करिये * कथा कीरतन सो मन भरिये ॥
अवसर पाकर बोलो डोलो * विनअौसर घरमुख नहिं खोलो ॥
हरि गुण गावो हरि रँग रागो * शुभ कर्मों का फल मति मागो ॥
पुत्र पुत्रि चिन्ता सब छाड़ो * भाग्य विवश घटता अरुवाड़ो ॥

दो०—स्वाभाविक जो आवता, अनायास चलि जाय ।
ताकी चिन्ता क्या करे, हिय नहिं जलन वसाय ॥

* चौपाई *

जा कोऊ जन धन उपराजे * ताको धर्म लिखति यहि काजे ॥
इक मुद्रा कोउ नित्य कमाई * चार भाग लागत हम गाई ॥
सुक्का एक धरो घर भीतर * जो कबहूँ तेरो शंकट हर ॥
दूजो सुक परिवारहुं पालन * तीजे सुकहुं जगत भय हारन ॥
चौथे सूका जो लहना है * अर्द्ध अंश गुरु का कहना है ॥
अर्द्ध देव तर्पण ले धरहू * हवन यज्ञ आदिक बहु करहू ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो नर आप कमाते खाते * सो नर विष्ठा मलहिं समाते ॥
नकी बुद्धि मैल हो जाती * भव बन्धन नर ताहि बँधाती ॥

दो०—जो नर केवल कुलहिं का, पालन कर दिन रात ।
सो नर शूकर होत है, रहत नगर निज घात ॥

* चौपाई *

गर आपने सूकर होके * देखि गली कुचि धावत मोके ॥
रलोकहुं सुख पावत नाहीं * यम की मार बहुत ही खाहीं ॥
न संपति पर दुख हरना है * केवल उदर न निज भरना है ।
न्धरे लँगड़े लूले नर हैं * हरना दुःख अवशि इनकर है ॥
र उपकार देह यह पाई * नहिं ममता मद गेह समाई ॥
परोहितहिं दान जो देना * सो जिमि अचल भूमिको लेना ॥
ान विप्र को जो नर देता * मानो रेहन कवाला लेता ॥
भ्यागत नर दान जु देही * सुरके लोक जीत सो लेही ॥

दो०—हरि भक्तों को दान जो, नर देता है धाय ।
अमरलोक सो जीत लिय, भूरि भाग्य कहलाय ॥

* चौपाई *

र हरि भक्त लेत नहिं दाना * उनहिं दानकर यही विधाना ॥
न मन धन अर्पण करना है * शीस काटि आगे धरना है ॥
कर जोरे बहु विनय सुनावो * तेरे कमल चरण हम आवो ॥
न मन धन चरणन हम लाया * तेरी है सब कर मुहिं दाया ॥
गवे तोहि रखो जनि मोहीं * मैं नहिं तजौं छांह सुख तोहीं ॥
ोको तजि हम अनत न जइहैं * चाहे कोटि पाप उर लइहैं ॥
म तो खेती पाप करेंगे * पर तेरेही शरण परेंगे ॥

दोहा—पापहि के हम आदि हैं, पापहिं की बुनियाद ।
कहु जी कैसे तजि सकत, जाकर कर्म अज़ाद ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

सच्चे प्रेम कहे यह वानी * मनमें नहीं कपट कछु आनी
पिघल जात वह दीन दयाला * हरत पाप जन करत निहालहँ
ऐसो वचन सहा नहिं जाई * करुणामय स्वभाव रघुराई
जो हरि सो मम भक्त कहाते * तीन ताप भव सिन्धु वहाते
ऐसा दान देउ हरिजन को * तव निष्पाप होत है मन को
भक्त प्रताप पार सो जाई * विनु दमड़ी के नौका पाऊ
जा दिन से वचनहिं यह भाखो * वादिन से स्मरण तुम राखो
तन मन धन सब गुरु का है रे * उनकी आज्ञा काज करै

दो०—सद्गुरु का यह धर्म है, आपन कर सब लेइ ।
परशादी के रूप में, सेवक को पुनि देइ ॥

* चौपाई *

करि उपदेश हरे जिय जरनी * सेवक उर मन मोदहिं भरनी
सद्गुरु का तो चाल यही है * सेवक का दुख पाप दही है
दसवां अंश गुरू का लागे * सेवक धर्म अवश यहि पागे
दसवां अंश गुरू को देना * यामे कभी नगा नहिं लेना
यासे अधिक जरूरत देखो * विन मागे गुरु को जा पेखो
ये सब लिख मर्यादा बाता * हैं धन धाम सकल गुरु ताता
जब से गुरू समर्पण कीना * ता दिन से सब उनहीं लीना
ऐसा भाव रखो मन माहीं * ये धन धाम गुरू हम नाहीं

दो०—क्या लोकहुं परलोक में, सद्गुरु का सब मान ।
तेरा क्या तुहिं देउं मैं, मेरा नहिं कछु जान ॥

* चौपाई *

ज्ञानी होत जगत गुरु सारे * मानो नहीं परो भव भारे
जग हित लागि धर्म विलगाई * नहिं मानत कोउ लोग लुगाई

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नकी आज्ञा भंग जु करता * सो नर नरक कुण्ड जा परता ॥
मानी कुछ लिखा परम हित लागी * नहिं मानत कोउ लोग अभागी ॥
हालहँ तक बने निबाहत रहिये * नहिं निबहे करजोर मनइये ॥
पुरानमें है क्या हानि सुजन की * कर जोरे निर्मल गति मन की ॥
हाथ जोरे शिर देत झुकाई * प्रभु कर धरत शीश पर धाई ॥
कथमहिं पालन का फल पाता * आतम रूपहिं जाइ समाता ॥

पा०—ऐसा नर जो करत है, सो परमारथ होय।
राखे यासे जो विपरीत चल, पूर्व पूण्य सो खोय ॥

* चौपाई *

ातनो धर्महिं वेद बतावा * नहिं निबहत कोउ कोटिबचावा ॥
ा पर ध्यान प्रभू नहिं दीन्हा * प्रेम भक्ति से भक्तहिं लीन्हा ॥
ास्त्र निरादर कबू न करिये * जो निबहे बचाय कर चरिये ॥
रनीस्त्र लिखे सब सत करि मानो * निबहन अभिलाषहिं उर आनो ॥
ी बैभिलाषहिं इक हरि हैं मानत * देहिया का वह नात न जानत ॥
पागेन हीं का प्रभु गाहँक हैं रे * तन का तो वह छाह न लै रे ॥
लेनानहीं का अभिलाष पुरावत * तनसे वह कछु काज न लावत ॥
खौदागरहिं चतुर वे नाथा * मनका सौदा लेकर गाथा ॥

ातो०—शास्त्र निरादर करिय नहिं, बिगड़ जाय सब काम।
तेरे हित की वेद कह, सत्य मान श्री राम ॥

* चौपाई *

रि अवतार मान तुम भाई * जो सब वेद पुराणन गाई ॥
बेना सगुण नहिं अलख मिलेगा * कोटि जतन करि फन्द गिलेगा ॥
रि निरगुण से सगुणहिं होते * भक्त हृदय में आय समोते ॥
पाँच कोष के भीतर नाथा * पकड़त आय भक्त करहाथा ॥
ब वे बोध अखण्डहिं माहीं * ज्ञान स्वरूप भक्त दिखलाहीं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ज्ञानी आनन्द रूप समाई * सत् चित अलख रूप दरशाई
एतीनों गुण प्रभु जन पाके * यहि तिहुँ रूप लीन भय जाके
ब्रह्म अखण्ड आपहीं माना * अहमिति माया सब विसराना

दो०—बोध अखण्डहिं पाय नर, पर सन्तोषहिं धार ।
चार वेद षड शास्त्र को, लै पलटत संसार ॥

* चौपाई *

सगुण ब्रह्म गुरु को तुम मानो * मानुष भाव भूल मति आनो
है यह सुगम राह हरि मेला * अति ही शीघ्र अमर फल लेला
गुरु से लेइ मन्त्र घर आवो * समय पाय सेवा कर जावो
पर दिन रैन गुरू पहँ जाई * कर न निवास समुझ यह भाई
सदा रहे सद्गुरु के पासा * हिरदय भेद भाव आ वासा
मानुष भाव जबै हिय आनी * बिगड़े परमारथ भइ हानी
याते गुरु के पास न रहना * हिय में अलख भाव ले गहना
निकट निरादर होता भाई * कितनो सुद्धहिं भाव जमाई
देह धर्म यह है तुम जानो * कर व्यवहार जगत सब मानो
सद्गुरु खाते हैं जल पीते * जग व्यवहार करत सब रीते

दो०—देखत जग व्यवहार को, जन मन होत मलान ।
याते रहो बचाय के, गुरु सेवा मन लान ॥

* चौपाई *

घर भीतर पादुक लै धरहू * चाहे प्रतिमा लै मन भरहू
वाही की पूजा तुम करहू * चाहे मानस ध्यानहिं धरहू
दोनों पूजा एक समाना * नहिं अन्तर नेकहुं तुम जाना
सद्गुरु चरन प्रेम करू गाढ़ी * जाते भाव भक्ति उर बाढ़ी
जो कछु कारज घर में आई * करो काम सद्गुरु हिय लाई
यह सब काम गुरू महराजा * यामे नहिं मम मन है राजा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सद्गुरु आज्ञा पालन मेरो * नहिं सुख दुःख जगत हम हेरो ॥
भरजी उनकी है अब ऐसी * करो काम घर आजा जैसी ॥

दोहा—नहिं गृह कारज मोर यह, सद्गुरु का सब मान।
आज्ञा पालन हार मैं, धर्म आपनो जान ॥

* चौपाई *

निज घर का सब काम करोजी * पर सद्गुरु का भाव धरो जी ॥
मूरख तो पढ़ि जग में हँसिहैं * भक्तन हृदय जाय यह धसिहैं ॥
है जग काम भक्त का उलटा * भावहिं जाय नाथ अब पलटा ॥
भाव वस्य रहते भगवाना * जानत भक्तहिं चतुर सुजाना ॥
उर के भाव कहो मति भाई * सुनि हँसि हैं सब लोग लुगाई ॥
याते भाव छिपाते रहना * नहीं किसी से मन की कहना ॥
भक्तन चाल होत विपरीता * हँसी करत सब लोग सभीता ॥
जो कहुं सुनत भक्त की चाली * डहि परिवार भेद बहुडाली ॥

सो०—याते भेद छिपाय, भाव भक्ति करते चलो।
नहिं काहूलखि पाय, परमारथ के मगहिं को ॥

* चौपाई *

यामे विघ्न पड़े जब आई * समझ जाय उर भक्ति समाई ॥
बहुतक रोग ग्रसित तन होंगे * नौ ग्रहादि आदिक सब लोगें ॥
वै प्रतिकूल सतावैं तोके * गुण हीं में अवगुण मति होके ॥
लाभ कि जगह हानि अब होई * भांति २ घर दुख बहु जोई ॥
पूरण कृपा जान हरिहींकी * खबर लेन चहते जनजी की ॥
जितनी भाव भगति उर जागे * मित्रहुं शत्रु होन सब लागे ॥
कहं लों कहों भक्त दुख गाई * थकित होति बुद्धी मम जाई ॥
देवन मिलि सब कर उतपाता * कुल परिवार शत्रु हो जाता ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

धीर धरे मग चल तुम जाई * नहिं तो जगत जाल अरुझाई
भक्तों का मारग हरि रोके * पूरण ब्रह्म परीक्षा होके
सो०—नहिं घबड़ाना तात तुम, कितनो दुख जग आय ।
सूर वीर सम धीर धरि, भक्त हरी चलि जाय ॥

* चौपाई *

बहुत जीव जब जा घबड़ावे * तब जा हरि से विनय सुनावे
हम हैं भाड़ कांच के ताता * ठोकर लगते ही गिर जाता
आपन बल दे नाथ सम्हारो * मैं रखता इक आश तुम्हारो
तुम बिन कौन सहायक होगा * भवनिधि दुख भोगत हम शोगा
जन की पीर हरो भगवाना * नहिं हम गिरे जात मनमाना
नहिं मन धीर धरत अब मेरा * ताते शरण लेत हम तेरा
अब मुहिं पार उतारो नाथा * मम शिर आय धरो तुम हाथा
भक्तन आश पुरावन हारे * क्यों पुरवहु नहिं आश हमारे
दोहा—ऐसा विनय सुनाय जब, प्रभु दुख हरिहैं आय ।
शान्ती मन तब होय कछु, विघन हटावत धाय ॥

* चौपाई *

उनहीं की करनी यह भाई * भक्तहिं हृदय दुखावत आई
जाते तजे चरण अब मेरा * जगत जाल हीं के उर भेरा
जितनो भक्त बढ़ावे मनको * उतनो कष्ट भेज प्रभु जनको
इनसे चतुर रहो सब लोगा * इनके शरण होत बहु शोगा
धन जन सबहीं हरत भगत के * पर निर्मल बुधि देत जगत के
जब जन निर्मल बुद्धी पाई * तब चढ़ि जात चौथ पद धाई
तब प्रभु निज उर लेत छिपाई * जैसे निर्धन धनहिं गड़ाई
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी * जन हो जात सकल सुख राशी
दोहा—याते होश सम्हारि के, बढ़ते आगे जाव ।
नहिं जगसे डरना कभी, जा हरि रूप समाव ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* सवैया *

अब नास्तिक की हम हाल कहैं, तिरसंकु समानहिं जा लटके।
न भये इतके न गये उतहीं, त्रिमुहानि के बीच में जा सटके॥
पद चौथ हिये में पिया बसते, पद तीन के बीच वे जा अंटके।
पहले नर पामर भक्त बने, पुनि भक्त से ज्ञानहिं जा झटके॥
तब बोध अखण्ड के धार चढ़े, पुनि पूरण ब्रह्म से हो मटके।
तब कर्महिं छोड़ि अकर्म भये, पुनि होइ स्वतन्त्रहिं जा चटके॥
जब लौं हरि मूरति ना गहिये, तब लौं नहिं ज्ञान खुले फटके।
बिनु ज्ञान के कर्म की गांठरिया, महिमें नहिं तू अब जा पटके॥
हम पाय रजायसु नाथहिं की, पद गावति हूँ जग से हटके।
गुरुदेव सहाय भयो हमरो, तिनके पद पंकज जा लटके॥
"कुलदीपा" रही समुझाय सबै, पद जाय गहो वृज के नटके।
उनके पद पंकज प्रेम बढ़े, नवधा तब भक्ति बसे छटके॥
नव भक्ति कि साध करो जबहीं, अनहद्दहिं नाद उठे शिरसे।
जब बाजन लागि बजा दसवां, जन जा पहुंचे तिसरे तिरसे॥
पुनि जाय गहो पद चौथ पिया, तब कर्मको नाश भयो फिरसे।
सुनि ज्ञानिन के मुख की बतिया, नहिं कर्महिं छाड़ि हटो निरसे॥
हम लेख रही हित जानि तुम्हें, दुरभाव नहीं उर माहिं बसे।
अब कर्म विहीन भये सबहीं, सुनि ज्ञानिन के मुख धर्म नशे॥
समझे नहिं पावत वेद कहीं, तजि देत हैं कर्म यही तनसे।
बिन कर्म किये नहिं नाथ मिलें, जो कही अब याहि गहो मनसे॥
करि तर्पण होम भजो हरिको, तब जाइ मिले पद चौथ इसे।
सब धर्महिं कर्म को त्याग करो, जग सारा तुम्हें जब ब्रह्म दिसे॥
श्रीगुरु पूर्णानन्द बतावतु हैं, सुख तोहि मिले हरिके सँगसे।
कुलदीपा महा मतिमन्द गती, यह रंग गई हरिके रँगसे॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

नारि धर्म हम कहति वखानी * जाते होइ परम सुख खानी।
सती स्वभाव नारि जो होई * पढ़िगुनि याहि अधिक सुख लोई।
लँगड़ा लूला पति जो पावे * तबहूँ सेवा में मन लावे।
अन्धहुं वधिर पती जो होई * सुख सौभाग्य नये घर सोई।
सत् धर्महिं का पालन करना * नारि धर्म उर भीतर धरना।
सत् का वल विधि सकहिं न गाई * नारि बुद्धि कहँलो अव जाई।
लोकहुं वड़ परलोक वनेगा * भुवन चतुर्दश सुजश तनेगा
वह्म विष्णु वसमें हैं ताके * शंकर रक्षा करते आके

दोहा—मानुष भाव न लावना, पति परमेश्वर जान।
ताके वश विधि विष्णु हर, सत्य वचन मम मान॥

* चौपाई *

मानुष भाव नारि जो लावे * होति पतित यह वोध वतावे
जैसे पुरुषहिं सद्गुरु होई * वैसे नारि पती प्रिय सोई
पूजन ध्यान पती का करना * अलख निरंजनमय तेहि धरना
या विधि साधन करु कछुकाला * सती धर्म उर आवत झाला
जो कवहूँ चित संशय होई * जा इकान्त हरि सुमिरो सोई
नाथ दया करि मो उर आओ * मन निर्मल अवहीं करि जावो
भरमित भइ है बुद्धि हमारी * मो उर का तुम भरम निवारी
ऐसा विनय करो हरि पाहीं * निर्मल बुद्धि तुरत कर जाहीं

दो०—देखो कैसा होत हिय, उज्ज्वल तेज प्रकाश।
बुद्धि तेज बढ़ता रहे, उर प्रभु करत निवास॥

* चौपाई *

जो पति में कछु अवगुण पावे * हरिहिं मनाय दूर हो जावे
पर घर जाय कहो मत रोई * यहि से हानि होत वड़ तोही

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अपने उर प्रभु करत निवासा * पर घर दुख करहो नहिं नासा ॥
क्यों नहिं अब हरि लेत मनाई * तुरते वह दुख देत भगाई ॥
सती प्रताप विमल मति होवे * पतीदेव की दुरबुधि खोवे ॥
सबके उर हरि करत निवासा * पैठि हिये में करत प्रकाशा ॥
ऐसा नियम करो कछु काला * देखो फल मिलता तत्काला ॥
मेरी कही परख नहिं आवे * तब तुम मोको झूठ बतावे ॥

दो०—सत्य कहति हूँ बात मैं, यह देखा सब मोर।
रेख खींच के कहति हूँ, दूर होय दुख तोर ॥

* चौपाई *

पट भूषण की इच्छा होवे * पति से जाय कबहुं नहिं रोवे ॥
होय एकान्त प्रभू से कहना * तुरतै मिलि जइहैं वह गहना ॥
तेरे पति उर प्रेरक होइहैं * अनायास तुहिं दे वे जइहैं ॥
मांगे मान घटत है भाई * वेद पुराण सकल यह गाई ॥
पति से नहिं निज इच्छा कहना * स्वाभाविक फल आपहिं लहना ॥
जो नहिं नारि मांग कछु पति से * तो सुभाव लखि तेरे गति से ॥
लखि जइहैं यह नारि सयानी * नहिं कछु कह आपनि मनमानी ॥
अधिकावश्यक पर जो कहिहो * पति उरमोद बहुत सुख लहिहो ॥

दोहा—तुरते लाके धरहिं तब, हिय में बहुत उछाह।
यह नहिं मांगति कबहुं कछु, आनँद भर मनमाह ॥

* चौपाई *

परम धर्म नारी का यह है * मनुषभाव पति में नहिं लह है ॥
उत्तम नारी वही कहावे * परम धर्म यहि विधि हिय लावे ॥
मध्यम धर्म निवाहन हारी * मनुष भाव सब गुण अनुहारी ॥
पालति आज्ञा है दिन राती * पर घर नेह तजे यहि भांती ॥
पर पुरुषन मुख देखत कैसे * पिता पुत्र निज भ्राता जैसे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

औरहुं दोइ भांति की नारी * जानत सबहिं कथा यह भारी।
कहँ लगि याको करों बखाना * है यह विदित सबहिं जग जाना।
परमारथ व्यवहारहिं होता * शुद्ध विचार जगत दुख खोता।
जाकी मलिन बुद्धि जग माहीं * सो भव बन्धन आय फसाहीं।
देंह मनुश पर पशु बुद्धी है * नहिं इनकर दुहुं जग शुद्धी है।

दो०—कहती मध्यम नारि की, परम धर्म यह जानि।
पति की आज्ञा पाय कर, सद्गुरु शरण समानि ॥

* चौपाई *

पहिले सद्गुरु शरणहिं जाना * परे ब्रह्म मूरति सममाना।
गुरु मूरति उर में नित रखना * नित करि नियम ध्यान में लखना।
या विधि नियम निवाहत रहिये * निर्मल बुद्धि होय तब जइये।
अलख निरंजन हिय महँ आवे * दे दर्शन मन मोद बढ़ावे
सेने २ वृत्ती बढ़ि जाई * आनंद सिन्धुहिं सुरति समाई
जेहि जन शब्द सुनाई पावे * सो भवपार अवशि तर जावे
यामे संशय तनिको नाहीं * पार होन की खबर जनाहीं
जो जन नाद शब्द नहिं सुनई * संचित पुण्य ताहि कर गुनई

दो०—पार होन की खबर हीं, नाद सुनावत आइ।
धर्म बधावा बजत है, भव सागर तर जाइ ॥

* चौपाई *

जब हम देखति या दुनिया को * दुखद दुसह मन होता जाको
लड़की पढ़न लगीं अंग्रेजी * परम धर्म तजि अवगुण लेजी
अब को पढ़ि हैं कथा पुरानी * मन तो नय फैसन में सानी
क्या है दोष कहो लड़किनि की * मात पिता शिक्षा दे इनकी
बालपने से शिक्षा होती * अब तो धर्म छाड़ि सब सोती
निर्मल बुधि भव सिन्धु बहाया * शैतानी विद्या मन लाय

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पती धर्म मानत नहिं कोऊ * एक तजा दूसर मन होऊ ॥
व्याह करत दिन रैन विहानी * विनशत धर्म पता नहिं पानी ॥
दो०—याही में बीता समय, पर सन्तोष न होय।
तबहूँ ये नहिं सोचतीं, बुद्धि गई सब खोय ॥

* चौपाई *

देखो भाई धर्म विचारी * यहि में सुख होता है भारी ॥
धर्म पक्ष लेते भगवाना * होत सहाय सुजन जन जाना ॥
कितनो पामर नर जो ह्वै हैं * अनुभव धर्म किये तो पै हैं ॥
छड़िकहुँ बुद्धि धर्म महँ जाती * परमानन्दमोद हिय पाती ॥
कितनहुं धर्म धुरी नर होता * छड़ इक पाप कर्म बुधि खोता ॥
होत दुखित मनहीं बहु भांती * शोचि २ बुधि शांति न पाती ॥
पाप पुण्य नर अनुभव करता * यह भव भार रंग सब धरता ॥
यासे बचा नहीं जन कोई * कितनो चाह धर्म रत होई ॥
दो०—याते मनहिं विचार करि, धर्म धीर नर जोय।
तज पामरता आपनी, परम धर्म मय होय ॥

* चौपाई *

बड़े यतन मुनि ग्रंथ बनाई * हित विचार सब लोग लुगाई ॥
पर नहिं सत्यमान जन कोऊ * भवनिधि में उनकी मति खोऊ ॥
कुलदीपा की अब को माने * थकित भये मुनि ज्ञानि सयाने ॥
मैं कलियुग की नारि कहाई * कैसे मानें लोग लुगाई ॥
मैं हारी कहि सौ २ बारा * तू नहिं मानत नन्द दुलारा ॥
कितने नर कहि याको बांचे * यह कोउ साधु ग्रंथ रच सांचे
अपनो नाम रखत यह टीका * मुहिं कलंक यह लाग न नीका ॥
सुनिके बचन हँसत रघुराई * ठीक कहत हैं लोग लुगाई ॥
दो०—ऐसा ग्रंथ न रचि सकत, चतुर कैसहूं होय।
याको सुजन बनाइहैं, अलख लखा जन जोय ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

सत्य वात कहते सव लोगा * यह कुलदीपा के नहिं जोगा ॥
जो जन जानत महिमा मेरी * वह जानत भक्तन की हैरी ।
जो जन विमुख भया है मोसो * नहिं लखि पावत भक्तन कोसो ॥
मूड़ मुड़ाय भया संन्यासी * वाको जगत मान अन्यासी ॥
यहि कलियुग की महिमा भारी * मान भेष रखते नर नारी ॥
आतम अनुभव जन जिन देखा * वाकी नहिं कोउ करत परेखा ।
धर्म हीन भय सव नर नारी * समझ आव नहिं महिमा भारी ॥
ग्रंथ वनाया यह सो साधू * फिर है मिथ्या वादि अगाधू ।

दो०—पदहीं पद पर नाम धरि, रखा नारि का जाहि ।
सो साधू पुनि होय कस, झूठ कथन है ताहि ॥

* चौपाई *

जाकर वचन सत्य नहिं होई * सो साधू कहु कैसे सोई ।
झूठ वोल कर पातक भारी * गौ ब्राह्मण वध सम हो जारी ।
साधू है पर मिथ्या वादी * ऐसा पदवी देत अजादी ।
ये उन्मत्त भये मततारे * वचन कहत नहिं होश सम्हारे ।
साधू मान घटावत जाही * पर अपने मन मानत वाही ।
इनकी वात करिय नहिं काना * ए कलियुग के रूप समाना ।
जो ज्ञानी सो मोहिं समाना * ताको मिथ्या वादी माना ।
इनकी वुद्धि उलटि गइ हैरी * ये भव में वहु वार फसैरी ।

दो०—जो कुइ ग्रन्थ वनाय के, नाम धरत है आन ।
सो पापी नर जगत में, कलियुगहीं सममान ॥

* चौपाई *

ठगतो शते पचास ठगैंगे * ये नर चौदह भुवन ठगैंगे ।
जो ज्ञानी कहुं ग्रन्थ वनावे * चौदह भुवन सो पांव पुजावे ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शंकर ब्रह्मा शीश नवावें * ये नर बापुर कौन कहावें ॥
सो ज्ञानी अब ग्रन्थ बनाके * अज्ञानी का मान बढ़ाके ॥
धोखा देता सकल जगत को * पदवी ताको देत भगत को ॥
ऐसे पामर नर मुख देखे * होत महा अघ जो नहिं लेखे ॥
अबहीं सुजन जो पूछे उनसे * उत्तर देत न बनत मुखन से ॥
ऐसे नर की है अब करनी * नहिं मिटती भुगते भव भरनी ॥

दो०—दुख हारी हैं भक्त जन, मंगल मय जग जान।
निर्दोषहिं जो दोष धर, ताको दुख मय मान ॥

* चौपाई *

त्रिकुटी ध्यान धरो नर नारी * छूटि जाय सब भरम तिहारी ॥
अरसठ तीरथ बस यहि माहीं * त्रिकुटी ध्यान ब्रह्म दरसाहीं ॥
गंगा जमुना नदियां जेती * इस त्रिकुटी के मांह बसेती ॥
तैतिस कोटि देव बस यामे * चौदह भू शंकर विधि जामे ॥
पृथ्वी पेड़ पलौदिक आदी * कीट पतंग जीव देहांदी ॥
चार वेद षट शास्त्र बसत हैं * या त्रिकुटी के मध्य लसत हैं ॥
दस बाजा बाजत दिन राती * या त्रिकुटी के मांह सुनाती ॥
आलस तजि सब साधन करहू * छूटे भरम परम पद धरहू ॥

दो०—जब तक नहिं अभ्यास कर, भरमत दोष लगाय।
आप गये घाले अपर, सत को असत बताय ॥

* चौपाई *

हरि का नाम कबहुं नहिं लीन्हा * पर अवगुणहिं सदा मन दीन्हा ॥
छाणो कपट भाव संसारा * निर्मल मन भजु सुख आगारा ॥
तब खुलिहैं तब हृदय कपाटा * बुधि सुन्दर हो जाय सपाटा ॥
तब जनि हो सन्तन की महिमा * मुनिन लिखा ग्रन्थन बड़िरहिमा ॥
जब तक साधन फल नहिं पावा * तब तक मन भेदहिं भरमावा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भेद नाश का युक्ति बताई * वेद पुराणन में सब गाई ।
तजि शंका भजु रामहिं नामा * मंगल होइ देख सुख धामा ।
तब तुम सन्त सरिस हो जावो * समुझि परे सब भेदहिं भावो ।

दो०—तब यह दुनिया झूठ सब, सत्य अलख इक मान ।
मिथ्या वादी लोग सब, सन्त सुजन सत जान ॥

* चौपाई *

यही गीत पुनि तुम गावोगे * जो सुनि अगम निगम पावोगे ।
विना जतन कोई सन्त न होइहैं * विनु वन सन्त भेद नहिं पइहैं ।
करत कल्पना गय बहु बारा * गुजरि रहा अजहूँ नहिं हारा ।
जब तक नहिं हारो जग माहीं * भव के मध्य रहो भर माहीं ।
अपनी चातुरता जब छोड़ो * तब मन याहि भरम से मोड़ो ।
ता पीछे सद्गुरु शरणाई * पसु सम हो जा पद लपटाई ।
नन्हा पनहिं लिये दिन राती * चिन्तन करहु सदा यहि भांती ।
हरि दासन के दास कहानी * यह अभिलाष हिये में आनी ।

दो०—ऐसा नित अभिलाष सब, तेरे उर महँ आय ।
रीझैं दीन दयाल तब, उज्ज्वल बुधि होजाय ॥

* चौपाई *

जगत कथा फीको सब लागे * पर निन्दा सुनते उठ भागे ।
श्रवण चहे हरि कथा सुनेंगे * मुख चाहे हरि नाम लहेंगे ।
कर चाहे पूजा हम करिहैं * पद चाहे हरि धाम पधरिहैं ।
नासा तुलसी गन्धहिं चाहे * अखियां दो हरि रूप समाहैं ।
चित चंचल उतहीं को होवे * जित हो ध्यान जगत को खोवे ।
नवधा भक्ति गहत सब जाके * पूरण कृपा हरी का पाके ।
तब जाने जन भाग्य जगी है * करुणा ऐनहिं दया लगी है ।
ऐसी लगन लगे कछु काला * झीनी शब्द उठे तत्काला ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—कबहूँ भँवर गुन्जार सा, कबहूँ बाज मृदंग।
झाल मजीरा डंफ सा, बाजत हैं बहु ढंग॥

* चौपाई *

कबहूँ जा जन उड़त अकासा * कबहुं पतालहिं जाकर वासा॥
कबहूं भय जन कांपत जारी * कबहूँ निरभय मन सुख भारी॥
कबहूं मन धीरज बहु धरता * कबहुं डराय रुदन सुर भरता॥
अतिशय दुखित होत मन जाई * प्रभु तब धैर्य आप दें आई॥
छूटत ध्यान धरणि महँ देखा * तब वह प्रभु की दया परेखा॥
साचि २ मन आनन्द होता * सुमिरि २ उतहीं मन खोता॥
ये सब सिधियाँ हरि की हैंरी * चाहें जस वैसाहिं करैरी॥
आपन वस कछु चलता नाहीं * हरि इच्छा जन धान समाहीं॥
कबहुंक सुख कबहुंक दुख होई * छुटत ध्यान प्रभु के बल सोई॥
आपन बल इतनो करि पावे * करि असनानहिं सुरति समावे॥
भय दिखाय प्रभु लेत परीक्षा * तजिहैं भजन समझ अति तीक्षा॥
जो जन आशिक होत भजन में * नहिं सुख दुःख गनत वह मनमें॥
लालच लगी रहत जिय माहीं * हरि मिलिहैं अवश्य हियआहीं॥
दे दर्शन जन सुखी करत हैं * हिय के दुस्तर दुःख हरत हैं॥

दो०—तीनहिं पद तक बात यह, सुखी दुखी कर जाय।
चौथे पद आनन्द है, पूरण ब्रह्म लखाय॥

* चौपाई *

वहां नहीं दुख सुख कर लेसा * अविरल भक्ति अमर पुरदेशा॥
पर सन्तोष बोध हरिरूपा * ज्ञानी भय अविगतिहिं स्वरूपा॥
कितनो शीघ्र भजन फल पाई * बारह वर्षहिं देर लगाई॥
वर्ष दु वर्ष भजन करि छोड़ा * सो अभागि हरि से मुख मोड़ा॥
साहस सदा धरो उर माहीं * है उदार धर्महिं पथ जाहीं॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यह दुनिया का धन्धा भारी * जब तक जिये करत नर नारी
फिर किस काज भजन अब छोड़े * अति दयाल से क्यों मुखमोड़े
चौबीस घन्टा भजन न होवे * चौबिस पल कछु मन नहि जोवे
घन्टा भरहिं नियम नित राखो * करिके ध्यान नाम हरि भाखो
सारे दिन गृह कारज अड़ना * समय पाय कछु ग्रन्थहिं पढ़ना
सोवो जाय पलँग पर जबहीं * हरि मूरति उर लावो तबहीं
या विधि से हरि चिन्तन करिये * यहि तन से आनँद मन भरिये

दो०—कुलदीपा को जान जनि, मुहिं उपदेश सुनाय ।
आप शारदा आय करि, जगहित लेख लिखाय ॥

* चौपाई *

याहि लेख में लक्ष्मी आई * भाव बताय लिखावति जाई
सरस्वती ब्रह्मा बल पाई * यह सब ग्रन्थ बीच हम गाई
नारि धर्म बिगड़ा है जग में * करि उपदेश हरो दुख मग में
झूठ बोल कर पातक भारी * समझत जगत सकल नर नारी
सपने में जो राम भजत हैं * झूठ बोलना सदा तजत हैं
जापर कृपा भई भगवाना * मान बड़ाई जगत बहाना
इसमें तो है हानि हमारी * छूटा अलख जगत गुण गारी
गृह कारज हम सबहिं भुलानी * घर का पैसा जात नसानी

दो०—बिवस भईं हम याहि में, दया दृष्टि हरि पाय ।
मूरख हँसी उड़ाइहैं, सन्त सुजन लखि जाय ॥

* चौपाई *

जब हम देखति दुनिया हाला * धर लेखनि मन होत बिहाला
जाय पलँग पर हम सो जाती * ब्रह्मा समुझावत बहु भांती
बृज में हरि चरित्र जब कीन्हा * मनुज जानि गैया हर लीन्हा
मोह बिवश हरि को नहि माना * ग्वाल बाल हहुँ उर यह ठाना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

होइहैं हरी अलख अविनाशी * तौ जानिहैं करम मम खासी ॥
दीन दयाल प्रभू सुख राशी * या विधि भरम मोर सब नाशी ॥
जेते ग्वाल सखा वृज गैया * आप भये सब दुःख हरैया ॥
छुटैं मास तक रहैंउ भुलाई * नहिं देखा वृज लोग लुगाई ॥

दो०—छठे मास के बाद हौं, जब सुधि आई मोहि।
जा देखा वृज ग्वाल सब, अरु देखा प्रभु ओहि ॥

* चौपाई *

हरि की माया ऐसी है री * सुधि बुधि भूली जाति सबैरी ॥
तुम तो नारी जाति कहाई * पुनि लिखनो पढ़नो नहिं पाई ॥
मेरे सिरजे हैं सब लोगा * नहिं समुझत तुमको यहि जोगा ॥
शंका करत यही उर आनी * नारि स्वभाव ब्रह्म किमि जानी ॥
नहिं समझत हरि की यह महिमा * सो बड़ हरिपद प्रेम निवहिमा ॥
ब्रह्म लोक वासी मैं भूला * बसि नरलोक हरी वृज शूला ॥
ब्रह्म लोक माया मुहिं घेरी * विधि की मतिहुं जायकर फेरी ॥
मनुजहिं लोक वसत वृज नारी * हरि महिमा अपने उर धारी ॥

दो०—हरि की भक्ती आइ उर, बसत जाहि के गेह।
ताहि न माया छू सकति, जदपि मनुज कर देह ॥

* चौपाई *

जहां रजो गुण है दिन राती * माया जाय तहां सुख पाती ॥
तौ गुण परे होत हरि भगता * वेद पुराण जान सब जगता ॥
प्रभु की माया मुहिं भरमाई * रज गुण कारज जो मैं पाई ॥
वे वृज वासी तज जग रीती * हरि पद लगि छाड्यो श्रुति नीती ॥
मात पिता भाई सुत नारी * तजि ममता हरि सो अनुहारी ॥
सो बड़ भागी लोग कहाये * जिन हरि चरणहिं चित्त लगाये ॥
पती धर्म मर्याद न जानी * हरि पद प्रेम गुणहिं सनमानी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रभु के पद जिन प्रेम किया है * अवगुण हूँ गुण वेद लिया है।
हरि से बिमुख सकल गुण होई * सो अवगुणी वेद कह सोई।
जासो हरि की भक्ति बनी है * सो सब धर्म धुरीण गुनी है।

दो०—याते सोच विचारि के, छोड़ जगत की लाज।
सब कर जामें होय हित, करो सोइ अब काज॥
यहि माया में भूलि अब, नहिं समझत संसार।
जो कोउ होइ सुजन जन, बूझ सन्त शिर भार॥

छ०—जो चार वेद कहाय, प्रभु सो रूप राउर लीन है।
हम हरी गइया ग्वाल बाल सो ढीठता अति कीन है॥
तेरीहिं माया से विवश, मम बुद्धि भ्रमित व छीन है।
सुर भी व बछरा हैं जिते तुमरे स्वरूपहिं लीन है॥
खोल्यो हिये मम आंख सबहीं बाल रूप लखाय है।
बनि धेनु बछरा दूध पीहूँकार करि कहिं धाय हैं॥
कतहूँ सखा बनि साथ खेले, कृष्ण बन्शी बजाय हैं।
अब ज्ञान की दृष्टी दिये मम बुद्धि अतिहिं लजाय है॥
धनि धन्य हो करुणा अयन, हर शोक भ्रम सुख दीन है।
अपनीहिं माया आप खिंच दे रूप भय हरलीन है॥
तजि के जगत सुख जोगि जन अविगति स्वरूपहिं लीन है।
धनि धन्य तेरे भक्त तजि, भ्रम प्रेम तवपद कीन्ह है॥
धनि धन्य वृज के वासि हैं, तुव चरण सुख सबमानि हैं।
धनि धन्य बछरा और गइया, स्वामि निज पहिचानि हैं॥
धनि हैं लता वृज पेड़ पल्लव पद सरोज दबानि हैं।
हैं धन्य मेरो भाग्य दर्शन बालयुत हरि पानि हैं॥
धनि धन्य तेरी नाथ माया भ्रमित करि बुधि आनि हैं।
वे धन्य हैं नर नारि जे तव, चरण रति सुख जानि हैं॥
हैं धन्य वृज के ग्वाल तुमको जो सखा सन मानि हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

धनि धन्य वृज वनिता सबै जिन चरण सुखहिं समानि हैं ॥
सो धन्य नर वृज धूरि निज शिर धारि भाग्य विचारि हैं।
सो परम पदको पाइ प्रभु तव लोक अवशि सिधारि हैं ॥
आवा गमन भव फन्द दुख सब काटि प्रभु निरवारि हैं ॥
वृन्दा विपिनि जिन आय वसि इक रात सो दुखटारि हैं ॥
कबहूँ मनुज सो पास भवके भूलि नाहिं फसानि हैं ॥
मन बचन क्रम विश्वास करि स्तुतिहिं जो नर मानि हैं ॥
नित नियम से करि पाठ यह तव ध्यान सुखहिं समानि हैं ॥
सो अवशि भवनिधि पार हो, अविगति सुगतिहिं वखानि हैं ॥

दो०—पाठ करे मन लाय नर, ध्यान धरे पुनि जाय।
सो अविगति गति जानिहैं, पूरण ब्रह्म लखाय ॥

* चौपाई *

महिमा यह वृजराज लह्यो है * निज मुख ब्रह्मा आय कह्यो है ॥
माया विगत भये विधि आजू * पा दर्शन वृज राज समाजू ॥
अविरल ज्ञान ध्यान जब पाई * तज रज गुण शक्ती सब आई ॥
ताहि समय अस्तुति विधि कीन्ही * माया विगत रूप हरि लीन्ही ॥
परम पुनीत कथा यह जानी * जगहित लागि लिखा विधि मानी ॥
इतना पर न बूझ नर नारी * भव वन्धन न काट दुख भारी ॥
सन्ध्या समय पढ़े मन लाई * सोवत शुद्ध भाव उर आई ॥
होगी निर्मलहूं मति वाकी * माया थकित बुद्धि हो ताकी ॥

दो०—रीझैं दीन दयाल तब, देखि सुजन की चाल।
भाव अनेक बताय सब, उज्ज्वल बुधि तत्काल ॥

* चौपाई *

यह इक छन्द और इक दोहा * नित्य नियमकरि पढ़ि नरसोहा ॥
सब तारों में चांद विराजा * वैसे नर भक्तन महराजा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चाहे नर चाहे हो नारी * पढ़त लिखत पावे सुख भारी
प्रातः सन्ध्या के दुइ काला * पढ़त सकल भागे दुख हाला
करिके नियम परीक्षा लेना * नहीं झूंठ दोषहिं जन देना
जो कछु पढ़ो गुनो मन माहीं * करि साधनहिं जतन मनलाहीं
पढ़ि के निन्दा मति कोइ करना * झूठ दोष नहिं हिय में धरना
हरि की भक्ति जान गुण मानी * प्रेम भक्ति समझो रस सानी
आदर ही से सुन लो भाई * करि दुर्भाव दुःख बहु पाई
साधन होन भये नर नारी * हरि कितंन मनभाव न लारी

दो०—कैसो गुण के हीन कवि, हरि के यश जो गाय ।
तेहि पुनीत करि मानवो, धर्म बतावत धाय ॥

* चौपाई *

धर्म २ कहते नर नारी * जानत नहीं धर्म गुण कारी
धर्महिं कहत अलख अविनाशी * आतम अनुभव सुख कर रासी
धर्महिं बल नर पार उतरिहैं * निज अनुभव आतम सुखभरिहैं
योगी जनकुँ धर्म बल येही * है गृहस्थ के परम सनेही
सती नारि का याही धर्मा * यही मिटावत है सब कर्मा
जब तक कर्म व धर्म रहेगा * तब तक आवा गमन लहेगा
करि हरि भक्ति मिटावो कर्मा * जाते पार उतार सुधर्मा

दो०—क्या नारी क्या पुरुष हो, अपनो धर्म निबाह ।
धर्म नाम श्री राम है, जो रमि रह सब ठाह ॥

* चौपाई *

सती धर्म पति व्रत के माहीं * पुरुष गृहस्थ धर्म विच जाहीं
जती सती तपसी उर मानो * आतम अनुभव रूप लखानो
पति व्रता पति रूपहिं पायो * गारहस्थ सद्गुरु दरशायो
धरि बहु सन्त रूप प्रभु आवें * गारहस्थ आश्रमहिं समावें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वैस्य वनिज जेते हैं कर्मा * सबमें अलख रमत धरि धर्मा ॥
ब्राह्मण तप करिके हरि पाया * सो सति सतबल से तेहि धाया ॥
योगी योग बलहिं जेहि पाई * सो गृहस्थ बल धर्म समाई ॥
निज २ धर्म सबहिं प्रति पाली * पैहैं चौथा पद नर हाली ॥

दो०—बने तो धर्म निवाह निज, अतिहिं सुलभ यहराह।
नहिं निबहे तो राम सब, भजहु भक्ति उर माह ॥

* चौपाई *

जैसे बने भक्ति हरि करना * रमा रमण स्वरूप हिय धरना ॥
रामहिं भक्ति करन के काजा * वेद पुराण धर्म सब साजा ॥
सकल गुणन के आगर नर है * हरि की भक्ति हीन निज पर है ॥
ताके जन्म अकारथ जाहीं * सोइ जन्म जग लिया वृथाहीं ॥
सब अवगुण के खानी जन है * राम भक्ति लागी जा मन है ॥
सो बड़ भागी लोग कहाये * हरि के परम प्रियहिं मन भाये ॥
आप तरे औरों को तारे * भव सागर भूले जिय सारे ॥
सबको राह बतावत वो हैं * उनके उर भक्ती जा सोहैं ॥
वे मम भक्ती आदर देते * सारे जग का दुख हर लेते ॥
वे ही मम अवतारहिं माने * नास्तिक भाव तोड़ रस साने ॥

दो०—भग्तन के बल आनि उर, धरणी रह सुखमानि।
मैं हूं त्रिभुवन नाथ जो, भग्तहिं बल उर आनि ॥
करत जगत का काम सब, नर लखि पावत नाहिं।
भक्तन के बल रहत हूं, या दुनिया के माहिं ॥

* चौपाई *

जौ जग जन्म न होत भगत का * को भव भारहिं हरत जगत का ॥
भक्त हमारे हैं सिर मौरा * चौदह भुवन करत वे दौरा ॥
सब दुनिया इक ओरहुं जाई * एकै भग्त सकल जग भाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लड़त मरत रहता जग आई * भक्तन के गुण वेदहुं गाई।
बड़ बड़ नास्तिक भे जगमाहीं * धर्म मिटावन में मन लाहीं।
मेरे भक्त सकल गुण खानी * हठ करके अवतारहुं मानी।
कोउ ठग चोर कहे जग माहीं * तनिको लाज सकुच उर नाहीं।
करते काम जगत सब जानी * निर्भय हो मम बल उर आनी

दो०—लाजहिं देत बहाय सब, चलत अटपटी चाल।
जगत होत हैरान अब, लखि भक्तन यह हाल॥

* चौपाई *

हम भक्तन सँग रहत यदा हैं * इनकी निरभय चाल सदा हैं
तौ भी रहत सदा सँग लागे * भक्तन से लड़िजात अभागे
येई कर्म धर्म सब मानें * येई मम अवतारहिं जानें
इन हीं चारो वेद बखाने * इनहीं दस अवतारहुं मानें
देव पितर रुचि राखत ये हैं * भव का दुख टारत जन जेहैं
इनकी हँसी उड़े जग माहीं * रंचक दुख ये मानत नाहीं
सूर वीर सी करनी इनकी * नहीं भरम देखे दुख भरनी
इनकी मान हानि जग करहीं * ये मन मोद भरत उर धरहीं

दो०—मम कारज उर जानि के, करत जात सब काम।
दे अब लाख करोर कोउ, ये बिकिगे बिनु दाम॥

* चौपाई *

ताते उऋण होत हम नाहीं * इनके ऋणी सदा रह जाहीं
इनके बन्धन बांध बधाहीं * इनके हृदय सदा घर माहीं
तजि बैकुण्ठ बसत जग आई * भक्तन उरहिं सदा हम भाई
ये नाचत गावत जग जबहीं * तुरते उठि धावत मैं तबहीं
ये जब रोवन लागत जाई * पोछत आंसु तुरत हम धाई
इनके आंसु पितर दुख भागे * साठ पिढ़ी तारत चलि आगे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

साठ पिढ़ी पीछे उद्धरहीं * इनके आंसु महा दुख हरहीं ॥
इनके आंसू गंग वही है * इनहिं आंसु सब पाप दही है ॥

दो०—इनकी महिमा कहत हीं, मम बुद्धी सकुचाय।
मेरे मन अरु वाणि से, परे सकल गुण गाय ॥

* चौपाई *

चारो वेद कहत गुण गाई * जो मम रूप धारि जग आई ॥
नहिं पावत कछु वारहिं पारा * भक्तन के गुण गावत सारा ॥
सो मम भक्त जगत मँह आई * कहु कैसे कोउ जग लखि पाई ॥
मोको लखि पावत नहिं कोई * लखि हैं मम स्वरूप जन होई ॥
मम जन होत परे जग सारे * सो जाने जो ब्रह्म लखारे ॥
भग्त लखे सु भग्त हो जावे * सत्य वेद भेदहिं वह पावे ॥
जो मम ज्ञान स्वरूप कहावे * ज्ञानी धरि स्वरूप जग धावे ॥
सकल जगत भयहर जन शोका * करि उपदेश ज्ञानि यहि लोका ॥

दो०—सो उपदेशहिं सुनत हीं, जग मंगल हो जाय।
ज्ञानी शब्दहिं शब्द में, मम स्वरूप दरशाय ॥

* चौपाई *

रकौ शब्द न ऐसा होई * जो वानी मम रूप न लोई ॥
ानी भोजन कर जब जाई * उदरहिं मम आवत सो धाई ॥
हींज्ञानी वस्त्र पहिन जो जाई * सो मम अंग ढाक ले भाई ॥
हींज्ञानी तेल फुलेल लगावा * सो सुगन्ध मम तन भर छावा ॥
ाईज्ञानी पग जो धरत धरा में * सो धरनी वैकुण्ठ भरा में ॥
हींजो धरणी वृज धरणि कहावे * सो धरणी गो लोक समावे ॥
ाईा धरणी की लता पतानी * सो सब मैं निज लोकहिं आनी ॥
ाीा धरणी के कीट पतंगे * वस जावें मम जन के संगे ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—भक्तन की महिमा बड़ी, नहीं आदि अरु अन्त ।
पामर नर कैसे लखैं, जेहि लखि पावत सन्त ॥

* चौपाई *

सो तुम दुखित होति मन माहीं * ज्ञान कथा कोउ समुझत नाहीं
वार हजार तोहि वमुझावा * वेद भेद सब खोलि बतावा
इतना पर सकुचत मन तेरो * वार हजार तोहि हम घेरो
तोहि अशंक होन के काजा * वार हजार साज हम साजा
कबहूँ ब्रह्मा पठवत जाई * चार मुखन समुझावहु भाई
कबहुं महा लक्ष्मी को भेजा * समझावहु जा सोवत सेजा
सरस्वती को कबहुं पठाई * ले लेखनि कर तुम पहं जाई
तुमहुं भले लखि पावति सोई * समझत जाति भेद जो होई
सकुचति हौ जग हाल निहारी * कर लेखनी देति तुम डारी
भलो नहीं करनी जग माहीं * ज्ञानी भक्त धर्म यह नाहीं

दो०—थकित भये हम तोहि सन, कहत शपथ को खाय ।
लेखनि कर अब लेख ले, रहे सुयश जग छाय ॥

* चौपाई *

ज्ञानिन का शिर मौरहिं होगा * सकल जगत भयहर यह शोग
चौदह भुवन बड़ाई तेरी * प्रलय काल के अन्तहुं हेरी
जब पुनि सृष्टि रचब हम जाई * तब तक सुयस रहे जग छाई
सत् भक्ती सत ज्ञान बड़ाई * चारो वेद सुजस जग गाई
है अनमोल भाव यहि माहीं * याको मोल जगत कोउ नाहीं
अविरल भक्ति प्रेम रस गाई * पढ़त अनन्द मस्त हो जाई
कौन अभागी नर जग मा है * सत्य असत्य परखि नहिं पावै
सकुचति तुमहुं वृथा मन माहीं * कोटि कल्पना कर जिय जाहीं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—झूठ भरम को त्यागि सब, लेखनि कर ले लेख।
आवे भक्तन काम में, जन्म सफल निज पेख॥

* चौपाई *

धनि धनि है प्रभु भाग्य हमारी * अपनि ओर सब भांति निहारी॥
मोहिं सिखावत हौ भल जानी * भांति अनेक हमहिं सुख मानी॥
मैं हारी अपनी गति देखी * नारि स्वभाव लाज जग पेखी॥
कछुक मगन मन होत हमारा * जब समुझत व्यवहार तुम्हारा॥
हो मन मस्त लगन प्रभु लागी * सुधिबुधि भूल सकल बड़भागी॥
कैसे लिख लेखनि कर लेहीं * कवने विधि सम्हार सुधि देहीं॥
जो पर ब्रह्म कहावत नाथा * सो कुलदीपा की है गाथा॥
जो हैं लक्ष्मी सो अब मैं ही * जो मैं सोइ सरस्वति है ही॥

दो०—कहु जी कैसे लेखनी, लेकर के हम लेख।
चार वेद षट शास्त्र को, निज स्वरूप प्रभु देख॥

* चौपाई *

कबहूँ जो मन भव में आवा * भेद भाव निज रूपहिं पावा॥
प्रेरक हो प्रभु तब उर आवें * जो कह सोइ लिखन हम पावें॥
प्रभु सब बात आपके हाथा * जो चह साइ लिखावत नाथा॥
तजि उर शंक लाज भय त्यागी * अब सब लिखें त्यागि विरहागी॥
जो राउर अनुशासन पाऊं * चौदह भुवन भक्ति लै धाऊं॥
अब अन्यथा कबहुं ना करिहों * भाव भक्ति मनमोदहिं भरिहों॥
तुम प्रभु प्रेरक हो उरमाहीं * मैं अब कथा लिखति चलिजाहीं॥
तहिं अब लाज सकुच उरलइहों * सत्य असत्य कहे सुख पइहों॥

दो०—अब प्रभु आवो धाय के, निजि दासी उर माहिं।
लिखिहों कथा जगत हित, तनिक लाज उर नाहिं॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

अब गृहस्थ का धर्म बतावें * जा विधि परमारथ फल पावें।
करत यथारथ जग व्यवहारा * हो परार्थ भव पार उतारा।
मात पिता भगिनी सुत नारी * पालन करु सब धर्म विचारी।
पर ममता मद मोह मिटावो * अहंकार उर काम नसावो।
यह परि जन हरि दास हमारे * प्रभु नाता हम नेह सम्हारे
हरि के नात सकल जग माने * नहिं पद प्रेम तो मैं नहिं जाने
अन्न वस्त्र हम देते भाई * पर मम अन्तर प्रेम न आई
जाका नाता हरि से लागे * वे मम भ्राता पुत्र सभागे
दो०—नहिं नाता जो राम से, भार परें सब जाय।
ऐसा हृदय विचार करि, अन्तर प्रेम न लाय॥

* चौपाई *

हिय अन्तर यह रखहु विचारा * प्रगट नहीं व्यवहारहिं हारा
तन से शुद्ध करो वर्तावा * जामे परिजन दुःख नसावा
ऐसी चाल चलो जगमाहीं * जामें कोऊ लख नहिं पाहीं
अन्तर ही में वास हरी का * लेते भावहिं भक्त भरी का
यही देंह से जग व्यवहारी * करत चलो कबहूं नहिं हारी
हृदये की मणि रखहु बचाई * मति प्रगटो यह रीति बताई
गुप्त रखे से प्रेम बढ़ेगा * दिन २ दूना रङ्ग चढ़ेगा
कुल सत्कार भली विधि कीजै * जामे अमृत फल चख लीजै
दो०—हरि भक्तों की चाल कह, जो गृहस्थ जग माहिं।
या विधि चलिये चाल जब, भव बन्धन कटताहिं॥

* चौपाई *

कटुक वचन कबहूँ नहिं कहिये * जाते दुखित कोउ नहिं लहिये
चोरी अरु पर तिय कर संगा * याही पाप धर्म हो भंगा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो कोऊ पर मनहिं दुखावे * सकल पाप कर फल वह पावे ॥
पर उपकार धर्म सम भाई * नहिं कोइ धर्म वेद अस गाई ॥
जहँ तक बने जगत दुख हरिये * नहीं बने तो हरि कर जुरिये ॥
याको फल दुख हर सम होई * सो जन धर्म नाव चढ़ि जोई ॥
वाकी नौका लगी किनारे * भव सागर से पार उतारे ॥
पर दुख देखि दुखी हो भाई * सुख पर लोक सुजस जगछाई ॥
दो०—पर सम्पति लखि डहडु मति, चिन्ता जलनि बसाय।
दुहूं लोक अपयस मिले, मरे नरक महँ जाय ॥

* चौपाई *

नर देखे पर सम्पति डहहीं * चौरासी भर मत दुख लहहीं ॥
सो नर हरि को पावत नाहीं * सदा रहे भववन्ध बधाहीं ॥
पर सुख लागि सहो दुख भाई * ताकी महिमा हरि मुख गाई ॥
बहुत काल तक स्वर्ग बसत है * पुनि भक्की कर मोहि लहत है ॥
तारण तरण जगत सो होई * अविरल भक्ति पाव जन सोई ॥
रंचक पाप रहत नहिं तन में * सो जन बसत हमारे मन में ॥
करत यत्न बहु धनहिं कमाई * पर उपकार लगावत जाई ॥
सो इन्द्रासन आसन पावा * चढ़ि के ऐरावत तहँ धावा ॥
पुण्य क्षीण नर लोकहिं आई * होइ चक्रवर्ती सुख पाई ॥
पुनि मम भक्ति करत मन लाई * बोध अखण्ड देत हम ताई ॥
नहिं पुनि वह जनमत जग आई * लीन होत मम रूपहिं जाई ॥
सहत कठिन दुख अरु जग शोका * तरपण होम तजत जब लोका ॥
देव पितरहुं दुखित जब होते * हो धरणी व्याकुल जन रोते ॥
आकर अर्ज करति मम पासा * तब पठवत सुभक्त यहि आसा ॥
दो०—जाकर हरहू धरणि दुख, जग महँ दे उपदेश।
तर्पण होम कराइ जग, सब कर हरहु कलेश ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

ऐसा समय परत जग जबहीं * ज्ञानी जन्म लेत है तबहीं।
पूर्व जन्म का है वह ज्ञाना * ताते हो बल मोहिं समाना।
चाह रंक से राव बनावे * पल में सारा जगत नसावे
अद्भुत होती उसकी करनी * चतुरमुखी करि सकत न वरनी
प्रथम जन्म का नर जो ज्ञानी * पावा प्रथम प्रभुहिं धर ध्यानी
तारण तरण होत जग सारे * पर यह अद्भुत शक्ति न धारे
इनमें उनमें अन्तर नाहीं * भक्ती ज्ञान एक इन माहीं
हो बिजली सम शक्ती उनमें * जो हैं ज्ञानी पूरव जनमें
इनकी शक्ति मन्द कछु होती * प्रथम जन्म में ज्ञान समोती
अचल आत्मा चल है नाहीं * रहते सदा एक रस माहीं

दो०—रोते रहते हैं सदा, करि समरण मम रूप।
इनकी लौ लागी रहे, दुखित रहत निशि धूप॥

क्षण नहिं कल परता है इनको * आतम अनुभव हो रह जिनको
इनको सुख मिलता कहुंनाहीं * तनिकहुं धीर न धर मनमाहीं
इनको जगत कथा न सुहाती * ज्ञान कथा भक्तहिं सँग भाती
ये नाचत गावत दिनराती * तड़पत सदा अलख लव लाती
पूरव कर्म भोग यहि भांती * दिन बीतत होती जब राती
अनुभव में बीते सब रैना * कल्पत ही रहते निज ऐना
गावें तो मेरे ही गुनको * रोवें तो मेरे दर्शन को
जबहिं हँसे तो कह कटु बानी * भक्ती भाव बचन रससानी

दो०—प्रथम जन्म का ज्ञान है, मम चरणन लौ लाय।
रोवत शान्ती पाय जहु, पागल सम हो जाय॥

* चौपाई *

पूर्व जन्म के जो हैं ज्ञानी * उनको अब न कर्म लपटानी
है स्वतन्त्र जन में जग माहीं * कारज करने में मन लाहीं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उनकी विरह अग्नि बूझी है * भव भय हरने की सूझी है ॥
इतनो अन्तर होता भाई * जो दोउ ज्ञानि बीच हम गाई ॥
जो यह कथा पढ़े मन लाई * उनके उरके भरम नशाई ॥
पावे अविरल भक्ति हरी का * भक्तन के सुख हीय भरीका ॥
पामर को नहिं कथा सुहाई * भरमत बहुत जन्म से भाई ॥
आगे भी भरमैंगे जाके * यहि भव में गोता फिर खाके ॥

दो०—भव दुख टारन काम में, दोउ बराबर होत।
बांह पकड़ि ले जात हैं, तोड़ बन्ध दुख खोत ॥

* चौपाई *

यहि कलियुग के बीचहिं भाई * कहों कथा भक्तन की गाई ॥
सकल शक्ति इनको देते हैं * पर आपहिं कुञ्जी लेते हैं ॥
हैं कलियुग के लोग अभागी * रह पीछे भक्तन सब लागी ॥
नहिं मानत हैं वेद पुराना * भगतन का न करत सनमना ॥
चूके अवसर हानी होई * नहिं चूके सब भूल समोई ॥
नहिं अधिकार भलाई जोगू * नहिं ताड़नहिं योग्य हैं लोगू ॥
समय विचार नाथ अब हाली * रख लिय निज हाथहिं में ताली ॥
जो कोउ भक्त होय जगमाहीं * करिके जतन साध मनजाहीं ॥

दो०—भक्त होइ जो जगत में, खोज लेइ मन लाय।
कितनो गुप्तजोराखि हो, सुजन पकड़ि हैं धाय ॥

* चौपाई *

यहि विधि जन में अंतर होता * सत् चित आनंद रूप समोता ॥
आतम अनुभव अन्तर नाहीं * सब ज्ञानी इक रूप समाहीं ॥
तारन तरन होत जन ओई * बोध अखण्ड बतावत सोई ॥
जब तक बास नसत उर नाहीं * तब तक नहिं दर्शन हो ताहीं ॥
याते समझ बूझ सब लोगा * त्यागहु यहि जग कर भय सोगा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हिय अन्तर से बास मिटाओ * यहि दुनिया का काम नशाओ।
जग व्यवहार मिटत है नाहीं * यह प्रकृती सुभाव सब ठाहीं।
शोच समझ धर्महुं के साथा * करते चलो जगत की गाथा।
दो०—जब तक रहिहो जगत में, छूटि न सक व्यवहार।
क्या साधू गिरहस्थ हो, चित चंचल को मार॥

* चौपाई *

मन मारे सब काम सरैंगे * जग व्यवहार न कभी टरैंगे
जितने भक्त हुए जग माहीं * कोउ व्यवहार तजा है नाहीं
घर छोड़ा बन बैठ उदासी * पर सब काम करत भे खासी
आतम अनुभव यही कहा है * बोध अखण्डहिं यही लहा है
ज्ञान स्वरूप बतावत याही * जो हम लिखी ग्रन्थ के माहीं
युक्ति न ज्ञानी ज्ञान लहा है * भक्त ज्ञान का रूप कहा है
बोध अखण्ड पढ़ाव न कोई * बोध अखण्ड आप जन होई
भक्त नहीं कहुं ईश्वर देखा * आप ईश हा आप परेखा
भक्त न चौथा पदहिं गया है * आप निरंजन रूप लया है
नहिं कहुं ज्ञानी ग्रन्थ बनावे * वेद रूप हो जग विच गावे
दो०—यहि कर भेद न पाव कुइ, पढ़ा चार जो वेद।
याहि बूझिहैं सुजन जन, चौथे पद लिय भेद॥

* चौपाई *

जैसे सती सत्य को साधे * भट्ठी प्रेम भक्त जन राधे
सती तु एक बार जलती है * पुनि स्वर्गहिं जा सुख भरती है
हरि के जन दिन रात जलत हैं * विरहा कुल हो तपनि गलत हैं
जब लगि जीवित हैं जग माहीं * विरह अग्नि जलते सब ठाहीं
इनको सुख मिलता कहुं ना है * चाहै स्वर बैकुण्ठहुं जाहै
इनको शांति मिलेगी तबहीं * पुनि आतम अनुभव मिल जबहीं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बारहिं बार होत यह नाहीं * मर कर ज्ञानी पिय हो जाहीं ॥
जग मरता परवश हो परके * ये मरतेनिज बल उर धरके ॥
बारहिं बार मरें कहु कैसे * ये भय अमर हरी हैं जैसे।
नर मरके परलोक रमत हैं * ये मर के पुनि तनहिं वसत हैं ॥
नर परलोक कर्म भोगत है * स्वर्ग नर्क के माहिं वसत है ॥
ये नरलोक बीच विचरत हैं * परारब्ध विरहाग्नि जरत हैं ॥

दो०—मुरदा सा तन रहत है, आतम बल उर धार।
पर दुनिया बूझति नहीं, भक्त गये जग हार ॥

* चौपाई *

टेरि २ सब भक्त कहत हैं * पर जग अपनी चाल गहत हैं ॥
करि शंका सत भक्त न माने * कहु परमारथ कैसे जाने ॥
थकित होत जब भक्त जगन में * लिखि डारत तब ग्रन्थ मगन में ॥
होइहिं कोई अलख पियारे * पढ़ि हैं याहि लेइ उर धारे ॥
याहि आस से भक्त लिखत हैं * हरि भी याही आस कहत हैं ॥
जो जग जन्म न होत भगत का * ज्ञानी लिखि पुनि वृथा मरतका ॥
जगहित लागि कथा यह गाई * पर उपकार देंह यह पाई ॥
नहिं याको कोऊ सत माने * नाम बड़ाई को वह जाने ॥

दो०—जैसा जाको भाव है, वैसा करे विचार।
कुलदीपा नहिं हानि कछु, अपनो धर्म निहार ॥

* चौपाई *

अब हम पूजा विधी बताऊं * विस्तारहिं से गाय सुनाऊं ॥
निशि में एक बजे उठ भाई * करु हरि ध्यान सदा मन लाई ॥
पशुपक्षी सावत अधराती * जाते बुधि इकान्त हो जाती ॥
करि असनान बैठ आसन पर * सिद्धासन मारो घुटनो धर ॥
आसन बहुत बराबर राखो * ऊंच नीच नहिं हो हम भाखो ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आसन रहत बराबर जबते * मन लागत समाधि जन तबते
आसन ही कि खेल है भारी * रहत सदा हरि उरमें धारी
सबसे यही सुगम है आसन * समम विचार लिखे तेहि तासन

दो०—आसन होता भांति बहु, जानत हैं सब कोय ।
याते मैं नहिं लिखति हूँ, खोज लहे जन सोय ॥

* चौपाई *

जो जन चाहत हरि पुर जाना * अवशि खोज लह सो मनमाना
आसन होत वही है नीको * जाको जस भावे सोइ ठीको
आपन प्रकृति सुभाव समाना * आसन बैठ सबै जनजाना
चित चंचल आसन पर होई * तब कछु जाप करे जन सोई
जाते मन चंचलता रोके * समय वृथा नहिं जा मन टोके
याहू पर न रुके गति मनकी * तब कछु गान करे हरि जनकी
प्रेम कथा हरिजन वांचे से * हो प्रसन्न मन लग सांचे से
जब देखो मन निर्मल भयऊ * तबपुनि ध्यानहिं की सुधिलयऊ

दो०—उठे अर्द्धरात्री बिना, समय न मिलिहैं जान ।
दिवस चढ़े पूजा करे, काम सरे नहिं मान ॥

* चौपाई *

जब असनान करन को जाओ * काहू से तुम नहिं बतराओ
उठो पलँग पर से जब भाई * तब से धरो मौन व्रत जाई
जब तक ध्यान न पूजन होवे * तब तक कछु नहिं काहु कहोवे
एकहु शब्द बोल जो भाई * चंचल चित तुरते हो जाई
वादिन पूजा भजन न होंगे * महा विघ्न उत्पात फंसोगे
याते होश सम्हारे रहिये * कभी किसी से बात न कहिये
ऐसा समय विचार जगेजी * जाते कोउ न संग लगे जी
देखो कैसा ध्यान बनेगा * राम लग्न सुख आप सनेगा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—ऐसा यतन करहु जबै, कछुक काल धरि धीर।
तब पैहो हरि लगनको, राम भक्ति तुहिं थीर॥

* चौपाई *

एक बजे निशि में जब ऊठो * प्रथम क्रिया करि जग से रूठो॥
दतुअन अति सुन्दर करु कोमल * बारहिं बार नासिका धोमल॥
होइहैं निर्मल नाक व माथा * तब देखे परमारथ गाथा॥
बिनु असनान जो आसन बैठो * आलस होय देह सब ऐंठो॥
या तो नींद आय अति गाढ़ी * अधिक चित्त चंचलता बाढ़ी॥
भोजन अधिक कभी नहिं करिये * जाते निर्मल बुधि उर धरिये॥
कहेंउ परम हित जानि तुम्हारा * मानो गे पैहो सुख भारी॥
भक्त जु होय अवसि उर धारी * हरि विमुखन कछु असरन आरी॥
भक्तहिं जन्म होत यहि लागी * पालन कसन करहु बड़ भागी॥

दो०—भक्त स्वभावहिं होत भल, जन्म लेत सुख खानि।
वेद वचन सत मान ले, दृढ़ भावहिं उर आनि॥

* चौपाई *

भक्त जन्म जब ले जग आई * हरि कीरति प्रभु भक्ति सुहाई॥
दया धर्म उनके उर वसते * सदा सर्वदा पर दुख नशते॥
निज सुख लागि यतन नहिं करहीं * स्वारथ रहित कार्य बहु धरहीं॥
आपन दुख राईसम माने * पर दुख को परवत सम जाने॥
आपन सुख तो तृण सम जानी * पर सुख देखि अधिक सुख मानी॥
आपति विपति धरत अति धीरा * पर दुख देखि होत मन पीरा॥
ऐसा लक्षण जा उर पावे * जानो भक्त अवशि हो जावे॥
बालपने से शुद्ध स्वभाऊ * भक्त हृदय प्रभु र हत समाऊ॥

दो०—भक्त जन्म जग होत जब, आनन्द अतिहिं उछाह।
होत अवशि कछु भिन्न कुल, सब लोगन उर माह॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

पर यह समुझि न पावत कोई * आनँद अवशि अधिक उर होई
जहँ कहुं सुनता हरि चरचा को * दुगुन भाव ले धर नर ताको
गुरु उपदेश एक जो देई * वह दुगुनो उर अन्तर लेई
सहज प्रेम उनके उर वसहीं * नहिं काहू की सिख जिय धसहीं
चातुरता नहिं इनके अन्तर * शुद्ध भाव हरि भजत निरन्तर
भग्तन हिय हरि वसत सदाहै * निर्मल मन जन रहत यदाहै
पूरव जन्म केर संस्कारा * जन्मत ले धरणी अवतारा
थोड़ी भक्ति करे मन लाई * वढ़त प्रेम दुगनो उर जाई

दो०--अमलदार जिमि अमल को, राखत धन दे प्रान ।
वैसे हरि की भक्ति को, राखत जन तजि मान ॥

* चौपाई *

अवसर परे प्रान तजि देहीं * पर हरि भक्ति तजन नहिं लेहीं
जैसे कृपिण धनहिं को देखे * वैसे हरि जन हरि को लेखे
जैसे चन्द्र चकोरहिं प्यारा * वैसे जन हरि राख न न्यारा
चाँद चकोर लगत है नीको * पर न चकोर चाँद प्रिय जीको
यहँ तो हरि प्रिय सेवक होई * जैसे मीन सलिल जिय जोई
भग्त एक भर हरि प्रिय माने * चौगुन चाह रखत हरिजाने
चुम्वक लोहा लेता धाई * वैसे नाथ पकड़ कर आई
ऐसा जग मह सुना न देखा * जैसा प्रभु निज दासहिं पेखा

दो०—देखन हो तो देख ले, हरि भग्ती करु जाय ।
देखो स्वामी पकरि करि, लेत तोहि उर लाय ॥

* चौपाई *

करि हरि भक्ति परीक्षा लेना * हरि न मिले तब दोषहिं देना
विना किये उर दोष न लाओ * महा पतित मैं नाम धराओ

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरि की कथा जान जिय माहीं * श्रद्धा सहित सुनो हिय जाहीं ॥
हरि भक्तों में नाम रहेगा * पुनर्जन्म पुनि भक्ति लहेगा ॥
निष्फल नहिं होती हरि बानी * हरि सम होत जनहिं सब जानी ॥
जो कछु लिखी हरी बल पाई * यामें कछु बल मोर न भाई ॥
पर यह बात न माने कोई * याते विनय करति जन सोई ॥
पढ़त लिखत सब कर भल होवे * यहि से लिखी बात नहिं गावे ॥

दो०—यहि कलियुग की देखि गति, हरि लिखवावत याहि।
विद्या हीन भये सबै, समुझें थोड़े माहि ॥

* चौपाई *

पढ़ि पोथी पण्डित नहि होई * भक्ती सम विद्या नहिं कोई ॥
ऐसी भोली जनता माहीं * छाइ अविद्या है सब ठाहीं ॥
टूटे फूटे शब्द बटोरी * लिखी ताहि जग दुहुं करजोरी ॥
क्या पण्डित क्या मूरख होई * पढ़ते आँख खुले सब कोई ॥
जग हित लागि खेल प्रभु कीन्हा * कुलदीपा के शिर धरि दीन्हा ॥
ऐसे नाथ कौन अब जाने * हरि की खेल कहो को माने ॥
नारी को बदनाम किया है * आपहिं ग्रन्थ बनाय दिया है ॥
लखत तोहि हम अपने हिय में * कोरे कागज कलम लिये में ॥

दो०—मेरे मुख बोलत प्रभू, मेरे कर लिय लेख।
बिन अकार के नाथ हैं, भक्तन हिय महँ देख ॥

* चौपाई *

भक्तन के पद प्रभु डोलत हैं * जनहीं के मुख से बोलत हैं ॥
बिना शीश पद के मम नाथा * भक्त जानते हरि की गाथा ॥
हरि बिनु पद रह अरु बिनु भूजा * जानत भक्त और नहिं दूजा ॥
बिन मुख बकता प्रभू कहावें * चारो वेद सुयस जेहि गावें ॥
बिनु कर कमल करत बहु कामा * भक्त बनावत हैं बिनु दामा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विनु दर्शन लिय मनहिं चुराई * भक्तन को देते बौराई
विनु स्वरूप के रूप दिखावा * भक्तन हिये भये मन भावा
विनु देखे देखी वहि नाथा * विनु समझे समझति हूं गाथा

दो०—विना नयन प्रभु देख रह, यहि दुनिया की चाल ।
स्थिरताही के बीच में, भक्तहिं करत निहाल ॥

* चौपाई *

जहां नहीं प्रभु बोलत डोलत * वहां भक्त जनको है तोलत
जहं नहिं धूप और नहिं छाया * वहँ पर भक्त करत विनु माया
जहँ आलस अरु नीद न आवे * वहां जाइ जन हरि को पावे
जहँ लय सृष्टि न पालन होई * वहां भक्त राखत प्रभु गोई
जहँ कमला न कमल पति जानो * तहां भक्त इकरसरह मानो
जहां काल नहिं यम कर वासा * वहां भक्त जन कर भ्रम नासा
जहाँ न दुख सुख है कछु भाई * भक्त भये अब नाशहिं पाई
विनमूरति हरि दर्शन मानो * विनु चैतन्य चेतना जानो

दो०—विना वेद के पढ़ लिये, मर्म जानि सब मान ।
चार भेद षट शास्त्र के, भक्त रूप पहचान ॥

* चौपाई *

आलस छोड़ि निरालस हूजे * तब जन की आशा सब पूजे
जा दिन रैन बैठ घर रहहीं * भय विकार कोइ अर्थ न लहहीं
बैठे जनकी बुद्धि मलीना * चित चंचलहुं दुखी अतिखीना
जो परिश्रमी करत गृह काजा * सोइ सँवार परमारथ साजा
बैठे मनुष थकित भइ बुद्धी * विसरि गया परमारथ शुद्धी
कर गृहं काज लाभ जग होई * या फल को जानत सब कोई
बैठे मनुष न भजन करेंगे * आलस से नहिं काम सरेंगे
काम करे नाड़ी भइ ढीला * बुधि विस्तारहिं होति सुशीला

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—जैसे स्वास्थ्यहिं बढ़त नित, किये काम निज नाथ।
वैसे बुद्धी विमल हो, दौड़ि पकड़ निज हाथ॥

* चौपाई *

सादा भोजन सादा रहना * सादा बुधि से हरिपद गहना॥
नकल छकल करि ठाट बढ़इहो * धन दौलति निज बुद्धि गँवइहों॥
रोग ग्रसित होइहैं तन भाई * तन का बल गुरु ज्ञान गँवाई॥
विपति ओढ़ना लै तन ढोना * तप औ तेज कुमारग खोना॥
विद्या पढ़ो चलन सादी का * ऋषी मुनी लिखि गय आदीका॥
नहिं कोइ पढ़ा नहीं कोइ सीखा * याते प्रभु पुनि ले यहि लीखा॥
इतना पर नहिं समझै लोगा * भव बन्धन भोगहिं बहु सोगा॥
हरि की दया समझ नर नारी * बोध अखण्ड बात लिख डारी॥

दो०—चार वेद षट शास्त्र का, यही यथारथ बोध।
पढ़ि अब तेहि न विसारिये, एक २ कर शोध॥

* चौपाई *

एक बार ग्रन्थहिं पढ़ लेई * कहता भेद पार हम खेई॥
कर महौत अंकुश गज देता * चलि सुचाल टेढ़े मग लेता॥
पुनि दुइ चार तिवारहिं धाई * अंकुश देत चला मग जाई॥
जब मारग सब पार किया है * तब अंकुश कर डार दिया है॥
अंकुश रूपी वेद बनाई * मानुष के हित है सब गाई॥
बारहिं बार पढ़ो सब जाके * देखा कैसा फल हो याके॥
जब तक चौथा पद नहिं देखा * तब तक शास्त्र पढ़नकर लेखा॥
बोध अखण्ड जबहिं हरि देई * तब तजि शास्त्र वेद हिय लेई॥

दो०—जब तक ज्ञान न धार, चढ़, पढ़ो ग्रन्थ मन लाय।
यह तुमको उपदेश दे, पकड़ावत हरि धाय॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

ऐसा कह सो पण्डित नाहीं * हरि पद वञ्चित मानो ताहीं
हरि यश पढ़त जाहि मन ऊबा * सो प्रभु चरण चित्त नहिं डूबा
लगी लग्न नहिं ताके उरमें * बढ़ी न भक्ति थकित रहि मुरमें
जा उर सूद बढ़त नहि भाई * सो भक्ती रस थोड़े पाई
सुनत कथा विहरत है छतिया * भूलि जात जग तन मन वतिया
सो बड़ भागी जीव कहावे * जागी भक्ति हृदय धन पावे
ताकी नाव किनारे लागी * भव निधि से तरिगे बड़ भागी
उतरे पार आप भव भाई * जगसे बहु जीवहिं लै जाई

दो०—धन्य २ वे जीव हैं, सुनत कथा मनलाय ।
तिहूं लोक जस छाय रह, हरिपुर पहुंचे धाय ॥

* चौपाई *

जो हरि कथा सुनत विरुझाई * तजि हरि यश जग जा अरुझाई
ताकी मन्द भाग्य भइ आजू * साजि चला सब नर्क समाजू
जहँ हरि कथा पढ़त है कोई * सुनि क्षण विलम्ब सुने जन जोई
अध्या इक दोहा जो सुनि ले * पुनि शिर नाइ मनहिं यह गुनिले
परम अभागी मैं हूं ईशा * नहिं सुनि पावत यश जगदीशा
पाप पुण्य लेकर हम जनमें * कैसे सुनों कथा यहि तन में
मम अपराध क्षमा करु नाथा * मैं भुलि रह्यो जगत की गाथा
मन महँ विलखि कह्यो यहि भांती * चले जाय गृह काज सुहाती

दो०—चार वेद षट शास्त्र को, पाठ पढ़न फल होय ।
सो बड़भागी जीव हैं, पूर्व पाप दिय धोय ॥

* चौपाई *

जो नहिं कथा सुनो तुम जाई * हरि से विनय करो मनलाई
यामें नहिं चूको जग आके * मंगल हो परलोकहुं जाके

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सदा सर्वदा रहना नाहीं * या दुनिया से सब चल जाहीं ॥
यामें नहिं तन धन की हानी * फिर क्यों राम भक्ति नहिं जानी ॥
यह तन मिला भजन करने को * फिर चूका क्या नहिं मरने को ॥
मरने की चिन्ता दिन राती * करत रहो सब हीं यहि भांती ॥
जब शोचोगे मौतहिं अपनी * भूल जाय तब जग दुख झपनी ॥
हरि कर नाम रटन मन लागी * तबहीं समझ भाग्य मम जागी ॥
हरि विमुखिन के गुण न सुनाई * कहते कथा लाज मुहिं आई ॥
बार हजार नाथ मुहि कहेऊ * मैं नहिं करहिं कलम ले गहेऊ ॥

दा०—कामी श्वान असन्त की, ठग चोरों की हाल।
कहत नाथ लक्षण लिखो, मैं न लिखूँ हिय लाल ॥

* चौपाई *

साधू भेष फिरत ठग चोरा * गेरू रंग रूप धरि मोरा ॥
यह कलियुग की रीति अनोखी * सारा धर्म भक्ति रस सोखी ॥
सच्चे साधू लखि नहिं परई * हरि भक्ती उर प्रेम न धरई ॥
करि उपदेश जगत धन लूटे * काम विवश पर नारी जूटे ॥
सन्त असन्त कवन विधि जाने * कैसे सत् शास्त्रहिं को माने ॥
थोड़े में हम करति बखाना * याको जनि हैं चतुर सुजाना ॥
कितनो युक्ति लगावे कोई * पर न छिपे जैसे जो होई ॥
हरी लग्न लागे उर जाके * सो उपदेश करत भव आके ॥
सुनि मन वचन लुब्ध हो जाई * लगे वान हिय गति हो भाई ॥
ऐसा लक्षण सन्त बतावे * जाने सो जग दुःख हटावे ॥
स्वारथ रहित वचन वे कहते * सुनत शब्द सेवक दुख दहते ॥
सबके हिय हरि रहत निवासा * धसत वचन शरसम भयनाशा ॥

दो—ऐसा जानो सन्त सो, यह सद्गुरु पहिचान।
राम लगन उर लागिहैं, भव की भयहिं भगान ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

जाको हिय हरि बान लगा है * सो न छिपे प्रभु भक्त सगा है
इनकी वाणी है अनमोली * हरिपुर की देखी इन टोली
जग की वास काम उर नाशी * देखा निज आंखिन अविनाशी
विधि की मति डोले वरु जाई * ए नहिं भरमि सकत जग आई
जो जन हरि का नगर तजा है * सो क्या काम कला फँस जाई
मुक्ती परम सुखन की खानी * तीनि भुवन जेहि लग तप ठानी
सो ज्ञानी के मन न समानी * कहु कैसे विषयन सुख मानी
पूरव जो ऋषि मुनि किसुनी है * भव दुख टारन कबहुं गुनी है
संकट आय परत कोउ जन पै * तप बल तेज आन तब मन पै
जन के आस पुरावन काजा * करत भये कबहूं वश लाजा
दो०—सो नहिं मानहु सुजन जन, मुनि अस कबहूँ कीन्ह ।
ऋषियन की सब आड़धर, करत काम अति हीन ।।

* चौपाई *

सन्त असन्त याहि विधि जानो * थोड़े महँ सब जग ले मानो
शुद्ध चाल से चल जग माहीं * सो परमारथ सब हो जाहीं
यह अनुभव कि बात है भाई * नहिं सब वेद खोल कर गाई
धर्म धुरीण होत सब लोगा * सत युग त्रेता द्वापर योगा
गूढ़ रहस्य बूझ सब जाई * याते भेदहिं वेद छिपाई
विद्या हीन भये कलि कुलके * याते नाथ लिखावत खुलके
भोले भाले नर समझेंगे * नहिं धोखे में जाय फसेंगे
यह हरि की है सत्य कहानी * जन समझे कहुँ होय न हानी
दो०—सत्य असत्यहिं तुरतहीं, पढ़त लखे सब लोग ।
पण्डित की तो कहुन कछु, मूरख पढ़ भय योग ।।

* चौपाई *

उत्तम पूजा चार बजे का * मध्यम जानो दिवस चढ़े का

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मध्य काल नर पूजा करते * सो जनु मान बेगारी भरते ॥
चार बजे शंकर की फेरी * नित्य होत गौरी सँग हैरी ॥
देखत जो जन ध्यान करत हैं * हो प्रसन्न आशीश भरत हैं ॥
जो जन चार बजे तक सोवे * शंकर दुखित देख मन होवे ॥
है मानुष यह पर पशु सम है * यह भव सोवत कछु नहिं गम है ॥
पूरब जन्म पसू तन पइहैं * निज करनी का फल इन लइहैं ॥
गणन सहित घूमत हैं शंकर * देखत फिरत मनुष के मन कर ॥
दो०—देखत पूजा ध्यान नर, करते प्रातहिं माहिं।
हो प्रसन्न मन में सदा, शुभ अशीश दे जाहिं ॥

* चौपाई *

याकी आस पुरावो नाथा * तुरत आइ कर पकड़ो हाथा ॥
अति कोमल चित दीन दयाला * शंकर जन को करत निहाला ॥
भक्तन की गति देखत फेरे * सारे जगत चाल को हेरे ॥
नित्य नियम शंकर का हैजी * भूतन सहित जगत सुख लै जी ॥
चौदह भुवन देत नित फेरी * या विधि त्रिभुवन खबरहिं लेरी ॥
पुनि बैकुण्ठ हरी पहँ जाके * कहते भे सब खबर यहाँ के ॥
भक्तन नाम लेइ कर नांचे * उन कर मन हरिजन महँ राचे ॥
हँसत नाथ सुनि शंकर बानी * मन भय लगन भक्त रस सानी ॥
दो०—जो शंकर सो ब्रह्म हैं, वही विष्णु को मान।
यामे अन्तर नेक नहिं, देव तिहूँ इक जान ॥

* चौपाई *

जो जन इनमें भेद बतावे * सो नर चौरासी में धावे ॥
ये त्रैदेव भेद नहिं मानो * तीनों एक यही उर आनो ॥
जो जन ऐसा भाव लगावे * सो भव अवशि पार हो जावे ॥
होत उपासन एकहिं देवा * जो भावे सोइ जन प्रिय लेवा ॥
ऐसा भाव लगा कर भाई * हरि की भक्ति करहु मनलाई ॥

LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
3513
CC-O. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri Initiative

चार बजे तुम निशि में ऊठो * छोड़ो सेज जगत से रूठो
विद्या बल औ बुद्धि बढ़ेगी * सारा जग का काम मढ़ेगी
बेला देव एक यहि हैजी * हरि भक्ती तप तेज मिलैजी
दो०—चार बजे सब देव मिलि, करत जगत आखेट ।
देखत जग की चाल सब, भक्तन के दुख मेट ॥

* चौपाई *

यामे शंका मति कोइ मानो * जाकर वेद पुरानन जानो
अकले नहीं हमारे हियमें * चारों वेद बसत सब जियमें
खोज करे नर पावत सोई * भूला जन जग सो अब रोई
भक्ति किये हिय आंख खुलेगी * ज्ञान नयन जन तोहि मिलेगी
ये दो नैन देख सक नाहीं * देखे वही ज्ञान हो जाहीं
यहि जग बड़ २ भक्त भये हैं * आगे होइहैं अभी हुए हैं
वर्तमान अब भी हैं ज्ञानी * देखत हैं हरि चरितहूँ ध्यानी
सत्य असत्य तुरत वह जानें * पढ़त कथा तुरते सच मानें
दोहाः—उनहीं के बल आनिउर, लिखति कथा विस्तार ।
जो नहिं होते भक्त जग, तौ न मोर निस्तार ॥

* चौपाई *

बड़ २ ग्रन्थ लिखे मुनि ज्ञानी * नहिं कोउ मान सत्य वे ध्यानी
फिर यहि नारि कौन अब माने * कैसे कहो सत्य कर जाने
पर हरि ने मोहि बोध दिया है * निर्भय लिख हरि भक्ति लिया है
याको वहि जन पढ़ मन लाई * जो हरि भक्ती रस ले धाई
यहि कलियुग के लौग कहत हैं * नहिं अब यहि युग भक्त रहत हैं
ऐसे कहि निराश मन होई * नहिं हरि भक्ति करत है कोई
कलि दर्शन देते हरि नाहीं * और युगन की कहु न कहाहीं
याते तुम इक ग्रन्थ बनावो * जाते सबकी भरम नशावो
हौ तुम मूरख नारि अयानी * नहिं पण्डिता न चतुर सयानी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पढ़ते ग्रन्थ कहेंगे लोगा * है कछु अवशि ज्ञान कर जोगा ॥
पढ़त लिखत सब कर हित होई * तुमरो तप प्रसाद जन लोई ॥
जो चढ़ि नाव पार भय भक्ता * छाढ़ि देत सो याही जक्ता ॥

दो०—चार वेद षट शास्त्र का, बोध कराया तोहि।
पर नहिं समझति नारि हो, लिखि डारो जग बोहि ॥

* सवैया *

जब बार हजारहिं नाथ कह्यो, तब लेखन को हम मान लई ॥
पढ़िके यह ग्रन्थ हंसे सब लोग, किनारिहुं बुद्धि कहाँ लो गई ॥
यह जानि भले जन ज्ञानि सबै, पद चौथहिं के जिन धार भई।
पढ़िके गुनिके सुनिके न कोऊ, करि लेख सके हरि रूप मई ॥
यह ग्रन्थ लिखे जन वाहि भले, हरि मूरति जो निज नैन लखी।
यहि ग्रन्थके भेद लखे जन सो, जिन आतम ज्ञानहिंको परखी ॥
यह भाव व भक्ति लहै नरसो, जिन वांणि में ईश्वर आय भखी।
इसका जन आदर सोइ करें, जिन मोहनियां के बन्यो हैं सखी ॥

* चौपाई *

जहँ यमराज लगत दरबारा * है तहँ ग्रन्थ ज्ञानि कर धारा ॥
जो कछु भक्त लिखे जग लागी * हितकी बात सबै जन भागी ॥
वहि अनुसार होत निरवारा * धर्म राजहीके दरबारा ॥
जैसा भक्त लिखा फल कर्मा * वही दण्ड देते हैं धर्मा ॥
नये २ हरिजन जग होते * मारत दया धर्म वस गोते ॥
समव बिचार नियम रखि जाते * कर्म धर्म वैसे फल पाते ॥
भक्त जो वान्ध नियम जग माहीं * सो मेटन हारा कोउ नाहीं ॥
धर्म ग्रन्थ रचना है भाई * * ज्ञानी भक्त जगत हित लाई ॥

दो०—ऐसे कहि मम नाथ मुहिं, समझाये बहुबार।
लिखि डारो सब धर्मको, यहि कलियुग अनुसार ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

बहु से कवी बनावें कविता * मम गुण गान करैं बहु सभिता
प्रेम प्रीति की रस है गाई * पढ़त लिखत सबके मन भाई
जन्म सफल सबके हो जाते * कविता के गुण मम सँग गाते
यह कविता प्रसाद सब जाई * स्वर्ग बसत हैं कवि जन धाई
जहँ कहुं जन्म कर्म बस पाई * धन औधर्म भक्ति मम गाई
अविरल भक्ती ये जन पाते * पुनि मम रूपहिं आय समाते
जो कवियों की कविता वांचे * सो भी होत भक्त मम सांचे
जैसी गति मम कवि की होई * पाठ करत पावत जन सोई

दो०—है अधिकार न कविन को, नियम बनावे मोर ।
ज्ञानीको अधिकार है, बांध कर्म या छोर ॥

* चौपाई *

चाहें कर्म पुराने तोड़े * लेकर धर्म नया सब जोड़े
समय विचार नियम सब बांधे * या विधि से दुनिया सब साधे
ज्ञानी भक्त न कर विपरीता * वह सब धर्म कर्म बल जीता
ऋषियन की बांधी मर्यादा * नहिं वे तोड़ि सकत आजादा
समय समानहिं धर्म विचारें * है जो कठिन सहज करि डारें
बन्धन छूट बहुत कठिनाई * सो करि युग्ती सहज दिखाई
जो यम लोक सहत बहु सोगा * सो करि देत थोड़हीं भोगा
आधा से आधा पुनि करई * फल कर्महिं थोड़ा नर भरई

दो०—ज्ञानी को अधिकार यह, चढ़ा धर्म की धार ।
कर्म घटाय बढ़ाय पुनि, लै नैया कर पार ॥

* चौपाई *

ज्ञानी जो जग ग्रन्थ बनावे * ताकी प्रति दिवि लोक धरावे
चौदह भुवन नकल लै राखी * ज्ञानी गीत ईश भर साखी
रहे गीत हरि हृदय समानी * लोप प्रलय में भी नहिं जानी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब हरि सृष्टि जगत पुनि करई * वेदहिं सहित ज्ञान यह भरई ॥
कवियन ग्रन्थ रहत हैं लीपी * यह आकाश माहिं जा छीपी ॥
नहिं कोउ ग्रन्थ अकारथ जाई * जो सब धर्म भक्ति रस गाई ॥
धर्म हीन विनु भक्ति लिखा है * झूठ बात कोइ नकल सिखा है ॥
लै पखण्ड मत को बहु धरई * नाम बड़ाई बस जो करई ॥
ऐसो ग्रन्थ बनावन हारे * बहिगे भव सागरके धारे ॥
याको दोष होत है भारी * जमपुर की वह डगर सिधारी ॥
दो०—कुल के नाम निसान जे, लै राखत निज पास ।
याको लगै न पाप कछु, जग व्यवहारहिंआस ॥

* चौपाई *

जैसे जग व्यवहार ठनत हैं * वैसेही सब ग्रन्थ बनत हैं ॥
नहिं कछु दोष नहीं कछु धर्मा * जग व्यवहार बँधत जस कर्मा ॥
जगमें जन्म सफल वह होवे * हरि की भक्ति समय सब जोवे ॥
है अमोल इक एक घड़ीका * नहिं खोवत कोउ भक्त क्षणीका ॥
बहु किस्सा औ कहे कहानी * हरि विमुखन की यह पहिचानी ॥
हरि जनको क्षण युग सम बीते * प्रभु कर भक्ति रैन दिन चीते ॥
इनको कल परता कछु नाहीं * हरि चर्चा में समय बिताहीं ॥
एकहुँ पल खाली नहिं जावे * श्वास २ हरि नामहिं गावे ॥
दो०—नहिं करता बकवाद कहुँ, झूठी बात बनाय ।
बोले तो हरि नाम ले, नहिं हिय अन्तर जाय ॥

* चौपाई *

जाको प्रेम कृष्ण महँ होई * जप गोविन्द नाम ले सोई ॥
कृष्ण चरित्र करे सब गाना * राधा सहित धरे जन ध्याना ॥
गोपी नाथ दमोदर नामा * वृन्दावन वृषभानुहिं गामा ॥
सखन सहित हरिको तुम टेरो * ललित कथा भगवानहिं केरा ॥
लैकर नाम मुदित मन होना * गावर्धनहूँ नाम ले सोना ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब तक जागो ध्यान करो जी * बार २ हरि उरहिं धरो जी
कर जुरि विनय सुनावो नाथा * पकरो अब प्रभु आकर हाथ
सोये स्वप्न दर्श मोहिं दीजे * अपनो भक्त जान गहि लीजे

दो०—नाना विधि से भाव करि, सोउ सेज पर जाय ।
या तो तुमको स्वप्नमें, मिलें ध्यान में धाय ॥

* चौपाई *

सगुण रूप पहले आ मेलें * धरि चौविस अवतारहुँ खेलें
लीला बाल गोप बृज सङ्गा * देत दरश पीताम्बर अंगा
भाँति अनेक रूप धरि नाथा * सब अवतार दिखावत गाथा
धीरे २ प्रेम बढ़ेगा * अन्तर शुद्ध भाव उमड़ेगा
भावहिं वश रहते भगवाना * प्रेम पन्थ तजि गहो न आना
कलिपुग सुलग भक्ति यह भाई * हरि प्रसन्न सहजहिं हो जाई
प्रेम सहित हरि नित आराधो * तोहिं याहि विधि मिलिहैं माधो
जग की प्रीति हृदय से टारो * पांचो इन्द्री यहि विधि मारो

दो०—लग्न लगे उर में हरी, विसर जाय सब भोग ॥
चित चञ्चल हरि पद गला, भागी जगकी शोग ॥

* चौपाई *

जस चकोर चन्द्रहिं को देखा * वैसे जन मन हरि पद पेखा
जैसे भांग घुटी बर्तन में * त्यों मन घीसेगा सब तन में
जग की वास नास भइ तन में * प्रभु मिल गये जनहिं अब छन में
रैन दिना हरि चिन्तन करिये * भाति अनेक भाव उर धरिये
तप करि २ सब सूख शरीरा * पर हरि नहीं मिले कोउ वीरा
यामे मुख्य भाव इक होई * ताहि खोइ जन पावन कोई
सबसे कठिन भाव है प्रेमा * जामे कछुक होत नहिं नेमा
प्रेम भाव हरि वस कर लाई * गावत वेद पुराणन भाई

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—बार हजारहिं कहेउ हम, प्रेमहिं लाउ गुहार।
याके वश जगदीश बलि, आन युक्ति किय हार॥

* चौपाई *

जाके हिये राम सन प्रेमा * सो जप नाम धारि यहनेमा॥
राम चरित्र पढ़ो मन लाई * वानर सहित सखा यश गाई॥
हनुमत को प्रथमहिं ले नामा * पूरण होत जनन कर कामा॥
सुन्दर काण्ड पाठ कर जाई * उत्तर काण्ड भुसुण्डि जो गाई॥
यहि विधि पाठ करो मन लाई * जा विधि हृदय शुद्ध हो जाई॥
कोल भील हरि कीन्ह मिताई * सीता सहित राम यश गाई॥
सखा भाव राखो उर माहीं * जाते राम मिलें सब ठाहीं॥
प्रेम सहित हरि नाम उचारो * भव निधि ते प्रभु मोहिं उबारो॥
दो०—या विधि हरि यश गान करु, राम रूप धरि ध्यान॥
सीता सहित पुकार हरि, अविरल पइहो ज्ञान॥

* चौपाई *

जाहि प्रेम शंकर में होई * गौरा सहित जपो जन सोई॥
बूढ़े बैल शोभ शिव नीके * चन्द्र भाल मन मोहत ही के॥
भूतन सहित नाथ की लीला * भैरौ आदि गाव गुण शीला॥
तजि कैलाश बसत शमसाने * दीन दयाल यही विधि माने॥
अति शीघ्रहिं प्रसन्न वे होंगे * हर लेंगे भक्तन के शोगें॥
करुणा अयन करत हैं दाया * हर लेते सब भव की माया॥
सबसे अधिक दया उर भारी * शंकर जी रह जन पर धारी॥
ऐसा नाथ सुना नहिं देखा * क्षण में दया दृष्टि कर पेखा॥
दो०—धनि शंकर तुम धन्य हो, हरत जनन की पीर।
सदा प्रसन्न रहत प्रभू, गूढ़ ज्ञान मति धीर॥

* चौपाई *

जो जन भक्ति करत भगवाना * शंकर निन्दक हो जग जाना॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो नर नरक कल्प शत वहता * शिवविमुखहिं हरिभक्ति न लहता
शंकर भक्ति करत नर मानी * निन्दक विष्णु होत अभिमानी
सो न भक्ति शंकर कर पावा * लख चौरासी भरमत धावा
ब्रह्म उपाशक होत न कोई * शंकर विष्णु भक्ति इन होई
तीनों देव एक सम मानो * करत उपासन एकहिं जानो
सफल मनोरथ हो तेहि जाते * तीनहुँ देव एक हैं ताते
एक देव जन करत उपासन * होता सिद्ध मनोरथ तासन
दो०—देव तीनहूं एक हैं, भेद भाव करु काहि ।
करे उपासन जानि इक, पूर्ण मनोरथ ताहि ॥

* चौपाई *

ऐसा सोच समझ नर जानो * तीनों देव एक करि मानो
इर्षा काम तजो उर भाई * होइहैं लाभ चौथ पद जाई
तीनों देव जगत के ईशा * प्रलय सृष्टि पालन जगदीशा
जग हित लागि लिखा सब जानी * जिय न बात दूसर कछु आनी
जो माने सो फल भल पाई * नहिं माने भव सिन्धु बहाई
करुणा ऐन करत करुणा हैं * निज जन जानि दया बरुणा हैं
नारि रूप धरि कहते बानी * भक्तन हृदय वास तेहि जानी
करि विश्वास भजहु भगवाना * देखो वेद पुराण बखाना
दो०—नर से डाह जु करत जन, सो गिरता भव कूप ।
प्रभु से इर्षा करहिं नर, कसन बने दुख रूप ॥

* चौपाई *

हरि को भजत जगत हित लागी * तजि इर्षा सबसन बड़ भागी
हरि जन जग सब प्रभु मय देखा * भल प्रभुअन कर कसन परेखा
जाके उर आपन पर रहई * सो हरि कमल चरण नहिं लहई
धन सुत दार मोह मद तजई * सो जन हरि अनन्द पद भजई
निज अभिमान देह जिन छोड़ा * सो जन भव बन्धन को तोड़ा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चक अहम रहत जहँ नाहीं * तहँ प्रभु दरश देत हठ ताहीं ॥
ो त्रिदेव मह इर्षा धरई * कहु कल्याण कवन विधि करई ॥
ो०—सन्त वचन मानहु सकल, तजि इर्षा मद मोह।
तव पैहो हरि नगर को, राम मिलहिं करि छोह ॥

* चौपाई *

न्त सकल मिलि कर मुड़ पच्ची * यहि जग समझ कांच जिमि कच्ची ॥
व तक कांच चढ़े नहिं भट्टी * तब तक फूट घड़ा जिमि मट्टी ॥
ैसे नर सत संग गहैंगे * तभी वेद कर भेद लहैंगे ॥
रि भक्तों का कर जब संगा * तब यह चढ़हिं अनूपम रंगा ॥
ढ़ते वेद मरो जग माहीं * भेद एक पावोगे नाहीं ॥
सब बात अनोख नगर की * सत संगति मिलि जात डगर की ॥
हँ जा आपहिं आप रहोगे * हरी रूप निज आप लहोगे ॥
आपहिं आप जाय कर देखो * हरि पुर में यह होत परेखो ॥
ो०—जहाँ आपहीं आप है, दूजा रहा न कोय।
वा नगरी में जाय के, खोया अपना सोय ॥

* चौपाई *

आपहिं ज्ञानी ज्ञान बनत है * आपहिं ध्यानी ध्यान सनत है ॥
आपहिं दस प्रकार के नादा * आपहिं वेद बनत अरु वादा ॥
आपहिं पद्य गद्य बन जावे * आपहिं लिखनि लेख "होजावे" ॥
आपै कहे आपहीं सुनता * आपै प्रश्न उतर दे गुनता ॥
कहँ है वेद कहाँ है बानी * कहँ कुलदीपा नाम कहानी ॥
खन गइ मैं सद्गुरु देवा * आपहिं रूप आप हम लेवा ॥
ोध अखण्ड पढ़न हम गई * श्रोत अखण्ड धार हम भई ॥
न्थ बनावन नाथ कहा है * सो मैं ग्रन्थहिं रूप लहा है ॥
ो०—कहु याको अब पढ़हिं को, को समझे या भेव।
काको अब उपकार करि, को स्वामी को सेव ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

जो यह कथा पढ़े मन लाई * मूर सजीवन है यह गा
पढ़ते ताहि अमर फल खावे * आवा गमनहिं तुरत नशा
खुलिहैं हृदय कपाट किवारी * जो भव फाँस कि लगी दिवा
नियम सहित जन जो कर पाठा * कृष्ण उपासक दोहा आ
अरसठ तीरथ को फल पावे * काम धेनु सम सो हो जा
नवधा भक्ती कर फल होई * भव निधि पार भयो जन सो
गंग नहाय दान जो करई * चन्द्र ग्रहण कर फल सो भ
करि विश्वास पढ़े नर याको * चारि पदारथ करतल ता
दो०—विश्वासहिं फल देत है, लै पहुँचे हरि धाम ।
श्रद्धा जाहि न होइ कछु, भय सब निष्फल काम ॥

* चौपाई *

जब तक मनुज समझ अपने को * जग यह देख रहे सपने
मानत आप सकल गुण खानी * सकल शास्त्र भेदहिं हम जा
सो नर कबहुँ भक्ति नहिं पावे * चौरासी भरमत वह धा
जब तक पशु सम नहिं बन जावे * गुरु के चरण शरण मन ला
तब तक पाव न भक्ति हमारी * यह सब कहते वेद पुका
नीचहुँ ते नीचहुँ कर मानी * सो सब वेद भेद गति जा
मूरखहूँ से मूर्ख शिरमौरा * आपहिं मानि सन्त पद दौ
सो जन होता ज्ञान निधाना * बोध अखण्ड धार चढ़ि जा
दो०—जब तक नन्हा पनहिं को, नहिं जनले उर धारि ।
भरमत फिरता जगत में, खाते यम की मारि ॥

* चौपाई *

जब तुम गुरु को ज्ञानी मानो * निज अज्ञान पात्र भरि आ
भरे घड़ा जल नाहिं भरोगे * रीते कलस नीर भरि ला
जब नर आप पशू बनि जावे * तब सद्गुरु तेहि मनुज बना

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब रीता हो हृदय तिहारे * तब गुरु ध्यान धसत हिय जारे ॥
गुरु में दोष कबहुँ नहिं लइये * अपने हिय को पात्र बनइबे ॥
ग्रन्थ पढ़े कर दोष न मानो * श्रद्धा भक्ति आप जिय ठानो ॥
आप भलो तो सब जग भल है * अपनो उर पूरण भर मल है ॥
अपना परम धर्म रख लीजै * सद्गुरु दोष कबहुँ नहिं दीजै ॥
दो०—अपनी करणी पार है, तुम्हें उतरना आज।
अपनी नइया धर्म की, नव भक्ती ले साज ॥

* चौपाई *

सद्गुरु चाहे जैसा होवे * अपना धर्म कबहुँ नहिं खोवे ॥
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी * सद्गुरु मान सकल दुख नाशी ॥
जैसा भाव रहे उर माहीं * तैसा फल देते हरि ताहीं ॥
भाव आपनो फल जन पावे * करिके प्रेम हरी पुर धावे ॥
आप तरे सँग गुरु लै जावे * भाव प्रताप ब्रह्म पद पावे ॥
सकल गुणन के गुरु हैं खानी * भयो काह सेवक नहिं मानी ॥
अपनी करणी धर्म नशानी * दुर्वासना हिये महँ आनी ॥
पावोगे फल अपनी करणी * अब है तुम्हें जगत दुख भरणी ॥
दो०—सब अवगुण के भाँड़ जो, हैं सद्गुरू तुम्हार।
सुन्दर भाव जु आ भरा, बरतन गढ़ा कुम्हार ॥

* चौपाई *

हर खेत की मट्टी है जी * भरा विकार लेत सैते जी ॥
कूट काट चिकनो वह कीन्हों * कैसा सुन्दर घट रचि दीन्हों ॥
सुन्दर भाव भरोगे हिय में * अवगुण गुणहुँ बनेंगे जिय में ॥
अपने भावाधीन जगत है * हरि पद प्रेम किये विनसत है ॥
पूरण ब्रह्म बसत हिय माहीं * पर कोऊ जन पावत नाहीं ॥
कहो काहि अब दोषहिं दीजे * अपनी करणी को फल लीजे ॥
यह दिन रैन रहत सब संगा * पर काहू पर चढ़त न रंगा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अपनी करणी चूक गया जी * यहि भव की तो भूल लया
दो०—अपने हिय को साफ कर, पूरण ब्रह्म लखाय ।
भव बन्धन की फांस कटि, दोष काहु मत लाय ॥

* चौपाई *

यहि नगरी ठग चोर बसत हैं * साहु सन्त अरु भक्त लखत
सती जती तपसी मुनि ज्ञानी * बड़ २ भक्त बसत जहँ ध्यान
पारस पारिख लोहा लेई * सन्त भक्त निज विद्या
जो उत्साहित है हरि पद को * अवसि मिले ज्ञानी गुरु नद
यामे संशय मान न कोऊ * सेवक स्वामि योग्य हो
जैसे को तैसे प्रभु देते * यामे देर तनक नहिं
अपनो अन्तः करण बचावो * शुद्ध बुद्ध निर्मल कर
देखो प्रभु की दया बनेगी * अपनी सच्ची भक्ति
दो०—सच्चा हरि को पाइया, नकल वहा भवधार ।
सच्चे साहेब के यहाँ, लगा रहे दरबार ॥

* चौपाई *

जो कोउ सच्चा भक्त मिलेगा * वह भव सागर पार
सच्चे की नौवत झरि जाय * झूठे धोखा भव में
हरिपुर की है डगर निराली * सच्चे भक्त बसावत
जगत बड़ाई कामहिं लेके * करे भक्ति जो तन मन
सो फल पावत है यहि जगमें * नहिं आतम सुख है यहि
धन सुत लागि करे नर भक्ती * सो वञ्चित हो जा हरि
परम लाभ जो मुक्ति कहावे * सो नर रतन याहि नहिं
दास अनन्य होत वह हरि के * दरश ललाइत रह दृग
दो०—सो बड़ भागी सुजन है, जगत काम तजि देइ ।
केवल हरि दर्शनहिं को, मन आसा धरि लेइ ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

ऐसे जन की नाव किनारे * जाय लगी भव निधि के पारे ॥
जो कोऊ जन भक्ति लहत है * देखि उसे नर और डहत है ॥
सो नर मल का कीड़ा होई * सदा सर्वदा दुख को ढोई ॥
बने तु भक्त सहायक होना * देखि कबहुँ नहिं जन को रोना ॥
विघ्न भक्ति में जो नर करते * सो सर्वदा नरक दुख भरते ॥
जो कोउ भक्ति करत नहिं भाई * झूठे दुनिया देत सुनाई ॥
सो सौ जन्म नरक महँ परिहैं * शूकर कूकर तन वह धरिहैं ॥
जनको अनुभव होता नाहीं * झूठे कहत फिरत सब ठाहीं ॥

दो०—पति वंचक कर दोष तेहि, लागत पाप महान।
सो नर नरकहिं जात है, पुनि विधवा पन मान ॥

* चौपाई *

स्त्री नर हो क्या नारी भाई * बाल पने विधवा पन पाई ॥
पुरुषहुँ नारी का तन पाके * भोग विधव पन जग महँ जाके ॥
साहिब नहिं कहुँ दूर रहत हैं * भक्ती बल नर उनहिं लहत हैं ॥
करो भक्ति प्रभु आय मिलेंगे * नहिं धोखा दे काम चलेंगे ॥
दीनानाथ रहत सब तन में * सत्य वचन सुख पावत मनमें ॥
हरी मिलन सुख अनुपम भाई * सत्य प्रताप दरश जन पाई ॥
मिथ्यावादी हरि न सुहाहीं * देते कठिन दुःख वे ताहीं ॥
यज्ञादिक व्रत दान आदि में * बोल असत्यहि तप जपादि में ॥

दो०—सो पामर अति सहत दुख, महा पाप शिर मौर ॥
याते समझ विचार कर, सत्य बोल नहिं और ॥

* चौपाई *

विप्र कहुं नारि धर्म हम गाई * जा विधि जग व्यवहार चलाई ॥
आदिहुं से नारी कर धर्मा * कर सिंगार षोड़स यह कर्मा ॥
भूषण हीन विधव पन चीन्हा * स्वभागिनि सिंगार विधि दीन्हा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अङ्गहिं अङ्ग भूषण को पहिने * छिपि जाता जु लाज कर वहि
जो नर चाहत पर तिय देखा * सो भूषण कर करत परेखा
पाप दृष्टि भूषण पर जाहीं * सति कर धर्म वचत यहि माहं
जो कछु अवगुण होत वदन में * वह भी छिपि जाता भूषन
अंगहिं अंग वन्धन मुनि डारा * तीय धर्म यहि भांति विचा
दो०—भूषण पहिने अंग की, रगड़ जाति नस जान ।
सति कर धर्म वचाइ अत्र, वेद कहें सत मान ॥

* चौपाई *

रगड़े नस वुद्धी हो सुन्दर * या विधि धर्महिं रचा पुरन्
नारि भाव चञ्चल की खानी * चञ्चलता रुक धर्म वखान
पहिरे भूषण अंग न देखे * रमनी होति मगन यहि लेखे
करत सिंगार वीत कछु काला * गृह कारजहिं सम्हारति हा
कछुक समय गृह कारज लागी * पति सेवा है पुनि वड़ भा
अशुचि सदा नारी उर रहहीं * जाको जस सुभाव सो गहहीं
याते भूषण अँग जो पहिने * वाधक प्रेत होत नहिं वहि
भूषण स्वर्ण जाहि अंग होई * ताको प्रेत छुवत नहिं सो
दो०—सोना में शंकर वसत, जानत हैं सव कोय ।
पहिने भूषण अंगमें, तन निर्मल मन होय ॥

* चौपाई *

कूपहुं जलसे कर असनाना * गंग स्नान फल वेद वखा
सोना रहे जासु तन तनको * सो पवित्र करि देत वदन
मूंगा स्वर्ण पहिन इक संगा * सो फल होत जमुन जल
नव ग्रहादि रहते हैं शान्ती * निर्मल मन वुधि वढ़ती
नर पवित्र रह जपहिं तपन से * नारी निर्मल आभूषन
द्रव्य न रहि सक घरके माहीं * भूषण अवशि रहत सव
शंकट विकटहुँ देत नशाई * जा घर भूषण रहत

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ड़े यतन मुनि धर्म बनाई * नारिन हित यह बात बताई ॥
ो०—सो सब धर्म विगत भये, क्या नर हो क्या नारि ॥
दोनों लोक गँवाय कर, रतन दिया भव डारि ॥

* चौपाई *

र्दा अंग रहत है खाली * केवल वस्त्र रहत तन डाली ॥
े मुरदा को रूप बनाई * नारी चली जात मग भाई ॥
ोग कहत यह चाल नवीना * नारिन कर दुख भयउ विहीना ॥
षण पहिने नारि गँवारी * विनु भूषण भल सोभति नारी ॥
न अरु धर्म गया यहि भांती * कैसे कलियुग चाल सुहाती ॥
गे नर पीछे चल नारी * गणिकन के सम रूपहुं धारी ॥
ति मगन मन सुख बड़ भारी * मो सम धन्य जगत् नहिं नारी ॥
ज्जा चादर घरहिं उतारी * सती धर्म मारगहिं लुटारी ॥
०—काकुल काढ़े जाति चलि, शिर भी दिया उघार।
मनहु स्वर्ग सुख लूटती, नर्कहुँ पर न उधार।

* चौपाई *

दा सर्वदा नर्कहिं रहिहैं * नहीं स्वर्ग सुखको कहुँ लहिहैं ॥
ाको जो कोइ देत तिलाँजुलि * सो भी भुगत नरक जा मंजुलि ॥
न अरु सति कर धर्म गँवाई * कैसी सुन्दर देख लुगाई ॥
दा रक्षक रखत न तन में * है सफियाना चाल जगन में ॥
र्म आप दोउ हाथ लुटावे * कलि महराज बधाव बजावे ॥
छु हँसते कछु रोव मुहनिया * यह कलियुग की चाल सुहनिया ॥
वत यह गुनिके मन मोहन * सति कर धर्म जात यहि गोहन ॥
त नाथ कुलटा जो नारी * है सिंगार इनहिं कर भारी ॥
हि कलियुग महराजहुँ राजा * कुलटन केर बहार विराजा ॥
रिन हित लिखवावत नाथा * सति कर धर्म लगे कछु हाथा ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो०—पढ़ि गुनिके जो नारि, सति कर धर्म विचार चलि ।
ऋषि मर्य्यादहिं धारि, छोड़ नवीनी चाल यह ॥

* चौपाई *

सती नारि भारत महँ होतीं * विनसत धर्म हाथ निज खोतीं
यह ऋषियन तप तेजकि हेती * धरिणी रही धर्म की खेती
सो पामर विनशे विन हेती * सति कर धर्म गँवावत सेती
जबसे विधि यह सृष्टि बनाई * ऋषियन की यहँ बजत बधाई
भारत जन्म भूमि ऋषियन की * रह तप तेज यहां सतियन की
सो अब धर लिय चाल विदेशी * खोकर निज मर्याद स्वदेशी
अरु तजि दिये धर्म की चालीं * सति कर कर्म गँवावत हालीं
तुमसे कहि सौ बार बुझाया * सति कर चाल बोध समुझाया
धरि कर ऋषि मुनियन कर भेषा * तुहिं बहुबार दिये उपदेशा
लिखो ग्रन्थ तुम सति धर्मों की * जाते समझें निज कर्मों को
दो०—बहते २ बह गये, यहि भारत के लोग ।
बचते २ रहहिं बचि, यहि पामरि भव शोग ॥

* चौपाई *

रूपवती युवती जग सोई * जाउर लग्न राम कर होई
सुन्दर नारि कहावति सोहै * सती धर्म निज तनमन मोहै
निज पतिको जो मानुष मानी * उत्तम सती धर्म नहिं जानी
सती धर्म हरि भक्ति समाना * चौथे पद पधार तिन जाना
पति परमेश्वर एकहि मानो * ज्ञान धार शक्ती सम जानो
यहि कलियुग की रीति अनोखी * सती तेज शक्ती बल सोई
पर नारी पुरुषहिं लगि प्यारी * नारी पर पुरुषन कर यारी
पुरुष जुलेइ धरम उर धारी * तब पतिव्रतहिं निवाहति नारी
दो०—पुरुष जुआपन धर्म को, पालन कर भर पूर ।
देखो नारी होति कस, जस युवती हो सूर ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

नारी धर्म यही है भारी * भूषण अँग अंगन महँ धारी ॥
नारि अंग भूषण से बांधी * मानिय धर्म रखत है साधी ॥
यथा शक्ति पति घर में होई * तेहि स्वरूप भूषण तन सोई ॥
ताको भेद समुझ सब भाई * धर्म त्यागि घर बेचु न जाई ॥
ऐसा नहिं यह धर्म बतावे * भूषण लगि पति प्रेम नशावे ॥
यह शक्ती पर निर्भर भाई * जैसा धर्म धुरन्धर गाई ॥
काम अग्नि दग्धन के कारण * यह सब भूषण अँगमें धारण ॥
जो तन मन सो निर्मल नारी * का करिहैं तन भूषण धारी ॥
यह तो सति बल धर्म बचाई * काम अग्निको देति नशाई ॥
अपने तन मन के वे लाजा * रखति छिपाय सतिहिंके काजा ॥

दो०—नहिं सब भूषण योग हैं, यहि जगके सब लोग।
नहिं नारी इक रंग सब, कर दुख सुख जग भोग ॥

* चौपाई *

सब जन्म कर्म अनुसारा * धन औ धर्म मनुज सब धारा ॥
सबोंने सब धर्म बखाना * जो जस हो तस ले रस साना ॥
ऐसा नहिं यह धर्म बतावे * जो मन आवे वहि कर जावे ॥
यह मर्यादा वेद बताई * शक्तीके अनुसारहिं गाई ॥
जितना धर्म जाहि बनि आवे * सो बड़ भागी सुजन कहावे ॥
जहिं कोउ ऐसा जन जनमेगा * सारा धर्म कर्म निवहेगा ॥
जासो जो निवहेगा भाई * सोई धर्म धुरीण बताई ॥
जाको मनजो धर्म रुचि जावे * सो पाले वहि वेद बतावे ॥
कोइ तपसी बन होत भिखारी * कोइ जप तप सत धर्महिं धारी ॥
सभी २ धर्महिं वेद बताया * जेहि मन लाग सुजन सोइभाया ॥

दो०—कोइ हरि भक्ती धार कर, कोइ सत धर्म निवाह।
कोइ ब्रह्मचारी जगत, कोइ कर लेत विवाह ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

जेते जग हरि धर्म बताई * एक अलख पद पावन गाई
कर्म धर्म जेते जग माहीं * एक ईश दर्शन फल माहीं
सब करमन कर फल यह भाई * हरि पद प्रेम वेद सब गाई
हरि मिलने हित तप जन साधा * अन्तहुं जाइ कटत सब बाधा
सो धिग जीव जन्म जग पाई * हरि तजि और धर्म लपटाई
सो धिक धर्म जगत महँ जानी * जामें हरि भक्ती नहिं सानी
जो जन हरि पद प्रेम किया है * सो सुकृती सब धर्म लिया है
उनसे कोइ न धर्म बचा है * जो हरि भक्त सो भक्त सचा है
दो०—चार वेद षट शास्त्र जे, धर्महिं करत बखान ।
एक एक वह कर लिया, जो पद चौथ समान ॥

* चौपाई *

गलित नगर जो पहुंचा धाई * सो सब धर्म जीत लिय भाई
जितने जग सुन्दर गुण गाई * सो सब भक्त हृदय बसजाई
जैसे नदियाँ भादो धाई * मिलें समुद्र आप सो जाई
वैसे शुभ गुण जेते जगमें * भक्त मिलत परमारथ मग में
सो भावी वश आय मिलत हैं * भक्तन उर सब आप बसत हैं
नहिं हरि भक्त चाह है इनकी * राम लग्न लागी मन जिनकी
जेते अवगुण हैं जगमाहीं * भक्तन उर से आप भगाहीं
जैसे दव लागी वन माहीं * पशु पक्षी तजिके भगि जाहीं
दो०—प्रेम विरह की अग्नि का, उर में लाग्यो बान ।
नव नगरी के चोर सब, भागि जरे शमसान ॥

* चौपाई *

चोर रहित भइ यह दस नगरी * फिरत सुजन तिहुं लोक कि डगरी
नहिं भय शंका है काहू की * है पहरा अब दस साहू की
नौधा भक्ती ज्ञान कहानी * यह पहरा दस साहु कि मानी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भक्तन करत सदा रखवारी * हरि कर रूप दसहुं लिय धारी ॥
का करिहैं जग विषय वयारी * जन पर रहती नाथ दया री ॥
हरि भक्ती जो जन करि पाई * सो अति धन्य वेद सब गाई ॥
परम अभागी सब नर जानो * भक्ती तजि जिन जग सुख मानो ॥
जग हित लागि नाथ यह गायो * नहिं कोउ सत्य समझि जग धायो ॥
दो०—कोउ इक होइहैं भक्त प्रभु, समझ सत्य यश गाय।
सो भवसागर पार अब, भक्ति नाव चढ़ि जाय ॥

* चौपाई *

दसम नाद कर करत बखानी * जो दस विधि सब भाव बतानी ॥
कोऊ जग कारजहिं बतावे * कोऊ निर्मल बुधि ले धावे ॥
बारह खड़ी कोउ गुण जाने * जा विधि सृष्टि सृजन मन आने ॥
कोउ भूमि धन गड़ा दिखावे * जगत चिकित्सा रोग बतावे ॥
कोउ लै कर उड़ जाय अकाशा * इन्द्रासन जहँ देव निवासा ॥
कोउ हरि पुर की डगर निराली * ले पहुँचाव पास प्रभु हाली ॥
बीच सिद्धियन गुण जो होता * नहिं कहि सकत वेदकर श्रोता ॥
इनकर गुण विरले कोउ पावा * जो पण्डित विद्या बल धावा ॥
दो०—बाहर चारों वेद का, पढ़ लिय जिन सब भेद।
पुनि भीतर धरि ध्यान जो, हरि पुर गय बिनु खेद ॥

* चौपाई *

सो जानत गुण है सिद्धी का * जगत लाभ कछु हो ऋद्धी का ॥
हो विद्या सागर गुण नागर * पुनि हरि भक्ति करे गुण आगर ॥
कछु बाहर कछु भीतर जाकर * पढ़ि विद्या भक्ती बल पाकर ॥
ऐसे जन होते जो ज्ञानी * परम लाभ वे दें जग ध्यानी ॥
मूरख पढ़न न विद्या जानी * भया भक्त गुण सिद्धि न आनी ॥
परमारथ फल मुक्ती पानी * पर सिधियन कछु गुण नहिं जानी ॥
चाहिय पण्डित चतुर सयाना * हरि नगरी जो कीन्ह पयाना ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वह सिधियन सब गुणले पलटे * जग महँ आय काम बहु उलटे ।
दो०—पूरण ब्रह्म जु अलख है, यह चिन्तत दिन रात ।
जो विद्या पढ़ जगत में, सो विसराया तात ॥

* चौपाई *

कहु कैसे अब जग भल होई * ब्रह्म ज्ञान पढ़ता नहिं कोई ।
जो पण्डित जग होत सयाने * ब्रह्म ज्ञान तजि भक्ति अयाने ।
जो अनपढ़ जन मोहिं अराधे * सो बहु जगत काम नहिं साधे ।
ब्रह्म ज्ञान नर पावत सोई * सिधियन के गुण जान न कोई ।
जग कारज सिधियन से लेवे * ब्रह्म ज्ञान मम पद को देवे ।
पण्डित हो मम भक्ती करई * सो सिधियन ले सब गुण धरई ।
जो अनपढ़ हैं भक्त हमारे * सो पर लौकिक काज सँवारे ।
जग उपकार करे जन थोड़ी * वह सिधियन से रह मुख मोड़ी ।
विन विद्या गुण जानत नाहीं * कैसे जगत काम मैं लाहीं ।
पण्डित होत परीक्षित बानी * तव सब काम जगत कर आनी ।
दो०—सिधियन में गुण होत हैं, करैं दिवस की रात ।
चाहैं बिनु सूरज उगे, दिवस करे परभात ॥

* चौपाई *

ऊपर की विद्या जिन जाना * तिन सिद्धी गुण लाभ उठाना ।
हरि मिलने के वादहिं याको * पुनि दस नाद साध जनताको ।
मुर्दा से नर जीवित करिहैं * रोगी को अरोग्य सुख भरिहैं ।
जब चाहे तब करहिं पयाना * यहि जग से हरि लोक सयाना ।
विद्या का बल लागत यामे * बारह खड़ी समुझ जन तामे ।
बारह अक्षर में गुण भारी * ब्रह्मा सृष्टि रचत बल सारी ।
सब अक्षर ॐकार समानी * यामे रमा रूप दर्शानी ।
जीव ईश से जब विलगयऊ * बारह खड़ी रूप तब लयऊ ।
जीव तीसरे पद जब जाई * तब यह ओंकार को पाई ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ऐसा नहिं जनमें जग काऊ * सबहिं सिद्धि गुण यहि जग लाऊ॥

दो०—यहि कलियुग के रंग में, गये रंग सब लोग।
वीर धीर सम कार्य करि, कोउ तरता भव शोग॥

* चौपाई *

पर उपकार लागि हिय धारे * निज स्वारथ जग हीं में डारे॥
जतन ज्ञान होने पर करिये * तब सिधियन कर गुण उर धरिये॥
निज स्वारथ नहिं काज सरेगा * वेद मंत्र कोउ उर न धरेगा॥
जो जन निर्मल मन है भाई * ता उर सिधियन गुण बस जाई॥
ज्ञानी का मन निर्मल होता * कहते वेद और जे श्रोता॥
याते ज्ञानी यतन करेगा * सो सब सिधियन गुणहिं भरेगा॥
जगहित नाथ भेद यह खोला * कोउ इक हो ज्ञानी गुण तोला॥
चाहे ज्ञानी यतन करेरी * जगहित लगि सिधियन गुण लेरी॥

दो०—संकठ आकर परत जब, इनसे लेहु सहाय।
विनु संकठ नहिं काम ले, धरदे इनहिं बचाय॥

* चौपाई *

अनहद नाद सुने जन सोई * जाको हरिपुर जाना होई॥
ऐसा नर कोउ सुनता नाहीं * कोटि जतन हारा करि ताहीं॥
यह अनहद सबके उर बसता * राम लग्न विन नहिं जिय धसता॥
कई जन्म हरि सेवा कीन्हा * तेहि जन नाथ यही फल दीन्हा॥
क्या नर हो क्या नारी जगमें * बहुत जन्म सेवा किय मगमें॥
ताको यह दस नाद सुनाई * सुनतहिं भव बन्धन कटिजाई॥
जा दिन से दस शब्द सुनेगा * वर्ष आठ वह फलहिं लहेगा॥
ऐसा नहिं कोउ जिय में आने * सुनते नाद मुक्ति भइ माने॥

दो०—नाद सुने नहिं मुक्ति हो, हरि पुर डगर बताय।
हरिजन नौवति सुनत हैं, आगम भक्त जनाय॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

भक्तन को यह शब्द सुनावे * तुमको हरि निज पास बुलावे ॥
करि अभ्यासहिं ध्यान जमावो * पुनि हरि रूपहिं जाइ समावो ॥
ऐसा सुखमय खबर सुनावे * हरिपुर की यह डगर बतावे ॥
यहि कलियुग के लोग अनारी * शब्दहिं में जिन मुक्ति बतारी ॥
कहँ हैं शब्द कहाँ हरि देशा * बीचहिं में पकड़त हरि वेषा ॥
बड़ी दूर जाना है तुमके * क्यों मन अटक रहा है घुमके ॥
हरि से लगन लगाते चलना * बीचहिं मगसे कभी न टलना ॥
धोखा खाकर मग गिर जइहो * पुनर्जन्म ले प्रभु पद पइहो ॥
दो०—याते होश सम्हारिके, पूछहु सन्त सुजान ।
सत्य कहति तुहिं हित करी, मम वचनो को मान ॥

* चौपाई *

जग हित लागि नाथ लिखि डारा * कुलदीपा शिर नहिं कछु भारा ॥
मूरख यह मिथ्या करि माने * पुरुष लिखा कोउ नारि बहाने ॥
बड़े २ ऋषि वेद बनाये * इतना खोलि नहीं समुझाये ॥
कहो कौन अब जानत याको * नारि बहाने को लिख जाको ॥
कौन पुरुष ऐसा जग अन्धा * अपनो नाम नारिमें बन्धा ॥
को जग ऐसा जन्मा भाई * दे धोखा निज नाम नशाई ॥
अपनी मान बड़ाई खोके * लेता नाम नारि का धोके ॥
सारे जग को धोका देगा * पतित आपनो नाम लहेगा ॥
ऐसा ग्रन्थ बनावन हारा * है कोउ अलख निहारन वारा ॥
सो अब ऐसा झूठ कहेगा * भव बन्धन को जाय लहेगा ॥
दो०—ऐसा नर सोसत युग, नरक करेगा वास ।
पुनि वह गर्भहिं आवसे, करि शुभ कर्महिं नाश ॥

* चौपाई *

अज्ञानी को ज्ञानी कहता * लोक बड़ाई जग यह लहता ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो नर नर्कहिं जाय गिरेगा * शूकर कूकर उदर परेगा ॥
ऐसा कठिन दुःख सो सहई * है नहिं ज्ञानि २ जग कहई ॥
ज्ञानी है अविगति धरि देहा * क्यों वह अज रूप हरि लेहा ॥
वा सम पतित और नहिं कोई * जो कहता हम हरि सम होई ॥
कथा हरी कोइ पढ़ता नाहीं * झूठ कलंक लगावत ताहीं ॥
शंका करि निज धर्म गँवाई * बनी बात सो भी विनशाई ॥
जग हित लागि लिखा प्रभु तहीं * जाते शंका समहिं नशाहीं ॥
दृ०—व्यास बनाई भागवत, कहत लोग यह बात।
कोई वणिक लिख्यो इसे, व्यास नाम धरि तात ॥
(दक

* चौपाई *

ऐसा कह जन जो अभिमानी * गुण श्री मद् भागवत न जानी ॥
हरि यश से नर विमुख भये हैं * दोउ लोक निज हाथ दये हैं ॥
परम अभागी ये नर जानो * हरि पद विमुखहिं नर्क समानो ॥
आप गये पुनि और डुं घालें * ये जन सदा नरक महँ हालें ॥
ऐसि गुप्त यह ज्ञान कहानी * बेदहुं जाको रखी छिपानी ॥
सो प्रगटत जन ऐसा को है * ऐसा ज्ञान कहाँ से लो है ॥
ज्ञान गीत पद पदहिं लिखी है * कौन वेद की चाल सिखी है ॥
नहिं सतयुग त्रेता के माहीं * द्वापरहूँ कोउ ऋषि न लिखाहीं ॥
ऐसा है यह ग्रन्थ अनोखा * है कोउ लिखा ज्ञानका चोखा ॥
ऐसा नहिं कोउ करत विचारा * झूठे शंक फूटि चलि धारा ॥
दो०—हैं नास्तिक ये आपहीं, और बनावत जाहिं।
अपने गोता खा रहे, और बोर धर वाहिं ॥

* चौपाई *

दुष्टों की यह चाल चली है * सदा सर्वदा भवहिं गली है ॥
ये चाहत हरि सुयश मिटावें * प्रभु कर नाम व मान घटावें ॥
पर ये भक्त हमारे जग में * परमारथ मग घेरत डग में ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नास्तिक की नहिं चलत चलाई * भक्त कुमति सब देत गलाई ॥
भक्ति अग्नि सब देत जलाई * नास्तिक मति वरिजात बलाई ॥
आप भक्त सब भक्ती करते * औ कुतर्क सब जन उर वरते ॥
मेरे जन की यही चलन है * सुन्दर मग हरि भक्ति गलन है ॥
पर निन्दा पर मानहिं हरई * वेद पुराण दोष जो धरई ।
दो०—इनके उर में सदा से, इरखा जलनि जलाय ।
मम पद विमुख कराइ के, पुनि नर्कहिं ले जाय ॥

* चौपाई *

ऐसे नर कहँ करिय न काला * जो कछु कह थोड़े करिजाना ।
हरि नगरी के जावन हारे * होत स्वभावहिं ते गुण धारे ।
ऐसे शुद्ध स्वभाव सुजन को * हाहहैं ग्रन्थ हरन जन मनको ।
जो कोउ अलख नगर देखा है * अविगति निज नैनन पेखा है ।
वे समझेंगे हरि मुख बानी * बोध अखण्ड ज्ञान जिन जानी ।
बड़ २ जन तन जगहिं धरेंगे * हैं भी पुनि आगमन करेंगे ।
पढत कथा समझेंगे नाथा * निज भक्ती बल पकड़े हाथा ।
बड़ भागी जन याहि लहेंगे * भाव भक्ति की राह गहेंगे ।
दो०—राम नाम अंकितहिं करि, भक्त देख कहुं जाय ।
आदर करता तासुकर, नाइ चरण शिर धाय ॥

* चौपाई *

हरि की कथा सुनत जन जाके * नीचहुं के होता गृह पाके ।
अभिमानी जनमान करत हैं * कथा हरी सुनि दूर परत हैं ।
को सुनता इनके मुख बानी * क्या मैं नहिं करि सकत बखानी ।
मोते अधिकहिं क्या ये जानें * मैं क्यों कर नहिं आप बखानें ।
ऐसे जेहैं नर अरु नारी * भव बन्धन तिनका हम डारी ।
मेरी कथा लोक महँ होवे * शंकर हनुमत सुनत न गोवे ।
तैतिस कोटि देव उठि धावें * सुनत कथा उर भाव बढावें ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो नर जग महँ बसत अभागी * सुन्दर भक्ति लगन नहिं लागी ॥

दो०—नाच तमाशे गान में, राम भक्ति जहँ खेल।
तहँ आवत सब देव हैं, हनुमत शंकर मेल ॥

* चौपाई *

हरि की कथा सुनत नित आई * मानुष कर सब भेष बनाई ॥
लीला राम कंस लीला है * रुक्मिणि शिसुपालहुं खीला है ॥
सुन्दर नाटक खेल बनाई * तहं देवन सब पहुंचत धाई ॥
गोपी ग्वाल रास की लीला * राधा ललिता चन्द्र सुशीला ॥
श्रीदामादिक और सखी हैं * मीरा भक्त जु मोहि लाखी हैं ॥
ऐसे भक्तन की यश किरती * जो गा रहे वेद औ स्मृती ॥
तहँ २ ब्रह्म विष्णु भी आकर * लीला खेल देख वहँ जाकर ॥
यहि कलियुग दुष्टहुं जन जाकर * विघ्न करत खेलहिं में आकर ॥
पर नारी पर संपति हरहीं * ये खल सब रौरौ महँ परहीं ॥
हरि के सुजस विघ्न ये हैंरी * चन्द्रहुँ चौथ कलंक गहैंरी ॥

दो०—जब तक जीवित जगत महँ, सहत दुसह दुख पीर।
मरि कर जइहैं यम नगर, यम राजहिं सँग भीर ॥

* चौपाई *

ऋषियों ने मम खेल बनाई * जाते जग हरि पद अरुझाई ॥
गोपिहुंने यह खेल किया हैं * सो मम रूपहिं आप लिया हैं ॥
वृन्दावन हम रास रचाया * वृज वनितन कर मान बढ़ाया ॥
जब हम गर्व उनहिं उर देखा * अन्तर ध्यान रूप हम पेखा ॥
हो व्याकुल खोजति बन माहीं * पूछति पेड़ पलौ सब घाहीं ॥
तूं कहुँ देखा जसुदा लाला * जिन अस कीन्ह हमारी हाला ॥
खोजति खोजति बनहिं थकानी * नहिं पाया जब मुहिं मन मानी ॥
तब पुनि खेल करन सब लागीं * धरि मम रूप रहीं बड़ भागी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—कोउ नन्दहिं जसुदा बनी, कोउ भृषभानुहिं जान ।
कोउ श्री कृष्ण रूप धरि, कह राधा तजु मान ॥

* चौपाई *

खेलत खेल भई अविनाशी * या विधि जगत काम सब नासी ॥
मन निर्मल ममता गइ छूटी * तब सब आय अलख सन जूटी ।
खुल गइ हृदय कपाट किवारी * लगी भक्ति चहुँ ओर दवारी ।
अहंकार जर अरु मद मोहा * तब मैं मिलेउ उनहिं करि छोहा ।
खेलत खेल भई मम रूपा * अमर नगर की हो सब भूपा ।
खेलहिं में हम जगत बनाई * खेलहिं में भव बन्ध नशाई ।
यह दुनिया मम खेलहिं हैरी * खेलहिं में दुख होवै छैरी ।
त्रेता द्वापर खेल किया है * प्रेम भक्ति गुरु ज्ञान लिया है ॥
यह सब खेल मिटा कलि भाई * जुआ जुआरी परधन लाई ।
खेल बहाने पर धन हारी * कौतुक ही में हर पर नारी ॥

सो०—खेलहिं की धर आड़, पर नारी धन हरत हैं ।
टूट्यो धर्म किवाड़, पामर नर भर मार में ॥

* चौपाई *

ये नास्तिक दुष्टों के मारे * सन्त सुजन सुमती गय हारे ।
लखि नहिं परत कौन है सन्ता * को है दुष्ट धर्म को हन्ता ।
कल बल छल करि साधू भेषा * देखत फिरत जगत अरु देशा ।
जहँ देखे जस तहं तस करते * हैं नास्तिक भक्ती पर धरते ।
नास्तिकहुं आस्तिक बनि जावें * कबहूँ मौन रूप धरि धावें ।
कोउ इक होता भक्त हमारे * इन दुष्टन सँग लखि नहिं जारे ।
यहि के लिय यह ग्रन्थ बना है * पढ़ि गुनिके कोउ जनहिं जना है ।
खोलि २ भक्ती हरि गाई * ज्ञान गुरू जिमि अलख लखाई ।
समझ बूझ सब सुजन पढ़ेंगे * चौथे पद पर जाय मढ़ेंगे ।
हैं ये बातें परम अमोली * नहिं कोउ सुजन लिखा जगखोली ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—पढ़ते २ यहि जगत, चार वेद षट शास्त्र ।
पाया भेद न वेद कर, नारि अज्ञ लिखि डार ॥

* चौपाई *

लिखा जाहि तेहि मानत नाहीं * जो न लिखा मानत अब ताहीं ॥
है कलियुग महिमा बड़ि भारी * सत्य असत्य न कोउ उर धारी ॥
सत्यहिं को तो असत् कहेंगे * मिथ्या वादी मान लहेंगे ॥
होय निरादर साधू सन्ता * है यह कली धर्म का हन्ता ॥
दुष्ट जनों की बजत बधाई * सन्तन का जग नाम नशाई ॥
मूरख हीं को पण्डित माने * जो पण्डित जग कोउ न जाने ॥
चेरि चमारिन ले घर राखें * सती नारि देखत जन माखें ॥
पूजें पाव तेलि कलवारा * ब्राह्मण का न करत इतवारा ॥
कलियुग में हरि भक्ति न मानी * पूजहिं प्रेत सकल जग जानी ॥
देव पितर की पूजा छोड़ी * राम भक्ति महिमा जग थोड़ी ॥

दो०—पढ़िहैं हास्य कहानि को, राम भक्ति विनसाय ॥
खेल करैं नर भांड़ की, हरि लीला न सुहाय ॥

* चौपाई *

सत अरु धर्म गया यहि जग से * कलियुग राज राज भय जबसे ॥
जब अइहैं कलियुग कर अन्ता * पामर कर प्रभु होइहैं हन्ता ॥
अभि से धर्म कर्म की हानी * बढ़त अधर्म जाय मन मानी ॥
दुष्टन की मर्याद रहेगी * धन व धाम जग सुजस लहेगी ॥
दिन दूना धर्मी दुख पइहैं * धन सुत विद्या सकल नशइहैं ॥
कोउ इक होइ धर्म नर धीरा * निर्वहिहैं भक्ती हरि बीरा ॥
ताकर भजन सफल हरि करिहैं * अति शीघ्रहिं भव पार उतरिहैं ॥
दिन २ भजन सहल होवेगा * हरि दर्शन जन शीघ्र लहेगा ॥
बड़ २ देव मनुज तन धारी * यहि कलियुग की लेहिं बहारी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—बीच २ हरि जन्म धरि, लेइ मनुज अवतार ।
करिहैं जगका काम बहु, दुष्टन को नित मार ॥

* चौपाई *

पर यह गुप्त होत अवतारा * आगे हो कोउ लख न निहारा ॥
कितने बीत गये भव भारा * हरि अब भी लियहैं अवतारा ॥
है परसिद्ध जगत सब जानी * वेद शास्त्र जेहि करत बखानी ॥
अब कलंकि होइहैं अवतारा * जामें सारे जगत उधारा ॥
अब भी हरि नर मूरति धारी * जान भक्त जेहि देत जनारी ॥
काम करत अति जगके हैंरी * भक्तन के दुख करते छैरी ॥
ज्ञान स्वरूप भक्त उर धारे * रचि डारते बोध सब सारे ॥
पर नहिं मान भक्ति रस खानी * हरि जो भक्त गुणहिं रहसानी ॥
दो०—भक्तन के उर बास है, रहत सदा हरि आय ॥
ज्ञान दीप हरि बारिके, वेद गीत प्रभु गाय ।

* चौपाई *

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं * विद्या युत हरि भक्ति सधाहीं ॥
वे तो सिधियन के गुण लेते * सारा जगत विपति सब खेते ॥
अब मूरख हरि भक्ति करत हैं * विद्या पढ़ि पण्डित भूलत हैं ॥
विद्या पढ़त धर्म से उलटा * खोय सनातन शब्दहिं पलटा ॥
उन सब युग मुनि ज्ञान पढ़ाते * हरि भक्ती गुरु ज्ञान सिखाते ॥
धर्म सनातन विद्या जाने * जामे अलख चरण पहिचाने ॥
अब तो गुरु भय जग में ऐसे * पेट भरे निज धर्महिं छैसे ॥
नहिं विश्वास धर्म का करते * नहिं गुरु अलख चरण शिर धरते ॥
दो०—पूर्व जन्म का कर्म ले, कोउ इक जनमत आय ।
विद्याहीनहुं होय जन, भक्ति करत मम धाय ॥

* चौपाई *

भक्ती के बल पावत मोको * हिय अन्तर विद्या बल थोको ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—जब तक चाहो यहि जगत, जीते रहु भरपूर।
नहिं वे मरने देति हैं, जो चाहो सिख लूर॥

* चौपाई *

चाहे बिन काया हो जावे * सुन्दर तन पर देह समावे॥
चाहे महल अटारि बनावो * चाह भूमि के भीतर धावो॥
इनकी शक्ती अपरम्पारा * नहिं कह सकतीं गुण जो सारा॥
साधन करि जन वस करि पावे * बिन साधन दूरहिं दुर धावे॥
कोउ इक पावत बिन साधन के * हरि देखत जब जग काजन के॥
भेजत सिद्धि भक्त के पासा * वे वरि आइ करत हिय वासा॥
भक्तहिं गति चलती तब नाहीं * जो चाहैं सो सब कर जाहीं॥
लेइ स्वर्ग यमपुर को धावें * चौदह भुवन कि राह बतावें॥
दो०—पर है सब अब उनहिं के, नहिं भक्तन मन होय।
हरि आज्ञा जस पावतीं, तस करि डालति सोय॥

* चौपाई *

जो जन तप करिके वश करते * तब आधीन भक्त ये धरते॥
जब चाहैं तब सिद्धि बुलावैं * जिय चाहते उधर डुलावैं॥
रहतीं सदा भक्त वश होके * हरि जन को आज्ञा नित ढोके॥
वश करने का इतनो अन्तर * स्वाभाविक चलि आव निरन्तर॥
जन अभिलाष पुरावत नाथा * है सब बल सिद्धियन के हाथा॥
जैसो भावहिं भक्त करेगा * वैसो ही हरि आस पुरेगा॥
याको भेद वही जन जाने * निज नैनन देखा सो माने॥
बहुत भक्त यहि देख चुके हैं * देखत अब यहि भाव छके हैं॥
दो०—होइहैं बहु जन याहि जग, हरि आगमन जनाव।
भक्तनहीं के काज लगि, प्रभु यह भेद बताव॥

* चौपाई *

चौसठ कला कि विद्या यामें * बारह खड़ी दिखावत तामें॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आवत है कलियुग जो आगें * यह चौसठ विद्या सब जागें ।
भय तुलसी नानकहिं कबीरा * तब नहिं लिख पायो मति धीरा ।
अब है काम जगत में भारी * तबहिं नाथ मम हृदय पधारी ।
सुनि शंका नर करे न कोई * समय पाइ सब कारज होई ।
जब जस होत ग्रन्थ कर कामा * तब तस प्रेरक हों जग रामा ।
जो जन चढ़ा ज्ञान की धारा * जानत सब सिधियन गुण सारा ।
पर नहिं लिखा काज अनुहारी * है अब आवश्यक जग भारी ।
दो०—होत चतुर नर नारि सब, तीनों युग के माहिं ।
निज विद्या बल आनि उर, करत काज जग जाहिं ॥

* चौपाई *

वाणी वेद न कोइ अब बूझे * यहि भय बन्ध जाय जन जूझे ।
याते भाषा ग्रन्थ बनाई * रीति वेद की सबै बताई ।
हैं जो यह सब वेद कहानी * पर भाषा में लिख सत मानी ।
विद्या पढ़ा केसहूँ होई * अपनी युक्ति न लिखि सक कोई ।
बिन हरि कृपा न जानत याको * जाने सोइ दया प्रभु जाको ।
बोध अखण्ड नाम हरि जानो * ज्ञानी जन उर रह भरि मानो ।
जहाँ ज्ञान का वार न पारा * कोइ इक जान प्रभु हिं जो धारा ।
लिखते ग्रन्थ जन्म बहु जाई * बोध अखण्ड थाह नहिं पाई ।
दो०—याते हरि के भक्त जन, कछु लिखते कछु नाहिं ।
जहँ लगि समझैं जगत हित, सो लिखते चलि जाहिं ॥

* चौपाई *

जहँ नहिं उचित समझ कछु आवे * सो नहिं वेद रीति जन गावे ।
सब हीं लिखा उचित जग जाने * पर कहँ लगि यह मन नहिं समाने ।
नाहिं इतनी है आयु हमारी * जो सब कथा जगत लिख डारी ।
नहिं विद्या बल नहिं बुधि मेरी * जो सब वेद कथा हम हेरी ।
बोध अखण्ड रूप हरि आके * बसत हृदय मम प्रभु अब जाके ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो कछु कहे लिखे हम लाके * आधा में पुनि आधा पाके ॥
जीव ईश है अन्तर जेती * लिखन शक्ति होती जन तेती ॥
वह है अलख सनातन धर्मा * यह जड़ जीव चेति वल कर्मा ॥
वे हैं अज अविनाशी नाथा * यह जन जित वलपा हरि साथा ॥
दो०—पार न पावा वेद जेहि, जो हैं हरिहिं समान।
सो कुलदीपा पाव किमि, महा मन्द मति जान ॥

* चौपाई *

वड़ २ ऋषि मुनि पार न पावा * सो नारी किमि हरि गुण गावा ॥
पूरव जन्म कर्म कछु हैरी * लिखि डारा प्रभु के वल लैरी ॥
हरि की छांह छुवन नहिं पावे * जो कोउ विद्या वल गुण गावे ॥
जो जन दीन सकल गुण हीना * सो पावत है जिमि जल मीना ॥
हरि मिलने को व्याकुल रहता * नहिं वह जग देखनको चहता ॥
जो जानत यह जग है सपना * ताको प्रभु लेते कर अपना ॥
जाकी मान जगत नहिं होई * सो हरि पावत यह नहिं गोई ॥
मान जगत से भक्ति नसानी * हरि पद प्रेम लगन नहिं पानी ॥
दो०—अरुझि बड़ाई मान में, सरुझि सकत नहिं जीव।
कहु होवे कल्याण किमि, कैसे मिल तुहिं पीव ॥

* चौपाई *

यह ममता की मोह लगावे * अहंकार पुनि जीव बँधावे ॥
परिजन ममता तोड़ो भाई * तब तुम हरिसे मिलिहो जाई ॥
ये परिजन जीते दुख देते * पुनि स्वर्गहुं नर्कहुं सुधि लेते ॥
जो जनमें कहुं पूत कपूता * रोवत सुत नहिं भयउ सपूता ॥
जो सपुत्र कहिं हो जग माहीं * विद्या गुण संपन्न दिखाहीं ॥
सोच विचार धर्म के साथा * जग व्यवहार करत निज हाथा ॥
तो तेहि देखि जरत दिन राती * यह क्यों भया बड़ा सब भांती ॥
कर्महिं का नहिं करत विचारा * डहते बीति गया दिन सारा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection. Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—कवनिहुं विधि नहिं छूटि सक, यहि दुनिया से जीव ।
याते हरि से जाय अब, लगन लगा मिल पीव ॥

* चौपाई *

अब वैकुण्ठ कि महिमा गावो * भक्ति प्रताप भक्त जन पावो ।
जहं हरि नगर बसत प्रभु मेरे * सकल बाल बनिता बृज घेरे ।
कंचन की वह पुरी सुहावनि * भांति अनेक जड़ित मणि पावनि ।
नहिं कछु ओर नहीं कछु अन्ता * कहं लगि बसत भक्त अरु सन्ता ।
नहिं गिनती कोइ कर सक भाई * पुर कहँ लगि वैकुण्ठ बसाई ।
चार २ खम्भन के बीचे * गिल्म गलैच बिछे हैं नीचे ।
खम्भन कोटि सूर्य्य की योती * झलकत मरकत झालर मोती ।
कोटिक बिजुली सम वे चमकें * कोटिक चांद ज्योति सम झमकें ।
सुन्दर बाग बगीचा लागें * हरा पीत पत्रहुं सब जागें ।
एकहु पात गिरत नहिं धरनी * है वह अमर सदा सुख भरनी ।

दो०—पेड़ों पर पक्षी उड़ें, भांति २ बहु रंग ।
बोलति मधुर सुहावनी, नाचति हैं हरि संग ॥

* चौपाई *

मध्यहि में हरि महल बनाई * चारि ओर ताके छवि छाई ।
नील मणी श्वेतहिं मणिकारी * हैबहु सबुज रंग बिच धारी ।
महल २ पर हरि कर नामा * है लेखा पुरुषोत्तम धामा ।
पेड़हिं नीचे बनी अटारी * जहं साधू हरि भक्त पधारी ।
जैसी हरि की महल बनी है * सब सन्तन लेहि भांति तनी है ।
ऊपर हर इक महल लिखा है * भक्त नाम यह ऊंच शिखा है ।
कितने जन वहं जाय बसे हैं * कितने खाली नाम लसे हैं ।
तन तजि भक्त गये हरि लोका * सो जा बस प्रभु हर जिन शोका ।
कितने भक्त बसत जग माहीं * सो खाली जग नाम लिखाहीं ।
करि तप यहाँ तिसर पद पाते * तादिन से हरि लिख रह खाते ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—यहाँ तीसरे पदहिं जन, अनुभव करते नाथ।
वहं तो महल अटारिन, नाम लिखत निज हाथ॥

* चौपाई *

जितने नर हरि भक्ति लखत हैं * सो बाहिर मन्दिरहिं बसत हैं॥
जितने नारि करत पद प्रेमा * वे भीतर जावें यहि नेमा॥
अंगन अँग भूषण अस सोहैं * देखत कोटि काम मन मोहैं॥
रोम अंग के गिन वह जाहीं * भूषण नाम धरे शक नाहीं॥
हीरा पन्ना मोति गुछी है * मणी जटित बहु रूप लछी है॥

दो०—जितने अँग में रोम हैं, मानुष के तनमाहिं।
उतने भूषण पहिरि सब, पुर वैकुण्ठहुं जाहिं॥

* चौपाई *

क्या नर हो क्या नारी भाई * हरि सम रूप पाव सब जाई॥
नहिं वहं होत रैन औ दिवसा * अमर अजर सब होते पिवसा॥
भूषण दीव्य २ है बसना * दीव्य रूप धरि पिय सँग हसना॥
नहिं वहं भूख लगत है प्यासा * तन नहिं मलिन नींद है नाशा॥
बाग बहार गन्ध करि पाना * मस्त रहैं हरि पदहिं समाना॥
मध्य महल जहं हरि का है री * ताकी उपमा कवि न कहै री॥
शेष सहस मुख गा नहिं सकहीं * सरस्वती लह पार न थकहीं॥
कहु किमि अब कह सकती नारी * प्रभु बल पाय लिखति हम जारी॥

दो०— को नहिं बड़ हो जात है, प्रभु महिमा उर धारि।
बोलि सकति नहिं नारि कहुं, अमर नर लिख डारि॥

* चौपाई *

बीच चौक प्रभु आसन परई * सोन सिंहासन हरि कर धरई॥
कोटि सूर अरु चन्द उजाला * हरी सेज मन देखि निहाला॥
ता गद्दे पर प्रभु राधे हैं * भक्तन के मनको साधे हैं॥
अष्ट सखी मिलि चँवर डुरावें * राधा सहित श्याम मन भावें॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सबै सखी मिलि गावत जावें * नहिं कोइ जगकवि यह छवि गावें ॥
चार भुजा प्रभु के अँग सोहैं * शंख गदादि चक्र मन मोहैं ॥
अष्ट सखी राधा की जो हैं * विजन चँवर कर में सब सोहैं ॥
तिरछी चितवन प्रभु की बांकी * देखत भक्त रहे मन छाकी ॥
बाजू बन्द विजैठा सोहैं * कर मुंदरी देखत मन मोहैं ॥
सुबक बुलाक नाक में शोभे * मोतियन माल देखि मन लोभे ॥
पग पाजेब कड़ा घुघुरारे * अँगुरिन में बिछुवा झन कारे ॥
कोटि चन्द्र सम नख की ज्योती * कमल चरण देखन मन होती ॥
जौ मन होत मधुप तुम मोरा * हरि पद लपटि जात जिय तोरा ॥
छनन २ करि प्रभु जब नाचें * देखत ही सखियन मन राचें ॥
दो०—गावन लागति सबहिं मिलि, जेती हैं सब नारि ।
जाहि समय प्रभु पग हिले, कोटि काम छवि जारि ॥

* चौपाई *

भीतर रास केलि प्रभु करहीं * पुनि बाहर को निज पग धरहीं ॥
जेते सन्त बसत पुर बाहर * उनके सँग नृत करत शोक हर ॥
व्याकुल रहत दर्श हित लागी * दे दरशन बुझाव विरहागी ॥
बाहर तो बन कनक चबुतरा * नाच करत प्रभु जब मन उतरा ॥
पेड़ों पर पालना पड़े हैं * झुलत सन्त सब और खड़े हैं ॥
वेद गान होता वहँ नितहीं * बोध अखण्ड देत जन उतहीं ॥
पुनि विपिनहिं हरि लेत बहारा * जहँ सन्तन सँग हैं मन हारा ॥
उड़त सुगन्ध सन्त सँग लेई * यह आनन्द भक्त नित देई ॥
दो०—याते होता मगन मन, आनन्दहिं नित लेइ ।
रिष्ट पुष्ट रहते बदन, फूल गन्ध हरि देइ ॥

* चौपाई *

मैल पसीना वहां न होई * नहिं मन थकित न आलस कोई ॥
काम कला पुनि तहं नहिं जावे * नहिं मन क्रोध लोभ जन आवे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहिं बूढ़ा नहिं बालक मानो * षोणष बरष उमर वहँ जानो ॥
नहीं मृत्यु नहिं जनमत कोई * एके रङ्ग सदा जन होई ॥
जो कोउ करत यहाँ तप जोगा * सो पहुँचत नहिं भोगत शोगा ॥
जो जन परम धाम को जावे * सोनहिं पलटि याहि जग आवे ॥
परलय होत जबहिं तिहुं लोका * पावत हरि पद रोक न टोका ॥
आनन्द रूप सकल जन होई * बूझे भक्त विरल जग कोई ॥
जब हरि प्रलय रूप धरि लीन्हा * सारा जगत उदर निज कीन्हा ॥
आनन्द रूप होत जन जाहीं * बन्धन कर्म छूट जग ताहीं ॥

सो०—जब हरि भयउ अनेक, रचना कीन्ही सृष्टि पुनि ।
निज जन कर्महिं टेक, भिन्न भयो तब हरिहिं से ॥

दो०—नहीं दिवस नहिं रात है, नहीं नींद नहिं भूख ।
ऐसा अनुपम ठौर है, जन पावे जहं सूख ॥
नहीं जन्म नहिं मरण है, नहीं रोग नहिं शोग ।
जो जन अलखहिं निरखिया मिटा सकलभवरोग ॥

## * चौपाई *

अपने कर्म धर्म अनुसारा * सारा जग पुनि तनको धारा ॥
यह जन कर्म नाश नहि होता * बार हजार प्रलय महँ सोता ॥
जब जनमेंगे यहि जग आई * अपनो कर्म धर्म सँग लाई ॥
बिन किय भक्ति कर्म नहिं जरई * कोटिक दान यज्ञ नर करई ॥
सब कर्मन कर फल यह भाई * हरि की भक्ति पाव नर धाई ॥
बड़ २ दान यज्ञ जिन कीन्हा * ताको नाथ भक्ति निज दीन्हा ॥
शंकठ विकट हरत जनका है * हरि की भक्ति जाहि नर पा है ॥
परम अभागी नर यह जाने * लिखा ग्रन्थ मिथ्या मुनि माने ॥

दो०—है बड़ भागी लोग जे, सत करि मानत वेद ।
पावत हरि की भक्ति को, भागत भवका खेद ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

चौदह भुवन नाथ पुनि कीन्हा * पुर वैकुण्ठ संग रचि दीन्हा ।
इक से भय अनेक हरि मोरा * निज जन वैकुण्ठहिं महँ जोरा ।
पल्लव पेड़ पत्ति हैं जेती * पूरण ज्ञान सबन हिय लेती ।
शृंगी ऋषि वशिष्ट हैं जेते * पुनि अवतार लेइ सब तेते ।
जेती वृज की नारि सयानी * सब अवतार लेति में जानी ।
क्या सतयुग क्या त्रेता माहीं * द्वापर कली भक्त भे जाहीं ।
पुर वैकुण्ठ लेइ अवतारा * हरि सँग खेल देह इन धारा ।
पूरण ज्ञान सबै उर माहीं * परे ब्रह्म मूरति निज पाहीं ।

दो०—कारज परत तो आइ जग, धरि लें मानुष देह ।
पूरण ज्ञान वसत उर, भव भय उन्हें न लेह ॥

* चौपाई *

काम परे पशु देह लहत हैं * नर के तन अब कौन कहत हैं ।
ज्ञान प्रभाव दुःख कछु नाहीं * खेलहिं में जग काज कराहीं ।
जा उर ज्ञान वसत हरि के हैं * पुर वैकुण्ठ नरक सम ये हैं ।
इनको आंच लगत कहुंना है * चाहे स्वर्ग नर्क महँ जाहै ।
आँनन्द अनुभव रह तन माहीं * चाहे कोटि देह धरि जाहीं ।
पूरण ब्रह्म अपन को जाने * पुनि षट शास्त्र वेद निज माने ।
हम हैं वेद हमहिं सब धर्मा * हम सारे सृष्टी कर कर्मा ।
मन मोदहिं नित भरहिं हिये हैं * जगत काज हित तनहिं लिये हैं ।

दो०—ऐसा शोच विचार कर, धरत देह बहु जीव ।
सदा रहत मन मस्त वे, हृदय वसत पुनि पीव ॥

* चौपाई *

यहि कलियुग के जीव सदा हैं * विषयों से मन बहुत लदा है ।
याते नाथ लिखावत जाने * जाते नर कछु समझ सयाने ।
थाड़ी भक्ती कर नर नारी * सो मम पुर को अवशि पधारी ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नवधा भक्ति करे जन जोई * सो वैकुण्ठ वसत नर लोई ॥
बड़ी सरल भक्ती हरि केरी * यहि कलियुग महँ जीवहिं हेरी ॥
अमर लोक की है यह कथा * पाठ करे नित नियमहिं यथा ॥
ताको पुर वैकुण्ठ पठावों * अविरल ज्ञान देइ उर धावों ॥
इतना पर न समझ नर नारी * तौ भव बन्धन गल महँ डारी ॥
दो०—भरमत फिर चौरासि नर, यहि दुनिया के माहिं।
शास्त्र निरादर लेहिं फल, भव में गोता खाहिं ॥

* चौपाई *

जो नर भक्ति करत मन लाई * तिसरे पद पहुंचत है धाई ॥
आतम अनुभव होन न पाये * बीचहिं मृत्यु ग्रसे लेहि धाये ॥
सो नर जा वैकुण्ठ मझारा * वहँ हरि देत ज्ञान की धारा ॥
नन्द सुनन्द लेन को आई * अनुपम चढ़ि विमान सो जाई ॥
चढ़त विमान ज्ञान जन पावा * ज्ञान प्रताप अमर पुर जावा ॥
सुर गन्धर्व देवकी नगरी * मण्डल फोरि सूर्य की सगरी ॥
ब्रह्म लोक पार कर जाई * मारग पर सुगन्ध चहुं छाई ॥
पुर वैकुण्ठ नगर को धावे * लै विमान हरि पहँ यह जावे ॥
दुहुं दिशि परिजात के पेड़ा * बीचहिं बिच विमान ले ऊड़ा ॥
शिर पर और अंग सब माहीं * परती पत्तों की जब छाहीं ॥
स्पर्श होत जाता जन देहीं * सो आनन्द न कह सक लेहीं ॥
ब्रह्मानन्द मगन मन होता * आँनन्द सिन्धु लेइ मन गोता ॥
चले जात मारग सुख पाते * सुख सनेह पर मन न समाते ॥
दो०—बड़े भाग्य नर पावहीं, पुर वैकुण्ठ निवास।
पूरण प्रेम निवाहि जिन, जगत काम दिय नाश ॥

* चौपाई *

सो जन पुर वैकुण्ठहिं जाई * श्रुति पुराण हरि जो यशगाई ॥
ऐसे नर तहं पावत वासा * जग कामना हृदय जेहि नाशा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भक्त करत जैसी अभिलाषा * हरि पुरवत हैं जनकी आशा ।
रहते देह देख हम नगरी * यह जो बात लिखी है सगरी ।
हरि पद प्रेम करो सब जाई * देखो अमर नगर हम गाई ।
करि कछु काल प्रेम हरि जन में * धरिके ध्यान देख तब तन में ।
हरि न मिलें तब दोष लगावो * अरु मम लेख झूठ बतलावो ।
बिना यतन जन दोष न दीजै * झूठ कलंक पाप नहिं लीजै ।
दो०—जो कछु पढ़िये ग्रन्थ में, करि विश्वासहिं लेइ ।
पुनि हरि अर्ज सुनाइये, दर्शन मुहिं प्रभु देइ ॥

* चौपाई *

पुर वैकुण्ठ सखा सँग जेते * मिलिये आज नाथ सँग तेते ।
देखन चहत नगर मन मोरा * दया दृष्टि प्रभु करिय न थोरा ।
हौं मैं भक्त तिहारे नाथा * पकड़िय तुरत आय मम हाथा ।
पुरी सुहावन मोहिं दिखावो * जो है सन्तन के मन भावो ।
यद्यपि मैं अति नीच स्वभाऊ * तदपि नाथ तेरो जश गाऊ ।
देखा वेद पुराणन माहीं * जन अभिलाष पुरावत जाहीं ।
यह पढ़ि अभिलाषहिं मन आई * हरि की नगर देख हम जाई ।
अब मैं नाथ विनय कर तोसो * दे दरशन हठ करिय न मोसो ।

दो०—ऐसा जब करिये विनय, हो इकान्त जन जाय ।
देखो दर्शन देत प्रभु, वैकुण्ठहुं सँग लाय ॥

* चौपाई *

याको पाठ करत है जोई * सो सब पूर्व पाप नर धोई ।
कोटिहुं यज्ञ दान फल याको * शेषहुं नहिं कह सक गुण जाको ।
सर्व पाप सब दुःख नशानी * अमर नगर की यही कहानी ।
नव लाखहिं जप कर फल होई * अमर नगर महिमा नहिं गोई ।
जाकी आयु होय जग थोड़ी * करिके पाठ पढ़े दिन कोड़ी ।
ऐसा नहिं समझे जन कोई * जो कोइ पढ़े आयु बढ़ सोई ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आयु बढ़न हित जन जो गावे * बीसहिं वर्ष अधिक बढ़ जावे ॥
जैसा जाकर होवे भावा * सो तैसो फल जन सब पावा ॥
कल्प वृक्ष सम गुण हैं याके * जो कर आश पूर हो ताके ॥
तिथी अमावस पढ़ नर जोई * जम के नगर देख नहिं सोई ॥
दो०—सूरज चन्द्र ग्रहण लगे, जो नर पढ़ता होइ।
कोटि यज्ञ का फल लहे, पूर्व पाय दिय खोइ ॥

* चौपाई *

जो कोइ नर मरता जग आके * ताको पाठ सुनावो जाके ॥
पुर वैकुण्ठहिं महिमा गावो * जब तक रोगि प्राण रह जावो ॥
सुनते पाठ ज्ञान हो ताके * निसरत प्राण अमर पुर धाके ॥
नन्द सुनन्द दौरि कर लेंगे * चढ़ विमानहीं हरि पद देंगे ॥
कैसो कर्म धर्म नर हीना * याको पाठ करे निशि दीना ॥
पाठ प्रताप अमर पुर जाई * है सब बेद पुरानन गाई ॥
अपनी युक्ति न मैं कह भाई * दीना नाथ जगत हित लाई ॥
यहि कलियुग के लोग अभागी * नाथ लिखावत हैं उन लागी ॥
दो०—सुगमहुं ते अति सुगम करि, नर तारन के काज ॥
हैं पामर पर पार करूँ, मानुष तन के लाज ॥

* चौपाई *

नारि नहीं बाहर को जावें * सदा सर्वदा भीतर गावें ॥
लीला रास होत बहु रंगा * नृत्य करत नाथहिं के संगा ॥
जब कोइ जन दर्शन को आवें * रंग महलहिं नारि छिप जावें ॥
पुर वैकुण्ठ रहत है पर्दा * जन नर लोक तोड़ि किय गर्दा ॥
यह मर्याद नाथ की बानी * नर बापुरो लाज नहिं मानी ॥
यहि कलियुग अब नाथ निहारी * बार २ मर्याद पुकारी ॥
होइहैं कोउ इक धर्म गुहारी * सो अब रखिहैं लाज सम्हारी ॥
उनके आशहिं नाथ लिखा है * नहि सब लोगहिं धर्म सिखा है ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—है कोइ धर्म सनातनी, ऋषि मर्याद विचार ।
सो उर रखिहैं लाज अब, नहिं सब लोग निहार ॥

* चौपाई *

सदा सर्वदा यह चलि आई * कोउ इक धर्म धरे चित लाई
नहिं सब योग्य होत परलोका * नहिं सबहीं जग हरते शोका
माया विवश जीव यह रहहीं * नहिं सब जीव धर्म सुख लहहीं
पढ़त लिखत सब कर हित होंगे * अवशि जनहिं हरिहैं भव शोगे
जैसा जाको भाव रहेगा * तैसाही फल आय लहेगा
कल्पद्रुमहिं ग्रन्थ यह होई * अवशि सुजन दुख दारिद खोई
है कलियुग यह ग्रन्थ अनोखे * सकल विपति जग भयकोसोखे
आतम अनुभव विषय कहानी * लिखा नहीं कोइ मुनिवर ज्ञानी

दो०—गुप्तहिं भाव बताय के, गय रहस्य पुनि गोय ।
होइहैं चतुर जु खोजिहैं, इन ग्रन्थन महँ सोय ॥

* चौपाई *

नहिं कोउ ग्रन्थ पढ़त अब जाके * पर नारी देखत मग ताके
जहँ ब्राह्मण की निन्दा सुनहीं * रोपत कान जलधि के दुनहीं
वेद सन्त देखत जरि जाई * जनु दवारि चहुं ओरहिं लाई
भक्त बड़ाई जहं कहुं सुनहीं * मुदत कान मुद्रा जनु लुनहीं
हरि जश गान होत जहँ जाके * सुनतहिं कान उड़ा मरि मा के
कहत कपोल होत यह भाई * पेट भरे की बजत बधाई
नहिं इनके घर है कछु कामा * लेन लगे अब हरि कर नामा
हैं ये पागल बकत वृथा हैं * कहत कथा यह सबहिं मृथा हैं

दो०—हैं पागल तो आप वे, माया लपटे जाय ।
पर भक्तों को दोष दे, जिन हरि पकड़ा धाय ॥

* चौपाई *

ऐसे मनुज देखि मुख मोड़ा * जिन हरि से नाता है जोड़ा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो परलोक लोक दुख हरई * वेद पुराण साख सब भरई ॥
देखत भक्त पाप गय दूरी * हो निष्पाप पाव भम पूरी ॥
देखि भक्त जनको जग माहीं * गृह परिताप बढे छन माहीं ॥
ब्राह्मण निन्दा जो नर करई * सो चाण्डाल देह वहु धरई ॥
कोढ़ी कुष्टी हो अँग हीना * महा दरिद्र होय अति दीना ॥
जो भक्तों की निन्दा करहीं * सो नर पतित नरक महँ परहीं ॥
भांति अनेक सहे यम यातन * जनमत सुख नहिं कर सक वातन ॥
निन्दा वेद पुराणहिं करहीं * खर शूकर हो जग दुख भरहीं ॥
नयन हीन तन होत विहीना * पशु के योनि जन्म ले लीना ॥
दो०—निन्दा करहीं वेद कर, शंकर विष्णु गनेश।
महा पतित सो अधम नर, सदा देख यम देश ॥

* चौपाई *

कोटि कल्प युग कोटि मझारी * नरकहिं जाव वसत है जारा ॥
क्षण जनमें छन होता मरना * गर्भहिं त्रास सहत दुख भरना ॥
ऐसे नर नहिं सावित जनमें * नहिं जग देखत मुख कोइ तनमें ॥
इनके मुख देखत लग पापा * याते नाथ वदन इन लापा ॥
हरिजन होते हैं हरि रूपा * भक्तन के निन्दक मुख लूपा ॥
चाहे नर चाहे पशु जनमें * वदन हीन उपजत सब तनमें ॥
इनका मुख देखत जन जोई * पूरव क्षीण होती नर सोई ॥
याते दीन दयाल विचारी * वदन हीन पठवत तन धारी ॥
सो०—क्या है वेद पुरान, क्या हरिजन हों जगत में।
निन्दा कभी न ठान, डरते रहना इनहिं से ॥

* चौपाई *

राम नाम महिमा हम गायो * जाप करत हरिके मन भायो ॥
षटहिं मास तू जप नित मुख से * पुनि षटमास जीभ धरु सुखसे ॥
या विधि जाप करो उठि रैना * घट भीतरहिं करे प्रभु ऐना ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ले रुद्राक्ष माल निज हाथा * चाहे जप कर अंगुलि माथा।
कंठ माहिं जप वारहिं मासा * मास वारहे रोम निवासा।
सारा अंग रंग हरि जैहैं * प्रेम पुलकि तन हरि दरसइहैं।
कोटि चन्द्र होवे परकासा * घट भीतर हरि करें निवासा।
ज्ञान दीप जलता घट अन्दर * मरते काम क्रोध जन मन्दर।
दो०—देखो कैसा होत सुख, मनुवा हरि मय होय।
अजपा जाप तवहिं बने, परे ब्रह्म जन सोय ॥

* चौपाई *

जा इकान्त में जाप करो जी * नहिं दिखरावा भाव धरो जी।
हरि का भजन इकान्तहिं होई * नहिं जग जाल संग रह कोई।
माला पंच शतहिं नित फेरे * शत से कम न नियम यह लेरे।
उत्तम जाप यही जन जानो * इक सहस्र फेरन नित ठानो।
मध्यम अर्द्धहिं जो जन फेरा * उससे मध्यम शत जिन हेरा।
दसहीं पांच वार ले नामा * मानो भरत बेगारी कामा।
घरी एक सेवा हरि करिये * सारे दिवस काज गृह धरिये।
ऐसो है दयाल भगवाना * घरी एक सेवा बहु माना।
दो०—इतनोहीं पर नहिं करत, भूल्यो सिरजन हार।
होय हरामी हरिहिं सन, हीय गवांवत सार ॥

* चौपाई *

तेरे हिय हरि नित्य वसत हैं * तू नहिं निज मन लेइ कसत है।
जैसे मथे काढ़ नवनीता * वैसे हिये प्रेम हरि पीता।
प्रेम मथानी लैकर खींचो * तव हिय रतन ताहिसे सींचो।
बहुत दिनन का सोवत मनुआ * चिकनो पाय जाग मिल धनुआ।
जागतहीं हरि सन जा भीरे * मिलत पिया सँग तव वह धीरे।
मिलत पीय सों पिय सम होई * आवागमन बन्ध सब खोई।
जग दिखराव नहीं निवहेगा * असली पिय सँग प्रेम चहेगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अमलदार अमलहिं जिमि प्यारे * तिमि जन हरि दर्शन लिय धारे ॥

दोहा—निशि नहिं नींद परे उन्हें, तडपत बीती रात।
दिन बीते गृह काज में, हरि जप निशि परभात ॥

* चौपाई *

प्रेम बिरह जब उठता ही में * तडपत रैन बीत गइ जी में ॥
नहिं अब नींद रैन है तिन को * पिया मिलन चित चाहत जिनको ॥
तारे गिनत रहत सब रैना * नहिं अब नीद आव तेहि सैना ॥
उर में यही रहे डर भारी * सो जावें तो रैन सब जारी ॥
पिया मिलन की रैन हमारी * सोऊँ तो अनन्द जिय नारी ॥
आँनँन्द लहर लेन मन होई * सो जन निशि सोवे कस जोई ॥
इनसे जो जन लगन लगावे * प्रथमहिं रोग शोग बहु पावे ॥
प्रेम छुटन हरि करत उपाई * लागी लगन तजे किमि भाई ॥
चाहे दुख सुख होय करोरी * धीर जीव पिय अवशि मिलोरी ॥
जैसे जाप राम कर जानो * वैसे जाप कृष्ण कर मानो ॥

दो०—चाहे शिव कर जाप हो, अष्ट भुजी कर नाम।
यहि विधि सबही मान कर, जाप करो तजि काम ॥

* चौपाई *

जो फल जाप करे हरि होवे * सो फल अष्ट भुजी नहिं गोवे ॥
जो है देव वही है देवी * पावे फल कर जन जो सेवी ॥
यामे अन्तर नेक न होगा * किये भजन फल एकहिं भोगा ॥
नहिं बड़ छोट कहो इन माहीं * सब व्यापक ये हैं सब ठाहीं ॥
भक्तन की रुचि जैसी होवे * ताकर करत भजन सुख लावे ॥
जो शक्ती त्रै देवन म'हीं * अष्ट भुजी शक्ती सोइ पाहीं ॥
वैसे भव बन्धन को तोड़ी * मायामहा देव तिहुं जोड़ी ॥
इनमें भेद भाव नहिं आनो * कहते वेद वचन सच मानो ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—इनके करि के भजन नर, पावत मुक्ती धाम ॥
जाकर मन जेहि सन लगे, ताहि जपो धरि नाम ॥

* चौपाई *

इनमें भेद भाव जो कीन्हा * सो भव सागर मारग लीन्हा ।
हरि सँग होत उपासन इनका * जेहि से प्रेम नाम लो तिन का ।
चाहे अलग उपासन करिये * चाहे हरी संग हिय धरिये ।
वे तो हैं स्वामी तिरलोकी * ये हैं स्वामिनि सबहीं भव की ।
दुर्गा विन्ध्याचल महरानी * एकहिं भाव सबहिं जग मानी ।
इनमें अन्तर नेक जु धरिये * भव बन्धन के दुख जन भरिये ।
सीता सहित नाम हरि लेना * पूरण प्रेम दोउ पद देना ।
राधा सहित कृष्ण को जपना * पूरन पाप खोइ सब अपना ।
दो०—हर का नाम जपो नितहिं, गौरी युत ले नाम ।
पूरण हो अभिलाष जन, पूजत सब मन काम ॥

* चौपाई *

चाहे शितला नाम लहो जी * चाहे मुख से चण्डि कहो जी ।
एकहि देवि अनेक भई हैं * भक्तन के दुख दरिद लई हैं ।
राधा नाम जपे जन जोई * सकल व्याधि कटती हैं लोई ।
सीता नाम जपो मन देके * हरत शोक क्षण में जन लेके ।
गौरी नाम जपो सब जाई * मंगल होत क्षणिक में भाई ।
शंकट हरनि नाम जो लेई * हरति रोग क्षण में सुख देई ।
आधिहिं व्याधि दूरकरि माता * तुरते जोड़ति जन कर नाता ।
इन कर नाम लेत भय छूटा * आवा गमन डोरि सब टूटा ।
दो०—प्रथमें नाम गणेश कर, लेत जगत जन जोय ।
होत सिद्धि सब काम तब, पूर्ण मनोरथ होय ॥

* चौपाई *

महावीर बल सागर नामा * लेकर करो जगत सब कामा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो जन जीत जगत सब लेई * दुख दरिद्र शत्रुन को देई ॥
शंकट विकट तुरत ये हरते * शत्रुहिं नाश करत ये उरते ॥
हरि की भक्ति मांगु जन इनसे * महा ज्ञान दानी मिल जिनसे ॥
ये हैं हरि के बहुते प्यारे * क्षण नहिं रहत रामसे न्यारे ॥
पूजा पाठ करो जन जाके * इनका सुमिरण करु मन लाके ॥
तुरते हरि को धरि ले आवें * जन के हिये मांहि प्रगटावें ॥
राम इन्हें हैं बहुत दुलारे * ये हरि को लें तुरत बुलारे ॥
दो०—अति दयालु हनुमान हैं, नाम लेत उर धाय।
तुरते भक्तन काम करि, दें हरि भेंट कराय ॥

* चौपाई *

अब मैं ध्यान कि विधी सुनाऊं * जो भृकुटी शुभ सगुन जनाऊं ॥
आँख बन्द प्रथमहिं यहि देखे * निज मन कौन वस्तु को पेखे ॥
जब तुम देखो काला रंगा * तब यह जान ध्यान कर भंगा ॥
जबहीं देख रंग है लाली * है रज देख देवपुर हाली ॥
जबहीं श्वेत रङ्ग को देखो * सात्विक बुद्धि होइ हरि पेखो ॥
जाकर ध्यान तुरत हरि कीजे * आतम अनुभव का सुख लीजे ॥
बादिन ध्यान अवशि तुम करिये * जा इकान्त आनन्दहिं भरिये ॥
प्रथम ध्यान से यही विचारो * ता पाछे पुनि ध्यान पसारो ॥
दो०—या विधि प्रथमें नियम करि, देखो भृकुटी माहिं।
जैसा होनी होत है, आगम देत जनाहिं ॥

* चौपाई *

है इतना परमारथ सारा * और जगत कारज लै धारा ॥
चाहे रोग परीक्षा लीजे * चाहे धन संपति सुख कीजे ॥
चाहे रोग ग्रसित दुख हरे * चाहे अरोग्य रोग ले भरे ॥
इनके अन्दर गुण बहु भाई * सारे जग की बात जनाई ॥
याको साधन कर नर जोई * सुख आनन्द भरा जन सोई ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

होनी को अन होनि दिखावे * अन होनी सो होनि बतावे
याको साधि चले जग कोई * मारग बहुत अनन्दहिं होई
याको ज्ञानी सब जानत हैं * समुझि व्यर्थ नहिं कृत ठानत हैं

दो०—हरि जन रहते आस प्रभु, जो चाहे कर सोय ।
लिखा जगत हित समुझिके, जो भावे कर लोय ॥

* चौपाई *

यहि साधे कछु हानी ना है * है बड़ लाभ याहि गुण मा है
चाहे तो साधन जन करई * नहिं साधे कछु हानि न परई
सुगम राह हो सगुन कि बाते * लिखा जान इच्छा हो ताते
होवन हार तो होइ रहेगा * जान न जाने सुखहिं लहेगा
आवन वाली आय रहेगी * नहिं वह पीछे कबहुं टलेगी
परमारथ की बात लिखा है * वाको सज्जन अवसि सिखा है
हरि मिलने का सगुन बतावे * करत ध्यान सब सुखहिं समावे
प्रथमहिं जो हम याहि लिखे हैं * करते जन सो राम दिखे हैं

दो०—जाने शुभ आगमन को, मन में हो उत्साह ।
ताते लागे हरि लगन, जन हिय होत उछाह ॥

* चौपाई *

काला रंग देख जन जबहीं * रोगी मरे जान ले अबहीं
लालहिं रंग देख जन जोई * होय अरोग्य समय कछु खोई
श्वेतहिं रङ्ग देख जब जाके * अभी अरोग्य होय क्षण पाके
याही विधि सब नाड़ि बतावें * कवन रोग सो तुरत जतावें
जब रोगी बोलत है नाहीं * ऐसे समय काम में लाहीं
देश विदेश वणिज के कर्मा * हानी लाभ कहें सब धर्मा
चाहे कौन काम जग आवे * सबहिं जगह यह तुरत बतावे
जग हित लागि नाथ यह गायो * यामें नहिं मम बुद्धि समायो

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—होइहैं जा कोउ चतुर नर, जग कारज महँ लेइ।
हरिहैं संकट विकट सब, बहुत जनहिं सुख देइ॥

* चौपाई *

यामे जो विश्वास करेगा * सोई जन सब जगहिं फरेगा॥
ध्यानहुं मध्य जीव जो देखी * नहिं सब बातहिं करत परेखी॥
एक अलख के कारन जन है * चौदह भुवन वस्तु को छन है॥
कोइ नहिं वस्तु ध्यान में आवे * जो निरर्थ जग काम न लावे॥
पर सब वस्तु गुणहिं नहिं जाने * जितनि बुद्धि उतनहिं सबमाने॥
है अनन्त हरि ध्यान अनन्ता * नहिं वेदहुं सब पावत अन्ता॥
जो कछु जन के मनहिं समावें * सो गुण सबहिं सन्त जन गावें॥
कोटि जन्म तक ध्यान करेंगे * पर नहिं सब गुण जनहिं धरेंगे॥
दा०—हरि के लगन लगे रहत, निशि दिन ध्यानहिं मस्त।
देखत चौदह भुवन को, अलख लगत जन हस्त॥

* चौपाई *

जेहि कारण जन ध्यानहिं साधी * सो गुण लेते ज्ञान अगाधी॥
होत ध्यान में बहुत उपाधी * कहँ तक जन सब देव अराधी॥
हरि जब चहत जीव से मिलना * इन्द्रासन लागत तब हिलना॥
व्याकुल होइ देव सब जागें * निज २ गुण जन देनहिं लागें॥
कौतुक कला आपने माहीं * चाहत भक्त रखों बिलमाहीं॥
तामें कोउ इक गुण है ऐसी * स्वाभाविक भक्तन उर पैसी॥
हरियश लिखति जु स्मरण आवे * जगहित लागि लिखा सो जावे॥
पढ़हिं सबहिं नर ग्रन्थहिं जानी * याते साधारण मन मानी॥
उनहूं के उपकार करेंगे * संगहि जग के दुःख हरेंगे॥
ऐसा सोच विचार लिखा है * जाते सब जन यही सिखा है॥
दो०—है कल्पद्रम ग्रन्थ यह सबहिं सुखद गुण लाय।
ताते प्रभु अनुशासनहिं वेद भेद दिय गाय॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

याको योगी जन साधत हैं * ब्रह्मरन्ध्र भेदन लागत हैं ॥
नहिं यह बात सधारण भाई * जो सब हीं जन साधन पाई ॥
जहँ लगि जाकी बुद्धि लहेगी * सो सब तहँ लो याहि गहेगी ॥
जापर हरी दया घनि जावे * सो जन बहुत सुलभ करिपावे ॥
यामें है अब भाग्य सुजन की * नहिं कोउ वश है जी अरु मनकी ॥
करि विश्वास सुजन जब लगिहैं * भाग्य अवशि ताकर तब जगिहैं ॥
सबहिं रत्न जग माहिं रहत हैं * भाग्य हीन जन नाहिं लहत हैं ॥
खोजत २ रतन मरे हैं * पर सबहीं जन नाहिं लहे हैं ॥

दो०—पावत है कोइ एक नर, गावत सबहीं लोग ।
पढ़तहिं भल हो सबहिं का, हरत जगत कर शोग ॥

* चौपाई *

देव दनुजहिं युद्ध दोउ कीन्हा * सागर मथन नाथ तब लीन्हा ॥
कख्यो परिश्रम मिल कर सबहीं * देव दनुज दोनों दल तबहीं ॥
देवन को हरि अमी पिआवा * दानव दल खेलहिं बहकावा ॥
करुणा ऐन बराबर देखे * दोनों दल एकहिं रँग पेखे ॥
अलग कर्महीं का फल दीन्हा * नाथ नहीं काहू मुख चीन्हा ॥
पीकर अमी अमर हो जाते * दानव सारा जगत नशाते ॥
याते नाथ अमर नहिं कीन्हा * देखन को हि अमर फल दीन्हा ॥
सान्त स्वभाव देव रहते हैं * पर उपकार काम लहते हैं ॥

दो०—ऐसा हृदय विचार करि, देव अमर फल दीन्ह ।
वैसे जन जो सुजन हो, नाथ अपन करि लीन्ह ॥

* चौपाई *

जो जन शुद्ध हृदय से गावा * ग्रन्थ पढ़न कर फल सो पावा ॥
ऐंठ अकड़ नहिं यहां चलेगी * अहंकार ममता न गलेगी ॥
जब तक अहंकार नहिं छूटे * तब तक जीव बन्ध नहिं टूटे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. 3513


देख ग्रन्थ जन शीश नवाई * जनु शीसहिं निज भेट चढ़ाई ॥
याको फल बड़ वेद बतावा * सो जन अमर नगर को धावा ॥
प्रथमहिं नाथ शीश ले भेंटा * तब पुनि आवागमनहिं मेटा ॥
यही महातम वेद बताई * है सब सन्त सुजन जन गाई ॥
अध्या २ शीश नवावो * तब हरि चरण शरण को पावो ॥
दो०—भाग्य शालि जे नर जगत, ग्रन्थ देखि शिर नाव।
परम अभागी लोग हैं, देखत मूड़ हिलाव ॥

* चौपाई *

यहि कलियुग की रीति चली है * पेट लागि सब युक्ति भली है ॥
हरि यश पर कोउ ध्यान न दीन्हा * उलटि पाप खेती करि लीन्हा ॥
राम नाम महिमा बड़ि भारी * ताको जन अब देत बिसारी ॥
पढ़ने वाला जैसा होगा * कथा सुनन वाला चह जोगा ॥
अपनी करणी पारहिं जाना * क्या करुँ ले अवगुणहुं बिराना ॥
हरि का नाम सुनत शिर नावो * आवागमन कि विपति बहावो ॥
यहि को बोध अखण्ड बतावें * पुनि हरितेहि निज मुखसे गावें ॥
कहाँ भुसुण्डि कहाँ खग राया * सुनतहिं कथा भागि सब माया ॥
दो०—शंकर कीन्हें जब दया, अहं तज्यो खग राय।
भेज्यो ताहि भुसुण्डि पहँ, राम भक्ति तिन पाय ॥

* चौपाई *

कैसहु नीच मनुज जो होई * हरि यश को गावत है सोई ॥
क्षण विलम्ब करि सुन लो ताको * हरि की भक्ति हृदय हो जाको ॥
हरि गुण सुनि पत्थर पिघलत है * मानुष हिय कहु कसन गलत है ॥
जो हरि कथा सुनत अनखाहीं * सो जन पूर्व पाप बतलाहीं ॥
है कुछ भोग नर्क कर बाकी * ताते मन नहिं लागत ताकी ॥
नहिं कछु दोष मनुष का हैरी * पूर्व पाप सुनने नहिं दैरी ॥
इनकी बात सुनत जिय होवे * पूर्व पाप सबहीं कस खोवे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दीन दयाल दया करु पल में * नर सुबुद्धि हो तेरे बल में ॥

दो०—दीन दयाल दया करिय, हरिये पूरब पाप ।
सबके हिरदय आप हैं, नाशिय तीनहुं ताप ॥

* चौपाई *

सकल जगत प्रभु आपहि मय है * माया बुद्धि जीव विलगयहै ॥
जब तव दया होय जन ऊपर * तब यह जीव चढ़े रण भूपर ॥
चढ़ते जनहिं जीति रन लइहैं * तेरे आतम रूप समइहैं ॥
अरसठ तीर्थ देख घट माहीं * चौविस अवतारहुँ हिय जाहीं ॥
चौदह भुवन देख घट माहीं * तीरथ गायादिक सब पाहीं ॥
तैतिस कोटि देव दरवरा * देखे घट महं वार न पारा ॥
अलख निरञ्जन नाथ कहावे * सो जन अवशि आप हो जावे ॥
याको अर्थ विरल कोइ जाना * हो हरि चरणहिं रूप समाना ॥

दो०—मूरख उलटा अर्थ करि, कर्म रहित हो जाय ।
नास्तिक होइहैं जगत में, भरमत धोका खाय ॥

* चौपाई *

करि जप योग हरिहिं पद पावा * ताकें घट तीरथ सब आवा ॥
नहिं सब जग घट तीर्थ नहाई * सबके लिय न वेद यह गाई ॥
महामुनी तपसी जो ज्ञानी * हैं हरि मूरति सूरत ध्यानी ॥
उनके लिय यह ज्ञान कहानी * है षट शास्त्रहुँ वेद बखानी ॥
करि जप तप हरि चरण गहोजी * तब यह अनुपम ज्ञान लहोजी ॥
तब सब तीरथ घट के माहीं * देखा देव पितर फल पाहीं ॥
पढ़ि लिखि के नहिं ज्ञान कहानी * तरि जावो यह भवकि तरानी ॥
बीते कर्म किये बहु जनमा * कर्म धर्म छूटे तब तनमा ॥
करते चलो कर्म जग माहीं * तब हरि दया छूट तुम पाहीं ॥
कर्महिं कर्म धर्म ले सारा * जैसे अग्नि काष्ट को जारा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—अग्नि काष्ट से प्रगट है, पुनि तेहि देति जराय।
तैसे मानुष कर्म से, बँधत और छुटि जाय॥

* चौपाई *

होइ विशेष करम नर तोरा * तब हरि लै बन्धन जन छोरा॥
छूटत गांठ होइ विकलाई * भव निधिका तब ओरहिं पाई॥
तब समझो बन्धन कर हाला * कैसे बेड़ी निज कर डाला॥
रोवे याद किये सौ जनमा * समझागे निज करनी मनमा॥
चोरहिं नारि प्रकट नहिं रोवे * वैसे भक्त मनहिं मन गोवे॥
सोचत कर्म होय दुख भारी * आरत हो जन नाथ पुकारी॥
प्रभु हँसि देत जनहिं उर आके * अब क्या रोवत मम पद पाके॥
कहत जीव रोवत यहि लागी * प्रथमहिं क्यों न जगत हम त्यागी॥
मैं भुलि गयउ सत्य जग जानी * याते नाथ भई सुख हानी॥
प्रथमहिं क्यों न दया तुम कीन्हीं * क्यों कर गाढ़ बँधन कर दीन्ही॥
दो०—बालक सा रोदन सुनत, मातुहिं सम करि तोश।
माया वश नर रहत है, नहिं पर लोकहिं होश॥

* चौपाई *

जो नर मुहिं तजि रह जग भूली * तागल बन्ध देत भव शूली॥
जो मोहिं भजत परम प्रिय जानी * ताको मैं निज जन कर मानी॥
हमें भजत हैं परम सयाना * ताके उर हम करत पयाना॥
मोसे जो जन रहत उदासी * ताको मैं कर भव के वासी॥
अपनी करनी वे जन भरहीं * बारहिं बार देह जग धरहीं॥
मुहिं जन भजत भजों हम वाही * मुहिं विसराव भूल हम ताही॥
रोवत जीव नाथ दे बोधा * षट शास्त्रहीं हीय जन सोधा॥
रोदनहीं प्रभु वेद पढ़ावा * जनके हिय महँ ज्ञान बढ़ावा॥
दो०—रुदन होत है ज्ञानका, चार वेद षट बोध।
जन मन निर्मल करत है हृदय देत है शोध॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

ये हैं वेद मंत्र हरि बानी * पढ़ते जन भेदहिं सब जानी ॥
नित्य नियम करि सन्ध्या समये * पढ़त यथार्थ ज्ञान मय भये ॥
प्रभु की बड़ी दया जब होवे * तब हरि भक्ति करन मन जोवे ॥
तापर ज्ञान कथा की गाथा * खोलि लिखायउ है यह नाथा ॥
हैं कलिमें होंगे भी आगे * नाथ लिखाय उनहिं जन लागे ॥
जाते सुगम होइ परमारथ * थोड़ी भक्ति करत भे सारथ ॥
पढ़ते कथा असर यह करिहैं * सत्यनरायण तेहि उर भरिहैं ॥
ज्ञान स्वरूप नाथ धरि लेखा * नहिं कहुं वेद पुराणहुं देखा ॥
दो०—अन्तः करणहिं वेद हैं, नाथ दिया जेहि बोध ।
ताहि लिखी हम जगत हित, अन्तरज्ञानहिं शोध ॥

* चौपाई *

याको लाभ वही जन लेंगे * नित्य नियम मन पाठहिं देंगे ॥
करिके पाठहिं ध्यान करेंगे * साधन करि तब फलहिं फरेंगे ॥
बिन साधन कछु हाथ न आवे * जा परलोक लोक सुख पावे ॥
देह रहत जो जान न परिहैं * जापर लोकहुं आनन्द भरिहैं ॥
केवल पाठ किये फल ये हैं * जो हम प्रथम लिखे सब वे हैं ॥
पाठ किया अरु साधन दोऊ * सो तन रहत देख सुख ओऊ ॥
साधन से हिय खुलत कपाटा * बिनु साधनहिं बन्द रह पाटा ॥
साधनहीं तो ताली है जी * हरिपुर का ताला खोलै जी ॥
दो०—बिनु ताली नहिं खुलि सकत, वज्र ताल जड़ि दीन्ह ।
जापर नाथ कह्यो कृपा, सो साधन कर लीन्ह ॥

* चौपाई *

सो जन जियत अमर फल खावा * करुणा ऐन रूप जन पावा ॥
तारण तरण भयउ जग माहीं * चौदह भुवन सुयश रह ताहीं ॥
होवे प्रलय अनेकहिं बारा * सिरजत सृष्टि नाम प्रभु धारा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरि अन्तर से वेद निकरिहैं * तामें नाम भक्त कर धरि हैं ॥
क्या सतयुग त्रेता के माहीं * द्वापर कली भक्त हो जाहीं ॥
वेदहिं भरे भक्त कर नामा * निसरत सुयश सहित जग कामा ॥
कुल औ गोत्र सहित रह नामा * मात पिता सुत नामहु धामा ॥
जेहि कारण जो भक्त भये हैं * दुख सुख जग जेहि योग्य लये हैं ॥
दो०—भक्तहिं चार प्रकार के, यहि दुनियां के माहिं।
तिनके जीवन चरित को, लिखि डारे प्रभु ताहिं ॥

* चौपाई *

भक्तन गुण से वेद बने हैं * जन चरित्र हरि कृत्य सने हैं ॥
हरि के अन्तर में सब वे हैं * इनके हिय में नाथ बसे हैं ॥
जन गावत हैं हरि के गुण के * हरि गावत भक्तन का मुड़ के ॥
सेवक स्वामि अजब है प्रेमा * यहि विधि रहत हरी को नेमा ॥
कोटिक जन्म ज्ञान भरि लावे * हरि अरु भक्त सुयश को गावे ॥
नहीं पार कबहूँ कोइ पावे * याते यथा शक्ति सब धावे ॥
जाकी पहुँच जहां ले जावे * सो तहँ लो सब वेद बतावे ॥
नहिं तो वेद भेद नहिं ओरा * नहिं हरि भक्ति भक्त कर छोरा ॥
दो०—याते मन सन्तोष करि, हरि गुण करत बखान।
सुनत कथा नहिं हर्ष हिय, सो जन जन्म पखान ॥

* चौपाई *

जा नहिं हरी कथा सुन भाई * ताको जन्म अकारथ जाई ॥
राम भजन जग जन्म लिया है * गर्भहिं में जो कौल किया है ॥
मानुष बन्ध छुटन के काजा * दिव्य जन्म का हरि कर साजा ॥
पर यह जीव देखि जग भूला * सुत धन राज काज में फूला ॥
छूट न बन्ध अधिक अरुझाई * नहिं करि यतन लेत सुरझाई ॥
वेद पुराण लिखा ऋषि बानी * ताहि असत्य मनुज सब जानी ॥
कैसे यहि भव होइ गुजारा * करुणा अयन न जीव पुकारा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शिर धुनि २ जन करत पुकारा * सुनत नहीं कोउ यहि भवधारा ॥

दो०—शोचत मन जब जगत को, जिय बहु होत मलान ।
तब प्रभु यहि समुझावते, धीरज हिय महँ आन ॥

* चौपाई *

सारा जगत भक्त नहिं होई * नहिं सब जनहिं विमुख हो जोई ॥
पढ़त लिखत सबहीं भल होगा * कोउ इकपार होत भव शागा ॥
बनते ग्रन्थ यही जग जानी * पढ़ते लिखत कछुक नरमानी ॥
जो सत मान सो लाभ उठावा * नहिं जिय आन तो गिरहिं कुठावा ॥
जो जग जन्म भक्त नहिं होते * तौ सब जग मारत रह गोते ॥
भय जग भक्त लिखे सब धर्मा * ताते छूटि जात कोउ कर्मा ॥
जेते भक्त भये जग माहीं * वे सब जगत चितावत जाहीं ॥
भक्त जन्म है जगत चितावन * उनहीं से मति होती पावन ॥

दो०—बनत ग्रन्थ बहु कारणहिं, व्यर्थ नहीं जग जाय ।
पढ़त लिखत सुख पावहीं, भव उतरत जन धाय ॥

* चौपाई *

कोटिन यज्ञ किये फल पावा * याको जो निज हाथ बनावा ॥
कोटिक यज्ञ पुण्य जन लेई * जो सहायता ग्रन्थहिं देई ॥
कोटि यज्ञ कर फल सो पाई * पढ़हीं प्रेम सहित जिन गाई ॥
पढ़ने से फल दूना भाई * जो सुनता यहि मन चितलाई ॥
सुनने से दुगना फल दीन्हा * जो सब कण्ठ याद करि लीन्हा ॥
कण्ठ पाठ फल है बड़ भाई * जो सब वेद पुराणन गाई ॥
तापर ज्ञान ध्यान पद गावा * सो वैकुण्ठ लोक महँ धावा ॥
है हरि कृत्य भरा सब ठाहीं * करत पाठ हरिपुर को जाहीं ॥

दो०—इतनो पर नहिं समझ नर, सो है हृदय पखान ।
जो जन पढ़ता हर्ष युत, धर्महिं करत बखान ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो भव सागर पारहीं, उतरत विनहिं प्रयास।
ज्ञान आंख खुलती तबै, भ्रमहिं नाश अन्यास॥

* चौपाई *

नहिं शोचो कबहूँ अस भाई * भजनहिं करब वृद्ध पन आई॥
वृद्ध समय चिन्ता अति बाढ़ी * थकित इन्द्रिवल कफ भय गाढ़ी॥
कँपन लाग तन शक्ति तुम्हारी * सकत न अब परलोक सम्हारी॥
हरि सन लाग न चाल गँवारी * छल करि यह परलोक सँवारी॥
तब तक बल चलि गयउ शरीरा * चलन चहत यम लोक समीरा॥
भयउ अशक्त काम सक नाहीं * तब लगि नेह समझ हरिनाहीं॥
गणिका वृद्ध कहति तप करहीं * तस तुम्हार हालत बस घरहीं॥
चतुरन केर चतुर सरदारा * अब न रीझ हरि समुझ गँवारा॥
दो०—ठगहूँ के ठग राम हैं, बसत अमर पुर गाम।
निश्छल जन को सरल हैं, अलख निरंजन नाम॥

* चौपाई *

जा दिन से तुम जनमे आई * तब से आयु घटन मन लाई॥
तू समुझत बढ़ता दिन मेरा * जनमत काल खात बल तेरा॥
बालेपन से माया घेरी * कहते बप्पा मैया मेरी॥
मैं अरु मोर तोर कहते हौ * सिरजन हारहिं नहिं चहते हौ॥
सबसे प्रथम पिता है ओही * जो जग जन्म दिया है तोही॥
सबसे प्रथम याद करना है * जो जग जन्म दिया धरना है॥
मात पिता सिखवत नहिं तोही * देकर जन्म फँसावत ओही॥
माया की सब बात पढ़ावें * मुखते नहिं हरिनाम कढ़ावें॥
दो०—बालपने से मातु पितु, विमुख राम से कीन्ह।
ऐसे माता शत्रु पुनि, पिता सीख नहिं दीन्ह॥

* चौपाई *

छठे बरस जब गय पठशाला * मूरख गुरू शिष्य करि डाला॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वारह खड़ी पढ़ावत जाहीं * राम नाम को नहीं पढ़ाहीं
नाम गुरू शत्रू है तेरा * हरि से प्रथम विमुख तुहिं फेरा
यहि कलियुग विगड़ी सब चाली * प्रभु से विमुख तुरत करि डाली
वालपने का रीत हिया है * नाम हरी से भर न दिया है
गुरु का प्रथम धर्म यहि जानो * भरत भक्ति हरि से हिय मानो
ऐसा गुरू गुरू कह तेही * आवा गमन शोक हर लेही
अन्धे गुरू वहिर मिल चेले * गुड़को तजत दिखावत ढेले
दो०—यहि कलियुग के कीच में, फँसि गय सकल समाज ।
आय निकल सकता नहीं, और फसन कर साज ॥

* चौपाई *

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं * विद्या पढ़न ज्ञान गुरु जाहीं
नहिं अधिकार पढ़ावन सबको * जस भइ रीति याहि कलि अबको
राजा विमुख भये हरि पद से * प्रभु से विमुख प्रजा निज मदसे
राज दण्ड परजन पर होता * सीखो भक्ति धर्म क्यों खोता
धर्म राज सम राजा होते * नहिं कोउ प्रजा नीति रह सोते
हरिपद विमुख दण्ड तेहि मिलता * जाते इन्द्रासन पद हिलता
राजा भय सब प्रजा डराहीं * कबहुं न निज २ धर्म हराहीं
राजा लूटत है परजन को * प्रजा सबै लूटति राजन को
दो०—हीन धर्म से सबहिं भे, रही अविद्या छाय ।
रतन गिरा भवभार में, कांच बटोरत जाय ॥

* चौपाई *

ईशहिं की भय राजा मानी * प्रजा डराति राज उर आनी
सिरजन हार न राज्य हमारी * मैं तु ईश भय प्रजा सम्हारी
सकल प्रजा सन्तति सम मेरी * हम रक्षा करते इन केरी
जितनो माल खजाना हेरी * परजनहीं के हित हम लेरी
मेरे शिर पर राम खड़े हैं * मैं उनके लिय राज लड़े हैं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यामें नहिं कछु बल है मेरा * साहिबहीं का सब घर घेरा ॥
धर्म बन्ध बन्धन बाधे हैं * अलख निरंजन सब साधे हैं ॥
आज्ञा पालन काम हमारा * याते मैं सब राज सम्हारा ॥

दो०—परजा सुनती राज की, यही धर्म मुख बात।
डरते जाते आप सब, कर्म लेत निज सात ॥

* चौपाई *

परजा कहति यही सब बातें * कर कर्महिं प्रसन्न रह जाते ॥
राजा मोर अलख भय माने * मैं भी नृपति रहों रस साने ॥
ये हैं राज धर्म पितु माता * मैं सन्तान इन्हीं के ताता ॥
आज्ञा पालन में सुख पावों * नित्य नियम दर्शन को धावों ॥
यमहिं कुवेर वरुण दिगपाला * इनमें आय वसत सब हाला ॥
तैंतिस कोटि देव वस यामें * जो शिर छत्र नृपति धर जामे ॥
हरि दर्शन का फल होता है * नृप जो धर्म लेत गोता है ॥
हमरो ईश यही जगमाहीं * इनके पूजन फल हम पाहीं ॥

दो०—राजा देता धर्म का, यही दुहाई जाय।
परजा सबहीं राज का, सेवा करती धाय ॥

* चौपाई *

परजा जो कछु करति कमाई * सो सौंपति राजा पद जाई ॥
नृप सोधन सञ्चित कर धरई * अवसर परे प्रजा सुख भरई ॥
ऐसो धर्म कि बजत बधाई * राजा प्रजा दोउ सुख पाई ॥
धर्म मिटा मिटिगा मर्यादा * भये स्वतन्त्र दोउ आजादा ॥
नहिं परजा मानति कुइराजा * बजत अधर्म काहि अब बाजा ॥
राजा दुखी रहत मन माहीं * प्रजा दुखी लखि राजहिं ताहीं ॥
बाना धर्म गहो सब जाके * देखो कलि राजा अवथाके ॥
नहीं धर्म से बस चल इनका * दूरहिं से मुख ताकत तिनका ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—कलि का एक सुभाव भल, धर्महिं देखि पराइ।
जहँ अधर्म नित होत है, कर पकड़त तहँ धाइ॥

* चौपाई *

इनका एकहिं निठुर सुभाऊ * रह अधर्म के घर महँ छाऊ।
धनि महराज राज है तेरा * पामर नर का घर तुम घेरा।
कलह कल्पना नित होता है * राम भजन से नर सोता है।
जाघर [वास तिहारो होवे * सो घर भर धर्महिं सब खोवे।
जाघर वास धर्म का है जी * सो सुख सम्पति नय नित लैजी।
राम भजन करते बड़ भागी * त्रिभुवन पति प्रसन्नता लागी।
धर्महुं में कछु दुख हो जावे * हेतु परीक्षा सो जन पावे।
धर्म धार मूड़न के काजा * हरिजन हित यह साजहिं साजा।
दो०—जो निर्बल हैं धर्म में, मोड़त कर्महिं धार।
धैर्यवान बलवान जन, गह मर्यादहिं सोर॥

* चौपाई *

नहिं नइ रीत सदा चली आई * धर्म परीक्षा के हित गाई।
कछु दुख भोगत है जग माहीं * है पर लोकहुं सुख अब ताहीं।
बहुतन होता धर्म सहाई * प्रथमहिं दुख सुख पुनि श्रुति गाई।
कितनो होय धर्म में हानी * छोड़त नहीं चतुर जन जानी।
सुख अधर्म मे पहले होवे * पर पीछे से वह नर रोवे।
अन्तिम दुख होता तन अन्ता * कहते वेद साधु सब सन्ता।
वैसे धर्म फलहिं को जानो * अन्तहुं सुख कर वार न मानो।
लोक सुयश परलोक कहानी * गावत वेद सुयश हरि बानी।
धर्म धुरीण नाम नर लेई * ताकी नाव पार भे खेई।
विन प्रयास वे नर तर जाते * धर्म धुरीण सुयश जो गाते।
दो०—पापी का लिय नाम हूँ, बिगड़ जात सब काम।
लोक हानि परलोक भय, पुनि पठवत यम धाम॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

पापी नर कर ले नहिं नामा * बनी बात बिनसे जग कामा ॥
बार हजार सुयश जग गाई * धर्म धुरीण नाम लो भाई ॥
हरि के नाम सरिस सुख होवे * वेद पुराण कहा नहिं गोवे ॥
पापी का नहिं बात चलावे * यम पुर का वह डगर बतावे ॥
हरिजन धर्म और यश गाई * भव निधि तुरत पार सो पाई ॥
हरि की कथा पढ़ो दिन राती * जाते सुख पावो बहु भांती ॥
हरि जन नाम लेत नर केई * तप में फल आधा सो लेई ॥
पापी नाम लेत नर जाको * आधा पाप बटावत ताको ॥

दो०—धर्मी भक्तहिं नाम ले, कर दर्शन शिर नाय।
अर्द्ध धर्म अरु भक्ति में, सो जन लेत बटाय ॥

* चौपाई *

पूरव पाप नाश हो जाते * सुकृति सुयश पावत यहि नाते ॥
धर्म धुरीण नाम परतापा * मिटता दुःख कर्म जग सापा ॥
भक्त प्रताप वेद नहिं गाई * नारि हृदय में कहां समाई ॥
प्रभु निज मुख देते सब भेदा * लिखे डारति नारी यह वेदा ॥
हरि जन होते हरि सम जाके * नहिं शारदा पार पा ताके ॥
जो कछु कही समझ नर थोड़ा * हरि जन से कहुं मुख नहिं मोड़ा ॥
सो भवसागर पार उतरिहैं * कबहूँ भव कर दुख नहिं भरिहैं ॥
हरि पुर की है डगर निराली * सो भक्तन सँग मिलती हाली ॥

दो०—भक्तन की महिमा बड़ी, निज मुख से हरि गाय।
हँसी उड़इहैं दुष्ट जन, सुजन सुनत हर्षाय ॥

* चौपाई *

अब कहुं कर्म रेख की हाला * विधि कर लिखा टले नहिं टाला ॥
यह फल होत सकल नर नारी * ताहि न होत राम उर धारी ॥
प्रारब्ध ज्ञानी जन भोगा * अवसर परे मिटत है जोगा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

स्वाभाविक भोगत है कर्मा * आवश्यक मिटि जा बल धर्मा
पूरण्य विशेष पाप से होई * तौ मिट जात कर्म दुख सोई
अन होनी होनी कर देई * प्रभु पद कमल सदा जो सेई
जहँ लगि बने धर्म पथ चलहू * नहिं हरि भक्ति कबहुं तुम टलहू
जीते सुख भोगत जग भाई * अन्त अमर फल खा जन जाई

दो०—याते सोच विचार कर, तज न धर्म की बान ।
हानी होवे जगत में, तबहुं भक्ति उर आन ॥

* चौपाई *

धन सुत जगत होत विनसाई * नहिं हरि भक्ती कबहुँ नसाई
करि शुभ कर्म समर्पण करिये * हरि के चरण कमल महँ धरिये
यहि विधि जो नित अर्पण करहीं * ताको कर्म अमर पद धरहीं
कितनहुं पाप होइ जग माहीं * पर हरि भक्ति नाश हो नाहीं
करि जप योग अनेक बिधाना * हरि समर्पि गो लोक सिधाना
करि के कर्म धर्म फल मांगी * जानहुं सो जन परम अभागी
पाप पुण्य दोनों बढ़ि जाई * भव बन्धन नर छूट न पाई
याते जोइ कर्म बनि जावे * हरि पद अर्पि परम सुख पावे

दो०—आस न धारो कर्म का, फलहि मिले उर आन ॥
फलहुँ परिश्रम का लहे, दूनी ले जिय ठान ॥

* चौपाई *

कहु अब कैसे राम मिलेंगे * भक्ति अग्नि से कर्म जलेंगे
फल रूपी डाली फौहारा * बुझ गइ भाव अग्नि की धारा
नहिं अकर्म जन होने पाये * ऐसे फल मांगन को धाये
बनी बात बिगड़ी सब भाई * करि के कर्म लेन फल धाई
अब तो टूट राम से नाता * मारि कुघात खरग की घाता
ऐसे अवसर फल नहिं चहना * फिर से राम नाम ले गहना
वे प्रभु जानत हैं भव बानी * हरिसे विमुख भाव भर मानी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

याते प्रभु पुनि कृपा करेंगे * भव का भय वे तुरत हरेंगे ॥

दो०—करते भक्ती गिरत जन, कबहुं ऊँच चढ़ि जाय।
गिरत परत पुनि उठत है, हरि से मिलता धाय ॥

* चौपाई *

जो जन गिरा उठत सो नाहीं * यह उर धर भव बन्ध समाहीं ॥
है आलसी मन्द बुधि ताहीं * नहिं साहस याके उर माहीं ॥
जो गिर कर तुरते उठि भागा * जानो सूर भाग यहि जागा ॥
राम लगन लागी उर माहीं * गिरत परत उठि भागत जाहीं ॥
ताकी चूक राम नहिं मानी * पूरण कृपा ताहि पर आनी ॥
बारहिं बार सराहत जाहीं * हिय में राम प्रेम जन ताहीं ॥
नहिं गिरने का लाज वहां है * सोहै वीर गिरत उठि जाहै ॥
ऐसो जन प्रिय हरी लगत हैं * इनके प्रेमहिं राम पगत हैं ॥

दो०—गिरने का तो लाज जग, मूढ़ हँसत मुह बाय।
हरि के पद से विमुख जन, पर अवगुण दिखलाय ॥

* चौपाई *

इनका यही काम जग भाई * पर अवगुणहिं सदा दरशाई ॥
अपने तो शुभ कर्म न कीन्हा * पर अवगुण देखन मन लीन्हा ॥
देखत गुण अवगुणहिं बतावे * करि के द्रोह जलन उपजावे ॥
जितने काज जगत के माहीं * विघ्न रहित होते कोउ नाहीं ॥
तापर हरि भक्ती मह भाई * हो बहु विघ्न वेद है गाई ॥
जाको बाधक जग नहिं होई * जानो राम भक्ति नहिं सोई ॥
प्रथम परीक्षा यह है भाई * कुल परिवार शत्रु हो जाई ॥
द्वितिय परीक्षा को यह मानो * होइ रोग बहु तन महँ जानो ॥

दो०—याहू से नहिं हार जन, पगहिं बढ़ावत जाय।
तब सब देवन आय के भय देते बहु धाय ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

इतनो पर जन मन नहिं टूटा * तव प्रभु आप भक्त सन जूटा।
धरि कर सकल सिद्धि कर भेषा * करत विघ्न वहु भांति निदेशा।
लै कर जन को उड़त अकाशा * कबहूँ पटकत महिं पर वासा।
कबहुं सनन सननाहट होई * तनकी सुद्धि बुद्धि जन खोई।
ध्यानहिं बीच दिखावत भय है * पुनि मंगल जन दुखका छय है।
शत्रू माने कुल परिवारा * जानो देवन कर उपचारा।
तन महँ रोग होइ जन जाके * मानो नवग्रहादि हैं ताके।
ध्यानहिं माहिं उपद्रव भारी * जानो हरि अव उरहिं पधारी।
दो०—याते जनहिं विचरि कर, ध्यान करत चलि जाय।
ज्यों २ जनको विघ्न हो, चित रोके त्यों धाय॥

* चौपाई *

हरी डरावत जन को आके * पुनि सुख देत भक्त उर जाके।
दृढ़ विश्वास राखु मन माहीं * हरिहैं रक्षक मम सब ठाहीं।
का करिहैं सब विघ्न हमारे * मम उर में प्रभु आप पधारे।
उनकी कृपा जीत रण जाके * होय सुखी निज प्रभु को पाके।
उर अन्तर होता उतपाता * तव जानो प्रभु हीय समाता।
भय लागे हरि तुरत पुकारो * निर्भय कर हरि उर महँ धारो।
करुणा ऐन सुनत जब बानी * तुरत भक्त की भयहिं नशानी।
जनकी पीर सहा नहिं जावे * निर्भय करत तुरत उर धावे।
दो०—हरि को वास रहत नहिं जहँ लगि जीव जहान।
प्रगट प्रेम से होत हैं जहँ हो भक्त महान॥

* चौपाई *

जैसे अग्नि काष्ट के माहीं * छिपी रहति नहिं प्रकट दिखाहीं।
जो करि यतन मथन कर ओही * अग्नि प्रकट तुरते तहँ होही।
जिय हिय राम रहैं तस भाई * प्रगट प्रेम से हो उर धाई।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पूरण प्रेम करो जन जाके * सगुण ब्रह्म निर्गुण उर ताके ॥
देखि रूप मन मोद भरोगे * परमानन्द हीय महँ लोगे ॥
समझोगे तब वेद कहानी * शास्त्र जहां लगि कियो बखानी ॥
सत्य सन्त सत वेद कहोगे * मनुष जन्म कृत्य कृत्य लहोगे ॥
विना यतन सब शास्त्र वृथा हैं * और संत मत सबहिं मृथा हैं।
सो०—का करिहो पढ़ि वेद, भेदन पइहो सन्त का।
उर में भरा विभेद, निन्दा करि के भक्त जन ॥

* चौपाई *

का करिहो तन पुरुषहिं पाके * हरि नहिं भजा जगत महँ आके ॥
पूरुष पुरुषारथ बड़ भाई * हरिहिं भजे यह नर तन पाई ॥
आप भजो अरु और भजावो * भजते राम परम सुख पावो ॥
भक्तन संग आप जा करिये * औरों को तहँ लेइ पधरिये ॥
याको फल होता बड़ भाई * तारन तरन वेद सो गाई ॥
नहिं यह बात जगत में छोटी * परम लाभ परलोकहुं मोटी ॥
यहि सम नहिं जप योग कहावे * पूर्व पाप जन भवहिं बहावे ॥
सब से बड़ श्रद्धा फल भाई * कर सत संग सन्त सब गाई ॥
दो०—श्रद्धा का फल लहिय बड़, कहते वेद पुरान।
देखी अन्तर हीय में, अपने बोध महान ॥

* चौपाई *

सन्त वचन को सत करि मानो * पूरण भक्ति हिये महँ आनो ॥
देखो कैसी बुद्धि जगेगी * पूर्व पाप से आप भगेगी ॥
सुनि २ सुन्दर गुण हिय माहीं * आप बसेंगे सो जन ताहीं ॥
नवधा भक्ति बसे उर ताके * दरशन सन्त लालसा जाके ॥
जितने शुभ गुण लक्षण गाई * सो सब आप बसत उर आई ॥
सन्त दरश सम फल वह जानो * पढ़िये ग्रन्थ भाव उर आनो ॥
जाको ग्रन्थ रूप सो ये हैं * पढ़न हेत जो कर महँ लेहैं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करु सत्कार ग्रन्थ कर भाई * तब भव पार उतरिहो धाई ॥
ग्रन्थ मानकर यह फल लहिहो * नहिं भव धार माझ तुम वहिहो ॥
करि सतकारहिं शास्त्र पढ़ोजी * राम भक्ति निज गले मढ़ोजी ॥

दो०—पार उतरिहो आप तुम, और लिये सँग जाय ।
सन्त और सद्ग्रन्थ बल, पार भये सब धाय ॥

* चौपाई *

क्या तुलसी नानकहुं कबीरा * सबहीं पार भये मति धीरा ॥
क्या वशिष्ट क्या ऋषी पराशर * सन्तहिं वेद पार भय सागर ॥
क्या सतयुग द्वापर के माहीं * सन्त ग्रन्थ बल पारहिं जाहीं ॥
क्या त्रेता क्या कलि के जोगा * होइहैं पार पढ़त सब लोगा ॥
जग हित लागि ग्रन्थ सब भाई * लिख जाते सन्तन मत गाई ॥
क्या भाषा क्या संस्कृत जानो * पढ़ते पार उतर जन मानो ॥
प्रभु की भक्ति प्रेम रस खानी * जामें लिखा बड़ो सो मानी ॥
सो भव पार उतरि हो जाके * श्रद्धा भक्ति सहित सो धाके ॥

दो०—नहिं सत्कार करे कोउ, भाषा ग्रन्थहिं आज ।
खोवत भक्ती प्रेम रस, थोड़ी बुधि के काज ॥

* चौपाई *

जो जन कहे पढ़ें क्या जाके * भाषा ग्रन्थहिं को हम पाके ॥
सो जन अन्ध जनम जग आके * है मति मलिन मनुष तन ताके ॥
पशु सम नाक नथी है वाके * भव बन्धनहिं बँधे वह जाके ॥
राम भक्ति हिरदय में नाहीं * पूरब पाप चढ़ा शिर ताहीं ॥
बहुत जन्म से धोखा खाये * अबहिं खाय आगे भी जाये ॥
हरि की भक्ति हृदय से खोवा * अब भी भव बन्धन में सोवा ॥
बाधे हैं नर कई युगन से * बहुरि बधेंगे भव भरमन से ॥
नहिं सहसा बन्धन छूटेंगे * भव में कई बार जूटेंगे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—ऐसा करे विचार नर, तेहि भक्तन का योग।
भुगतत आया युगनसे, आगे भी हैं शोग॥

* चौपाई *

यह अभिमान न टूटे भाई * नहिं भवपार उतरि हो जाई॥
प्रभु की भक्ति निरादर कीन्हा * नहिं हरि भक्तहिं आदर दीन्हा॥
याको फल पावोगे आगे * भाषा पढ़त लजात अभागे॥
नहिं पढ़िके गुरु ज्ञान कमाये * भव बन्धन में जाय समाये॥
हरि की भक्ति नहीं गह लीन्हा * नहिं परमातम पद को चीन्हा॥
भाषा में तब बुद्धि भुलानी * नहिं हरि भक्ती को सुलझानी॥
लेइ करे क्या संस्कृत बानी * जो हरि भक्ती में नहिं सानी॥
क्या करि हो अंग्रेजी पढ़िके * जो नहिं लड़ा हरी रण चढ़िके॥
सब विद्या पढ़ि भये अकारथ * मानुष तनहिं किया नहिं सारथ॥

दो०—विना पढ़े भल होयगा, निज धर्महिं उर आन।
पढ़ना तो यहि काज है, धर्म भक्ति प्रभु जान॥

* चौपाई *

दुनिया देश आपनो मानो * सिरजन हारहिं को पहिचानो॥
अपनो धर्म सदा उर राखो * अपनी भाषा मुख ले भाषो॥
निज मर्यादा आप बचाओ * पर तिय कभी दीठ नहिं लाओ॥
विद्या पढ़ने का यह सारा * हरि की भक्ति हीय महँ धारा॥
जामें हरि की भक्ति मिली है * सो सब वेदहिं सार खिली है॥
ऐसा ग्रन्थ पढ़ो मन लाके * भक्ती धर्म लिखा तेहि पाके॥
क्या नर हो क्या नारी भाई * राम भक्ति जाके उर पाई॥
करु सत्कार प्रेम भरि देखो * नहिं नर नारि रूप उर लेखो॥
हरि मूरति सम वोहि निहारो * नहिं हिय ते निज धर्महिं डारो॥
होइहैं निर्मल नैन तिहारो * राम भक्ति को उर महँ धारो॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—ऐसे सज्जन जनहिं के, गिरधर बस उर आय ।
हरते पूरव पाप को, पार उतारत धाय ॥

* चौपाई *

अब त्रिदेवकी कहों कहानी * जा विधि भक्तहिं दें पहिचानी ।
शंकर भजन करत जन जोई * तापर कृपा विष्णु की होई ।
जो नर करत विष्णु कर ध्याना * आकर शंकर देते ज्ञाना ।
भक्त रूदन करि हरिहिं बुलावें * शंकर आकर डमरु बजावें ।
शंकर ध्यान करत नर कोई * ताको दरश विष्णु कर होई ।
कबहूँ ब्रह्मा आकर देखें * दुर्गा कबहुं भक्त को पेखें ।
कभी शारदा आ दरशावें * कबहूँ महालक्ष्मि परसावें ।
या कर भेद समुझ जन सोई * हरि की भक्ति किया जो होई ।

दो०—हरि यह भाव बतावते, भक्तन के ढिग आय ।
मैं हूँ सबही देव मय, मोर भक्ति किय पाय ॥

* चौपाई *

शंकर हूँ यह भाव बतावें * निज भक्तन को यही जतावें ।
जो मैं सो विष्णू तुम मानो * जो हरि सो हमहीं को जानो ।
क्या दुर्गा क्या देवि भवानी * जेते जग महँ देव कहानी ।
सर्व देव मय मो कहँ मानो * मोर उपासन सब उर ठानो ।
नहिं करि भेद भाव निबहोगे * भरमि भरमि भवमें भरमोगे ।
चतुरन के सरदार कहावें * यहि विधि भक्तन भाव बतावें ।
लड़त मरत सब जीव अभागे * नहिं हरि चरण भक्ति रस पागे ।
भेद भाव तिहुं देवन आने * अपने को भव बन्ध बँधाने ।

दो०—जो जन पाया चौथ पद, सो समझेगा भेद ।
जो जन नकली भक्त है, झूठ बतावत वेद ॥

* चौपाई *

हिय अन्तर का वेद बतावे * जहँ लो सन्त बोध गम जावे ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तीनों देव एक हैं भाई * सन्त वेद कहुँ भेद न गाई ॥
प्रेम भक्ति को कर जन जाके * देखो हृदय राम जब पाके ॥
बोध अखण्ड होइ जन ताके * सो यह जानत हरि पद छाके ॥
नहिं जग हैं सब समझन हारे * ये भव बन्धन नर सब डारे ॥
थकित भये भव भूलहिं पाके * माया ग्रसित बुद्धि है जाके ॥
अकथ नगर की अजब कहानी * नहिं सब याहि सत्य कर मानी ॥
होय कोउ इक जन बड़ भागी * परा भक्ति हरि चरणन लागी ॥
दो०—पढ़ते सो जन समझिहैं, है कोइ हरि को लाल ।
अवगति नगरी हाल सब, लिखि डारी यहि चाल ॥

* चौपाई *

माया ग्रसित बुद्धि है जाकी * ग्रन्थ पढ़त मन की गति थाकी ॥
पढ़िके सब जन हँसी उड़इहैं * मिथ्या कहि कलि दोष लगइहैं ॥
कलि में नहीं भक्त कोइ भाई * यह झूठी गाथा सब गाई ॥
करिके भक्ति देख नहिं जाके * बिन करनी बक जात वृथा के ॥
जो जन चतुर होइ जग माहीं * करिके भक्ति परीक्षा पाहीं ॥
ग्रन्थ पढ़े कर फल यह भारी * करिके भक्ति रामपद पारी ॥
पढ़िके ग्रन्थ अर्थ कर भारी * हरि के मिलन जतन सो डारी ॥
कैसे हिय के पटहिं खुलेंगे * माया बज्र किवाड़ दिलेंगे ॥
दो०—हरि की दाया होय जब, खुले हिये की आंख ।
हरि जन हरि को पाव तब, वेद भरत हैं साख ॥

* चौपाई *

नहिं विचार कछु गृहि सन्यासी * धर सिर पर निज कर अविनाशी ॥
प्रेम भक्ति करता नर जोई * ताको आवागमन न होई ॥
ले सन्यास भजन नहिं करई * कहु सो भव नौका किमि तरई ॥
करो भजन सबहीं नर नारी * देखो प्रभु भवपार उतारी ॥
गृह में बास सन्त कर करणी * सो नर सहज तरे भव तरणी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चाल सन्त की सब जगधारो * तो भव बन्धन तुरत निवारो
है गृहस्थ पर सज्जन कर्मा * सो जन पार उतर निज धर्मा
रहनि गहनि सन्तन उर धरिये * हरि की भक्ति सबै जन करिये

दो०—देखिय तुरतहिं हरि नगर, चौथे पदहिं पधार ।
तब कहिये यह नारि सत, लिखी ज्ञान आधार ॥

* चौपाई *

इतनो बल कहँ नारी पाई * ज्ञान कथा विस्तारहिं गाई
अवशि रही भक्ती बल यामें * बोध अखण्ड लिखी है जामें
करिके यतन परीक्षा लीजे * नहीं व्यर्थ बकवादहिं कीजे
हरि को सकल जगत है प्यारा * नहिं जनसे बसता वह न्यारा
सबके निकट रहत दिन राती * कीट पतंग मनुज की जाती
करत यतन प्रगटत हिय ताके * नहिं कर भक्ति गुप्त रह वाके
ताते यतन करो सब भाई * जैसा वेद पुराणन गाई
सन्त संग करिये नित जाके * तजो न हरि भक्तिहुँ को पावे

दो०—लगते प्यारे हरि सदा, हरि जन यह जिय जान ।
प्रभु के ढिग से कबहुं ए, अलग होत नहिं मान ॥

* चौपाई *

काम भये संगहिं तजि देई * सो जन हरी विमुख पद लेई
ऐसा कर्म करो नहिं भाई * पूरब पुण्य तुरत नशि जाई
सेवा सन्त नहीं धन चहिये * कर जोड़े नितहीं तुम रहिये
जितनो शक्ति होय घर माहीं * उतनो धन खरचो तुम ताहीं
अवसर की यह बात कही है * नहिं सबहीं दिन यह निवही है
सन्त रहे नहिं धन के भूखे * हैं वे सबहिं जगत से रूखे
उनको तो हरि भक्ती प्यारी * करि उपदेश जगत दुख हारी
ऐसा हो तेहि सन्त बतावें * है यह सुयश वेद सब गावें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—धन के भूखे सन्त जो, भक्ति न करहिं बखान।
समझो साधू वेष में, इनका हृदय पखान॥

* चौपाई *

जब कारज जग आवत भारी * जन हित लागि सन्त धनधारी॥
कबहूँ ऐसा अवसर आवे * सन्त सुजन धन यतन करावे॥
ऐसे समय न शंका कीजे * जो धनि आव अवशि सोदीजे॥
परम गृहस्थ धर्म यह भाई * पर उपकार खरच धन जाई॥
परम धर्म भक्तों का जानो * तप धन खर्च जगत हित मानो॥
करिके भक्ति न धनहिं कमावे * ले पैसा जो भक्ति बतावे॥
जानो सो तो भक्त न होई * जग धोखा देता जन सोई॥
हरिके भक्त न धनहिं कमावें * ए तो निज धनकोहि लुटावें॥

दो०—बिन पैसा के भक्ति हरि, देत जगत में दान।
जग उपकारहिं काज कर, भक्त ताहि पहिचान॥

* चौपाई *

जाहि छोट बड़ एक सभाना * सो जानो यह सन्त सुजाना॥
देखे चाह भक्ति है जामें * राजा रंक कोउ तन तामें॥
ता पर दया करे जन जाने * हरि की भक्ति देइ सन माने॥
ऐसा हो तो सन्त कहावे * नहिं तो केवल रूप बनावे॥
जाति पांति नहिं करिय विचारा * जो चाहे भक्ती दे डारा॥
पूरे सन्त यही जग जानी * भक्ति दान देते सत मानी॥
का करिहैं कोउ राव रंक हो * हरि भक्ती भूखा न कंक हो॥
रंक होय हरि भक्ती मागें * जानो भाग्य ताहि कर जागे॥

दो०—धनी होय जो पेट भर, फूल खाय कर जाय।
हरि की भक्ती करत नहिं, सन्त त्याग तेहि धाय॥

* चौपाई *

ऐसो ही सब वेद बतावें * बोध अखण्ड बीच प्रभु गावें॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरि विमुखन कर अन्न न खावे * सन्त त्यागि घर अन्तहिं धावे
श्रद्धा युक्त होइ जन कोई * सन्त अन्न घर खावे सोई
श्रद्धा हीन दान नहिं लीजे * ऐसा सन्त धर्म कह दीजे
श्रद्धा हीन नरक नर जाहीं * जो खा अन्न वही फल पाहीं
श्रद्धा देख जाहि उर भारी * ता घर तुरते सन्त पधारी
भाव भक्ति का रस ले लीजे * प्रेम पियाला हरिका दीजे
हरि भक्ती का आदर है जी * नहिं धन धामहिं उरमें लैजी
दो०—क्या राजा क्या रंक हो, भक्ती आदर देइ ।
भक्ति हीन हो भूप भी, ताको मान न लेइ ॥

* चौपाई *

हरि की दया रहति सबहीं पर * नरमति नहिं झुकती ता ऊपर
खाली हाथ सबहिं जग आवा * पुनि रीते परलोक सिधावा
सब तजि कर जाना है तुमको * फिर प्रथमहिं तजता नहिं उनको
तन से तजे न काम सरेगा * अन्तर से सब भाव भरेगा
तन से भले समेटत रहिये * मन से कभी मोह नहिं गहिये
मनहीं का स्वामी तो हरि हैं * मन के त्याग तभी सुख भरिहैं
मन से हरिहीं हरी रटो जी * तन से यहि जगमाहिं सटोजी
देखो कैसी भक्ती बाढ़े * हरि पद में लागे चित गाढ़े
दो०—मनहीं का प्रभु गाहक, यहि जग होता आय ।
भक्तन मन को मोल ले, हीय रहत मन भाय ॥

* चौपाई *

ऐसा गाहक देख न जग में * मन का मोल लेइ यहि मग में
तन धन के भूखे जग भाई * मनका नाम सुनत टल जाई
नहिं सतकार जगत में पावे * जो कोइ मन से प्रेम लगावे
मात पिता सुत नारी जेते * जोड़त नेह धनहिं के हेते
होत बहुत दुख जगहिं निहारे * चलु मन जहँ वसते हरि प्यारे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरि समयहिं जग सद्गुरु होवें * बँधी गठरिया निज कर खोवें ॥
जन्म २ का बोझ जुटा है * गुरु प्रताप क्षण माहिं छुटा है ॥
बादन हार बहुत जग पेखे * छोड़न हार विरल कहुं देखे ॥

दो०—कर्म गठरिया बांधिके, शिर पर धर सब लोग।
सद्गुरु ताहिं उतारिहैं, निगुरा भोगे शोग ॥

* चौपाई *

तितिली होति मनोहर रूपा * हरा पीत सुन्दर अनुरूपा ॥
देखत लागति अती सुहावन * सबहीं मनु जन के मन भावन ॥
उड़ि के बैठि जाय पत्तन पै * काटति हरे भरे लत्तन पै ॥
हरियाली का रूप बिगारे * ऐसी निठुर काटती डारे ॥
वैसे जग यह देख सुहावे * यों हरिकी माया भुलवावे ॥
पत्ती रूपी आयू काटे * माया रोकति जाकर बाटे ॥
शुभ कर्मों को कर नहिं पाते * परलोकहुं दुख पावे ताते ॥
नहिं सुधि रहति आयु घटने की * भूलि गये लखि जग पटनेकी ॥

दो०—माया लगी बाजार है, या दुनिया के बीच।
इक आवत इक जात है, यहि भव हीं के कीच ॥

* चौपाई *

मकरी निज मुख तार निसारे * नाचति जा अब ताहिं इशारे ॥
वै सो हरि निज रूप पसारा * कहुं नर रूप नारि कहुं धारा ॥
कहुं वे कीट पतंग बने हैं * कहुं रसाल पशुपक्षि घने हैं ॥
कबहूँ उगिलत आप मुखन से * कबहूं निगलत जात बदन से ॥
जग हरषत परखत गति देखी * रोवति हूँ उलटी जग पेखी ॥
जाने बिनु इतनो दुख पावे * शुभ कर्मन को आप नशावे ॥
सन्त सभा सेवै नहिं जाके * अविरल भक्ति मगन हो पाके ॥
तब देखे यह हरि की खेले * या दुनिया को पद से ठेले ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—लपट रहे धन धाम में, मरने की सुधि नाहिं।
कहु जी अब कैसे बने, ऐसे जन जो ताहिं॥

* चौपाई *

सारे दिन धन धाम सँवारो * सांझ सवेरे हरिहिं पुकारो
गृह कारज से छुट्टी पावो * तब जा पलँग पीठ दे ठाऊँ
आँख बन्द करि सुमिरन करिये * हरि का ध्यान हिये में धरिये
देखो कैसे सुख मिलता है * अमर नगर का पद हिलता है
तुरत छोड़ि हैं प्रभु निज लोका * आकर हरिहैं जन कर शोका
छूटि जाइ यह जग व्यवहारा * आनन्द सिन्धुहिं तुरत पधारा
देखोगे यह हरि का रूपा * कैसा सुखमय आत्म स्वरूपा
महिमा सन्त समझ तब आवे * जाको वेद भक्त सब गावे

दो०—ऐसो भूला आप नर, यहि दुनिया के भान।
सन्त और जे भक्त हैं, उनको भूला मान॥

* चौपाई *

पढ़ि गुनिके नहिं सक कोउ जानी * जब तक हीय ज्ञान नहिं आनी
नहिं परतीति सन्त की होई * नहिं विश्वास ग्रन्थ लिख सोई
भव झूलन झूला सब खेला * क्या पामर ज्ञानी भी भेला
प्रथम ज्ञान नहिं पावत कोई * भव निशि में सोवा सब लोई
करिके यतन जाग सब ज्ञानी * भवनिशि नींद खोव सो ध्यानी
प्रथम गती नहिं भूलत अपनी * देखा भवनिशि को जिमि सपनी
याते सबहिं जगावत नाथा * कहिके सब परमारथ गाथा
समझें कोइ चतुर नर या को * करिके यतन देखि हैं ताको

दो०—मूरख पढ़िके भरमिहैं, औरहुं दे भर माय।
शुभ मारग को खोइके, हँसी उड़ावत जाय॥

* चौपाई *

अपने तो धोखा जग खावे * भक्तन को भी झूठ बतावे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

रि की कथा पढ़ो नहिं भाई * ऐसे लोग जहाँ जन पाई ॥
रि बरजत सबहों नर नारी * यह आज्ञा रखियो उर धारी ॥
धिकारी को कथा सुनावो * हरि की भक्ति जाहि हिय पावो ॥
था निरादर पातक भारी * गौ ब्राह्मण वध सम हो जारी ॥
ालक नारि वधे में जो हैं * सो पातक जन लागत सो हैं ॥
ो कहता सो पातक भारी * जो सुनता वह भी गल डारी ॥
ाते कथा न सबहिं सुनावो * जा उर भक्ती ताहि बतावो ॥

दो०—पढ़हिं कथा एकान्त में, जहां न हो जन कोय।
मन निर्मल हो ताहिं जन, ज्ञानहिं निधि सो होय ॥

* चौपाई *

श्रद्धा युक्त कहे नर कोई * हमको कथा सुनावहु सोई ॥
तुम एकान्त पढ़ते हो जाके * सुनन चहत हूँ मैं पुनि ताके ॥
जब समझो श्रद्धा उर भारी * याके हिय में भक्ति पधारी ॥
तब हरि कथा सुनावो ताके * बहु बारहिं कहता जब आके ॥
हरि की चर्चा कभी न खोलो * श्रद्धा हीनन से मत बोलो ॥
मूरखहूँ से मूरख हो जा * वह जाने जनु हरि नहिं खोजा ॥
हरि की भक्ति छिपावो हिय में * नहिं प्रकटो काहू के जिय में ॥
चातुरता की रहन गहो जी * हरि भक्ती हिय माहि लहो जी ॥

दो०—जितनो अधिक छिपाइये, उतनो हीं फल होय।
का करिहैं जग जानि के, भक्ती जावे खोय ॥

* चौपाई *

जब तूँ चौथा पदहिं पधारे * हरी आय निज भक्त प्रचारे ॥
वे आज्ञा देवैं बहु बारा * करु प्रचार तूँ जगत मझारा ॥
वचन सुनत अजान हो जाना * मैं हूं जन तव अन्ध महाना ॥
जो चाहो प्रभु सो तुम करिये * मेरे शिर पर भार न धरिये ॥
उनको चिन्ता हो उर भारी * कैसे भक्त दुःख हम टारी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो प्रभु समझे हिय कछु अपने * भक्तन हित करिहैं सो सपने
भक्ति दान मह दान कहावे * याते प्रभु निज भक्त बतावे
याहि लुटा दो जगत मझारी * जाते तरि जावैं नर नारी
दो२—ऐसा योग न लगत है, यहि कलियुग के माहिं ।
भक्ति लुटावे लूट कोइ, मूरख समझत नाहिं ॥

* चौपाई *

याते भक्त मौन को धारे * तब प्रभु आपहिं हिये पधारें
देखो सुख कितना मिलता है * हिय में नाथ आप हिलता है
चातुरता से कामहिं लीजै * नाथ संग नहिं चूक करीजै
आपहिं देखि करे सब काजा * वे तो हैं त्रिभुवन के राजा
भक्तन नाम बढ़ावन काजा * बहुत करत उतपातहिं साजा
भक्तन यश गावे विन वाही * नहिं रहि जात सुने गुन ताही
नाचत गावत है बहु भातीं * भक्त रिझावत है दिन राती
चतुर भक्त रहते मन मारी * नेकन सुनत भक्त रस धारी
दो०—भक्त दिखावन काज हीं, नाथ करत उतपात ।
जनहिं बुलावत भागिहैं, नेक नहीं ठहरात ॥

* चौपाई *

याते चतुर रहो नर नारी * राम लगन उर में रह धारी
हियते हरि की भक्ति न टारो * प्रभु तब रहत भक्त से हारो
भक्त भक्ति को बढ़ने काजा * हरी अनेक भाव ले साजा
कबहूं रस अनुरागहिं गावें * वेद पुराण कबहुं ले धावें
हिय अन्तरहिं पढ़ावत वेदा * खोलत परम भक्ति कर भेदा
जग गति देख होत दुख भारी * नहिं हरिभक्ति कुमति उरधारी
जब सोचति हरि भक्त जनम को * हो उत्साहित लिखति धरम को
कलियुग लुप्त होइ सब कर्मा * पढ़ि कोउ ग्रन्थ निवाहे धर्मा
कोउ इक भक्त जगत महँ होगा * पढ़ि कर ग्रन्थ मिटे भव शोगा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो कोइ पढ़े गुने मन माहीं * समझे सत्य पाव फल ताहीं ॥
दो०—यहि कलियुग के मध्य में, मत पखण्ड बहु ठाहिं।
लुप्त करत सद्ग्रन्थ को, आगे मेटत जाहिं ॥

* चौपाई *

याते हरि की भक्ति लिखा है * खोलि सुजन जन आंख दिखा है ॥
आगे भी बहु जन देखेंगे * ज्ञान आंख लेकर लेखेंगे ॥
हरि भक्ती विन महि न रहेगी * पढि २ जनता भक्ति लहेगी ॥
क्या नारी क्या नर हो भाई * हरि भक्तों की बजत बधाई ॥
ऐसा हरि का नियम रखा है * सिद्ध सन्त महि अवशि लखा है ॥
जग दुइ चार अवशि ठहरेंगे * हैं अरु पुनि आगे लहरेंगे ॥
गिनती सिद्धन केर कही हैं * साधन वाले बहुत मही हैं ॥
हैं भी आगे होत रहेंगे * हरि भक्ती हिय माहिं गहेंगे ॥
दो०—इन सुजनन हित हेतुहीं, ग्रन्थ बनावत सन्त।
नहिं तो इतर जनन लिये, कौन रचत यह मन्त ॥

* चौपाई *

हरि पूजे जन हरि हो जावे * देव अराध देव तन पावे ॥
जा जन शंकर जाय उपासे * भोला नाथ होय मन तासे ॥
जो करता भूतन की पूजा * सो अवश्य हो भूत न दूजा ॥
नर कर देह होत यहि लागी * भाग्य भूत सुर पितरन जागी ॥
सब कर पूजन करि दुख हरई * समय २ तोषित सब करई ॥
जब अवसर आवे जग जाकी * तब पूजा देवे नर ताकी ॥
पर इक इष्ट राख त्रैदेवा * जाको भाव रहे तेहि सेवा ॥
दुर्गा देवी इष्ट बनावो * त्रैदेवा सम भावहिं लावो ॥
दो०—पर इक भूतहिं इष्ट नहिं, कोउ जन लेइ बनाय।
जीवित दुख है जगत में, मुये नरक परु जाय ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varahasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

भाव भूत का कबहुं न लावे * अपने हिय नहिं प्रेम जगावे
धन सुत लागि न हरि को मानो * पइहो सब मन भावहिं जानो
हरि आराधे धन सुत होंगे * सुन्दर सुखद बहुत हरशोगे
देव अराधे धन सुत पाई * प्रथम सुखद पुनि हैं दुख दाई
भूत अराधे धन सुत होंगे * आवत जात दुसह दुख भोगे
याते भूतहिं भाग लगावो * उरते सबहीं काम भगावो
जो कुछ इच्छा है उर माहीं * प्रभु से सब तुम मांगत जाहीं
सब कामना पुरावन हारे * हैं वे ही इक नन्द दुलारे

दो०—जनकी सब हीं आस वे, पुरवत दीना नाथ ।
अविरल भक्ती चाह जो, तजे जगत का साथ ॥

* चौपाई *

अविरल भक्ती चाहन वाले * कोउ इक होता सन्त निराले
उनकी कथा प्रथम लिख डारी * अब ग्रहस्थ का धर्म विचारी
हरि की भक्ति रखो उर माहीं * धन सुत संगहिं मांगत जाहीं
यामे नहिं कछु हानि तुम्हारी * पर इक मुक्ति न मिले संवारी
कई जनम तक सुन्दर देहा * पइहो देव मनुज कर गेहा
मरे स्वर्ग पुनि तन मनुसेका * या विधि सुख पइहो अनुसेका
सुन्दर बुधि सुन्दर तन रहिहैं * गृह लक्ष्मी सदा घर गहिहैं
या विधि कई जन्म बीतेंगे * तब पुनि हिय यह ज्ञान जगेंगे
अविरल भक्ति पाइ नर जाके * भव बन्धन कटता तब ताके
जैसे निबहे वैसे करिये * हरि की भक्ति हीय महँ धरिये

दो०—त्रैदेवा को छोड़ि के, आन भरम मति जाहु ।
तिहुं देवा सम देवियां, इष्ट बनावहु ताहु ॥

* चौपाई *

भूत इष्ट कबहुं नहिं कीजे * तब शुभ कर्म दिने दिन छीजे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देवहिं इष्ट बनावो भाई * यामे अधिक हानि नहिं गाई ॥
नर ते देव देव से ईशा * या विधि कबहुं पाव जगदीशा ॥
जाको जामे प्रेम जगेजी * सो ताको सेवा अब लेजी ॥
पर इक भूत बचावत रहिये * इनमें कबहूँ प्रेम न गहिये ॥
शंकर पूजा कर नर जोई * नाश भूत के भय का होई ॥
जाको शंका भूतहिं भाई * सो शंकर पूजा कर जाई ॥
जाके तव में भूत लगा है * सो पूजा हनुमान पगा है ॥
दो०—भूत छोड़ि तन भागिहैं, जपो पवन सुत वीर ॥
ओझा देवा पास नहिं, कबहुं जाइ मति धीर ॥

* चौपाई *

भूत भाव निन्दित है भाई * वेद पुरानन में सब गाई ॥
जेते जगत चतुर नर नारी * हरि की भक्ति हिये महँ धारी ॥
हरि में भाव बढ़ावत जाई * जग भय सबहिं भगावत भाई ॥
देव पितर सबहीं ते भारी * हरि भक्तन की महिमा गारी ॥
हरि के भक्त हरी सम होते * विपति सकल जग की सब खोते ॥
याते हरि की भक्ति करो जी * जासे नहिं तुम कबहुं टरोजी ॥
देखो कैसा आनँद होता * यहि भव निशि में कबहुं न सोता ॥
याते सोच समझ नर नारी * नहिं उरते हरि भक्ति बिसारी ॥
दो०—हरि भक्ती सम और कछु, नहिं जग पूजा दान।
तीरथ व्रतहुं न होत हैं, नहिं जग यज्ञ महान ॥

* चौपाई *

मेरी कही सही नहिं माने * है दुनिया तो आप हिराने ॥
दीना नाथ कहत सौवारी * कोइ इक भक्त हिये महँ धारी ॥
धारत परम लाभ हो ताके * होत निहाल भक्ति मम पाके ॥
बहुत अभागे यहि जग होंगे * सुनि हरि कथा अलग जा सोंगे ॥
हरि भक्तों की भाग्य बड़ी है * चौथे पद में जाय लड़ी है ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यह हरि चरित सुने फल भाई * हिय में हरि की लगन लगाई
पहिले हरि जन कथा सुनत हैं * ता पाछे पुनि लगन लगत है
ता पाछे नव भक्ति जगति है * तब पुनि हियकी आंख खुलति है

दो०—ता पाछे षट वास्त्र का, वोध वेद का होय ।
तेहि पाछे पुनि जगत महँ, देत सिद्धि सव वोय ॥

* चौपाई *

वड़ भागी सींचत यह वीरो * जा उर भक्ति जगत महँ धीरो
आँख आँसु से पेड़ सिचावे * नहीं कूप के नीर पियाये
नहिं दधि दूध मही लागेगा * हरि भक्तन के हिय जागेगा
कोमल अति निर्मल मन होगा * ताके हीय जमत यह योगा
नहिं सब नर के हिय यह योगा * जामत जो सवहीं उर लोगा
यह फल वड़ अनुपम है भाई * सन्त हिये में जामत जाई
हरि भक्ती की पौध लगी है * सरल चित्त के हीय जगी है
आनन्द का फल जवहिं लगेगा * तोड़ि खाय कोइ सुजन पगेगा

दो०—नहिं फल खावें सुजन जन, खाय अमर हो जाय ।
नाम रहत तेहि जगत में, हरि पुर पहुंचे धाय ॥

* चौपाई *

यह फल खान चहे वड़ मुखड़ा * वह नहिं खात करत जो नखड़ा
मूड़ मुड़ाय भये सन्यासी * फल नहिं खात भेष अन्यासी
जो फल खाय छिपा नहिं जनमें * पूरण प्रेम प्रगट हो तन में
अकथ नगर की बात निराली * उनके मुख निसरत है हाली
बात करत भरि लेत उसासा * पद पद ज्ञान लेत भरि सांसा
वड़ वड़ पण्डित रह मुँह ताकी * लेते भक्तन की जब झांकी
हीय वेद से बात करत हैं * नहिं पढ़ि अक्षर वृथा मरत हैं
कहं लगि लक्षण कहिय सन्त के * थकित होति वुद्धी महन्त के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हो०—अवसर परे तो वात हूं, कर ब्रह्मा सन जाय।
थकित होय गति उनहुं की, मनुज कहां ठहराय॥

* चौपाई *

नहिं कोउ जग यहि योग दिखाई * हरि जनसे विवाद कर जाई॥
सतयुग लगत रहा दरबारा * ज्ञानिन हीय खुला रह धारा॥
साधक जन सुनते मन लाई * जो ज्ञानी कहता चलि जाई॥
कछु २ रह द्वापर के माहीं * त्रेता युगहूँ में सुन जाहीं॥
यह कलियुग आयो विपरीता * हरि भक्तनहिं निरादर चीता॥
याते ग्रन्थ लिखति हुं भाई * यह सब ज्ञान गुप्त मुनि गाई॥
मुख से ज्ञान कढ़त जब वैना * चुभता श्रोता हिय जा सैना॥
सुनते खुलहिं हृदय की आंखे * स्रोता हीय भक्ति रस चाखे॥
दो०—पढ़ने का फल मध्य है, सुनन वहुत ही योग।
ज्ञानी मुख के बचन हैं, निसरि हरत भव शोग॥

* चौपाई *

नहिं यह ज्ञान लिखन के योगा * गुरु मुख होय सुनत रह लोगा॥
नहिं अब स्वामि न सेवक देखा * ताते नाथ करावत लेखा॥
यहि कलियुग की अन्ध नगरिया * नहिं लखि पावत ज्ञान डगरिया॥
होइहैं कलियुग भक्त हमारे * वह भी वहि जइहैं भव धारे॥
याते ज्ञानहिं कथा सम्हारो * जा वल ते भव काज संवारो॥
पढ़ि के भक्त भक्ति जन पावैं * धोखा मैं न अनत कहुं धावैं॥
कलियुग सन्तहिं भेष बना के * ठगत फिरत सब लोग जनाके॥
खोलि लिखो यह ज्ञान कहानी * जाते हो न सुजन की हानी॥
दो०—पढ़िहैं जवहीं सुजन जन, हरि भक्ती ले धाय।
नहिं कहुं धोखा जाय पर, लिखा ग्रन्थ मैं गाय॥

* चौपाई *

भक्त भाव के वश हरि होते * जन से मिलत विपति सब खोते॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कवहूं नर कवहूं हो नारी * भक्त हृदय मैं जात पधारी
कवहुं चेरि चेर वनि जाते * कवहूं सन्त भेष धर भाते
कवहूं राम कृष्ण धरि रूपा * कवहूं विष्णु बने जनु भूपा
कवहुं भक्त भक्तिन के भेषा * जन को नाथ देत उपदेशा
तारक मंत्र सिखावत आके * भक्त दुसह दुख मेटत जाके
कवहूँ चांद सूर्य हो आवैं * विजली तारा गण वनि जावैं
कवहूं शंकर का धरि रूपा * ज्ञान सिखावत भक्त अनूपा
दो०—कवहूँ ब्रह्मा रूप धरि, वेद पढ़ावत जाय ।
है छोटी बातें सबै भक्तहिं मान बढ़ाय ॥

* चौपाई *

सुनि आश्चर्य करे जनि कोई * यह लघु बात भक्त ढिग होई
जन अभिलाष होत बड़ भाई * भाव वश्य छोटा सो गाई
नहिं दरशन पावत सब लोगा * जो भुगतत हैं भव का शोगा
चारि वरण हरि जन जग होवैं * कह थोड़े उनके गुण जावैं
प्रेम पियासे भक्त रहत हैं * आत्म रूप सोइ प्रेम कहत हैं
ये धरि रूप भक्त भरमावैं * हरि जन हरि के रूप समावैं
प्रवल चाह होती हरि जन के * हो प्रसन्न नहिं पा दरशन के
मरती मीन सलिल के लागी * का करिहैं पय भरे तड़ागी
दो०—वे नट खटे स्वभाव के, दीना नाथ कहाय ।
भक्तन रुचि प्रतिकूल हो, देत दरश नित आय ॥

* चौपाई *

जल के प्यासे भक्त मरत हैं * वे ले दूधहि हीय भरत हैं
याते भक्त हरी से रूटे * जी चाहत नित पिय से जूटे
पढ़ि के हँसिहैं सब नर नारी * लिखा गप्प बातें ये सारी
हरषित होंगे ऋषि मुनि देवा * सत्य मान जो किय हरि सेवा
चारि प्रकार भक्त जग माहीं * जिन हरि एद श्रद्धा चहुं पाहीं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो मन मुदित रहित बहु खेदा * पावा मार्ग खोलि सब भेदा ॥
पढ़त ग्रन्थ श्रद्धा उर जागी * सुगम राह पावत बड़ भागी ॥
उर में दाह उपजिहैं भारी * हरि पद विमुख लोक सब जारी ॥

दो०—नहिं समझत जो वेद को, धर वेदान्ती नाम।
इरखा वश सो नर डहे, भव भरमन जेहि काम ॥

* चौपाई *

लोक लाज परलोक विसारी * ते नहिं बोलत वचन सम्हारी ॥
जो कछु कहा थोड़ जग भाई * वेद पुराण कहा सब गाई ॥
सुजनन के हिय भाव जगेंगे * हरि चरणों में जाय लगेंगे ॥
इतना दुःख उठावत सन्ता * येहि सुजनन लगि ज्ञान महन्ता ॥
जो कहुं देखत दुर्जन हिय को * विगड़ि जात सब भक्तन जियको ॥
हरि प्रेरक होते उर माहीं * आगामी भक्तन के लाहीं ॥
नौका ज्ञान धरावत याते * चढ़ि के भक्त तरे सब जाते ॥
नाथ मिलत जेहि भांति भगत को * नहिं पूरो कोउ कहत जगतको ॥

दो०—अन गिनती तो शक्ति है, वार पार नहिं भक्त।
हरि मिलते बहु भांति से योग न देखा जक्त ॥

* चौपाई *

थोड़ी शक्ति कहा हम गाई * जाते भक्त भलाई पाई ॥
गूढ़ ज्ञान को सीख गुरू से * होत मुखागर कथा शुरूसे ॥
वचन वाण जन हीय विधाते * खाते तीर हृदय लग जाते ॥
होते योगी तपसी मौनी * खाय चोट जङ्गल के डौनी ॥
तजते धरा धरणि गज सारी * सहते घोर विपति बन भारी ॥
खात सुखी तरु गिरे पतइया * विसराते घर धरी मलइया ॥
सो महराज कली के राजे * चुट कुल्ली ग्रन्थन में साजे ॥
को अब याहि सत्य करि माने * को रस अनुपम हियमें साने ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो०—हरि दरशन बड़ भाग, पावत ऋषि मुनि तप बलहिं।
सुलभ करी प्रभु आज, लिखवावत जन हित समुझि॥

* चौपाई *

प्रेम पियासे भक्त बुलावें * क्षीर समुद्र नाथ ले धावें।
नहिं सत्कार करत जन कोई * जाके हीय तीर लगि होई।
तड़पत प्राण पीव मिलवे को * कहु अब काह क्षीर पियवे को।
सकुचत नाथ पियावत जाते * उलटा मुख फेरत जन ताते।
नीर क्षीर से मिल जो जाई * फाटे अवशि खटाई पाई।
जो जल से जल जाय मिलेंगे * कोटि निम्बु डारे न फटेंगे।
जन चाहत हरि से मिलने को * वे नट नागर नहिं हिलने को।
अचल रूप हरि डोलत नाहीं * लड़ते भक्त दुर्ग चढ़ि जाहीं।

दो०—काम क्रोध मद लोभ वश, दोउ कर्म जड़ दीन्ह।
प्रेम फरसु जन लेइ कर, तोडि क्षणहिं में लीन्ह॥

* चौपाई *

माया रहित भये जन तबते * अहमिति गढ़ तोड्यो जा जबते।
क्या सुर लोक होइ विधि लोका * तृण सम तोस्यो भयो अशोका।
बैकुण्ठहुँ आदर नहिं देते * इक हरि मूरति को जन लेते।
यहि जग की अब कहों कहानी * नहिं कोउ भक्त करत पहिचानी।
क्रोध करत जो जग हित लागी * जाते समझ जाँय बड़ भागी।
होइ काम बश देवन काजा * धरणी भार हरत जग लाजा।
होइ मोह वश कबहूँ ज्ञानी * जग के पाप हरन वह ध्यानी।
है कारण अनेक इन माहीं * सहसा नहिं समझें जग ताहीं।
लिखों ग्रंथ होवे बड़ भारी * नहीं जगत सब उर महँ धारी।
ताते नाथ लिखावत थोड़े * जाते सुजन हृदय महँ जोड़े।

दो०—ज्ञान धार जो जा चढ़ा, नहीं छिपे जगमाहिं।
निरखि परखि सतसंग करु, अवगुण देख न ताहिं॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

अवगुण देख होइ बड़ हानी * वेद पुराणहुं कहा बखानी ॥
निरखत परखत समय विताना * सो मूरख मम बोध बताना ॥
याते समय न बहुत विताबो * शीघ्रहिं शुभ कर्महिं गहि लावो ॥
अपनी करनी पार उतरि हो * हरि भक्ती शीघ्रहिं उर धरिहो ॥
दृढ़ विस्वास गुरू में राखो * मुख से सदा नरायण भाखो ॥
जबतक निरख परख जन करिहो * तब तक अमर नगर पग धरिहो ॥
जितनो तुरत भक्ति को पावे * उतनहिं शीघ्र जगत खो जावे ॥
जग के भान मिटन की युक्ती * करते जाव सुजन मन उक्ती ॥
दो०—यहि भवहीं के भान में, भूलि जाय हरिनाम।
कर्म गठरिया शीश धरि, विगड़ि जाय सब काम ॥

* चौपाई *

अपना मन विगड़ा तन माहीं * जाते भान जगत सब ठाहीं ॥
जब सुधरे मन शत्रु हमारे * सारी श्रृष्टि हरी हो जारे ॥
हरिमय देख रहे जग जाके * सुख मय श्रृष्टि होत जन ताके ॥
जन्म सफल होइहैं तब वाके * निज नैनन देखा हरि जाके ॥
सो जन धन्य जगत में भाई * धन्य घड़ी जेहि जन्महिं पाई ॥
धन्य मातु पितु हैं अब ताके * हरि का भक्त जन्म जब जाके ॥
सो है धन्य नार जो काटी * धन्य सो दाइ गोद ले साटी ॥
धन्य विप्र जो लग्नहिं देखा * शुभ मुहूर्त नयनन निज पेखा ॥
दो०—सो जन अब कृत कृत्य हैं, वर पायो नर नारि।
धन्य सुहागिनि राति है, जहँ जनवासा डारि ॥

* चौपाई *

भक्तन की महिमा बड़ भारी * नहिं कहि सकत शेष त्रिपुरारी ॥
जाको जहं लगि होत विचारा * सो लिखि डारत ज्ञान अधारा ॥
ज्ञान धार रूपी भगवाना * सोई ज्ञानी वेद बखाना ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहिं पढ़ि गुनि सुनि करत विचारा * लिखत सबै इक बोध अधारा ।
नहिं हरि गौर नहीं हैं कारे * नहिं बिजली नहिं ज्योति पसारे ।
नहिं तारा नहिं चन्द्र समाना * है नहिं दुग्धहिं उदधि महाना ।
नहीं हंस नहिं मानसरोवर * नहिं मुक्ता चुगता कोइ जाकर ।
नहिं सिंहासन पर प्रभु बैठे * नहिं तहं जाय सुजन कोउ पैठे ।
दो०—जिन देखा तिन जानिहैं, प्रभु कर रूप अपार ।
अलख निहारत अलख भे, लिखति ज्ञान अधार ॥

* चौपाई *

हरि कर रूप दीख कोउ नाहीं * आपै तो प्रभु रूप समाहीं ।
आपहिं आप देखि जन जाके * आपहिं ब्रह्म रूप सो पाके ।
आपहिं ज्ञान आप हो ध्यानी * आपहिं चार वेद षट ज्ञानी ।
आपहिं बोध अखण्ड कहानी * आप पढ़े आपहिं सब मानी ।
आप कहे आपहिं सब सुनता * आपहिं प्रश्न उतर दे गुनता ।
आपहिं स्वामी सेवक देखा * यही रूप ज्ञानी जा पेखा ।
यही अमर पुर अमर कहावे * ज्ञानी याही कुण्ड नहावे ।
साधक देखत हरि कर रूपा * स्याम स्वरूप चतुर भुज भूपा ।
दो०—कबहुंक छुनन २ करे, नाचत गावत गीत ।
कबहूं के ओंकार बनि, कबु विराट धरि मीत ॥

* चौपाई *

कहुं बिजली तारा हो आवे * कबहूं सन्त रूप धरि गावे ।
हित अरु मित्र कबू बनि जावे * कबहूँ नर नारी बनि आवे ।
कहुँ वावन कच्छप बनि गावे * मच्छ बराह कबहुं बनि धावे ।
यह परपञ्च जगत का है जी * साधक को सब भेद कहै जी ।
पर बूझत नहिं साधक याको * होत मगन हरि या विधि पाको ।
साधक चढ़ा ज्ञान की धारा * तब पावत यह बोध अपारा ।
तब वह जान तीन पद भेदा * आपहिं होत चारि जो वेदा ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

फल अरु फूल पात हरियाली * ज्ञानी मान आप को आली ॥

दो०—जेते जगत पसार में, देखिय विधि परपञ्च ।
सा तो ज्ञानी आप में, देखत कहियत शंच ॥

* चौपाई *

इतनो पर नहिं मान गुमानी * तव कुलदीपा मति हैरानी ॥
मानेगा वह सन्त सुजाना * जिन हरि रूप आप को माना ॥
बोध अखण्ड ज्ञान जिन देखा * चार वेद जो आपहिं लेखा ॥
खुलिहैं सकल भेद मम जाके * ज्ञानी करहिं लेख यह पाके ॥
पढ़ि गुनि कर नहिं हरि कोइ देखा * नहिं लिखि सकत लेख जो लेखा ॥
मुनियोंने सब भेद छिपाई * हरि आज्ञा जो मैं लिखि पाई ॥
यहि कलियुग में बहुमति फैली * पाखण्डी रोकत शुभ गैली ॥
सन्तहिं भेष धरे ठग चोरा * भक्तनहीं मग रोकत भोरा ॥

दो०—याते लिख तूं खोल कर, सकल वेद का ओर ।
जो होगा मम भक्त कोउ, पढ़ि परमारथ छोर ॥

* चौपाई *

भक्त अवश्य सत्य करि जाने * उनके हृदय रहत हम साने ॥
ज्ञानी आदर करहिं तिहारी * जिन ममभारग आय निहारी ॥
ज्ञानी भक्त आस धरि भारी * ज्ञान कथा मैं सकल उचारी ॥
पामर पढ़ि शंका बहु धारी * कोटि कल्पना करि बहु भारी ॥
नहिं निस्तार जगत उनके हैं * बँधे बँधन उनके गल में हैं ॥
बँधे बन्ध पुनि आगे जाके * दोष लगावत ग्रन्थहुं पाके ॥
ज्ञान कथा उनको नहिं भाती * पामर को हरिजस न सुहाती ॥
ज्ञानी की निन्दा वे करहीं * बार बार भव दुख में परहीं ॥

दो०—याते हरि के सुयश को, भक्त सुनावहु तात ।
जो आस्तिक हरि रूप में, उनसे जोरो नात ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

सन्तन के ढिग बैठो भाई * हरि कीर्तन होता तहं जाई।
नित २ पाप घटेंगे ताके * निरमल बुद्धि हरी जन पाके।
दिन दूना तव भक्ति बढ़ेगी * हरि प्यारे हो गले मढ़ेगी।
दुर्जन संग कुबुद्धि जगेगी * हरि पद विमुख विषय रँगलेगी।
याते दुर्जन संग बचावो * हरि भक्तन से नेह लगावो।
पीयोगे तव अधर कटोरी * अमर नगर का सरबत घोरी।
जो पिय सो अब भे मतवाला * वृन्दाबनहिं पिये वृज बाला।
ध्रुव प्रहलाद औलिया योगी * मीरा पिया भई कुल शोगी।

दो०—शेष महेशहुं ब्रह्म जिन, पी लिय सो बौरान।
"कुलदीपा" तेहि पीलिया, भव की भयहिं भगान॥

* चौपाई *

टेरति हूँ अब जगत पिअन को * राम लगन अरु पिया मिलनको।
पीयोगे तव जानहु भाई * नारी मति सब कहँ लो गाई।
नारी धोखे भरम न कीजे * अमृत भरी कटोरी पीजै।
पीवतहीं रँग रँगी चुँदरिया * विरले जन कोइ बूझ गुजरिया।
जाकी हरि में रँगी चुदरिया * ओढ़ि चलत यहि भवकी डगरिया।
सो पढ़ते बुझिहैं सब बातें * जो हम लिख दासी के नाते।
आदर करि हरि रंग चढ़इहैं * रंगी गुदरिया रङ्ग बढइहैं।
जा पर नहिं हरि रंग चढ़ा है * सो अब पढ़ि रँग भट्ठि बढा है।

दो०—रंगहिं की दूकान में, भट्ठी चढ़ दरबार।
साधक चढ़ते जाय सब, अन साधे भवभार॥

* चौपाई *

भट्ठी चढ़न कि रहन बखानी * को चढ़ता समझो सब ज्ञानी।
नवधा भक्ति वसत उर जाके * हरषित हो जो हरि जनपाके।
सब दुनिया से प्रेम हटानी * केवल भक्तन सो मन ठानी।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भक्तहिं मेरे कुल परिवारा * भक्त हमारे धन जन सारा ॥
सन्त हमारे पितु हैं माता * सन्त हमारे मित सम ताता ॥
सत संगति के काजहिं भाई * यह नर तन है वेदहुं गाई ॥
जगत जाल इन देह करेंगे * हाथ पांव जग जाल भरेंगे ॥
यह मन मेरा हरि से जूठा * जगत जाल से मन है रूठा ॥
तन तो मेरा भवहिं रहेगा * मन मेरा प्रभु चरण लहेगा ॥
मैं सब जग से रहों उदासी * केवल हरिपद कमल उपासी ॥

दो०—या विधि से जो जतन कर, सनै २ मन साध।
तब तो जाकर भट्ठि चढ़ि, मनुवा जइहैं राध ॥
नहीं होत सन्तोष जन, सगुण रूप हरि पाय।
जब लो चौथा पदहिं में, भक्त न पहुंचत धाय ॥

## * चौपाई *

पर सन्तोष होत मन ताके * ज्ञान स्वरूप लखत जन जाके ॥
राम नाम की महिमा भारी * चार वेद षट शास्त्र पुकारी ॥
और नाम सब छोट बतावे * याको भेद सुजन कोउ गावे ॥
राम नाम आतम दर्शन है * रमत जो सब जीवन के तन है ॥
नाम रहित प्रभु अज अविनाशी * चौथे पदहिं भरम सब नाशी ॥
सो जन व्याकुल नाम पुकारा * हरि बल रामहिं नाम अधारा ॥
राम नाम का बल उर आनी * पालत त्रिजग जीव जगमानी ॥
राम प्रताप एक प्रभु रहते * इक से पुनि अनेक जग लहते ॥
जब तक राम रूप प्रभु रहते * तब तक जीव हरिहिं उर गहते ॥
करि संकल्प भिन्न जब भयऊ * एकहिं से अनेक हो गयऊ ॥

दो०—जीव पावता दण्ड बहु, जो भूलत निज रूप।
राम नाम रटि जीव सब, चेतत आतम रूप ॥
जीवहिं से पुनि ईश हो, पूर ब्रह्म जिन मान।
देह निरंजन धारि सो, परम धाम वसि जान ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

रामहिं नाम रटो सब भाई * जाते भव परपञ्च नशाई
क्या नर हो क्या नारी जानो * उलटे सीधे सभी बखानो
लेतहिं नाम तरे जग जानी * राम रूप को तुरत पिछानी
पहिचानत मति होइहैं औरी * पूरण ब्रह्म रूप ले दौरी
आप तरे औरों को तारी * ता पद पूजा कर जग सारी
पूजन कर सो हों बड़ भागी * तुरतै राम चरण लव लागी
याते प्रिय लग रामहिं नामा * जहां भक्त नाशत सब कामा
ज्ञानी केवल राम पियारे * जियत रहत यहि नाम अधारे
याते राम नाम की महिमा * शेषहुं सकुचत जो पद लहिमा
राम न कहिं सक नाम प्रतापा * जो प्रपञ्च करि जगतहिं तापा
दो०—विष्णू पालन करत हैं, राम नाम बल पाइ ।
ब्रह्मा सिरजत श्रृष्टि सब, शंकर हरते धाय ॥

* चौपाई *

शेष धरणि शिर धरते भारा * केवल रामहिं नाम अधारा
जेतिक विधि गति है जग माहीं * राम नाम केवल सब ठाहीं
राम प्रताप भक्ति जन पावे * ज्ञानी नाम गीत यह गावे
रामहिं जीव जन्तु सब प्यारे * पेड़ पलौदिक सींचत क्यारे
राम नाम से कोउ नहिं खाली * ताते नाम निसर मुख हाली
राम छोड़ि जो तनहिं सिधारे * सो नर तन तजि जात सवारे
प्राणहुं के वे प्राण पियारे * रहत सबहिं पशु पक्षि मझारे
नहिं हम देखा वेद पुराना * बोध अखण्ड माहिं सब जाना
याको भेद लखें कोउ ज्ञानी * बोध अखण्ड पाव जो ध्यानी
साधारण नहिं समझहिं बानी * क्या लिख गई नारि अनजानी
दो०—सत्य कहति सुख पावती, याते लिख सब डार ।
साचे करि जो मानिहैं, तुरत उतर भव पार ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

जो नर सत्य न समझे कोई * मोर हानि यामे नहिं होई ॥
हरि आयशु मानी हम जानो * जगत लाभ मैं कीन्ह महानो ॥
अन्धों की भी आंख खुलेगी * पामरहूँ हिय जा हुलसेगी ॥
चार वेद षट शस्त्र कहावे * ताको टीका यह वनि जावे ॥
जो जग पण्डित बड़ो कहावें * वह भी पढ़ि हिय को हुलसावें ॥
आदर से जो जन यह पढ़िहैं * राम चरण चितमें जा मढ़िहैं ॥
महिमा राम जोइ जन जाने * मोते अधिक हरी प्रिय माने ॥
होइहैं हरि के निकट निवासी * विपति सकल जगकी सब नासी ॥
दो०—पदहीं पद में राम जी, दीन्हे शुभ आशीश।
पामर हो या भक्त भी, सब के कर धर शीश ॥

* चौपाई *

पामर हूं का पाप मिटाया * धर्मिहुं का प्रभु धर्म बढ़ाया ॥
भक्तहुं की तो भक्ति दृढ़ाई * पण्डित हूँ का ज्ञान बढ़ाई ॥
सन्तन हूं की महिमा गाई * नास्तिक हूँ मारग दिखलाई ॥
सगुण उपासक प्रथमहिं हूजे * ज्ञान गुदर सीखिय पुनिदूजे ॥
प्रथमे भक्ति करे नर कोई * पावत वही ज्ञान जग सोई ॥
विन भक्ती कोउ ज्ञान न पावा * कोटिक तन मानुष धरि आवा ॥
नहिं कोउ प्रथम पाव तेहि भाई * नहिं आगे पावे सोउ गाई ॥
भटकत हीं मरिहो जग माहीं * बिनु हरि भक्ति ज्ञान नहिंपाहीं ॥
दो०—कहती वार हजार मैं, दोनों भुजा उठाय।
सुने ज्ञान जो कथहिं जन, ताकर बुद्धि उड़ाय ॥

* चौपाई *

जब लगि जगत जिये वह भाई * भव भय रह पर लोक बँधाई ॥
बारहिं बार जगत घुमि आवे * भव की भय बहु भांतिन खावे ॥
राम दया करि जग उपदेशा * सच्चा साहेब दियो सन्देशा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इतना पर बूझे नहिं कोई * शिर धुनि २ बहुते हम रोई।
करसो कर पकड़े प्रभु आके * बोध दियो बहु भांति जताके।
पण्डित अरु ज्ञानी कर जावें * बहुत भांति तहँ आदर पावे।
जग में भक्त हमारो होई * हैं भी पुनि आगे जन सोई।
बहुत भाँति सब वेहि पढ़ेंगे * श्रद्धा युत गल माँहि मढ़ेंगे।
भक्तन हित उपदेश दिया है * नारी का हम रूप लिया है।
को अस मनुज हुवा जग माहीं * भक्ति हीन अस ज्ञान कथाहीं।

दो०—काकी है सामर्थ्य जग, बिना ज्ञान रचि देइ ।
वावरि तूं चिन्ता करति, मोहूँ को दुख देइ ॥

* चौपाई *

पूजा भेष करत जग सारा * नहिं परखत कोउ भक्त हमारा।
ज्ञानी लिखत ज्ञान उर पाके * निर्मल हीय छिपत नहिं ताके।
रहनि-गहनि भक्तन की न्यारी * जा उर जमति भक्ति मम क्यारी।
जग दिखलावा नहिं उन उर में * मम भक्ती भरते जा सुर में।
भोले भाले जग में रह के * करते भजन जगत दुख सहके।
सुख पाये कछु लाभ न जानें * नहिं दुख से हानी कछु मानें।
परारब्ध जन भोग सदा हैं * क्या ज्ञानी अरु विरत कदा हैं।
सुख दुख त्याग करत हैं उरते * नहिं मुख ज्ञान कहत भरि सुरते।
जगमें तो आशक्ति दिखावें * हिय में परम बोध ले धावें।
पर सन्तोष धरा उर माहीं * जग प्रपञ्च ऊपर जिमि छाहीं।
सो सन्तोष आप बनि जावें * जो है ज्ञान सो आप कहावें।
ज्ञान ध्यान की मूरति होके * सन्तोषहुं की सूरति लोके।

दो०—बोध अखण्डहिं आप हैं, पूर ब्रह्म सो जान ।
जग विश्वासहिं के लिये, ब्रह्म बतावत आन ॥

* चौपाई *

समझहिंगे तो चतुर सयाना * जिनकर पापहिं पूरण सिराना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दूजे समझेंगे जन जाके * पाप अगामी छै हो ताके ॥
तीजे समझें भक्त अगामी * होनहार जो भाव समानी ॥
स्वाभाविक निर्मल जन होते * पाप पूण्य आगे चलि खोते ॥
जो कछु पढ़े करे विश्वासा * श्वांस २ प्रति हरि कर वासा ॥
हरि भक्तों से प्रेम लगावे * सकल जगत हिय से विसरावे ॥
सन्त सभा मन लागत ताके * सन्तन की सुहात सब वाके ॥
होत मगन मन हरि जन पाके * हरि की भक्ति परम प्रिय ताके ॥

दो०—ऐसे जन यहि जगत में, बहु दिखात सो नाहिं।
विरले जन कोइ होहिंगे, प्रेम लगावत जाहिं ॥

* चौपाई *

ताकी महिमा प्रभु जी जानें * हरि के हिय वह रहत समानें ॥
नहिं विसरावत हरि क्षण माहीं * छोटे बालक सम प्रिय ताहीं ॥
जननी सम पौढ़ावत ताके * बारह बजे जगावत आके ॥
जननी लै जिमि दूध पिआवे * तिमि हरि दरशन देइ जगावे ॥
दरशन दे उर प्रेम बढ़ावे * आलस तजि हरि भक्ति पढ़ावे ॥
सन्ध्या होते नींद लगावे * बारह बज आलस खो जावे ॥
नहिं अपने बल कोउ उधरत हैं * हरि के बल सब जी उबरत हैं ॥
केवल श्रधा लगा जी जाके * देखो कैसा सुख हरि पाके ॥
हरि मिलने की राह निराली * डाला ग्रन्थ बीच लिख हाली ॥
शीश देइ कोउ पावत ज्ञाना * जो मुनियन के ध्यान समाना ॥
सो कुलदीपा सेति बहायो * ताहू पर कोउ नहिं हिय लायो ॥
विनसति हूँ हरि आज्ञा पाके * नहिं कोउ समझ भूल भव छाके ॥
अतिहिं कठिन मग हरि मिलने की * यहि कलियुग हिं सुलभ करि झलकी
पावोगे मग जतन करे से * उबरोगे हरि भक्ति धरे से ॥

दो०—भक्तन के दरबार में, बैठि रहो तुम जाय।
प्रेम पियाला पियन हित, आलस तजि नित धाय ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

जिन २ पीलिय प्रेम पियाला * तिन हरि चरण शरण प्रतिपाला ।
पीवत हीं भीनत रस उरमें * लै पहुंचावत हरिके पुरमें ।
यह रस मिलता हरि जन पाहीं * नहिं भरमो जगमें सब ठाहीं ।
भरमत भरमत दिन बीतेंगे * हरि से नेह लगन नहिं देंगे ।
जो कोई होवे बड़भागी * सो सत्ग्रन्थ खोज में लागी ।
सद्गुरु चरण शरणमें जाके * पूरण प्रेम हिये में लाके ।
निशि दिन हरि की भक्ती गावो * सच्चे ग्रन्थन से मन लावो ।
दिन २ प्रेम हिये में जागे * हरि चरणों में चित जा लागे ।

दो०—वेगहिं सो जन उबरिहैं, प्रेम भक्ति को पाय ।
नावरिया ले प्रेम की, जेहि चढ़ि उतरे धाय ॥

छन्द—कठिन यज्ञरू योग कलिमें, सुलभ प्रेमरु भक्ति है ।
कठिन त्याग विराग कलिमें, शुलभ गृह आशक्ति है ॥
कठिन वेदाभ्यास कलिमें, भड़ित भाषा उक्ति है ।
कठिन अन्नहिं त्याग कलिमें, शूक्ष्म अहार सुयुक्ति है ॥
हरिनाम मुखते कहत जा, अरु ध्यान रात्री में करे ।
हरि यश श्रवनते सुनत जा, अरु रैन में साधन धरे ॥
ता भक्त की नौका किनारे, लै समाज सहित तरे ।
बूड़ेगि नैया योग यज्ञरु, प्रेम चौथे पद लरे ॥
नहिं आयु मानुष की बड़ी, नहिं बलहुं इतना तनन में ।
कैसे कठिन वह योग हो, नाड़ी विगड़ि दुख मननमें ॥
कोटिन मनुष में एक साधे, जोग कहुं गुरु जनन में ।
बिन सिद्ध गुरु नहिं योग हो, हठि करि लहे दुख छननमें ॥
समय के अनुसार प्रभु, करि सुलभ भक्ती ठानि है ।
विश्वास करि जन जो करे, तेहि नाथ कर गहि मानि है ॥
चारो युगन में मुख्य है, हरि भक्ति प्रभुकी वानि है ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मध्यम सु तप अरु योग है, जो भाव उत्तम आनि हैं॥
शुभ भाव के वश राम हैं, करि प्रेम भक्ती नर तरें।
गणिका अजामिलगृद्ध सेवरी, श्वपच गे भव से परे॥
वे पाइ अविरल भक्ति को, अति शीघ्र चोथे पद लरे।
तन गोप धरि ब्रज वासियां, करि प्रेम अन्तर जा मरे॥
प्रहलाद ध्रुव नारद विभीषण, एक प्रेम प्रताप से।
ऊँचे सिंहासन जा चढ़े, हरि प्रेम फासहिं आ फँसे॥
तप करि बहुत जन जा गिरे, लहि स्वर्ग नीचे शिर किये।
मैं नाम तिनका क्या कहूँ, समुझें सुजन जन निज हिये॥

दो०—भक्ति करत नर चूक जो, क्षमा होत अपराध।
तप के करते नर गिरे, समझ सन्त अरुसाध॥
तप चूके से राज है, राज चूक से नर्क।
भक्ती चूके भक्त हो, हरि पकड़त आ कर्क॥

* चौपाई *

भक्त कबहुं चूकन नहिं पाते * कोटिक में कोउ बात कहाते॥
भक्त हरी को होते प्यारे * रखत नहीं कबहूँ तेहिं न्यारे॥
चूक अचूक दोउ सम जानें * केवल प्रेम भक्ति को मानें॥
जो छुल छन्द छाणि हरि भजते * अपने तनहिं चूक कबु सजते॥
पर दिल को दुख देते जाके * हरि जी भक्त न मानत ताके॥
परधन को नित हरते पाके * पर तिरिया को जो जा ताके॥
सो हरि भक्ती पावत नाहीं * मानो हरि भक्ती नहिं ताहीं॥
आप देह से चूक सम्हारे * ताही को निज भक्त निहारे॥

दो०—आप ठगावे जाइके, और न ठगता जाय।
मानो सो हरि भक्त है, कहत संत श्रुति गाय॥

* चौपाई *

बेहुं का यह भेद लिखा है * हरी भक्त प्रिय हरी सखा है॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरि के भक्त न पर दुख देते * बन जावे जग दुख हर लेते।
जा दिन से हरि पद परसेंगे * ता दिन से सद्गुणहिं लहेंगे।
स्वाभाविक सद्गुण चलि आवें * उरते सकल विकार बहावें।
हरि प्रेरक होते उर माहीं * अवगुण सकल निकालत ताहीं।
पाप रहित जन जा दिन होवे * ता दिन से हरि सुरति समोवे।
पूरण ब्रह्म बनावत वाको * साधक भक्त सिद्ध कर जाको।
साधक भक्तन की जग महिमा * लिखतीहूँ जाविधि करगहिमा।
सो०—सनै २ सब अवगुण हीं, उरते देत बहाय।
सिमिटि २ लै सद्गुणहिं, हिय में देत भराय॥

* चौपाई *

ऐसा लक्षण जब जब पावे * तब जाने हरि उरहिं समावे।
विह्वल होत मगन मन जाके * नैनन नीर पुलक हिय ताके।
रोमावली खड़े सब अंगा * मस्त होय पीकर जिमि भंगा।
जाने कृपा भई हरिकेरी * नवधा भक्ति बसी उर मेरी।
प्रथमहिं पद की है सब हाला * लिखि डारत भक्तन हितलाला।
ध्यान करत देखे जग सारा * जेतिक विधिकी सृष्टि पसारा।
चिन्ह यही पद प्रथम कहा है * ओंकार पद द्वितिय लहा है।
कबहूं चार भुजा हरि देखे * कबहूं राम कृष्ण को पेखे।
दो०—है सब लक्षण द्वितिय यह, यहि पदहीं पहिचान।
जब विराट पद देखिया, त्रितिया पद गय जान॥

* चौपाई *

चौथे पद देखे कछु नाहीं * पूरण ब्रह्म आप हो जाहीं
नहिं विधिका परपंच उहांहै * राम कृष्ण जो सुरति कहा है
नहिं वहँ वेद नहीं है बानी * नहिं वहँ नाद जु दसहुं बखानी
नहिं वहँ ज्योति नहीं परकाशा * नहिं वहँ अन्ध भवहिं का वासा
नहिं शंकर नहिं ब्रह्म कहावें * आतम रूप नाथ दरसावें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सोहं सोहं कर जी बोले * आनन्द सिन्धु जाय कर डोले ॥
जो कहता हम हरि को देखा * सो नर झूठ कबहुं नहिं पेखा ॥
जो देखा सो सत्य न भाई * चौथे पद सब जात भुलाई ॥

दो०—सत्य कहूँ तो बनत नहिं, झूठ कहे दुख होय।
याको निर्णय होत नहिं, पागल की गति लोय ॥

* चौपाई *

जो कछु होत कहा नहिं जाई * जिन देखा तिन समझत भाई ॥
सगुण उपासक यह सुख पावे * निर्गुण कथन हाथ धो जावे ॥
बैठि धरणि कोउ गगन गहा है * निर्गुण कहि कोइ ज्ञान लहाहै ॥
जो देखा हरि निर्गुण जाके * प्रथमहिं तीन पदहिं को पाके ॥
बिन देखे कोइ ज्ञान कहेका * सो पशुओं की देह लहेगा ॥
कोटि जन्म तक पशु तन धारी * सूकरि कूकरि योनि पधारी ॥
जनमत हीं तजि देत शरीरा * रोवन की गति रुक तन पीरा ॥
सहत दुसह दुख यहि विधि भोगा * सुनिके ज्ञान कथे जो लोगा ॥

दो०—साधन करिके पाइये, चौथे पद की धार।
बिना सगुण नहिं पाइये, ज्ञान कथे जा हार ॥

* चौपाई *

होम करो तर्पण करु भाई * पूजा पाठ देव कर जाई ॥
संध्या अरु गायत्री कीजे * अधिक ध्यान हीं में मन दीजे ॥
सबसे श्रेष्ट ध्यान को जानो * ध्यानहिं में हरि दर्शन मानो ॥
ज्ञानी भक्त लगत हरि फीको * जननी की गति मानो ठीको ॥
प्रेम रहत बड़ सुत सुधि नाहीं * छोटे को पालनहीं भुलाहीं ॥
क्षण विसरावति ताको नाहीं * लालन पालन में मनलाहीं ॥
वैसे साधक भक्त न भूले * सगुण रूप में जा सो झूले ॥
कबहूँ रोवत जा हलरावे * सगुणहिं रूप लेइ पौढ़ावे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—रोवत साधक भक्त जब, नैन आंसु वह धार।
पित्रन के तब दुख नसत, पूर्व पाप सब हार॥

* चौपाई *

पाप पहार कटत है भाई * टूट करार बाढ़ जिमि पार
आंसुहिं धार खदोरत जावे * पापहिं जड़ सब खोद बहावे
मेरी कही सही मति मानो * वेद पुराण खोजि कर जानो
साधक जन की महिमा भारी * हरि लेकर अपने उर धारी
साधक हरि अति होत पियारे * होत मगन मन हीय दुलारे
काहें को परचार करेंगे * रंक रतन जिमि गाड़ि धरेंगे
है अनमोल मोल प्रभु केरे * निर्धन सम राखत नित घेरे
कुलदीपा काहें को जाने * जगहित लागि तनिक मुहिं माने
हो०—जगतहिं हित के कारने, नाथ लिखावत आय।
उनहीं के परताप से, सुयश दिया हम गाय॥

* चौपाई *

उन भक्तन के चरण हमारे * नाथ धरहु अब शीश अधारे
इतना सुख हमहूँ को दीजै * जो नित आप अकेलहिं लीजै
तेरो भक्त हमहुं लग प्यारे * जानत हौ सब हृदय हमारे
तुमसो नाथ छिपी कछु नाहीं * उर अन्तर में वास रहाहीं
पूरण प्रेम हीय के माहीं * रहता वास तुम्हार जहाहीं
ताते नाथ अधिक नहिं भाखों * भक्त नात से मानहिं राखो
तेरो भक्त चरण मम शीशा * परत रहे यह देहु अशीशा
साधक भक्त चरण की धूरी * उड़के पर मम ऊपर पूरी
सो०—यह वरदान न आन, तुमसे मांगति नाथ मैं।
तेरे भक्त जहान, मैं उनके वन्दी रहूँ॥

* चौपाई *

साधक भक्त रोव जब जाके * परत बुन्द पित्रन पर ताके

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हो कल्याण पितर सुख पाके * देत अशीश हुलसि जिय धाके
छोटी बड़ी नदी वहि जावे * स्वर्ग पताल लोक महं धावे ॥
करि असनान तरत सब लोगा * ऐसा हरी लगायेउ जोगा ॥
यामें भेद बहुत है भाई * छोटी बड़ी नदी जिमि गाई ॥
सबका भेद कहां लो गावों * बढ़े ग्रन्थ कछु ओर न पावों ॥
बोध अखण्ड ओर नहिं छोरा * याते सब गावत करि थोरा ॥
थोड़े में बनि जात पुराना * जानत ज्ञानी ज्ञान निधाना ॥
साधारण नहिं बूझत बानी * कछु २ बूझे भक्त महानी ॥
पूरण प्रेम बसत हिय जाके * बूझत प्रेम कथा तिन पाके ॥
तेरो नाम लेत कोइ आके * परती चरण तहां मैं जाके ॥
उर अन्तर का भाव कहा है * देहहिं से नहिं काम लहा है ॥
पांव गिरत जो देखे कोऊ * पागल सरिस कहे सब लोऊ ॥
यह दुनियां अपने रँग राती * नहिं जाने कोउ भक्त कि भाती ॥

दो०—सन्निपात में सकल जग, बोध कहा तुम नाथ।
सो बानी भूलति नहीं, जा दिन धर शिर हाथ ॥

* चौपाई *

भूले आप भक्त कह भूला * ये त्रयविधि बयार में झूला ॥
वेद पुराण पढ़त नहिं जाके * हँसत कहूं भक्तन को पाके ॥
आप गये निज हाथ गंवाते * भक्त देखि बहु बात बनाते ॥
सन्त सभा नहिं लागत नीको * चोरहिं चाँदनि लागति फीको ॥
लिमि सब भक्त देखि डहि जाते * सांपिनि भेक धरति निज घाते ॥
चाहत जग कोइ भक्त न होवे * जन्म मरण बोझा ले ढोवे ॥
हरि की कथा सुहात न ताहीं * बकवादहिं में समय बिताहीं ॥
हरि विमुखन का भाव बताई * भक्तन के हित लै हम गाई ॥

दो०—रहि हो सदा सचेत जन, हरि विमुखन तजि रंग।
ये माते भव भंग में, तजिये इनका संग ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

नाथ दया अब मोपर कीजै * आतमहीं के रँग रँग लीजै
चांदनि रहे चांद बिनु जाके * मैं तुम बिनु कबहूँ नहिं ताके
छांह रहे बिनु देहहिं पाके * मैं न रहों तुम मूरति भाके
मीन जिये बिनु जल के पाये * मैं न रहो आनँद बिनु लाये
आनन्द कंद जु रूप तिहारे * निरखति रहों सदा हिय मारे
नर्कहुं स्वर्ग कर्म बस जाके * सुखी रहों तुम मूरति पाके
जैसे लोभी धन को माने * वैसे नाथ तुम्हें हम जाने
अमल दार को अमल पियारे * वैसे प्रिय तुम मम उर आरे

दो०—नदियां जैसे जाय सब, मिलें उदधि में धाय ।
वैसे तुम में नाथ हम, पती संग मिलि जांय ॥

* चौपाई *

जहां रहें तहं दोऊ संगे * तुम्हरे चरण कमल के रंगे
आतमहीं के रंग रँगावे * और रंग प्रभु मोहिं न भावे
जब चाहो जैसा करि डारो * तेरो भक्त तोहिं पर वारो
मैं तो हौं प्रभु नारि अजानी * तुमहीं ने सब बोध बखानी
ज्ञान बाध के रँग रगानी * मेरे हिय में आप समानी
ज्ञान ध्यान सब लागत फीको * जबते राम लगन हिय टीको
प्रेमहि बस हम आप भुलानी * अहंकार मद मोह नसानी
सो अब प्रेम दुना दिन दीजे * तनकी सुधि बुधि सब हर लीजे

दो०—पावरिया तो प्रेम की, कुलदीपा हो जाय ।
तापर चढ़ि तुम उतरियो, नैनन मैं लखि धाय ॥

* चौपाई *

चोलन प्रेम प्रीत का पहिरे * रात दिना तुम संग हम दहिरे
प्रेम प्रवाह बहे उर मोरे * धरि लावे तब बाँह गहोरे
जितनो भक्त भये जग तोरे * चारो युग की बात कहोरे

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सब के हिय जो प्रेम पधारे * सो सब रस प्रभु मो उर लारे ॥
देखें कितना मीठो लागे * जो वे सब रह भक्त सभागे ॥
गोपिन के तुम परम पियारे * हमरो उर तो आप पधारे ॥
उनका हिया हमें अब दीजै * देखें कवन भांति सुख लीजै ॥
देवे से तो घट नहिं जावे * दान किये अधिको बढ़ि जावे ॥
दो०—जौ जानति घटि जायगा, तौ नहिं मांगति नाथ ।
बढ़ने हीं के आश से, जोड़ति हौं दोउ हाथ ॥

* चौपाई *

जहं लो विधिका देख पसारा * एकै राम रूप तुम धारा ॥
एकहिं रंग हीय तुम्ह राचे * सो वाही हमको दो सांचे ॥
वाही से मम हीय ढलेगा * सब भक्तों के रंग रलेगा ॥
विश्व भरे की प्रेम कहानी * सो अपने हिय में हम मानी ॥
याहू पर सन्तोष न देंगे * तौ पुनि तुम्हरो हिय हम लेंगे ॥
सो अब हीय पलट नहिं जावे * मेरे निकट सदा वसि आवे ॥
जो आनन्द रूप हरि तोरा * सो वसि रहे वसहिं अब मोरा ॥
पावोगे फल आप किये का * गोपिन का अब चीर लिये का ॥
दो०—चोरि २ सब भक्त का, धरत हिया निज पास ।
सो चातुरता भूलि सब, जियति रहति यहि आस ॥

* चौपाई *

याद करत जब वा दिन बतिया * फटि जाती मोहन मम छतिया ॥
आँनद में जब जाय समानी * पूरण रूप आप हम जानी ॥
सो दिन सोचि लगत मोहिं नीको * तबसे भवहिं भाव भय फीको ॥
यह जग भाव मिटावो नाथा * अति शीघ्रहिं पकड़ो मम हाथा ॥
काहें के अब देर लगावे * कुलदीपा केहि दिशिको धावे ॥
अति वेगहिं प्रभु चित ठहरावो * जाते अमर नगर को पावो ॥
जो यह कथा पढ़े मन लाई * अमर नगर चौथा पद पाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

खा फल अमर अमर हो जावे * आवागमनहिं तुरत नसावे ।
दो०—जनकहिं अष्टावक्र ने, ज्ञान दिया जब जाय ।
ममता मद हर राउका, सीश लिया कर धाय ॥

* चौपाई *

सो कुलदीपा सेति बहाई * जब कलियुग की बजति बधाई ।
हो गय बड़ बड़ ऋषि जग माहीं * भेद छिपाइ कह्यो सब पाहीं ।
रहे चतुर तब के नर नारी * भेदहिं भेद लेत उर धारी ।
अब उलटी पलटी सब मानैं * कर्म धर्म मरजाद मिटाने ।
ताते नाथ लिखावत मोसे * वेदान्ती जन के मन तोसे ।
बानी वेद न अब कोउ बूझे * तर्पण होम देव नहिं सूझे ।
चार वेद को भेद कहावे * सो सब लिखि हरि जग समझावे ।
नारी के हिय आप समाना * दुनिया अन्ध नहीं कोउ जाना ।
दो०—जानन हारे जानिहैं, जिन उर हरि बस आन ।
वे तुरतै लखि जाइहैं, भक्त सत्य कर मान ॥

* चौपाई *

कर जोरे प्रभु तोहिं मनाऊं * अब जनि नाथ मोहिं भरमाऊ ।
चतुर होइ थोड़े महँ जाने * भक्त हीय में जाय समाने ।
लेख करत मम हीय सिराना * अनुपम प्रभु कर रूप हिराना ।
अब प्रभु मोहिं मौन करि राखो * दयानिधान दया करि भाखो ।
एकहु पद अब जनि मुख निसरे * चरण शरण मन तब नहिं बिसरे ।
याही के लिय जन्म लिया है * नारी का अब रूप किया है ।
पढ़त लिखत सब के हित होंगे * नहिं समझैं बावर कोइ लोगे ।
जग उपकार भक्त करते हैं * सकल भवहिं का दुख हरते हैं ।
परम धरम भक्तों का है री * दे उपदेश जगत दुख लैरी ।
ताते तेरो कर गहि लीन्हा * कोरे कागद कलमहिं दीन्हा ।
बिन जाने सब ज्ञान कथत हैं * कर्म धर्म की राह नशत हैं ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

याते ज्ञान भक्ति दिखलाया * सगुणहिं निर्गुण भेद सिखाया ॥
दो०—पढ़ि गुनि के जन चतुर जो, समझ बूझि मन लाय।
आगे सगुण उपासना, पीछे निर्गुण धाय ॥
छ०—कलि के सकल अघ नाश हों, जो पढ़त चित्त लगायके।
अभिलाष उरके पूर सब, कलि पाप भागें धायके ॥
जिमि सतिहिं सतको साधती तिमि भक्त लें उर लायके ॥
नर नारि पढ़ि गुनि सोचि के, भव पार उतरें गाय के ॥
तब सकल पाप पहार टूटे, पढ़त जा सिर नाय के ॥
जो ग्रन्थ की पूजा करे, अरु धूप दीप सजाय के ॥
अति शीघ्र सो नर पाइ मोपद, भव तरे हरषाय के ॥
महिमा सुअगम अपार है अमृत सरिस रस छाय के ॥
दो०—पदहीं पदमें ज्ञान भर, भक्ति भाव दरसाय।
जो पढ़िहैं यहि भावसे. वेगि उधारों धाय ॥

* चौपाई *

प्रकृती जगत कहावति भाई * सो तो नारि रूप ले धाई ॥
धन सुत सुता नारि से होवें * नारि काज जग कूकर जोवें ॥
नारी काज भये नौ वारी * नारी हेतु तेलि कलवारी ॥
नारी भेजति स्वर्ग पताला * नारी पठवति नर्कहुं लाला ॥
नारी हेतु नर्क सब जावें * नारी से वैकुण्ठ सिधावें ॥
नारी से सब सुख दुख होवे * नारिहिं हेतु धर्म सब खोवे ॥
जहं लगि विधि निज कीन्ह पसारा * माया नारि रूप विस्तारा ॥
यामें करि विचार सब लीजै * गुण अवगुण दोनों भरि दीजै ॥
दो०—गुण तो परमारथ रहा, औगुण जगत पसार।
नारी से हित कीजिये, हृदय हरी को धार ॥

* चौपाई *

हरि के हित करु खानरु पाना * प्रभुके हितहिं करो असनाना ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

धन अरु धाम संवारत जावे * नारी सुत से प्रीति लगावे।
पर अन्तर इतना जिय राखे * हरिके हेतु करत मुँह भाखे।
सुखी रहे सब कुल परिवारा * जाते भजन होय निर्वारा।
इनके दुःख भजन में हानी * ऐसा भाव मनहिं में आनी।
यह उपदेश नारि सुत दीजे * कुल में यही भाव भरि लीजे।
माने तो सबहीं भल होगा * नहिं माने करनी निज भोगा।
आपन भाव दृढ़ावत जावे * नारी सुत को यह समुझावे।
दो०—जो गृहस्थ यहि भाव से, निर्वाहे दिन रात।
ताको जाने सन्त है, यही सन्त की मात॥

* चौपाई *

ऐसा भाव रखें जब लोगा * सो वैकुण्ठ जाइ सुख भोगा।
ये सुत धन निज नारि हमारे * इनके हित जग काज सँवारे।
यही भाव माया का भाई * यह तोको नरकहिं दिखलाई।
मैं अरु मोर तोर जिय धारे * सो जन अवसहि नरक पधारे।
भावहिं से मिटता भव भाना * प्रकृति भाव से नर्क समाना।
ऐसी दुर्भावना न लीजै * पैठत ही हिय से हट दीजै।
प्रभु से विनय करो कर जोरी * दुर भावना हटे बरजोरी।
सुन्दर भाव हिये में आवे * नाथ दया कर तो मैं पावे।
दो०—ऐसा भाव लगाय के, हरिहिं मनावत जाय।
सो सज्जन की नाव अब, लगी किनारे धाय॥

* चौपाई *

यही भाव से सन्त तरत हैं * यही भाव सब जन उबरत हैं।
नहिं बन परवत हरि बसता है * वह तो सबके हिय लसता है।
भावहिं से घर छोड़ि बचोगे * भावहिं से घर माहिं तरोगे।
घर बाहर दोउ एक समाना * सुन्दर भाव जाहि हिय आना।
भावहिं के वश हैं भगवाना * चाहे जंगल घर मन माना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कोटि मनुष में एक तरत है * घर भीतर यह भाव धरत है ॥
माया सांपिनि जनमत खावे * सुन्दर भाव हिये नहिं आवे ॥
हम गृहस्थ भजनहुं का जानें * पेट भरन के भाव समाने ॥

दो०—ऐसा कहि बहकावहीं, हरि विमुखन की चाल ।
जनमत हीं सुनने लगे, फंसे जगत के जाल ॥

* चौपाई *

भाग्य विवश कोउ नर उबरेगा * पूरब पूण्य लेइ सुधरेगा ॥
सतयुग शिक्षा होति अपारा * जनमतहीं तर भाव अधारा ॥
त्रेता द्वापर बहु नर जानें * सुन्दर भाव हीय महं आनें ॥
कोल भील की नारि गँवारी * सुन्दर भाव हीय में धारी ॥
भाव अधार भईं वृजनारी * या विधि से उनको हम तारी ॥
जनक नगर की नारि सयानी * रामरूप हिय में सब आनी ॥
या विधि से उनको हम तारी * लीला रास संग उन धारी ॥
देखा देखी भइ कछु नारी * सुन्दर भाव धार वृजनारी ॥

दो०—सो जनमी कछु कलियुगहिं, नारी को तन धारि ।
तारी तिनको काल यहि, मीरा रतना नारि ॥

* चौपाई *

ऐसी नारि बहुत हम तारी * घर भीतर जो भक्ति पसारी ॥
क्या नर हो क्या नारी भाई * भजन करत भव पारहिं जाई ॥
जंगल बसे भाव नहिं धारे * ताको झोकत हौं भव भारे ॥
जंगल में शूकर बसता है * जंगल में कूकर रहता है ॥
भेड़िया चीता जंगल वासी * इनका क्यों नहिं पाप विनासी ॥
है झंझट गृहस्थ के धामा * याते तजि देते सब कामा ॥
मम हित लागि तजत घरबारा * या नाते हम सन्त उधारा ॥
नहिं जंगल से काम हमारा * भावहिं भक्ति लेइ हम तारा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—जंगल ही से पार हो, तो तरते सब जीव ।
काहे सन्त उधारते, भेड़िया मिला न पीव ॥

* चौपाई *

चाहे जंगल वस घरवारा * मेरे चरण रहत आधारा ।
हिरदय का हम भाव निहारा * ताहि जीव का जन्म निवारा ।
पूजा जाय करे दिन राती * पर तिरिया पर धन जो भाती ।
होम करे तर्पण बहु भांती * पर निन्दा जेहि मनहिं सुहाती ।
ऐसा मनुज मोहिं नहिं भावे * करता भव सागर में धावे ।
तीर्थ करे बहु व्रत उपवासा * मिथ्या बोल धर्म सब नासा ।
जग दिखराव करत सब कर्मा * मम चरणन में प्रीति न धर्मा ।
चाहे नर हो चाहे नारी * दिखरावा हम उर न पधारी ।

दो०—साँच भक्त जो होत हैं, मन मलीन तन छीन ।
करत गलानी जीय में, नाथ मिले कब दीन ॥

* चौपाई *

नहिं अभिमान जाति कुल वरना * नहिं धन धाम काम कछु करना ।
संपति जाय रहे घर माहीं * मम इच्छा पर तजत सदाहीं ।
नहिं कछु लाभ हरष जिय होती * नहिं हानी सुत संपति खोती ।
यह परपञ्च जगत का है जी * कभी होत घर कभी नसै जी ।
रोग शोग सब देहहिं काजा * होत रहत कर्महिं के साजा ।
राम मिलन की चिन्ता भोरी * नहिं जग का परपंच निहारी ।
जो कबहूँ रोवत मम भक्ता * पाकर समय दिखावत जक्ता ।
लौकिकहीं व्यवहार निहारी * मर्यादा वश कछु उर धारी ।

दो०—रहना है संसार में, गहो जगत की चाल ।
नहिं तो निन्दा करत सब, लखि लौकिक की हाल ॥

* चौपाई *

भक्त ठगत हैं जग को ऐसे * ऊपर प्रेम त्याग हिय तैसे ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चतुरन केर चतुर सरदारा * निरवाहत हैं जग व्यवहारा ॥
अवसर रहनि जहाँ जस देखे * तहँ तस कारज को ले पेखे ॥
होत अगाध बुद्धि हिय माहीं * ममभक्ती प्रताप की छाहीं ॥
जगतहिं जाल रहत दिन राती * निरवाहत निज बुधि बलपाती ॥
रंक राख ले जिमि निज थाती * भक्त छिपावत है तेहि भांती ॥
रहत निराली चाल जगत से * चतुराई निरवाह भगत से ॥
भक्तन हिय रह वास हमारी * राखत सब विधि समय निहारी ॥
दो०—मम भक्ती के काज हीं, छल बल करत अनेक।
जग की हो नहिं हानि कछु, निबहे मेरी टेक ॥

* चौपाई *

जग दिखलाव भगत नहिं करते * मम भक्ती ले निज हिय धरते ॥
कंचन की जो बनी अटारी * ताहू में मम भक्त पधारी ॥
मट्टी सम देखन वे लागे * नेकहुं मन तामें नहिं पागे ॥
साधक भक्तन की यह हाला * लिखि डाली सब चाल निराला ॥
ज्ञानी भक्तन महिमा भारी * वेद पुराणन हैं सब गारी ॥
जो कछु करे सबै है थोरा * है निःशंक रूप हिय मोरा ॥
निर्भय विचरत है जगमाहीं * रावरंक की शंक न ताहीं ॥
जौकि कदाचित मैं रुठ जाऊँ * नेक शंक नहिं उन उर आऊँ ॥
दो०—बिगड़त ज्ञानी जनहिं जब, मों सिर को धुनि देत।
ब्रह्म तेज के कारणे, उनहिं बलैया लेत ॥

* चौपाई *

ममगुण को जानत वे नीके * जो कुछ करत समझ में ठीके ॥
बैकुण्ठहुं हम करत निवासा * माया के सब केल कलासा ॥
ज्ञानी तपत रहत ज्ञानन में * मस्त रहत आतम कानन में ॥
इनका तेज मोहुँ ते भारी * सहत रहत इनकी सब गारी ॥
माया विवश होत जब ज्ञानी * मम इच्छा वश हो वह ध्यानी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तब हम कौतुक करत कला हैं * उनहूं से कछु ले बदला हैं।
वे कौतुक हिं करत मम साथा * वैकुण्ठहुँ कर हेरत गाथा।
माया विवश जानि हँसि देते * मैं भी कौतुक हीं कर लेते।
दो०—नारद कीन्हों कौतुक हीं, नारि विवश मति कीन्ह।
उनहूँ मोको शाप दिय, आदर से हम लीन्ह॥

* चौपाई *

मोहिं लात भृगु मुनि ने मारा * तासु चरण हम हिय महँधारा।
हम सो हँसी करत सब आके * हमहूँ हँसत तब अवसर पाके।
माया विवश रहत सब लोका * पुर वैकुण्ठ आय सब टोका।
ज्ञानी गर्व रहत आतम का * हँसीं उड़ावत परमातम का।
ज्ञानी माया वस हो जाते * तब मैं हँसत ज्ञान खो जाते।
यह माया भरमावति तोको * माया मेरी ठोकति मोको।
माया रहित होत हम जाके * प्रलय सृष्टि होती तब पाके।
माया ग्रसित रहत सब लोगा * याते भोगत भव कर शोगा।
यह माया भक्तहिं नहिं परसे * स्वाभाविक छाया को सरसे।
ज्ञानी से कौतुक हूँ होता * माया बीच खात तब गोता।
ऐसे छाह छुअन नहिं पावे * ज्ञानी देखत दूर परावे।
सब जीवन के सम ये नाहीं * कौतुक माया खेल दिखाही।
दो०—जैसे माया बांधती, इतर जनन को जाय।
वैसे यह नहिं कर सकति, हरि भक्तों को धाय॥

* चौपाई *

काम क्रोध के वस हो जाते * कबहूं याहि जगत के नाते।
है अन्तर इनमें बड़भाई * वेद पुराणन में सब गाई।
हरि इच्छा से काम फँसत हैं * जग हित चिन्ता को परसत हैं।
कारण बहुत याहि में है जी * वेद पुराणन में पढ़ लै जी।
बिनु कारण नहिं क्रोध करत हैं * चिन्ता अग्नी नाहिं दहत हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कारज कारण लै उर धारी * होत विघ्न तव क्रोधहिं लारी ॥
माया विवश रहत नर नारी * बिन कारण भी कलह पसारी ॥
नेक ठोक जो लागत ताके * गाली बकते अवसर पाके ॥
ढूंढ़त रहत सदा अवगुण को * नेकहुं पा पीटत जा मुड़को ॥
सज्जन कलह करत है जाके * बड़ी हानि होवे तव पाके ॥
सज्जन दुर्जन अन्तर भारी * समझे नहीं सकल नर नारी ॥
कोउ इक होय चतुर नर नारी * समझेंगे प्रपंच जो भारी ॥
ज्ञानी भक्तहिं अन्तर भारी * तिमि दुर्जनहिं सुजन हमगारी ॥
अभ्यन्तर निर्मल जन होते * भव वारिधि विपता सब खोते ॥

दो०—हिय की गति तो राम बिनु, और न जानत कोय।
कछु २ जानत चतुर जन, सन्त सरिस जो होय ॥

* चौपाई *

खल कटु बचन सहत सौ वारा * तव कबहूँ हिय क्रोध पसारा ॥
तौ भी वचन कहत अतिनीको * जो सारे जग होत अमी को ॥
नहीं अनरगल बकत वृथाहीं * कहते सत्य न वचन मृथाहीं ॥
बड़ अन्तर खल सज्जन भाई * है सब वेद पुराणन गाई ॥
गर्व वश खल जरत रहत हैं * माया में पचि २ हिं मरत हैं ॥
सज्जन रहत सदा चुप मारी * हिरदय का सब काम संवारी ॥
बिन अवसर बोलत नहिं जाके * समय २ पर कारज पाके ॥
जग व्यवहार चलत नहिं भाई * जानत हैं सब लोग लुगाई ॥

दो०—अवसरहीं पर बोलते, अन्न सुवसर खाय।
ठीक समय पर सोवते, तजत पलँग को धाय ॥

* चौपाई *

रहि जग जतन अनेकहिं करके * मिलता ब्रह्म जगत से टरके ॥
खान पान वह नर सम करहीं * हिय अन्तर गति औरहिं धरहीं ॥
पामरहूं से ब्रह्म हो जाते * हरी विमुख पामरहिं कहाते ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चारो युग के भक्त कहानी * एकहिं भाव नाथ उर आनी।
ज्ञान पदहिं जब पहुंचत ज्ञानी * हरि के गुण सब जानत ध्यानी।
माया रूप देख हरि जाके * पुर वैकुण्ठ नाथ को पाके।
करि अस्तुति बहु विनय सुनावें * हरि माया की महिमा गावें।
अपनी माया आप भुलाने * भूलत जन किमि अवगुण माने।
हँसत नाथ सुनि जनकी बानी * माया विवश सकल जग जानी।
करिके यतन देख जी खेला * का विधि लाग्यो माया मेला।
कौन पुरुष है को जग नारी * कैसो यह माया विस्तारी।
यह माया कित सों धौं आई * कैसे जा यह जगत बँधाई।
करि जप जोग देखु सब याके * माया विगत होहु पद पाके।

दो०—इतने हीं के काज हम, जगत बँधावत जाय।
जन्म मरन के वस रहत, निज स्वरूप विन पाय॥
करिके जतनहिं देखता, यह माया की धार।
ताके कर्महिं नाश करि, भव के पार उतार॥
सो अतिशय प्रिय मोहिं जन, आतम रूप निहार।
मध्यम लागत भक्त सब, जिमि बालक लग नार॥
रक्षा में मन लावते, बुद्धि बढ़ावत जात।
जो नहिं भजता मोहिं को, सो सुत भाव न तात॥
सेवा में मन देत जो, मात पितहिं प्रिय सोय।
तैसे मोहिं सुहात जन, भक्ति भाव मन होय॥

* चौपाई *

ऐसे तो सब पुत्र कहावें * पर जननी के मनहिं न भावें।
रक्षा सबै सुतन की होती * खान पान जल ले मुख धोती।
हित चिन्तन सारे जग लेते * पर निज रूपहिं को नहिं देते।
भरमत रहत सदा जग माहीं * अपने कर्म धर्म बस जाहीं।
कबहूँ होत दया जो चित में * नर तन दे विचार सो हित में।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नर तन पाय सीख जप जोगा * जाते छूटे भव का शोगा ॥
इतना पर बूझे नहिं जाके * चूका जीव मनुष तन पाके ॥
जग माहीं रोवत तन तजिके * उवरा नहीं भजन हरि करके ॥

दो०—जो नर स्वर्गहिं जात है, सोऊ भी पछितात।
करत भजन तो मुक्त हो, आवागमन नशात ॥

* चौपाई *

भूलारे जगमें मन भूला * भक्त संग नहिं किय भव झूला ॥
चार दिना को स्वर्ग मिलेगा * पुनि तो यहि भवजाल गिरेगा ॥
जो नर यम के लोक सिधारे * उसकी विपति कहां लो गारे ॥
सुनि २ पद सब लोग हँसेंगे * को देखा किमि सत्य कहेंगे ॥
जग हित लागि भई यह रचना * पीट २ मुड़ जग में पचना ॥
पूरब पूरब कोउ जन लेके * सुफल करे हरिपद को सेके ॥
चार वेद षट् शास्त्र कहत हैं * नहिं निष्फल हो लेख भगत हैं ॥
भक्तहिं जन्म जगत जब होंगे * परमारथ फल सुख को भोगें ॥

दो०—पढ़त लिखत भल होइ सब, पर भक्तहिं सुख मान।
परमारथ का लाभ जो, सुजन हिये हमजान ॥

* चौपाई *

जा दिन ज्ञानी तन तजता है * आतम रूपहिं जा भजता है ॥
जा दिन को तन तज नर कोऊ * आठ पहर में कह हम सोऊ ॥
सो नर मुक्त होत है भाई * स्वर्ग नर्क हरताल मनाई ॥
जा दिन ज्ञानी तन तजता है * वा दिन स्वर्ग नर्क पटि जा है ॥
जाते नर वह पर पद पावे * पुर वैकुण्ठ द्वार खुलि जावे ॥
बारह द्वार खुला रहता है * जहँ चाहे वहँ जा वसता है ॥
बड़े जतन से मुक्ती पावे * सो नर सहजहिं जाय समावे ॥
बड़ी दया कर युक्ति बनाई * दीना नाथ जीव उबराई ॥



CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—बहुतक जीव उबारते, ज्ञानिन के दिन पाइ ।
बहुत एकादशि तिथिन में, बहु भक्तन सँग लाय ॥

* चौपाई *

जो निस्तार कीन्ह बहु भांती * हैं सब सन्तति नाथ कहातीं ।
बहु जन काशी तीर्थ मरेंगे * या विधि से जन सो उबरेंगे ।
जीवन हित प्रभु कीन्ह उपाई * इकसे एकहिं युक्ति चलाई ।
कितने सेवा सन्तन उबरें * कितने भक्तन के सँग सुधरें ।
कितने हरिगुण गान करे से * हृदय राम का नाम धरेसे ।
कोउ भक्त कुल जन्म लिये से * साठ पिढ़ी इक सतहिं कियेसे ।
कोउ फूल फल भोग लगाके * तरि गय याहि बहाना पाके ।
अपनी सन्तति आप सुधारें * दीना नाथ कहां ले गारें ।

दो०—तेरी तो सन्तान जग, कहं ले देहुं गिनाय ।
तब दाया से उबर जन, कोउ बहाना पाय ॥

* चौपाई *

कितने वेद पुराण पढ़े से * कितनो तेरे ध्यान धरे से ।
कितने भक्त दया को पाके * कितने गया तीर्थ को जाके ।
गायक के तू मुख बसता है * ध्यानी के तू हिय लसता है ।
भावहिं वस्य रहत भगवाना * बहु जीवहिं यहि भांति तराना ।
बचे खुचे जन जो रह जावें * लड़कर समर मुक्ति सो पावें ।
याहू में बच रह जो जाके * तरिहैं अन्तहिं कलियुग पाके ।
हरि कलिकी अवतार धरेंगे * अस्त्र शस्त्र से जाय लरेंगे ।
हरि कर से मरि गय जी जेते * पुर बैकुण्ठ जाय सब तेते ।

दो०—पामर नर या विधि तरें, भव सागर के पार ।
दीना नाथ कहात हैं, यहि विधि करत उधार ॥

* चौपाई *

कलियुग सहज मुक्ति कर डारी * या विधि से बहु पार उतारी ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जीव उबार उपाय घनेरी * रचि डाली हरि देर सवेरी ॥
ज्ञानहिं पद सबसे है भारी * जीवत जीव मुक्ति कर डारी ॥
लाखों साधक में नर कोई * तरता ज्ञान पाय कर सोई ॥
जीवत सोइ अमर पुर जावे * अनुपम रूप हरी का पावे ॥
यह मुक्ती दुर्लभ है भाई * पूरब पूण्य मनुज कोउ पाई ॥
नहीं सहज मुक्ती है याकी * बड़ी कठिनता पा नर ताकी ॥
कलियुग ताहि सहज हरि कीन्हो * रामहिं रटत मुक्ति सो दीन्हो ॥

दो०—मरे मुक्त हो जात हैं, सो सहजहिं कर दीन्ह।
राम भक्ति जो करत नर, जीवन मुक्ती कीन्ह ॥

* चौपाई *

रामहिं भक्ती बहुत पियारी * कभी रोव कबहूं हँसि जारी ॥
पुलक शरीर नयन बहनीरा * सो हरि प्रेम भक्ति कह धीरा ॥
तलफत रहत रैन दिन सारे * हरि मिलने की आशा धारे ॥
रैन नींद आवत जेहि नाहीं * हरि मिलने की लगन लगाहीं ॥
रोवतहीं जेहि रैन सिरानी * हो प्रभात मन होत गलानी ॥
चाहत दिवस रहे निशि सारा * कबहुं न दिनकर होत पसारा ॥
होत सवेर धड़क जा छाती * बीती रैनहुं आ पर भाती ॥
कबधौं सूर डुबैंगे आजू * हरि के मिलन करब मैं साजू ॥

दो०—ऐसी लगन जो लाइहै, ताहि मिलैंगे पीव।
जीवत ही जन मुक्त हो, ब्रह्म होत सो जीव ॥

छन्द—यह कथा परम सुहावनी, जो ब्रह्म ज्ञान कि पद्य है।
निज बोध की यह सार है, हरिके मुखन की गद्य है ॥
पढ़ता सुजन सो पार हो, चढ़ि प्रेम नौका सद्य है।
वह जायगा पद परम को, जो चौथ पद का हद्य है ॥
जाकी सुयश जग छा रहे, करुणा अयन से जा लड़े।
है सगुण से निगुर्ण परे, सो जाय उस छबि से अड़े ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सुनि के कथा विसरावहीं, वे भव लहर में जा पड़े ।
यम यातना नर सहत सो, जा बीच वैतरणी खड़े ॥
निन्दा करो नहिं सुजन कोउ, जो वेद चहुं षट शास्त्र हैं ।
जितनोहि सुजन समाज जग सबके करोंके अस्त्र हैं ॥
ले जीत कामहिं क्रोध मद, जो हाथ रख ये शस्त्र हैं ।
जरिहैं सकल भवभान जो, परदाजु मायां वस्त्र हैं ॥

दो०—श्रद्धा सहित जो पढ़हिं नर, ज्ञान ध्यान चित लाय ।
भक्तन के पद पाइ जन, चौथे पदहिं समाय ॥

* सवैया *

काहें को सोच करो मन में, हैं तारण जीव उपाय घनेरे ।
चींटी नहीं जप योग करे भी पतङ्गहुं तो नहिं ध्यान धरेरे ॥
दवि जाते कहूं पग भक्तन के, यहि भांतिसे वाहि उधार करेरे ।
जग जेते हैं जीव जहाननमें वसिजात कहूँ गृह सन्त तरेरे ॥
कोई फल फूल खवावत है, कोउ आपहिं सन्तके जूठ सरेरे ।
कोऊ निज गेहमें आनि वसाव, कोऊ जन सन्तके गेह परेरे ॥
कोई निज छांहमें सन्त रखे, कोउ सन्तके आड़से जाय मरेरे ।
यहि भांति अनेक उपायनसो, हम जीवन तारन युक्ति धरेरे ॥
कोउ वैर करे कोउ मित्र बने, निज सन्ततिं जानि सुधारतहूं ।
अपने बलसे कोउ नाहिं तरे, निज शक्तिन से मैं उधारत हूँ ॥
कहुं जीव तरे मम आस लिये, सत भाव दिखाय हुंकारत हूँ ।
कित योग करें जप ध्यान धरे, निज शक्तिसे ताहि दुलारतहूं ॥
पूत कपूत भये जगमें, पर त्यागति मातु नहीं तिनको ।
कोइ सेवक भे कोइ शत्रु बने, पर देर सवेर बन्यो इनको ॥
धरु धीरज तूं अब आनु हिये, हम तारव चिन्तति तूं जिनको ।
परमानन्द कहें कुलदीपा सुनो, तब जीय कि साध पुरों छिनको ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जप जोगरु ध्यान करे नर सो, तर जात सो वाहि सराहनो है।
धनि धन्य सो लोक तिहूँ जन हैं, करि प्रेम रु भक्ति तरावनो है॥
अतिशय प्रिय लागत सो हमको, निज शक्ति से मोहिं रिझावनो है॥
सम भावहिं से प्रिय लाग सबै, पर ज्ञान की राह सुहावनो है॥
तिर पुण्डरु माल रहे गल में, मन भक्त के लक्ष दिखावनो है।
रुद्राक्षरू चन्द गले तुलसी, यह भक्त के भाव बतावनो है॥
तजि कंचन भूषण धारि लिए, बन धासरुपात सिखावनो है।
तजि देत कुटुम्ब सुता सुत को, इक आतम नेह लगावनो है॥
यह त्याग कि राह बतावन को, सब लोगन को समझावनो है।
बाहिर से जिन त्याग कियो, उर अन्तर नेह लगावनो है॥
धृक है धृक है जिनको जग में, अति निन्दित कर्म कहावनो है।
जिन बाहर भीतर त्याग कियो, तिनको सद्भक्त बनावनो है॥
छिपि नाहिं सकै जग भक्त मेरे, तेहिं देर सवेर जनावनो है।
जिनके हिय में हम जाय वसे, सो छिपे केहि भांति मनावनो है॥
काहें कु सोच करे मन में, तेरे अन्तर भेद खुलावनो है।
विचारि कहें परमानन्द गुरू, जग को कुलदीपा लखावनो है॥

## * चौपाई *

माला गले त्रिपुण्ड विराजे * यह सब भक्तन के छवि छाजे॥
अंग विभूति तिलक शिर सोहे * शंकर भक्तन के मन मोहे॥
हिय में भाव आनि यह राखे * तेरो भक्त जगत हम भाखे॥
सुन्दर गृह भूखन हम त्यागा * खाक विभूति अंग सब रागा॥
लाज भेष राखहु भगवाना * रूप तुम्हारे जाइ समाना॥
शंकर रामहिं एक समाना * यामे अन्तर नेक न माना॥
शंकर अति प्रिय मोको लागें * उनके शरण याहि ते पागें॥
रामहुं भक्त यही उर भाखे * तब जन पाव वेद भर साखे॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—रामहिं एक अनेक हो, दिखरावत जग भान ।
फिर शंकर अरु राम में, अन्तर किमि जन मान ॥

* चौपाई *

जग का भान मिटत जहँ जाई * चौथे पदहिं सुजन जब पाई।
कहो राम शंकर जिन देखा * कैसे भेद भाव कर लेखा ।
शंकर ब्रह्म राम हैं भाई * तीनों एक जगत भ्रम छाई ।
जो जन तीन अलग करि माना * सो हरि भक्ति प्रेम नहिं जाना।
नहिं वह चौथे पदहिं पधारा * नहिं तेहि उर हरि भक्ति अधारा।
भेद भाव करि हरिहिं उपासा * तेहि कर करम भरम नहिं नासा।
है अन्धा हरि भेद बतावा * पाखण्डी मत भरमि समावा।
सब पापों के भोगी होके * शुभ मारग हरि भक्ती खोके।
दो०—रहे भरमि वह जगत में, सब लोगन भर माथ ।
भोगेगा निज कर्म को, पर लोकहुं में जाय ॥

* चौपाई *

तीनों देव एक हैं भाई * भजहु ताहि जो मन में आई।
जाको जामें प्रेम समावे * ताहि अराधि भक्ति को पावे।
सो जन कुशल रहे जग माहीं * पर लोकहुं सुख भोगत जाहीं।
निन्दा हरि हर करे न जाके * होइ दोष बड़ अनुचित ताके।
जग हित लागि तीन तन ताके * पालन नाश सृजन बलबाके।
एकहिं राम तीन हो जाई * जग कारज लगि समुझहु भाई।
याको भेद समझ आ ताके * चौथे पदहिं देख निज जाके।
समझेगा यह अकथ कहानी * जाकर भेदहुं भर्म नशानी।
दो०—है यहि सत्य असत्य की, साधारण नहिं बूझ ।
बूझेगा वह चतुर जन, चौथे पद जेहि सूझ ॥

* चौपाई *

कुलदीपा हरि संग लड़ी है * नहिं यह बात जु लिखी बड़ी है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नारी बुद्धि कहां लो जावे * बोध अखण्ड कहां तक गावे ॥
जो पण्डिता चतुर कहुं होती * सारा जगत भरम हम खोती ॥
बड़ उपकार होत जग माहीं * हरि पछितात नारि बुधि माहीं ॥
बारहिं बार कहत जब नाथा * होत दुखित मन समुझत गाथा ॥
विद्वानहूं भक्त कहुं होता * जा मम शरण भरम जग खोता ॥
अविरल भक्ति पाव जन मोरी * कर उपकार जगत नहिं थोरी ॥
जो विद्वान पुरुष तन पाई * पावत अन्त शरण मम जाई ॥
बड़ उपकार करत जग माहीं * जग दुख संकट विकट नशाहीं ॥
तूं तो नारि समझ नहिं पावे * केवल प्रेम भक्ति को गावे ॥
हरि पछितात सुनत हम ताहीं * होत दुखित मन कहि सक नहीं ॥
कहँ लो अपनी समझ बढ़ावें * प्रभु कहते सो चित्त चढ़ावें ॥
कैसे लेखनि लेखहिं लावें * कैसे समझ कौन विधि गावें ॥
नहिं विद्या बल है कछु मोके * बोध अखण्ड एक बल लोके ॥
दो०—लिखि डालति बल ज्ञानके, जो समुझति प्रभु बैन।
नहिं समझति मम दोष क्या, नाथ करत जो सैन ॥

* चौपाई *

तेरी दया पाय कुलदीपा * कर्म धर्म चौथे पद लीपा ॥
राम नाम कहनो नहिं जानी * तोरि दया सब भर्म नशानी ॥
सुधे वचन बोल नहिं पावे * केहि विधि परमारथ सो गावे ॥
तुम प्रेरक होते उर माहीं * ताते मैं लिखती चलि जाहीं ॥
नहिं समझति जग कारज केते * कौने विधि जग भल हो तेते ॥
बिन जाने उपकार करूँ का * कौने विधिहिं हरूँ जग शोका ॥
केवल लेखन लेखहिं जानों * तेरे चरण शरण सुख मानों ॥
दीना नाथ कहावत हो जी * तो प्रभु और अधिक सिखवोजी ॥
दो०—जाते होवे जगत भल, सुखी होंय सब लोग।
ऐसा बल कछु आय उर, हरों जगत भ्रम शोग ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

कहने से न लोग बूझेंगे * केवल ज्ञानी को सूझेंगे ।
औरो जगत भरम सब जानी * मिथ्या कहि हांसी करि मानी ।
सत्य असत्य लखे नहिं कोऊ * बनी बात बिगड़ेगी सोऊ ।
जो हरि जन की हँसी उड़ावत * ताको प्रभु तुम नर्क पठावत ।
है उपकार याहि विधि हानी * ऐसा सोचत होति गलानी ।
श्रद्धालू उपकार बड़े हैं * अन अधिकारी दुःख खड़े हैं ।
ऐसी युक्ति बताबो नाथा * जा विधि लाभ होइ दोउ हाथा ।
अनअधिकारी हानि न पावें * अधिकारी बहु लाभ उठावें ।
दो०—ऐसा जब प्रभु कीजिये, दोनों दिसि भल होय ।
याकी निन्दा जो करे, तरि जावे नर सोय ॥

* चौपाई *

तब तो लिखों कहो प्रभु जोई * तजि आलसहिं निरालस होई ।
सुनिके बचन हंसे प्रभु मोरा * पुर आनन्द शोर घन घोरा ।
मूरति अचल चलति भइ सोई * वेद पुरानन में नहिं गोई ।
मम भक्तन उर दया घनेरी * बिगड़े जन बनि जात सबेरी ।
दया करत फल ऐसो होई * पाप पहार कटत नहिं गोई ।
जाके चित में दया न होई * भरमत है जग में नर सोई ।
दया बरोबर नहिं जप जोगा * नहिं बिराग तप कर जेहि लोगा ।
जो जन दया करे तन पाके * दीन दुखी कतहूँ जग ताके ।
ताकी नाव किनारे लागी * भव की भरम तुरत सब भागी ।
दया सहित नर पावत हमको * समदर्शी हो जा हरि सम को ।
दो०—जाके दया न होय चित, सो पामर नर होय ।
पशु के सम तेहि जानिये, शूकर के सम सोय ॥

* चौपाई *

दया रहित नर पशु बधते हैं * दया विहीन भान्स रँधते हैं ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दया रहित निर्भय हो जावें * दया रहित सब धर्म नशावें ॥
दया रहित नर चोरी करता * दया रहित पर तियको हरता ॥
दया रहित साहिब गुरु तजता * दया रहित नहिं हरिको भजता ॥
दया रहित नर बदला पाता * जाय नरक महँ समय बिताता ॥
जाको मार यहाँ तू खाया * सो अब तोको नर्क सताया ॥
याते विनय करौं कर जोरी * उर में दया बसा बरजोरी ॥
हरि से विनय करूँ दिन राती * मम उर दया अधिक बस जाती ॥
दो०—जाते सब जीवन विषे, दया रहे उर छाय।
कभी न काहू दिल दुखे, राम मिलैं तुहिं धाय ॥

* सवैया *

द्रौपदि के उर दाया घनी, कहुं अवसर पाकर जात लखाई ॥
दुर्वासा कोपीन वही, कहुं सागर धारहिं बीच समाई ॥
अंचल फार के देत भई, ऋषि लेकर ताहि कुपीन बनाई ॥
दुःशासन जब चीर हरयो, उत आय दया तब ताहि बढ़ाई ॥
बाढ़त चीरहिं टाल लग्यो, दुःशासन को गयो बांह पिराई ॥
कारज आय परे जनको तब होति, दया तहँ नित्य सहाई ॥
राम जबै बन को पहुंचे लखि कोलहुं भील्ल दया उर आई।
धावत घासरु पातन को कोउ छप्पर छावत फूस कराई ॥
ले फल फूल डला भरिके विनती रघुवीर से धाय सुनाई।
तुम भूखे हो राम कई दिन से फल लेकर नाथ तुरन्तहिं खाई ॥
तब कोलरु भिल्ल भये सब मुक्त, दया बलको लहि पारहिं जाई।
नाम दया जु कहावति है, सोई एक दया वश हैं रघुराई ॥
मार कोउ मति छाग छगी, नहिं मार कोउ जन भेड़ भिड़ाई।
कीट पतंग न मार कोऊ, दुख होत सबै उर जान बसाई ॥
जल जन्तु सबै पशु पक्षिनहुं, रहते सबके उर राम रमाई।
याते साक्षी सबै जिवके पर लोकहुं में नर जात बँधाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

याद करो हर को हरि को, नहिं जा यम लोकहुं जीव सताई ।
गायहुं मारव पाप महा, उनके प्रति रोमहिं देव वसाई ।
साक्षि भरें सब देवहुं जा, कबहूँ नहिं पाप पहार कटाई ।
कुलदीपा कहे नहिं बूझ सत्य रघुवीर कहें भुज दोउ उठाई ।

* सवैया *

काहें को भेंड़के कान कटावत, लै शिर आप न देवि चढ़ाई ।
होंय प्रसन्न सो देवि तबै, तुहिं देइ सुता सुत गोत बढ़ाई ।
नर के शिर काटे न रीझतु हैं, शिर नाये से देवि ले भेंट कराई ।
प्रेम से भेंट चढ़ावो सबै जन, शीश नवाय के देहु सुनाई ।
मातु मैं भेंट चढ़ावतु हैं, मम शीशहिं को अब लेहु बधाई ।
नाम दया सोइ राम कहावत, रामहिं की प्रिय हैं ठकुराई ।
कहुं देवि कहावति चण्डि भी नाम, कहूँ दुर्गा कहुं शीतला माई ।
पारवती धुर चंडि बराहिनि, सीता के नाम अनेकहुं भाई ।
अरु विन्ध्या चलि महरानि कहावति, शंकर विष्णुके नाम कहाई ।
उनके सब ही जन सन्तति हैं, अरु कीट पतंग जहां लगि गाई ।
कैसे सो मांस को खाय अघाय, विचार करो निज बंश कहाई ।
कहुं राक्षस का बलिदान, कह्यो, लखु दैत्य सबै यह रीति चलाई ।
तुम मानुष हो नहिं दैत्य पना, काहें दैत्यहिं के सम पूजत जाई ।
अब जाकर सन्त से पूछ सबै, केहि भांति से पूजन वेद बताई ।
वे जो कहें तुम सोइ करो, अपने मन से नहिं मांस चढ़ाई ।
पाप महान लगे तुम को, कबहूँ जिव तोहिं चढ़ाय मराई ।
होश सम्हारि के देविहुं पूजहु, भ्रमके नहिं जाल में जाहु समाई ।
अतिशय जब पाप पहार बढ़े, निज हाथन से तोहि मार गिराई ।
अहिरावन को हनुमान हते, तिमि राम सो तोहुं को आय मराई ।
कुलदीपा कहे सोइ सत्य नहीं, श्रीरामहिं आ मुख सो निज गाई ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—मति ऐसा पूजन करो. बड़े छोट सब लोग।
राम रूप हिय धार लो, मानुस तनके योग॥

* चौपाई *

धर्म मनुष तन का रख लीजै * सब जीवन की रक्षा कीजै॥
जहं लगि वन पालन मन दीजै * जो नहिं बने जोरि कर लीजै॥
अन्तर हीय दया वसि जावे * ताको पूर्व पाप नशि जावे॥
याते राह दया की गहिये * दोनों लोकहुं में सुख लहिये॥
जो जीवन रक्षा तुम करि हो * तो सब जा परलोक सम्हरिहो॥
जा दिन से नर तन तजता है * बारह मास राह भजता है॥
प्यासे को जल यहाँ पिलावा * सो ले सलिल तोहि को धावा॥
भूखे को तुम अन्न खिलाया * सो मारग महं तोहि जिवाया॥
दो०—उपरोहित को जो दिये, गज तुरंग गौ दान।
वे मारग महँ आइ कर, पीठ चढ़ावत मान॥

* चौपाई *

लँगड़े लूले अन्न खिलावा * सो मारग महँ लेकर धावा॥
कुल के गुरु अरु व्यास कहावें * वे भी मारग में सब आवें॥
वस्त्र दिये सु वस्त्र ले धावें * पनहीं दिय पनहीं ले आवें॥
छाता छत्र दिया जो दाना * सो सब लेकर खड़े समाना॥
कूप खुदाये बाग लगाये * मारग मांहि देहँ धरि आये॥
पग पग पर जल प्यावत जावें * पेड़ पलौ सब छाह बनावें॥
दीप दान देवन को दीन्हा * सो मारग प्रकाश सब कीन्हा॥
दीपावली दिवाली कीन्हें * सो सब दीप देह धर चीन्हें॥
करत उजाला मारग जावें * पथिकहिं सुन्दर राह बतावें॥
कम्मल शाल दुशाला दीन्हा * मारग मांहि ओढ़ सब लीन्हा॥
दो०—जितनी ताल तलाइया, निज हाथन खुदवाय।
सो सब धरतीं देह मग, करि स्नान सो जाय॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

मन्दिर शाला धर्म बनाई * ये मारग महँ आवत धाई ।
करि विश्राम मनुज मग जाता * जहाँ तहाँ सुख को बहु पाता ॥
गुरु भाई गुरु भगिनी माना * ये सब मारग महँ पहि चाना ।
होत सहायक सब जन आके * सुखी होत सब मारग पाके ।
आदर मान करत चलि जावें * कियो आपनो सो सब पावें ।
वैतरनी पर जब वह जावें * गुरु उपरोहित मिलि सब आवें ।
हाथी घोड़ा गौ सब आवें * पार उतारन को सब धावें ।
जितनो अतिथिहिं भोजन दीन्हा * सो सहायता सब वहँ कीन्हा ।
दो०—या विधि सुख से जात जन, जो शुभ कर्महिं कीन्ह ।
मारग के श्रम हरत सब, आदर जो जन दीन्ह ॥

* चौपाई *

कीट पतंग जहाँ लौं भाई * ये सब वहँ पहुचत हैं धाई ।
अपनो अपनो बदला देवें * शुभ अरु अशुभ दोउ रंग लेवें ।
शुभ के फल तो ऊपर गायो * ऐसोही फल अशुभ बतावो ।
जेहि तू ठगा ठगेगा तोको * मारा तो मारेगा मोको ।
ऐसा फल समझो नर नारी * याते राम भक्ति उर धारी ।
जासे कोउ दान जो लीन्हा * सो हो ऋणी वहां सब दीन्हा ।
ऋणी एक होता वह नाहीं * राम भक्ति कीन्ही जन जाहीं ।
तारण तरण होत नर जाते * पार उतारत भव से ताते ।
दो०—पूर्ण ब्रह्म सो होत नर, जो खावे सो राम ।
वाके पाये पार भव, लीन्ह राम को नाम ॥

* चौपाई *

खात खवावत पार उतारे * याते शीश रहत नहिं भारे ।
ज्ञानी को अधिकार दिया है * जो जन रामहिं नाम लिया है ।
ज्ञानी के तन राम बसत हैं * खावे पहिने वाहि लसत

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

याको भार राम शिर जावे * चाहे खाय वस्त्र को लावे ॥
देन दार तो अलख भया है * ज्ञानी शिर नहिं भार लया है ॥
याते सब जग खाना चहिये * ज्ञानी सब घर घर महँ रहिये ॥
देस विदेश भ्रमण नित करना * ज्ञानी धर्म यही उर धरना ॥
जा कर अन्न सभी घर खाना * गारहस्थ्य के पाप समाना ॥
दो०—गारहस्थ्य के पाप को, तुरतहिं वह हरि लेत।
याते भिक्षा जाय कर, ऐसी आज्ञा देत ॥

* चौपाई *

कोटिक यज्ञ करे नर जोई * सो ज्ञानी भोजन फल होई ॥
भोजन एकहुं वार करावे * कोटिक अश्वमेध फल पावे ॥
ज्ञानी बहुत रहत जग नाहीं * दोय तीन गिनती के माहीं ॥
पर ए पृथ्वी पर रहते हैं * ऐसा नियम हरी कहते हैं ॥
ज्ञानी से खाली महिं नाहीं * ठहरिन सकति तुरत उलटाहीं ॥
जितने ज्ञानी तन तजिजाते * फिर उतनेहीं तनधरि आते ॥
ऐसा हरि का नियम कहा है * या विधि जग का काम लहा है ॥
साधक जन सो भोजन करहीं * याको तप आधः नर धरहीं ॥
दो०—राम नाम परताप से, जो सुख मिल पर लोक।
वामे आधा लेत जन, ऋण का रहे न शोक ॥

* चौपाई *

नहिं वे देन दार नर होते * जो जन समय भजन में खोते ॥
सारा जग जो भक्त खिलावे * आधा फल में सब जग पावे ॥
आधा भक्तन का होजा है * जेहिते जन्म मरण खोजा है ॥
हरि आज्ञा ऐसी है भाई * अन्न खाय पर, तप कर जाई ॥
जो घर छोड़ भया बनवासी * ताकी यह सब बात कहा सी ॥
जो घर भीतर भक्ति करत है * उसको नहिं कोइ नर समुझत है ॥
याको केवल हरि जानत हैं * नहीं कोउ जग में मानत हैं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जाने कोउ सन्त जो ज्ञानी * चौथे पदहिं हुवा जो ध्यानी ॥
विन चौथा पद देखे भाई * मानि न सकत सत्य हम गाई ॥
आपनि रहनि सहनि हम जानी * पाछिल दशा न अजहुं भुलानी ॥
भरमित रहति बुद्धि जग माहीं * कैसे ज्ञानी परहिं लखाहीं ॥
जिन देखा तिन सत करि माने * विन देखे कोउ नर नहिं जाने ॥
जो देखे ज्ञानी हो जावे * विन देखे कहँ लगि सो पावे ॥
दो०—अन्धे नर तो मानहीं, भेषहिं में भगवान् ।
ज्ञानी लखते ज्ञान से, जा उर हरिहिं समान ॥

* चौपाई *

मान भेष की कर जग भाई * हैं सब सन्त यही विधि गाई ॥
हिय अन्तर भगवान् लखत हैं * ज्ञानहिं से ज्ञानी समझत हैं ॥
ज्ञान वस्तु है जग से न्यारी * वेद पुराणहुं से है प्यारी ॥
जब तक जन कोउ ज्ञान न पावा * तब तक ले पुराण श्रुति धावा ॥
ज्ञानी जबहिं ज्ञान देखत हैं * तब वह निज बल से लेखत हैं ॥
सुनत वचन ज्ञानी लखि जावे * यह जन बोध अखण्डहिं पावे ॥
कोउ पढ़ि वेद कहे सक नाहीं * बोध अखण्ड हीय के माहीं ॥
यह खोजत सत जन्म सिरावे * विना ज्ञान कोउ जन नहिं पावे ॥
दो०—याको साक्षी ज्ञान है, ज्ञानहिं ज्ञान लखाय ।
विना ज्ञान कोउ लखत नहिं, कोटि देह धरि जाय ॥

* चौपाई *

कोटिहुं जन्म मनुज धरि देहा * करत खोज वेदहुं कर लेहा ॥
कोटिक जन्म पढ़े मन लाई * चारहुं वेद पुराणहुं भाई ॥
विना ज्ञान कोउ ज्ञान न पाई * यह सब वेद पुराणन गाई ॥
नहिं कुलदीपा ज्ञान सिखी है * ज्ञानहिं का तो रूप लिखी है ॥
ज्ञानहिं का हम तन धरि देहीं * बोध अखण्ड लिखी कर लेहीं ॥
बोध अखण्ड न है कछु दूजा * बोध अखण्ड हमहिं लै हूजा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहिं गुरु परमानन्द हमारे * मैं सद्गुरू रूप लिय धारे ॥
पूरण ब्रह्म नहीं हम देखा * पूरण ब्रह्म आप हो लेखा ॥
दो०—कहँ कुलदीपा नारि है, कहँ पूरण गुरुदेव।
कहँ जो पूरण ब्रह्म हैं, रूप पुरुष हम लेव ॥

* चौपाई *

जो हम कहें बनत कछु नाहीं * पूरण ब्रह्म परत परछाहीं ॥
कहें अपूर्व सोउ भी नाहीं * पूर्व कहें नहिं शोभत वाहीं ॥
मैं ही मैंहीं जब कहि जाती * तब हम बहु भांतिन सुख पाती ॥
तोको नाथ अलग जब मानें * विरह अग्नि जरती तब जानें ॥
जरन लगत सब अंग हमारे * तुम विनको दुख जान पियारे ॥
मैंहीं मैं कहती मरि जावे * तबहुं न यह छाती सुख पावे ॥
कैसे शान्ति रहे जिय माहीं * कहती ब्रह्म समुझि हम ताहीं ॥
रट लागी मैंहीं मैं हौं जी * पागल सी लागत भय सौं जी ॥
दो०—हम लख पूरण ब्रह्म को, अलख लखे किमि नाथ।
अलख जोइ सो मैं रही, मैं अलखहिं धरि हाथ ॥

* चौपाई *

जग बहरावन काजहिं नाथा * अलग तोहिं करि मानति गाथा ॥
ऐसी बात लिखे दुख पावे * जग हित लगि यह मोहिं सतावे ॥
अन्ध नगरिया रहनि हमारी * कैसे हिरदय नाथ सम्हारी ॥
प्रेम न सम्हरत हारि सम्हारे * विना बके जी कल नहिं पारे ॥
ताते मौन रहति दिन रैना * बोलत मन होता बेचैना ॥
चौथ चाँद सम नर हम मानी * मोहिं बुलावत निज सम जानी ॥
यह जग रहनि गहनि माया के * माया रहित भक्ति हरि पाके ॥
बाहर से लागत जन नीको * जैसे सब नर रह तस ठीको ॥
भीतर की गति होती औरे * रहत जहाँ हरि उत मन दौरे ॥
कबहूँ हँसत कबहुँ रो जावे * कबहुँ बैठि सोवे सुख पावे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—कैसे तोहिं सुहात प्रभु, निज जन अस दुख देत ।
तोहिं न भावत सुजन जन, भक्त प्रान हरि लेत ॥

* चौपाई *

जिव वलिदान देत जग कोऊ * पाखण्डी मत जानहु सोऊ ॥
जो जन पर जीवहिं दुख देवे * सो जन हरिपद कबहुं न सेवै ॥
सब पापन से बड़ यह भाई * पर दिल दुख देता सो गाई ॥
तापर हरि नहिं रीझैं कबहूँ * कोटिक तन धरि तप कर तबहूं ॥
है सब बात विलक्षण ह्यां की * विरले जन लखि जात तहांकी ॥
पाप रहित नर होंगे तबहीं * पर दुख देखि दुखी हों जबही ॥
बोध अखण्ड नाथ सब गायो * मों हिय में आकर समुझावो ॥
पढ़ि गुनि शंका कर नर नारी * सन्त न कोउ अस बचन उचारी ॥
दो०—समय देख जब नाथ मुहिं, अस लिखवावत ताहि ।
सूक्ष्म रीति न बूझ नर, भेद खोल लिखवाहि ॥

* चौपाई *

बोध अखण्ड नाथ जो गाया * सो हम लिख कर लेख छपाया ॥
यामे शंका करे न कोई * भेद खुले रहस्य जो होई ॥
सत्य असत्य न छिप जगमाहीं * गाथा उघरि जाय सब ठाहीं ॥
हो परतीति अवशि तब इनको * लाभ होइ जग महँ जब जिनको ॥
अन्तहिं आस लिखी हम गाथा * नहिं तो लेख बन्द हो हाथा ॥
हरी परीक्षा याको दइहैं * तब मलि हाथ सबै पछितैहैं ॥
याते लेख लिखावत जाई * अन्त समय कामहिं जग आई ॥
रहे लेख पछितावं न होई * अन्त समय कोउ लोग न राई ॥
दो०—विन हरि इच्छा होत नहिं, यहि जग कारज कोय ।
सत भक्ती सत पन्थ जो, कभी रहा नहिं गोय ॥

* चौपाई *

जो तो सत्य लिखी हम इनमें * अवशि नाथ देखें कछु दिनमें ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो मम भक्ति सत्य जग होई * तौ प्रभु अवशि परीक्षा दोई ॥
जो हम बोध अखण्डहिं गावा * अवशि शब्द सतकर फल पावा ॥
जो हम पूर्ण ब्रह्म सम होई * याको भेद रहे नहिं गोई ॥
जग हित लागि लिखी जो गाथा * अवशि सत्य करिहैं मम नाथा ॥
बिन विश्वास न हो उपकारा * जो मैं लिखी ज्ञान की धारा ॥
याते हरि विश्वासहिं देंगे * कुबुधि बहुत जन कर हरि लेंगे ॥
जामें होइ जगत विश्वासा * सोइ करेंगे यह मुहिं आसा ॥
दो०—बार हजारहिं बोध मुहिं, नाथ दिया समुझाय।
लिखो ग्रन्थ को अवशि तुम दैहों जगत सुझाय ॥

* चौपाई *

कबहुं नारि नहिं ग्रन्थ बनावा * याते सकुचि हीय मुहिं आवा ॥
मैं इनकार कीन्ह प्रभु पाहीं * याते मुहिं समुझावत जाहीं ॥
लाज सकुच सब छोड़ गंवारी * मैं परतीति देव तन धारी ॥
तेरो काम लिखन का है री * मम आज्ञा जो कछु सो लै री ॥
सत्य असत्य भार शिर मोरे * नहिं कछु बल इसमें है तोरे ॥
कीट पतंग जिते जग माहीं * सबके हित लिय लिख तुम ताहीं ॥
जो नर दुर्बल जीव सतावे * सो जन हमको कभी न पावे ॥
वेद भेद बूझत कोउ नाहीं * बलिदानहिं देते सब जाहीं ॥
दो०—भुक्ती ही के काज यह, भई रीति बलिदान ॥
जो ऋषि पशुओं को बधत, मुक्त करत सो जान ॥

* चौपाई *

आठो अंग काट सब देते, * पुनि दे ज्ञान जोड़ सब लेते ॥
ऐसी शक्ति वसत उन माहीं, * बध करते जीवित कर ताहीं ॥
उपकारहिं के काज बिचारी * यज्ञ बहाने देत उधारी ॥
इसमें है कारण बहु भांती * लिखों सबहिं जावे बढ़पाती ॥
राक्षस बलिदानहुं जो करते * मान्स अहार पेट निज भरते ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कछु देखा देखी नर बिगड़े * पन्थ पखण्ड निकलि सब झगड़े ॥
ऋषियों के परताप न जाने * समता करन उनहिं मन माने ॥
बिना ज्ञान जो वध कर ताके * होत चैन मुहिं नर्क पठा के ॥
दो०—ऋषियों के वे सम करत, नर्क पठावत ताहिं ॥
पूरण ब्रह्म सरिस बनि, जीव वधत सब जाहिं ॥

* चौपाई *

पूरण ब्रह्म लीन्ह अवतारा * क्या हो राम कृष्ण तन धारा ॥
वन विच जा जब खेल सिकारी * पावन मृग देख्यो हम मारी ॥
जो तप कर जंगल ऋषि जाके * राक्षस खात मांस अब ताके ॥
तप नहिं सिद्ध मृगा तन धारा * या विधि तिन हम मारि उधारा ॥
शाप विवश राजन तन धारी * पशू देह वन बीच पधारी ॥
तिन को जानि वधत हम जाके * मम कर मरि मुक्ती भे ताके ॥
उनके मांस खाय नर जोई * स्वर्ग बसे सहस्त्र युग सोई ॥
याते उनकी मांस रंधाई * खा बहु जीव स्वर्ग को जाई ॥
जगको हित बहु भांति विचारी * मारे मृग सो खाय उबारी ॥
देखा देखि खेल जग सारी * कहते नृपति धर्म यह भारी ॥
दो०—मूरख बूझ न अविगतिहिं, कर मृगया बन जाय ।
नहिं बल ज्ञान न तपहिं कर, खाकर जीव अघाय ॥

* चौपाई *

ऐसे जीव नरक हम भेजें * कोटिक युगन नर्क सब सेजें ॥
नृपति अहेर खेल बन जाई * छोटे बड़े जीव सब खाई ॥
नहिं विद्या बल बुद्धिहुं थोरी * मारत जीव नहीं भय मोरी ॥
मानत नहिं कछु वेद पुराना * जप तप सब मिथ्या करि माना ॥
वेद अर्थ बूझत नहिं कोई * भक्ति ज्ञान नहिं मानत सोई ॥
कहु कल्याण होय अब कैसे * दुर्बल जीव खात सब जैसे ॥
महि तो अन्न देति बहु भांती * सो सब खाय न पेट अघाती ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जीवहिं देखि दया उर नाहीं * कैसे भल होवै नर ताहीं ॥
दो०—इतनो पर नहिं छोड़ नर, तो होवै बड़ि हानि।
जो हम कहते सत्य करि, कुलदीपा तू मानि ॥

* चौपाई *

जीवहिं लागि रचे फल फूला * विविधि भांति मेवा नर भूला ॥
कन्द मूल बहु विधि पकवाना * सो सब तजि मद मांसहिं माना ॥
निज जी सम बूझत नहिं कोई * मान्स अहार करत सब लोई ॥
पशु सम आप कटत दिन राती * ताहू पर पर दुख न सुझाती ॥
सब जीवन कर पाप संघाती * लड़ते जूझ मरत दिन राती ॥
पशु सम आयु थोड़ि रह ताकी * पावत फल करनी निज जाकी ॥
नहिं सुहात तेहि हितकी बतिया * सोचत जी करणी फट छतिया ॥
निज २ धर्म न जात निबाहो * पाप करन से चित न हटाहीं ॥
दो०—चेतो रे जन चेत लो, अपनी ओरहुं देख।
कैसी दुर्गति होति जन, समझ न आवत लेख ॥

* चौपाई *

बिन समझे नर हाथ न लावो * नर कर परम धर्म यह गाओ ॥
वेद वचन समुझत कोउ नाहीं * स्वारथ लगि बलिदान कराहीं ॥
पूजा पाठ झूठ बतलावें * पशु बलि सबहिं सत्य दिखलावे ॥
चौथे पनहिं तजत नृप गेहा * सो सब सत्य न मानत येहा ॥
सद्गुरु शरण झूठ करि जाना * भूत पिशाच सत्य सब माना ॥
कथा कीर्तन धूर्त पिछाना * बकवादी सांचे नर जाना ॥
यह कलियुग प्रताप है भाई * वेद पुराण झूठ सब गाई ॥
जाको जासो रुचि अति होवे * सो सब सत्य जगत महँ जोवे ॥
दो०—अपने २ अर्थ को, सत्य समझ सब कोय।
जामें स्वारथ होत नहिं, सो मिथ्या कह लोय ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

ज्ञानी नहीं स्वार्थ निज देखा * समदर्शी हो जग सब पेखा ॥
कीट पतङ्ग चींटि अरु चींटा * रामहिं रूप देख जग मीटा ॥
पत्तहिं पात रहित हो बोले * जगहित लागि भेद सब खोले ॥
ताकी टेर सुनत नहिं कोई * बनी बात वह भी सब खोई ॥
सद्ग्रन्थहिं कलियुग छिपि जावें * दम्भिन उर विवाद सब छावें ॥
पाखण्डहिं सब मानहिं लोगा * कलियुग कर प्रभाव यह योगा ॥
जो है सत असत्य सो जाने * जो असत्य तेहि सत करि माने ॥
बोलत झूठ सत्य सो मानी * सतवादी की मान न आनी ॥
दो०—विरले जन कोउ करत है, सतवादी की मान ।
बोल झूठ कर कपट छल, ताहि बड़ो सब जान ॥

* चौपाई *

जो जानत कल बल छल भाई * ताकी मान जगत महँ गाई ॥
रहे सुखी जग होइ बड़ाई * यह कलियुग महिमा सब भाई ॥
नहिं आदरहिं सन्त सतवादी * झूठे मान होइ कलि आदी ॥
अबहीं कोउ जन जानत बाते * है कछु कुशल जगत महँ ताते ॥
सन्त मान जग महँ कछु होती * ताते मंगल अधिक न खोती ॥
अहहैं बहुत अमंगल आगे * देखेंगे बहु लोग अभागे ॥
देबन आइ मनुज तन धारी * उनके हिय आनन्द पधारी ॥
उनके बल यह धरणि रहैगी * फल व फूल कछु पात लहेगी ॥
दो०—पेड़ पलौ सुख जायँगे, होवै धरणि न धान ।
गैया दूध न देइहैं, सुखिहैं नदियां जान ॥

* सवैया *

यहि भाँतिन लोग दुखी हुइहैं, जल अन्न नहीं फल फूल कहूं ।
नहिं मानहिं मातु पिता गुरु को, नहिं वेद पुराण कथा जु गहूं ।
नहिं पुत्र सनेह करे जननी, * नहि धर्म पतीव्रत नारि लहूं ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहिं मानहिं देवि न देव कुई, नहिं तर्पण हो पित्रादि सहूँ ॥
कलि कौतुक होइ जती जो सती, हँसिहैं सब लोग निहारि तहूं ॥
ठग चोर जो आइ बसे जगमें, सब लोगन मान करें नितहूं ॥
सत ज्ञानहिं जो सत भक्ति करै, तेहि सत्य असत्य लखे इतहूँ ॥
गुरु देव दया हम पार भई, रह तोरि दया कलिहै जितहूं ॥

* चौपाई *

दुखित रहत पित्रादिक देवा * यहि कलियुगहिं होय नहिंसेवा ॥
नास्तिक होइ मनुज की जाती * पित्रहिं पिण्ड न तर्पण भाती ॥
देहैं पिण्ड रीति जग जानी * नहिं श्रद्धा हिय प्रेम समानी ॥
प्रेम हीन जो पिण्डा देहीं * ताको पित्र कबहुं नहिं लेहीं ॥
होइहैं दुखित पित्र सब ताके * भांति अनेक दुखी कुल वाके ॥
उत तो पित्र पिण्ड नहिं लेहीं * इत नास्तिक न श्राद्ध को देहीं ॥
टूट परस्पर का व्यवहारा * इत उत दुखित न मिलत अहारा ॥
दोनों दिशि दुख होइ अपारा * नहीं सहायक काहु अधारा ॥

दो०—इत ता पिण्डहिं पित्र को, देत मनुष सब जाय।
उतसे लेते पित्र सब, दे अशीश कुल धाय ॥

* चौपाई *

पिण्ड लेइ उत आनन्द छाई * इत धन सुत सुख बजत बधाई ॥
दोउ दिशि करत परस्पर मानी * सुखी रहत परिवारहुं जानी ॥
यहि कलियुगहिं राज अब भाई * वेद पुराण कहत सब गाई ॥
नास्तिक होके धर्म नशानी * देव पितर तजि भे अभिमानी ॥
धर्म हीन सो चतुर कहाई * देव पितर से बहम धराई ॥
श्रद्धालू मति मन्द कहाई * बुद्धिमान श्रद्धा नहिं भाई ॥
कलिका अचल एक है भाऊ * भावहिं हीन सुहात कुभाऊ ॥
श्रद्धा हीन मनुज बड़ मानी * जो श्रद्धालु मान हो हानी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—होइहैं उलटी चाल सब यहि कलियुगके माहिं ।
हँसी उड़इहैं ताहि कर, भाव भक्ति मन जाहिं ॥

* चौपाई *

नास्तिक होइ पिण्ड जन देहीं * जग व्यवहार पितर नहिं लेहीं ॥
भाव भक्ति रहती उर जाके * लेते पिण्ड पितर सो धाके ॥
दे अशीश मन होत हुलासा * हरिहर भक्त समुझ जनु हासा ॥
ले पिण्डहुं प्रसन्न मन भाता * धन्य सुभाग्य जनम कुल ताता ॥
रहत जहाँ तहं करत बड़ाई * मम कुल जन्मे भक्ति बढ़ाई ॥
कबहूँ हरी दया कर यापर * हमहुं तरब प्रताप यहि पाकर ॥
कर जोरहिं नित ईश मनाई * मम कुलमें नित बजे बधाई ॥
शुभ आचरण चलत नर कोई * पितरहुं लोक रहत नहिं गोई ॥
दो०—अन्ध नगरिया अन्ध सब, बसत सूझ नहिं ताहिं ।
वे सब लोकहिं देख रह, जो कछु कर जग माहिं ॥

* चौपाई *

हरि हर भक्त सूझ तेहि जाके * जबहिं पाव चौथे पद ताके ॥
ताके लेख सत्य नहिं माने * यह सब जग माया रह साने ॥
मान साइ जो है बड़ भागी * आगे नाव पार जेहि लागी ॥
मानहिं मुनिवर जे बड़ ज्ञानी * निज नैनन देखा जो ध्यानी ॥
नहिं तो सब असत्य कर मानी * माया विवश रहत अज्ञानी ॥
वेद पुराण झूठ जो जानी * तासु बुद्धि माया में सानी ॥
हरि हर भक्ति न जाहि सुहावे * सो नास्तिक जेहि ज्ञान न भावे ॥
ऐसो जन पिण्डा कहुं देई * तजत पितर तर्पण नहिं लेई ॥
दो०—पित्र कहूं जो पिण्डले, गिरत नर्क में जाय ।
भूखे ए सब रहत हैं, तर्पण लेत न धाय ॥

* चौपाई *

याते सुनो सकल नर नारी * शुभ आचरणन में पग धारी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भूल भटक कहुं धोखा खावे * हरि सनमुख सो विनय सुनावे ॥
सास ससुर जियते भय मानी * तैसहि पितरनहूँ उर आनी ॥
ऐसी चाल चलो जग माहीं * परलोकहूँ अधिक भय ताहीं ॥
ताकी चाल सुधर जग जानी * कहते वेद सत्य सो मानी ॥
लोकहुं में भल कह सब कोऊ * परलोकहुं आदर जन होऊ ॥
चौदह भुवन बड़ाई ताकी * हरि हरभक्ति हृदय रह जाकी ॥
चाल दिखाइ कुचाल छिपाई * धृक जीवन वेदहुं सो गाई ॥
दो०—यह ठगिनी विद्या जगत, भूलि गहो मति कोय ।
जीवितहूँ दुख जगत में, नर्क दिखावत सोय ॥

* चौपाई *

बाहर भीतर इक सम भाई * सो हैं धन्य वेद सब गाई ॥
सो निर्मल मन है जन ताके * मगन रहत वह हरि को पाके ॥
है दुरबुद्धि सुबुद्धि दिखावे * धोखा खा परलोक नशावे ॥
ऐसे चतुरन के सरदारा * यम कर दण्डहिं एक अधारा ॥
जाते यम दरबारहिं माहीं * चतुराई भुलि जाति तहाँहीं ॥
शिर धुनि २ नर तहं पछितावे * ठगनी माया हम ठगि गावे ॥
मुहिं अवकाश धरी पल होता * जा नर लोक पाप सब खोता ॥
मैं जो किया पाप निज भोगें * नहिं अब रहे मनुज तन जोगें ॥
दो०—विलपत ही रह जावगे, आपन कोउ न दिखाय ।
नहिं कोउ संगी साथ में, खम्भ बांधि जम लाय ॥

* चौपाई *

जो कोइ सन्त दरस जन देखा * ताको जम न लेत है लेखा ॥
श्रद्धा सहित सन्त को माने * सद्गुरु साहिब को पहिचाने ॥
सुख से रह जीवित जग माहीं * परलोकहुं सुख कह सक नाहीं ॥
मुख से राम नाम को गावे * अन्न लेइ भूखे को धावे ॥
ऐसे मानुष जगत बड़ाई * नन्द सुनन्द लेन को धाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरिपद विमुखहिं नास्तिक गाई * वेद पुराण झूठ बतलाई ॥
हरि रँग राते आस्तिक मानो * धर्म धुरीण वेद तेहि जानो ॥
ते जन सबहीं प्रिय जग लागे * राम दुलारे सो बड़ भागे ॥
दो०—देव पितर प्रिय लाग जन, तीन भुवन शिरनाय ।
जगत गुरू सो जानिये, गिनती अन्ध न लाय ॥
छन्द—है अन्ध की गिनती नहीं, जो कहत सो थोड़ी रही ।
माया विवश नर आप भूले, सुजन कहं धोखेमही ॥
देखा नहीं सत संग को, हरि भक्त को झूठे कही ।
साधन नहीं कबहूं किया, हरि भक्तिका सुख ना लही ॥
तेहि दोष अब का दीजिये, भवमें भुलाना सो सही ।
देखा नहीं हरि नगरको, हरि रूपको वह ना चही ॥
सो सत्य करि कैसे कहे, प्रभुके चरण जो ना गही ।
मुरदा सरिस जन ताहि मानत, जाहि उर श्रद्धा नहीं ॥

* चौपाई *

भेदभाव जो हरिहिं उपासे * कहुं सो कथा जगत भय नाशे ॥
भेद भाव कहते हरि ताको * हरी रूप निज मान न जाको ॥
पूरण भक्ति रहत उर माहीं * ब्रह्म समान न आप कहाहीं ॥
चौथा पद देखा जिन नाहीं * अहं भाव मिटता नहिं ताहीं ॥
सो जन पुर वैकुण्ठहुं जावे * हरि के संग नाच जा गावे ॥
ताको नर की आसा ना है * हरिपुर सुख बहु भांतिन पा है ॥
भूख प्यास लगती कहुं नाहीं * मैल पसीना आंसु न ताहीं ॥
दिव्य रूप रहता धरि देहा * चार भुजा हरि सम सो लेहा ॥
दो०—पूजा पाठ रु आरती, हरि पूजत सब लोग ।
विविध भांति पकवान धरि, लागत मेवा भोग ॥

* चौपाई *

सो सुगन्ध उड़तीपुर माहीं * हरि जन संग लेत सो जाहीं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varahasi. An eGangotri Initiative

जितनी पूजा हरि की होवै * सो सब भक्तन सँग प्रभु लोवै ॥
चौदह भुवन पूज हरि पदको * सो सब भाग लगत भक्तन को ॥
नहिं जग की इन आस धरी है * पुर वैकुण्ठ सुगन्ध भरी है ॥
प्रेम सहित जन हरि पद पूजै * चौहद भुवन साध हिय हूजै ॥
ताके आस पुरावन काजे * हरिजन संग लेत सब साजे ॥
भूखे रहत नाथ दिन राती * भक्तन भोग खात बहु भांती ॥
खाय अघाय आप प्रभु जाते * फिर भक्तनहुं खवावत ताते ॥

दो०—देखो मीठो है अतिहिं, जन जो भोग लगाय।
जेते त्रिभुवन भक्त हैं, होम करत सब जाय ॥

* चौपाई *

उड़ति सुगन्ध लोक महँ छाई * मैं अकेल लेते सब जाई ॥
सुनत वचन दौड़त सब लोगा * खान न पाव एक तुम भोगा ॥
हांस विलास होत पुर माहीं * दौड़त भक्त नाथ धर छाहीं ॥
कै सुगन्ध पालन महँ झूलें * सखा दौड़ि तहँ जाकर हूलें ॥
खवहूं हरि पालन चढ़ि जावें * सखा संग ताको हलरावें ॥
खवहूं सखा झूल पालन में * नाथ झुलावत हैं हालन में ॥
खवहूं कूदि पेड़ चढ़ि धावें * डाढ़ हिलावत हरि सुख पावें ॥
खवहूँ नाथ आप चढ़ि जावें * सखा सखिन यहि भांति रिझावें ॥

दो०—नित्य नये सुख होत हैं, नय २ जहाँ बहार।
बड़ भागी जन लहत हैं, ता सुख वार न पार ॥

* चौपाई *

श्राद्ध पिण्ड उनको नहिं चहिये * जग व्यवहार लागि कछु कहिये ॥
पुरन्तन को दीजै जिवनारा * जाते कुल परिवार उवारा ॥
जगसे नाता उनका टूटा * श्राद्ध पिण्ड परपञ्चहुं छूटा ॥
जग हित लागि नाथ यह गाई * नहीं भक्त कारज कछु भाई ॥
जिनकी श्राद्ध करत नर जाके * तरता जाय समय कछु पाके ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है यह कोटिक यज्ञ समाना * खात खवावत तरि सब जाना ।
खाने वाला भी तरि जावे * जोइ खिलाव पार सो पावे ॥
शेषहुं महिमा सकहिं न गाई * जो ज्ञानी महात्म्य है भाई ॥

दो०—जियत रहत नर देह धरि, पूर्ण ब्रह्म सम सोय ।
जबहिं जाइ तन तजत है, आत्मरूप सो होय ॥

* चौपाई *

रमत रहत पशु पक्षिन माहीं * रामहिं रूप धरा तन ताहीं ।
है वह अचल रूप भगवाना * नहिं वह चल परपंच समाना ।
आनँद २ है तहँ भाई * वेद पुराणहुं में सब गाई ॥
योगी यती ध्यान जेहि धरते * ज्ञानी सोइ रूप जा वरते ।
कोटि जनम नर तन धरि जाहीं * तब हो सन्त अराधत ताहीं ।
पावत तब दर्शन वह जाके * चौथे पदहिं लहत तब ताके ॥
सोइ रूप ज्ञानी हो जावे * जेहि लगि सन्त दुःख बहुपावे ॥
तजि घर बार रहत बन माहीं * शीत बयार सहत जन जाहीं ।

दो०—सोइ रूप वह धर लिया, ज्ञानी तन तजि जाहिं ।
ताकी महिमा को कहे, सहस मुखन भी नाहिं ॥

* चौपाई *

जग हित लागि ताहि कछु कहिहैं * जाते जगत भलाई लहि हैं ।
ताके मरन बादहिं पाके * सन्तरु विप्र खवावहु जाके ।
सो परसाद खाय नर कोई * सहस बरष कर तप फल होई ।
वा दिन दान कोउ जो देई * यज्ञ सहाय द्रव्य कछु सेई ।
श्रद्धा सहित आस उर राखी * पाव परम पद हैं हरि साखी ॥
फल अनन्त ताको सो जानो * कहन सुनन से पर तेहि मानो ।
याकी महिमा शंकर जानें * जगमें नहीं सत्य कोउ मानें ।
पुनि महिमा हरि आप बखानी * पूरण ब्रह्म जु अलख समानी ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—की मानेंगे सन्त, की ज्ञानी पुनि जानहीं।
महिमा का नहिं अन्त, कौन लिखे को मान जग॥

* सवैया *

सन्तहिं बात सही न कही जग में कोउ मानन हार नही।
सन्तहिं जो कोउ सत्य कहे, सोउ आपहिं सन्तन रूप मही॥
ज्ञानि कह्यो कोउ सन्तहिंको, सोइ आपहिं ज्ञान के रूप लही।
विनु ज्ञान के सत्य न कोउ कहे, अरु ज्ञान भये सोइ रूप गही॥
नहिं देत सुता सुत भक्तन को, धन धामहुं तो सुख नाहिं दई।
निज भक्तहिं नाथ दुलारत हैं, हरि सन्तति सम्पति मान गई॥
बहु भांति अनेकन दे दुखको, अतिशय विकराल विपत्ति छई।
यहि भांति न भक्त बनावत हैं, निज आतम रूप समाय लई॥

दो०—परालब्ध वस कोइ इक, सुख सम्पति जन पाव।
टारि न सकते ताहि को, नियम बद्ध हरि गाव॥
नहिं धन सुत निज नाथको, भक्तन के लिय भाय।
मेरी कही न मानिये, वेद कहत सब गाय॥

* चौपाई *

मन का वेग रुकत है नाहीं * चित चंचल चलता सब ठाहीं॥
जप करु चाह ध्यान धरु भाई * चाहे शब्द सुनो सब ठाई॥
यह चल ताहि रहे जग माहीं * ठौर २ चौदह जग जाहीं॥
धन सुत नारि देह सुख पावे * विषय बयारि बहुत लपटावे॥
हरि माया पर बल जगमाहीं * भरमावति रहती सब ठाहीं॥
माया झूलन में सुख पावे * ब्रह्मानन्द इसे नहिं भावे॥
याको कही जोइ जग माने * सोइ विषय रस में जा साने॥
जाते चतुर रहो नर नारी * हिय अन्तर महँ यह न पधारी॥

दो०—जो कछुं आवे चित विषे, तुरतहिं देहु विसार।
ब्रह्मानन्द रहत जहाँ, तहँ मन जाइ निहार॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

वरिआई मन ले तहँ जाहू * पूरण ब्रह्म बसे जेहि राहू ।
यह मन जाइ रुकेगा तहवाँ * ब्रह्मानन्द बसत है जहवां ॥
नहिं तो प्राण निसरि वरु जाई * चित चंचल कबहुं न ठहराई ।
चित चंचल कर खेल अपारा * गावत वेद पाव नहिं पारा ॥
देखि कहूं गजबाजि भुलाई * कहुं सुन्दर महलन मन भाई ।
कबहूँ मान बड़ाई चाहे * निन्दा अस्तुति में मन जाहे ।
कबहूं कुल परिवार विरोधू * कबहुं कुटुम्बहिं में मन सोधू ।
कबहूँ जुवा जुवारी देखा * कबहूँ सुन्दर नारिहिं पेखा ॥
दो०—कबहूं मन देवन नगर, ब्रह्महिं लोक सुहाय ।
कबहूं पर तिरियन विषे, पर धन देखि लुभाय ॥

* चौपाई *

कबहूँ पर निन्दा सुख मानी * पर सम्पति लखि इर्षा ठानी ॥
कबहूँ डाह जलन हिय धारी * पर घर जाय विपति नितगारी ॥
है यह मन कर सहज सुभाऊ * भरमत फिरत जगत सब ठाऊ ॥
हरि कीरति प्रभु यश नहिं भावे * हेरि फेरि भवहीं में धावे ॥
कबहूँ मातु पिता मरि जावे * रोवत फिरत सुयश जग गावे ॥
कबहूं सुख सम्पति घर नाशी * रोवत फिरत भूलि अविनाशी ॥
कबहूं सुत सम्पति घर बाढ़ी * हरषित होत बन्धन बँध गाढ़ी ॥
धन्य २ करि आपुहिं जाना * ब्रह्मानन्द महा सुख माना ॥
दो०—कलह, कल्पना याहि विधि, अरुझि रहे दिन रात ।
सन्त सभा देखत नहीं, पुनि निशि पुनि परभात ॥

* चौपाई *

घटि गइ आयु पता कोउ नाहीं * आज मरे या कछु दिन माहीं ॥
तजि परिवार अकेला जाई * नहिं कोइ संग चला तुहिं भाई ॥
भोगोगे निज करणी जाके * पछितइहो यम दण्डहिं खाके ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कल्पत ही बीते कछु काला * नहिं यम फांस छुटे अवहाला ॥
पिंडा पानी लागि मरत हैं * सुतहिं पौत्र की आस धरत हैं ॥
अब यह पिण्डा पानी देंगे * धन सुत नेह इनहिं अब लेंगे ॥
आपन समय बीत जेहि लागी * वैसे सुतहिं पौत्र मन पागी ॥
अपनी खबर लिया जो नाहीं * कहु केहि भांति तोर सुधि लाहीं ॥
अपनो दिशि निहार इकवारा * तब सुत पौत्रहिं राखु अधारा ॥
पिण्डा पानी कवलों दइहैं * देंह मनुज कवलों जग रहि हैं ॥
क्या अपने वश की है भाई * पौत्रहिं पर पौत्रहिं बढ़ जाई ॥
अपनी क्यों नहिं युक्ती कीजै * हरि को भजत सदा सुख लीजै ॥
काहें को पर आश करत है * अपनो बल आपहिं उबरत है ॥
तजि सबकी जिय आश भरोसा * तजि जग हरि की आस करोसा ॥

दो०—भाग्य विवश सुत पौत्रहूं, आवें की चलि जांय।
जा घर होवे हर्ष नहिं, विनसे दुख न मनाय ॥

* चौपाई *

यह सब काल कर्म के वस है * नहिं अपने मन का यह कस है ॥
हरि इच्छा जैसी हो जावे * नहिं कछु हर्ष शोक हम लावे ॥
हरि भजने की चिन्ता भारी * कबधौं हरि मम हृदय पधारी ॥
इसको हर्ष शोक यहि भांती * हरि मिलने का दुख दिनराती ॥
ऐसा शोच करे नर जोई * भव सागर से पारहिं होई ॥
आप तरे बहु जीव तरावे * इक सौ साठ पिढ़ी उबरावे ॥
अपनो मन रुकजा यह फल है * हरि से प्रेम लग्न सुख भल है ॥
ऐसा अनुपम सुख अब तजिके * पावत दुख सुत पौत्रहिं भजिके ॥

दो०—हरि भजने का फल यही, सिद्ध मुक्त जग माहिं।
जीवतहीं सुख को लहै, साधक हरिपुर जाहिं ॥

* चौपाई *

साधक मुक्त होत पुर माहीं * परम धाम सो ज्ञानहिं पाहीं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

साधक सिद्ध भेद है इतनो * वह तर आप सिद्ध सँग कितनो ॥
ज्ञानी तरि बहु संग उधारे * पीढ़ी इकसत साठ उवारे ॥
जो जन नाता नेह निवाही * सखा सखिन सेवक सब जाही ॥
अन्न फूल फल जो जन दीन्हा * विधि अनेक सेवा जो कीन्हा ॥
ज्ञानी ग्रन्थ पढ़त मन लाके * धूप दीप कीन्ह्यो जन जाके ॥
अंग छुआ सपरस पद कीन्हा * संगहिं साथ भ्रमण मन दीन्हा ॥
मन्त्र लिया उपदेशहुं लीन्हा * सद्गुरु भाव प्रेम बहु कीन्हा ॥
दो०—जूठन खाया प्रेम से, भाव भक्ति उर लीन्ह ।
पूरण ब्रह्महिं जानिके, शिर नवाय जो दीन्ह ॥

* चौपाई *

ऐसे भाव तरें बहु लोगा * नहिं है वार पार कहँ जोगा ॥
बहुते लोग तरें जग माहीं * गिनती शेषहुं कहि सक नाहीं ॥
ज्ञानी महिमा हरि सम जाना * चार वेद षट शास्त्रहुं माना ॥
साधक पर लोकहिं तर जावे * श्राद्ध पिण्ड दे सो फल पावे ॥
इतना अन्तर है उन माहीं * परे लोक जा मुक्ती पाहीं ॥
लोकहिं में भय जीवन मुक्ता * पाप पूण्य जग कर दिय चुक्ता ॥
सो नर धन्य होय तिहुं लोका * सुर बन्दित हर भव कर शोका ॥
भव सागर केवट बनि आवै * जगसे बहुत जीव लै जावै ॥
दो०—पार उतारे जीव बहु, हरिपुर लेकर जाय ।
उसकी महिमा है घनी, निज मुखसे हरि गाय ॥

* चौपाई *

कोउ यह सत्य न मान कहानी * जगत हँसे होवै बड़ि हानी ॥
शोचि २ दुख होत अपारा * हरि लिखवावत ज्ञान अधारा ॥
है अति मृदुल गूढ़ यह बानी * कुलदीपा अपने जिय ठानी ॥
श्रद्धायुक्त पूछ नर कोऊ * तौ यह ज्ञान कहिय जन सोऊ ॥
सेति बहावति हौं दुख भारी * इन भांतिन भव रोग न टारी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सुनि के वचन नाथ हँसि दीन्हे * नहिं अब समय सन्त पद चीन्हे ॥
पशु सम बुद्धि भई नर नारी * परलोकहुं सुधि सबै बिसारी ॥
होइहैं कोउ इक भक्त हमारे * उनके लिय निस्तार निकारे ॥

दो०—यहिं कलियुग के मध्य में, नये पन्थ बहु होय ।
जाको भावे धर्म कह, रहे ग्रन्थ सद्गोय ॥

* चौपाई *

भांति अनेकहिं ग्रन्थ बनेंगे * मर्यादा विपरीति बकेंगे ॥
धरि के सन्त भेष बहु लोगा * परउपदेश देहिं यहि योगा ॥
साधारण जन सन्त न जाने * भेषहिं देखि करत सनमाने ॥
स्वारथ लागि देहिं उपदेशा * धनकी चाह सन्त कर भेषा ॥
साधन हीन सन्त किमि जानी * सन्त असन्त न पर पहिचानी ॥
प्रथमहिं भक्ति साध जब लोगा * तब पहिचान बुद्धि भइ योगा ॥
बिनु साधन पहिचान न होवे * या विधि ठगि जावें सब रोवें ॥
ज्ञानी सन्त तीर सम लागे * सुनि श्रोता मलीनता भागे ॥

दो०—ज्ञानी के मुख सुनत हैं, जो जन सद उपदेश ।
काम क्रोध मद लोभ का, रहत हृदय नहिं लेश ॥

* चौपाई *

नित नय जन उर भक्ती जागे * पाप पहार कटन तब लागे ॥
नित नय श्रद्धा जन उर माहीं * सन्तन संग रुचत अब ताहीं ॥
है पहिचान सन्त कर येही * शुद्धहिं हीय जानि जन लेहीं ॥
ताको संग तजे मति कोई * सँग किय परलोकहुं भल होई ॥
ज्ञान नहीं हिरदय में जाके * दे उपदेश भाव नहिं ताके ॥
सुनत बचन प्रिय लाग न ताके * स्वारथ हेतु भेष है जाके ॥
हो न असर श्रोता उर माहीं * है असन्त पहिचानहु ताहीं ॥
भावी विवश फँसे नर जाके * उघरे अन्त समय कछु पाके ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—सन्त असन्तहिं भेद बहु, समझेंगे सब लोग ।
धोखा खइहैं कछुक दिन, भेद खुले पा योग ॥

* चौपाई *

जाके हिरदय राम समाने * ताके वचन शरहिं सम जाने ॥
सुनत बचन प्रिय लागत नीको * प्रेम प्रचार होत उर ठीको ॥
दिन दूना उर बाढ़त प्रेमा * सद्गुरु बचन चलत नित नेमा ॥
सुन्दर चाल जगत हिय मोहे * परलोकहुं सुधार करि छोहे ॥
स्वारथ रहित बचन नित बोलें * शान्ती सहित जगत महँ डोलें ॥
अमृत सरिस बीज वह बोवें * बाढ़त प्रेम काम हिय खोवें ॥
श्रोता सुनत बीज उर जामें * मेवा सरिस फलहिं लग तामें ॥
तोड़ि २ खाने फल लागे * खत अघात भूख पुनि जागे ॥
दो०—ताहि अपच नहिं होत है, पचि जावे जो खाय ।
ऐसा शुद्ध जु ज्ञान फल, खात भूख बढ़ि जाय ॥

* चौपाई *

ज्ञान प्रताप अग्नि उर बाढ़ी * सद्गुरु दया प्रेम भय गाढ़ी ॥
भट्ठी प्रेम जरे सब कामा * सो पहुंचे हरि कर जहँ गामा ॥
पहुंचतहीं आपन पौ भूला * जन्म मरन कर मिटिगा शूला ॥
मैं हूँ ब्रम्ह कहत सुख पावे * जब कह जीव जरनि दुख छावे ॥
जीव भेद हरि होत वियोगा * कहत ब्रम्ह तबहो संयोगा ॥
होत वियोग भक्त जरि जावे * भेद भाव ताते नहिं लावे ॥
ब्रम्ह कहे जग हँसी उडावे * ताते आनन्द बुद्धि बुड़ावे ॥
भक्त दुखित रहता जग माहीं * साधारण जन समुझत नाहीं ॥
दो०—याको बुझिहैं सोइ जन, ज्ञान धार चढ़ जोय ।
जो चलता तो पग कटे, गिरत मरत है सोय ॥

* चौपाई *

प्रेम पानही जो पग लीन्हा * सो यह ग्रन्थ पढ़त मुहिं चीन्हा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बोर नारि सम प्रगट न रोई * जिय की पीर हिये हम गोई ॥
समझेगा कुइ ज्ञान कहानी * हरिकी नगर देख तिन मानी ॥
नहिं दुख छै कहते जग होई * जाने विरह अग्नि लग जेाई ॥
पढ़ि गुनिके असको भल कहहीं * पीर पराइ कौन अब दहहीं ॥
मेरे हृदय रहति जो पीरा * को अस वीर लिखे मति धीरा ॥
को जाने दुख दर्द हमारी * है अब को मम हृदय पधारी ॥
को जानत मम हिय की पीरा * लिखि मम नाम जाइ भव गीरा ॥
लोक प्रलोक अजस ले भारी * धर्म राज दण्डहिं कर धारी ॥
को निशंक जन्मेउ जग माहीं * लोक लाज परलोक नसाहीं ॥
दो०—लिखता आपहिं ग्रन्थ है, नाम लिखत जा मोर।
ऐसा ज्ञानी होय कर, ठगता जग चहुं ओर ॥

* चौपाई *

जो अस कहहिं सत्य करि माने * सो अब नरक जाइ सत जाने ॥
जो कोउ लिखता है मम ओरी * सो यम दण्ड पाव नहिं थोरी ॥
जगत गुरू अब मोहि बनावा * ज्ञान विहीन सुजस जग गावा ॥
सो अब धूर्त गिरे भव माहीं * बार २ यम दण्डहिं खाहीं ॥
जगहूँ के ठग राम कहावें * हैं अस वेद सुयस जग गावें ॥
जाके हिरदय राम पधारे * सो अस लिखता ज्ञान अधारे ॥
सो है धूर्त जगत भरमावे * सो वह कहाँ ज्ञान भल गावे ॥
नहिं यह ज्ञान सहज कोइ पावे * कोटि जन्म वेदहुं पढ़ि जावे ॥
दो०—गावैगा वह ज्ञानि जन, ज्ञान रूप भा आप।
नहिं गावे ठग धूर्त यह, जो पापिहुं के बाप ॥

* चौपाई *

ज्ञानदीपा हिय राम पधारे * गावति है सब ज्ञान अधारे ॥
मम हिय माहिं पीर है भारी * जानत एक नाथ गिरधारी ॥
लेगा दूजा जन जोई * राम लगन लागी उर सोई ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तीसर सो नर जाने नीके * है जाको अगामि मग ठीके ॥
चौथा श्रद्धालू जन माने * जो कबहूं छल छन्द न जाने ॥
सरल स्वभाव भक्ति उर आनी * साधन स्वप्नहुंमें कहुं ठानी ॥
कबहूं हैं जेहि राम दुलारे * ज्ञान ध्यान विच स्वप्न पुकारे ॥
सो सत मानहिं जानहु भाई * वेद पुराण सन्त यह गाई ॥
दो०—जो पढ़ता कहुं वेद को, राम सुजस सत जान ।
सो जाने यह सत्य करि, वाको पंडित मान ॥

* चौपाई *

परतिय लम्पट चोर जुवारी * नहिं सत मान प्रपंच अधारी ॥
सपनेहुं राम भजन नहिं कीन्हा * सो अब ज्ञान कथा किमि चीन्हा ॥
परतिय ताकत जन्म सिरानी * ठगिनी माया बुद्धि हिरानी ॥
सो अब सत करि कैसे माने * स्वप्नेहुं जो हरि भक्ति न जाने ॥
पर निन्दा करते दिन जाई * भूल भटक हरि सुयश न गाई ॥
सन्त सभा कबहूं नहिं देखा * सो अब ज्ञान कथा किमि पेखा ॥
करि कुतर्क शंका उर धारी * निर्दोषहीं दोष दे भारी ॥
सोइ कहै यह झूठ कहानी * कोउ छल छन्दहिं धूर्त बखानी ॥
लिखता आप नारि धरि नामा * है लम्पट विषई यह कामा ॥
सत्यहिं को तो असत् बतावे * माया ठगिनी सों अरुझावे ॥
दो०—जोइ कहे सो थोर अब, समझ बूझ नर नारि ।
इनका कहा न मानिये, राम भक्ति उर धारि ॥

* चौपाई *

पढ़हु कथा हरि सुयशहिं जानी * है पुराण यह ज्ञान कहानी ॥
जो ऋषि मुनि सब वेद बखानी * हरि की दया हमहिं उर आनी ॥
जग हित लागि लिखी हम ताहीं * पैहो सुख जो पढ़ मन लाहीं ॥
मोते अधिक होय गुणवाना * ज्ञान ध्यान भक्ती हरि पाना ॥
शंका रहित पढ़ो नरनारी * राम कृपा करि हृदय पधारी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

होइहैं सफल मनोरथ जनके * परम लाभ सन्तोषहुं मन के ॥
नहिं हम कवि नहिं चतुर कहाऊँ * नहिं पण्डित हरि यश को गाऊँ ॥
मैं मति मन्दहुं परम अभागी * हरि लिखवावत जन हित लागी ॥

दो०—नहिं बल बुद्धि न ज्ञान मुहिं, राम कृपा बल होय।
आपहिं अलख लिखावते, नाम धरा मम सोय ॥

* चौपाई *

वे हरि धूर्त्त बसें मम ऊरे * ज्ञान कथा लिखवावत पूरे ॥
हैं स्वतन्त्र वे डर न काहु का * नहिं भय तिन्हें काल दण्डहुं का ॥
नहिं डर सुयश कि अपयश होई * नारी पुरुष जाहि कुल कोई ॥
प्रेम भक्ति के वै भूखे हैं * नाम गाम से प्रभु रूखे हैं ॥
कुल अभिमान सुहाइ न ताको * बल विद्या हंकार न जाको ॥
देश भदेस सुदेश न भावा * प्रेम भक्ति बस वेदहुं गावा ॥
कुल अभिमान बोरि जग सारा * जाट जुलाहा लै प्रभु तारा ॥
वेद पढ़त पण्डित भव परहीं * जाति चमार पार प्रभु करहीं ॥

दो०—देशहिं के अभिमान ते, बुड़िगा नामरु गाम।
मगह निवासिनि तरि गई, कुलदीपा भजु राम ॥

* चौपाई *

नहिं कोउ हरि सम है जगमाहीं * जेहि पटतरिय समुझ नर ताहीं ॥
चौदह भुवन देख जन जाके * नहिं सुख होत हरी सम पाके ॥
ब्रह्महिं पद पहुंचे जन कोई * हरि मिलने सम सुख नहिं होई ॥
पुरवैकुण्ठ हरी निज धामा * ह्वां भी यह सुख नहिं जस वामां ॥
मो पर कृपा हरी जब कीन्हा * चौदह भुवन तबै लखि लीन्हा ॥
जेते सुख हैं जग के माहीं * चौदह भुवन लखी सब ठाहीं ॥
फीको लगत सभी जग तबते * आनन्द रूप लखी हम जबते ॥
नहिं दुख जरा मरन का है जी * सुत सम्पति नाशे कि रहै जी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—नहिं दुख नर्कहुं जाइ हम, सुख वैकुण्ठहुं जाय ।
जीव भेद दुख पावती, ब्रह्म कहति सुख पाय ॥

* चौपाई *

भक्तन काज लिखी यह गाथा * ढूढ़ेंगे अनुपम निज नाथा ॥
नहिं इच्छा जग मान बड़ाई * भक्तन के हिय भाव बढ़ाई ॥
ले अस भाव लेख हम कीन्हीं * यही भाव हरि आयसु दीन्हीं ॥
जगत बड़ाई भार भुके जी * हरि विमुखी उलटे समुझैं जी ॥
जा बल पाइ तरी अघ नारी * सो बल अब भवसागर डारी ॥
हरि भक्ती समझैं नर नारी * पढ़ि गुनि के तरिहैं जग सारी ॥
ऋषि मुनि लिखा प्रथम यह ज्ञाना * कुलदीपा तरि गइ करि ध्याना ॥
करते ध्यान कठिन दुख पाई * मुनियन वचन समुझ नहिं आई ॥
दो०—याही ते हम शोच कर, भेद खोल लिख दीन्ह ।
जाते साधन करहिं जन, सुगम राह गहि लीन्ह ॥

* चौपाई *

विनु समुझे दुख होत अपारा * सुगम रीति तरिहैं जग सारा ॥
यह गुनि नाथ लिखावत ताही * लिखि डारी हरि आयशु जाही ॥
कहत लोग नर चतुर लिखा है * जगत चतुर को ज्ञान सिखा है ॥
जब लगि जीव न मरे समाधी * अविरल ज्ञान न पाव अगाधी ॥
जो जन जाय मरे हरि पासा * सो अब तजत जगत की आसा ॥
नहिं अब हानि लाभ जिय ओके * अनुपम ज्ञान लिखे क्यों तोके ॥
क्यों नहिं अपनो नाम बतावे * बोले झूठ नरक महँ जावे ॥
हरि से विमुख होत नर कोई * ताकी बुद्धि लोक महँ खोई ॥
दो०—कहि डारे जो आव मन, नहिं विचार जिय होय ।
पशु बुद्धी रह मनुज तन, जो भावे कह सोय ॥

* चौपाई *

कोटिक यज्ञ किये फल होई * ज्ञान खंड पढ़ता नर कोई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पाठ करे भव रोग नशाई * आवागमन तासु छुट जाई ॥
हो निष्काम पढ़त फल पावे * कामी उर मनोर्थ बहु लावे ॥
सकल मनोर्थ सिद्ध हो ताके * सह कामना पढ़े जन जाके ॥
श्रद्धालू हरि भक्ती पावे * शिघ्रहिं आवा गमन नशावे ॥
होवे अमर अमर फल खावे * आनन्द बाग तुरत सो धावे ॥
मोते अधिक राम करु दाया * कृपा सहित लीजे हरमाया ॥
परम तोष विचरे जग माहीं * चौदह भुवन सबै सुख ठाहीं ॥
दो०—जाय स्वर्ग या नर्क में, सिर नावें सब लोग।
राम भक्त सब जानि तेहि, आदर पावत योग ॥

* चौपाई *

साधन करि देखे कछु काला * फल न मिले झूठी कहु हाला ॥
जो पढ जाहि भाव से भाई * ताको फल तुरते दिखलाई ॥
धन संपति पुत्रहुं के काजा * जो पढ़िहें फल तुरत विराजा ॥
लक्ष्मी महा शारदा आके * प्रथम लिखायो भाव जता के ॥
ता पाछे ब्रह्मा पुनि आये * निज मुख से सब गाय सुनाये ॥
जो लिखवाये साखि हमारे * दूजा साखी हिरदय तिहारे ॥
जो जन पढ़िहें मन चितलाई * पावे फल तव हृदय बताई ॥
याते अधिक कहूं का भाई * साखी श्रुति पुराण जो गाई ॥
दो०—तीजी वार जु मैं लिखी, निज ज्ञानहिं बल पाय।
चौथी बारहिं आप प्रभु, लिखवावत हिय धाय ॥

* चौपाई *

वाको चतुर मनुज नर जानो * लिखवावत बरियाई मानो ॥
नहिं तो मैं सकुचति मन माहीं * लिखने को मम बुद्धि न चाहीं ॥
बरियाई शिर होत सवारा * लिखवावत मम बुद्धि गँवारा ॥
कहि कहि बहुत भांति समुझावे * ज्ञान ध्यान हिय बुधि उपजावे ॥
जो कछु लिखी बहुत है थोड़ा * चाहत ज्ञान ध्यान बहु जोड़ा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देखे मनुजन भाग्य कहाँ तक * लिखवावत अब भाव जहाँ तक ॥
नहिं छूटे अब पिण्ड हमारे * जनहिं भाग्य बस हिय हरि धारे ॥
मैं समाप्त कीन्हीं बहु बारा * प्रभु प्रेरणा न पावति पारा ॥
दो०—हारी हमहुं समाप्त करि, वरि आई हरि आइ ।
लिखवावत सन्तोष नहिं, बार २ उर धाइ ॥

* चौपाई *

चकित रहति हरि को रुख देखी * घबड़ाती जग भावहिं पेखी ॥
परवश अब न चलत है मेरे * कवन भांति अब जीव छुटेरे ॥
होति दुखित जिय धीर न धारे * मिलत नहीं टारों केहि भारे ॥
दीनानाथ अनार्थहिं जानी * अब करु कृपा दया उर आनी ॥
हो समाप्त यह ज्ञान कहानी * विचरों जग मूरति हिय आनी ॥
ध्यान मगन दिन रैन रहौं जी * संकल्पहिं हित जगत चहौं जी ॥
शुभ चिन्तन भल हो जगसारी * तव मूरति निज हृदय निहारी ॥
कहलों ज्ञान जगत में डारे * करिके यतन जीव अब हारे ॥
सदा अचल मूरति तव देखें * अपने हृदय नित्य हम पेखें ॥
या विधि मंगल होय जगत का * सुखी रहे जिय तोर भगत का ॥
दो०—अब प्रभु आप निहारिये, निज दासी की ओर ।
कबहुं न मोहिं विसारिये, दया दृगन की कोर ॥

* चौपाई *

जैसे प्रिय भक्ती तुहिं लागे * वैसे तू मम हिरदय जागे ॥
जैसे मुनि तोहि लागत प्यारे * वैसे हो न हृदय से न्यारे ॥
जैसे कमला लागति नीको * वैसे तुम लागो मुहिं ठीको ॥
जैसे अचल रहे हरि मूरति * तैसे ध्यान अचल मम मूरति ॥
जैसे आप विना पग धावें * वैसे विना भक्ति तुहिं पावें ॥
विनु कर कर्म करत तुम जैसे * तोको लहे भाव विनु तैसे ॥
तुम विनु नैन जगत को देखे * विना ज्ञान हम तोको पेखे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विनुवाणी कथते हो ज्ञाना * मैं विनु ध्यान धरों तव ध्याना ॥
दो०—मेरो तेरो याहि विधि, होय जगत निर्वाह।
पुनि तन तजि जब जाइहों, आनन्द रूप समाह ॥

* चौपाई *

जो गति मोर होय पति केरी * या विधि नाथ तुम्हें हम टेरी ॥
छोड़ि तुमहिं नहिं चाह जगत की * सुन लो विनती दोउ भगत की ॥
करु कल्याण नाथ अब मोरी * दोनों विनय करें कर जोरी ॥
जो मांगा तुरतै हम दीन्हीं * तेइस वर्ष कृपा मैं कीन्हीं ॥
बारहिं बार वही वर मांगे * तेरे हिये सदा हम लागें ॥
मोसे वर मांगहुं कछु आना * देउ तुरत करिहों सो काना ॥
दूसर वर समुझति हम नाहीं * तुम प्यारे लग मोहिं सदा हीं ॥
जो तुम हौ सो हमहिं रहौं जी * यही प्रेम की बानि गहौं जी ॥
दो०—यही प्रेम प्रभु दीजिये, तुमहीं तुम रहि जाय।
तुम हो सो अब मही मैं, तोहिं मिलें कहँ धाय ॥

छन्द—याते अधिक प्रभु और कछु वरदान मोहिं न दीजिये।
जो पढ़े प्रेमहिं भाव से, तेहि पार भव निधि कीजिये ॥
अति वेग ताहि उबारिये, करुणा अयन सुधि लीजिये।
माया रहित वेगहिं प्रभू, अब ध्यान से नहिं डीगिये ॥
यहि भांति सुजन सुधारिये, करुणा कि दृष्टि निहारिके।
मोते अधिक दाया करो, आगामि भक्त सुधारिके ॥
उनके हिये में जाय के, दरसाय ज्ञान पधारि के।
लिखनी हमारी सफल कीजे, वेगि भक्त उधारि के ॥
दो०—पूर्णानन्द मनाय गुरु, विनय करों कर जोर।
कुलदीपा की भांति अब, प्रिय लागहु चहुंओर ॥

* सवैया *

सब देवन से कर जोरि कहों, अब देहु अशीश भई सो भई।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मम इच्छित सिद्ध मनोरथ हो, अब जेतिक बात गई सो गई ॥
हिय की अभिलाष पुरावहु जी, अब बात रही जु हुई सो हुई ।
मम होनिहिं तौ अन होनि रही, अब होवन हार सो होत भई ॥
हरि फेर सुदर्शन चक्र चहूँ, मम हीय अशान्तिहिं काट सही ।
मुहि पूरण शान्तिहिं देहु हिये, हम पूरण रूप समाय रही ॥
कइ मास तु देव रहे गृह में, यह ग्रंथ सुपूरण होत मही ।
अब जात सबै निज लोकन को, कुलदीपहिं भूलि न जाव कहीं ॥
हम आरति ग्रन्थहुं की करती, सब देवन देखत साखि रहे ।
यहुं वेदरु शास्त्र कहावत हैं, सब याहि लिखी हरि हीय कहे ॥
निज ज्ञान कुँ दीप जलावति हूं, निज बोधहिं को हम लेख गहे ।
हिय भक्तिहिं को कर आन गही, हम आरति आनन्द जाइ लहे ॥

* चौपाई *

माया विवश भये जग सारे * करुण अयन सब तोहि विसारे ॥
नाथ विनय करतीं कर जोरी * जन पर कृपा रहे नहिं थोरी ॥
यद्यपि हैं सब जीव भुलाने * परसेंगे पद तुमहिं बुलाने ॥
अपनी माया आपहिं खीचो * प्रेम वारिसे तब यहि सींचो ॥
सींचतहीं पल्लव हरि आली * मनुज हीय उमगें तब हाली ॥
बढि जड़ ध्यान अन्त पुर जाई * अविरल ज्ञान भक्ति तब पाई ॥
पर सन्तोष फूल भय ताके * बोध अखण्ड फलहिं लग जाके ॥
जन्म मरण फल पाक गिरा है * करम धरम रस भूमि परा है ॥
तापर पग परिहैं जन जाके * चिपके पग छूटे नहिं ताके ॥
मलि २ के तब धोवन लागे * छूटत नहीं ज्ञान की दागे ॥
सो०—अजब रंग वह एक, तन छूटे नहिं छुटत है ।
ज्ञानहिं का लह टेक, निष्फल कबहूँ जाय नहिं ॥

* चौपाई *

एकहु बुन्द धरणि महं गिरा * हरत सकल जगका वह पिरा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कोउ पद परसि तरे नर जाके * कोउ निर्भय तन छांह छुवाके ॥
कोउ सेवा करि आधा लीन्हा * पूरण पाप नाश करि दीन्हा ॥
कोउ सुनि वचन रहत अनुरागी * ज्ञानहिं ध्यान कथा मन लागी ॥
कोउ फल फूल देत बड़ भागी * यहि विधि नाव किनारे लागी ॥
कोउ धरि सखा सखिन कर नाता * ज्ञान ध्यान उपदेशहिं लाता ॥
कोउ लखि तेज प्रतापहिं भूला * मीठी वात सुने अनुकूला ॥
करि विश्वासहिं सद्गुरु माना * या विधि छूट्यो पाप महाना ॥
दो०—तरना राह अनेक से, कहलों गिनिये ताहिं ।
ज्ञान रूप का बीज है, मिटे न परलय माहिं ॥

* चौपाई *

प्रलय होय पुनि श्रृष्टि बनेगी * श्रुति ज्ञानी की कीर्ति भनेगी ॥
कुल परिवार सहित प्रभु गावैं * चतुर्मुखी सो भेद बतावें ॥
ज्ञान भक्तिका वेद बना है * चारों दिशि षट शास्त्र तना है ॥
ज्ञान नाम हरि का है रूपा * पढ़ गुनि के नर तरत अनूपा ॥
ज्ञानी नाम न जगत मिटे री * वार अनेकहिं श्रृष्टि बनेरी ॥
तार अनेकहिं सुजन तरेंगे * ज्ञानी गुण को गाय मरेंगे ॥
एक ज्ञान जग अचल रहेगा * चार वेद षट् शास्त्र लहेगा ॥
नामर नर चाहत मिटने को * पर नहिं मिटत मिटा कितने को ॥
दो०—इरखा बस नर जरत हैं, ज्ञानी का सुनि नाम ।
चाहत जगत मिटावनो, भक्त नाम अरु गाम ॥

* चौपाई *

कहैं को अब मिटत मिटाये * जिय की जलनि उनहिंको खाये ॥
ज्ञानी प्रथम जो पाप किया है * सो अब उलटे वाहि लिया है ॥
लंकापति रावन हम मारा * सो नास्तिक के सिर सब धारा ॥
विप्र वधन का पातक भारी * नास्तिक नर नारी शिर धारी ॥
हंस ममा का वधन किया है * नास्तिकहीं के शीश दिया है ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

छिप कर वालि वधन हम कीन्हा * सो पातक नास्तिक शिर दीन्हा ॥
कहँ लगि गिनों गिनावों तोको * निन्दक शिर ज्ञानी अघ जोको ॥
काहें को जिय शोच करोरी * अपने उर तो धीर धरोरी ॥

दो०—शापहुं ते बड़ होत है, क्षमा करत जन जाय ।
ज्ञानी करता जो क्षमा, उलटि खात नर धाय ॥

* चौपाई *

ज्ञानी क्रोध करत भल होवे * नर के पूर्व पाप सब खोवे ॥
लोकहुं शिक्षा पावत भारी * उत पर लोकहिं देत सुधारी ॥
नर घवड़ात बचत सुनि ताके * पूरव पाप जरन लग जाके ॥
पग ठहरत नहिं ज्ञानी पाके * प्रथमहिं पाप कपन लगवाके ॥
साधारण समुझत नहिं बानी * सीधो तेहि उलटो करि मानी ॥
क्रोध वन्त नर ताहि बतावे * शान्ती रूप असान्ति जतावे ॥
हितही को अनहित कर माने * अनहितहीको हित कर जाने ॥
उलटी भाग्य भई भव पाके * माया विवश रहत नर जाके ॥

दो०—मंगल हो सो लखत नहिं, सुखहिं अमंगल मान ।
आगे हो सो लखि रहे, पीछे दृष्टि न जान ॥

* चौपाई *

पामर दृष्टि परत नित आगे * ज्ञानी नयन पीठ लखि लागे ॥
पामर प्रेम लहत मुख ताके * पीठ देखि जरि जात सभाके ॥
ऐसो नर का संग न कीजै * दोनों लोक सुयश जग छीजै ॥
इनसे दूर सदा जन रहिये * मुख देखे सो भी भव लहिये ॥
जाको चाह लगी भव तरना * ऐसे नर का संग न करना ॥
धिक २ हैं वे नर जग माहीं * धिक सो इनके संग कराहीं ॥
धिक है जग चर्चा इन करना * इनकी कुमति लेइ हिय धरना ॥
चित में कबहुं चेत नहिं लाना * याद परे हिय से बहराना ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—बार हजारहिं चित्त में, हरि भक्तों को लाइ।
इनके सुमिरन शक्ति से, पूर्व पाप नशि जाइ॥

* चौपाई *

हरि भक्तों की संगति कीजै * दोनों लोक लाभ भर लीजै॥
उनकी कथा कीरतन गावे * जाते पूर्व पाप नशि जावे॥
हरि भक्तों में शंक न कीजै * शंक हाइ तुरते कहि दीजै॥
कहने से शंका हरलइहैं * कर निष्पाप भक्ति वर दइहैं॥
और किसी से कह मति जाके * कहना सन्त एकान्तहिं पाके॥
अपने तेज भाव से तोके * हरि हैं दोउ लोक के सोके॥
छिद्र से जो सन्त विगरिजा * जानो उससे काम न सरिजा॥
तथमहिं शंका होत सभी को * ज्ञानी हर लेते भव भी को॥
दो०—शंका होत न गरुण को, मिलत काग किमि जाय।
अनुपम जो मम भक्ति है, कैसे पावत धाय॥

* चौपाई *

शंका होत कहत बड़ भागी * गोय रखत सो मनुज अभागी॥
सब छिपाय सो नर पामर है * कहता सो जन गुण आगर है॥
मन मलीनता भागत भाई * कहने से सब पाप पराई॥
हृदय खोले भक्ती ले मोले * निर्भय होय जगत महँ डोले॥
हरिभक्तों के लक्षण ये हैं * शंका तुरत कहत गुरु से हैं॥
सद्गुरु चाह सन्त हो कोई * कोइ भक्त या जगमें होई॥
भाय कहो उर में जो पीरा * शंका हरे तुरत मति धीरा॥
चाहे नर चाहे हो नारी * कोऊ होय भक्ति मम धारी॥
दो०—लाज न करिये ताहि सो, तुरत पूछ जन जाय।
पूछत ही दुख भागि हैं, भक्ति बसे उर धाय॥

* चौपाई *

पूछत होते भक्त हमारे * हरि लेते जन के दुख सारे॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहिं अभिमान भक्त से कीजे * राव रंक सबसे सिख लीजै ।
क्या गृहस्थ बन बसे उदासी * मम भक्ती उर जेहि है खासी ।
उन से तुरत मिले जन जाके * नहिं तजिये भक्तहिं कहुं पाके ।
गणिका श्वपचहुं जाति जुलाहा * है रैदास जु होय मलाहा ।
अहिर जाट तेली कलवारा * है कोउ जीव भक्ति उर धारा ।
हो ब्राह्मण नृप कोउ जग माहीं * जाय मिले भक्ती सुन ताहीं ।
भक्त दर्श जन पाप नशइहैं * कहते उर की भरम भगइहैं ।
दो०—तजिदे अपने मान को, भक्त मिलो तुम जाय ।
जो परदा महं वसति है, ग्रन्थ पढ़ो मन लाय ॥

* चौपाई *

इतनो पर शंका नहिं भागे * करि के विनय जाहु तेहि आगे ।
समय समान कहो दुख जाके * खरी खोट हिय बस जस ताके ।
यामे विलम कबहुं नहिं कीजे * परमारथ सुधि वेगहिं लीजे ।
आज मरे की होत सवेरा * मृत्यु सदा रहती शिर घेरा ।
याको दूर कबहुं मति देखो * आचानक शिर पर तेहि पेखो ।
ताकर काज होत जग माहीं * दूर देख सो काम नशाहीं ।
कल शोचे सो आज करोजी * आज शोच अब हीं कर लोजी ।
ताको होत मनोरथ पूरा * नहिं सो जन रहि जात अधूरा ।
सो०—नहिं कह मरना देर, सन्तन का उपदेश यह ।
नहिं उर गुनो सवेर, पछुतैहो परलोक महं ॥

* चौपाई *

जातहिं का अभिमान करोगे * भक्तन से नहिं जाय लरोगे ।
यह अभिमान नरक ले जइहैं * कर्म धर्म के फांस फसइहैं ।
नहिं निस्तार होय दुहुँ लोका * भरमत फिरत भवहिं के शोका ।
बन्दर की गति तोरी होवे * धा परलोक लोक महं रोवे ।
राम विना दुख हर को भाई * भक्ति विना दुख है हम गाई ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ढ़ि गुनि के समझो नर नारी * जाते नाव किनारे जारी ॥
क विना नहिं खेवन वारा * कोटिहुँ जन्म लेइ जग हारा ॥
वहूँ दया नाथ जब करिहैं * भक्तन संगति में तोहि डरिहैं ॥
त निस्तार होइ कहुं जाके * अविरल भक्ति हरी को पाके ॥
तन करो अबहीं से भाई * है सब वेद पुरानन गाई ॥
०—"कुलदीपा" की को कहे, कहि गय सन्त अनेक।
ताही को उर धारि ले, हिये गहो तुम टेक ॥

* चौपाई *

वोगे स्मशान महँ जाके * गिद्धरु काग चोच भरि खाके ॥
ा आधाय के उड़ैं अकाशा * जी परलोक माहिं कर वासा ॥
छितैहो सोचत निज करणी * लाश गिरी जब भव की धरणी ॥
हां आश तहँ वास रहेगा * जस करणी तस भोग लहेगा ॥
वत हीं सुत नारी देखा * मरने पर यमलोक परेखा ॥
रि की भक्ति कबहुं नहिं कीन्हीं * सत मारग सत संग न चीन्हीं ॥
जहिं वाजि नित कीन्ह सवारी * परलोकहुं सुधि सबै विसारी ॥
हंकार ममता उर धारी * मो सम जग महँ कोउ न भारी ॥
ति ऊँच कुल जन्म हमारी * सुख सम्पति सुन्दर तन धारी ॥
या देखि फूल मन भारी * यह ठगिनी परपंच निहारी ॥
०—सन्त सभा देखी नहीं, भक्त न आदर कीन्ह।
मान बड़ाई में रहे, सिरजन हार न चीन्ह ॥

* चौपाई *

वहूँ नहिं सोचा जग आके * सुन्दर बदन मनुज तन पाके ॥
ैसे जन्म लिया जग माहीं * को पठवा पहिचानहुँ ताहीं ॥
जन हार कहाँ बसता है * ताहि निरख मन क्यों फँसता है ॥
ा विधि कबहुं न कीन्ह विचारा * ताते नाथ न हीय पधारा ॥
री पलहुं जो करत पुकारा * तो प्रभु तोको लेत उवारा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है प्रभु दीन बन्धु भगवाना * हो कोउ दीन ताहि सो पाना ॥
विना दीनता पावत नाहीं * अहंकार ममता मद जाहीं ॥
जो जन दीन सो हरिहिं पियारे * ताही को निज शरण दियारे ॥

दो०—जन उर धरिके दीनता, सन्त सभा महँ जाय ।
हरि की भक्ती खाजिये, निज स्वरूप मन लाय ॥

* चौपाई *

आपन जब पैहा तुम रूपा * होइहो तीन लोक के भूपा ॥
छुट जइहैं जग भरम तुम्हारी * जा दिन आपन सुरत सम्हारी ॥
जग हित लागि कबहुं तन पारी * माया रहित ज्ञान उर धारी ॥
वह जन जगत न देख भुलाई * पूरण शक्ति ब्रह्म सम पाई ॥
पशु पक्षी कवनहुं तन धारी * पूरण ज्ञान गीत सब गारी ॥
मच्छ वराह कच्छ की देही * पूरण राम रूप धरि लेही ॥
तैसे हरिजन आवत लोका * जग तारन हरता भव शोका ॥
यामे शंका कबहुं न कीजै * जड़ भरतहिं दृष्टि धरि लीजे ॥

दो०—मोह महातम जगत में, दिखरावन के काज ।
मृग तन धरि पुनि जड़बने, नेक न मानी लाज ॥

* चौपाई *

हरिगुण एक बार जो गावा * अवसि राम भक्ती जन पावा ॥
भक्ति प्रताप अमर पद पाई * है सब वेद पुराणन गाई ॥
भजन करत बीता दिन रैना * सो अब भरत मोह किय सैना ॥
सुनि मम बचन हँसे जगदीशा * दे उत्तर भ्रम नाश्यो ईशा ॥
मैं अनेक तन धरि जग माहीं * कारज करत लाज मुहिं नाहीं ॥
जो मम भक्त धरा पशु देही * क्या आश्चर्य मनुज तन लेही ॥
मम इच्छा जन खेल करत है * महिमा माया की निरखत है ॥
जग उपदेश होत बहु भाँती * नहिं सो कृत्य मुख सहस कहाती ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—जग उपदेशहिं काज लगि, भरत धरयो पशु देह।
मम आज्ञा को मानि कर, पूर्ण ज्ञान भरि लेह॥

* चौपाई *

पुत कर नाम अजामिल लीन्हा * पुर वैकुण्ठ ताहि हम दीन्हा॥
भरत परम प्रिय भक्त हमारे * कहु कैसे हम भव महँ डारे॥
प्रथम विचार करो मन माहीं * ता पाछे कठोर कहु ताही॥
दुखही में सुख मानत जाई * सो अनन्य मम भक्त कहाई॥
नहिं सुख दुखहुं भान वे करते * जग उपकार देह बहु धरते॥
कोटिक जन्म मरण को पावें * उपकारहिं लगि वेद बतावें॥
भव की आंच लगत कहुं नाहीं * अविरल ज्ञान प्रताप तहाहीं॥
कारज होत जगत के जेते * भक्त सहारा जा हम लेते॥

दो०—नारि भाव है तोर, वेद रीति जानति नहीं।
मुहिं कहि जाति कठोर, सत्य कहों अब मानि ले॥

* चौपाई *

सुनि हरि वचन मौन रहि साधी * प्रभु प्रताप उर बोध अगाधी॥
आपहिं प्रश्न करत हरि माना * आपहिं उत्तर दे हम जाना॥
सो आनन्द भूल नहिं तवते * कोटिक जन्म लेइ हम जबते॥
कोटिक प्रलय होइ जग माहीं * कोटिक पुनिश्रीशी रचि जाहीं॥
कोटिक पशु पक्षी महँ जाके * विचरों यद्यपि पशु तन पाके॥
नहिं विसरे यह ज्ञान कहानी * जो हरि दीन्हें बोध महानी॥
बोध प्रताप सुखी हम रहिहों * यद्यपि नर्कवाश कहुं लहिहों॥
पर वैकुण्ठ अधिक सुख खानी * बुरो लगत जो करत समानी॥
आतम ज्ञान सरिस सुख नाहीं * है अति दुर्लभ वेद कहाहीं॥
इहे पुण्य मानुष कोउ पावा * जाकर आवगमन नसावा॥
प्रेम भक्ती कोइ पावत नाहीं * पुर वैकुण्ठ बतावत जाहीं॥
जीवन मुक्तन को न सुहाता * अविरल भक्ति प्रेम जो पाता॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—पुर वैकुण्ठहुं से बड़ा, आतम ज्ञानी मान ।
जीवत ही हरिसे लड़े, सत्य कहति नर जान ॥

* चौपाई *

जो नर यही सत्य करि माने * ब्रम्हानन्दहिं तुरत समाने ॥
नहिं प्रतीत सो धोखा खाके * पछितावे परलोकहिं जाके ॥
बड़े २ ऋषि मुनि वर हो गय * वोध अखण्ड हीय महं गोगय ॥
यह विकराल काल हरि देखी * वोध महानहिं देत परेखी ॥
कलि के मारे हैं सब लोगें * तजि परमारथ भव सुख भोगें ॥
सन्त महन्त न मानत कोई * वेद पढ़त झूठो कह सोई ॥
कोइ इक जन जो शास्त्र पढ़त है * सो भी कहता लेख गढ़त है ॥
नहिं हरि भक्ति न भक्तहिं होते * मोह नीद में जा सब सोते ॥
दो०—ऐसा शोच विचार के, वोध अखंड लिखाय ।
निज भक्तन के हित लिये, नाथ दिया सब गाय ॥

* सवैया *

समझ सत्य जो पढ़हिं नर सो अवशि पारहिं जायंगे ।
हरि के अनूपम चरण शरण, अवश्य सो जन पायंगे ॥
कृत्य कृत्य हो सो जा तरे, गहि ज्ञान अविरल लायंगे ।
वन्धन जगत का तोड़ि के, सो ज्ञान गीता गायंगे ॥
दो०—आप तरे पुनि और को, भव तारे बहु जीव ।
वांह पकरि उद्धारि के, पहुंचावे जहँ पीव ॥

* चौपाई *

अब कहती हरि शंकर भेदा * अन्तर कितनो है जन खेदा ॥
होत दयाल शिघ्र दोउ देवा * पावत फल करते जन सेवा ॥
शंकर गुण अवगुण नहिं देखें * सेवा करत तुरत जन लेखें ॥
जो वर माग देत हर तुरते * नहिं परिणाम विचारत दुरते ॥
दे वरदान विपति घर आवे * दुष्ट सुजन विचार नहिं लावे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो कछु संकट आय परेंगे * ता पीछे पुनि जतन करेंगे ॥
नहिं प्रथमहिं सुधार कर लेते * सेवा करत जनहिं पद देते ॥
नहिं गुण अवगुण करत विचारा * सेवा करते जनहिं निहारा ॥

सो०—जो प्रभु राम कहात, निर्दोषी प्रथमहिं करत।
तव सुख सिन्धु नहात, देत अमर पद पकड़ि के ॥

* चौपाई *

जब तक जन निर्मल नहिं होवे * काम वास उरते नहिं खोवे ॥
तब तक नाथ दया नहिं करहीं * जप तप कोटि नियम जो धरहीं ॥
बुरी खोट तन भरे विकारा * सो जन नाथहिं देत विसारा ॥
यह हरि की है चाल निराली * सेवा दृष्टी देत न हाली ॥
निर्मल मन हरि जन सो देखा * तेहि पर दया दृष्टि से पेखा ॥
नहिं सेवा प्रभु चाहत जन की * सुन्दर मोल लेत हैं मन की ॥
सारा जग पालन हरि करते * सारे जगत दुःख को हरते ॥
अपने सरिस जनहिं कर लेते * आवागमन मेटि पद देते ॥

सो०—विश्व भरे जो लोग हैं, कृमि पतंग सब जात।
मित्र सरिस जो लखत हैं, हरि उर सोइ समात ॥

* चौपाई *

थोड़ी भक्ति करे नर जाके * हो निष्काम कृपा हरि पाके ॥
काम रहित हरि ताहि बनावें * पूर्ण ज्ञान तेहि हीय जगावें ॥
बिनहिं प्रयास विगत मद मोहा * माया रहित होत हरि छोहा ॥
निष्कामी जन हरिहिं अराधे * सबै २ मन वह भी साधे ॥
कृपा गत शंकर जन करते * निष्कामी निज हिय ले धरते ॥
आपन रूप देत शिव ताको * पुरण भक्ति हियेरह जाको ॥
यह कामी जन हरहिं अराधा * पूरण काम हरत नहिं बाधा ॥
नहिं कर यह सहज सुभाऊ * पर द्रोही जन हिय न समाऊ ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—पर दारा पर धनहिं रत, विश्व द्रोह जेहिं होय।
तापर दया न करत हैं, कोटि यज्ञ कर सोय ॥

* चौपाई *

नहिं सेवा प्रभु लेते ताकी * मन मलीनता रह जिय जाकी ॥
हैं अति निठुर कठोर सुभाऊ * जो लोभी पर हृदय दुखाऊ ॥
कुलिसहुं से कठोर हो जाई * नाथ हीय सो नर नहिं पाई ॥
पर उपकार लाग मन जाके * हो हरषित निज नाथहिं पाके ॥
कुसुमहुं से कोमल हो जावें * सारा जग प्रिय निज समभावें ॥
तापर कृपा करत नहिं देरी * अति शिघ्रहिं ताकर सुधि लेरी ॥
जग हित लागि करो सब कर्मा * याही हित भक्ती मम धर्मा ॥
निज हित लागि जतन जे करहीं * सो मध्यम भक्ती मम धरहीं ॥
दो०—आपन तो कछु यतन नहिं, हरि इच्छा जस होय।
सो अनन्य हरि भक्त है, स्वाभाविक प्रिय सोय ॥

* चौपाई *

जब लगि जियत करे जग काजा * बोध अखण्ड कहत महराजा ॥
भक्तहिं जन्म जगत महँ होई * पर उपकार लागि नहिं गोई ॥
निज सुख लागि धरा तन नाहीं * जग कारजहिं देह धर ताहीं ॥
तन धन घरहिं रहै की जावे * चिन्ता रंचक चित्त न लावे ॥
की घर बसे रहे बन जाके * पर उपकार करे मन लाके ॥
परम धर्म भक्तों का यह है * जग तारन कारज मन लह है ॥
चाहे कोइ माने नहिं जाने * याको कही करो मति काने ॥
हरि शंकर अन्तर है इतना * लिखि डारी जु भेद है जितना ॥
दो०—शंकर आनन्द मस्त रह, करत सेव रिझि जाय।
विन शोचे वर देत हैं, पुनि सुधारते धाय ॥

* चौपाई *

तैसे त्रै देवन की देवी * करतीं सफल मनोरथ सेवी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो जन जाय चरण शिर दीन्हा * पूजन करि पुनि अस्तुति कीन्हा ॥
थोड़े काल करे यहि नियमा * हैं रीझतों देखि वे जियमा ॥
अति शीघ्रहीं इष्ट हो जातीं * कछु दिन सेवा कर यहि भांतीं ॥
देविन उर दाया अति है री * थोड़ी भक्ति सुजन उर लैरी ॥
तासु मनोरथ पूरा होवे * जग की कठिन विपति नर खोवै ॥
जो चाहे सोई कर डारे * जननि प्रताप जगत यहि सारे ॥
करि निष्काम मुक्ति सो पावे * करत सकाम सिद्ध हो जावे ॥

सो०—यहि कलियुग के माहिं, अष्टभुजी पूजा करत।
नर नारी जग ताहि, सकल सिद्धि घर बसति हैं ॥

* चौपाई *

संकट विकट हरणि महरानी * पुर वैकुण्ठ सोह रजधानी ॥
एक अनेक पुनि एक भई है * पारवती का रूप लई है ॥
कहिं दुर्गा, विन्ध्याचलि होके * हरती महा जगत भय शोके ॥
कहीं वराही चण्डी मानो * महा कालिका रूप पिछानो ॥
कहीं शारदा रूप धरी हैं * सब जीवन के हीय भरी हैं ॥
जा पर कृपा करें भव नाशी * सो जन कृत्य २ सुख राशी ॥
सेवक हीय बुद्धि उपराजे * ज्ञान गुणन विद्या उर साजे ॥
धन सुत सुख स्वभाग्य की दायिनि * हैं सबहीं जन के मन भायिनि ॥

दो०—त्रै देविन के पूजते सिद्ध होहिं सब काम।
भाव सहित उर आनिके, जप तिनको जन नाम ॥

छन्द—होम करो जप पाठ करो, नयवेद्य के साज से थाल भराई।
सिन्दुर विन्दु कपूर के आरति, अष्टभुजी नित देहु कराई ॥
क्लेश महा विकराल हरें, भव शोक रु रोग तुरन्त पराई ॥
ध्यान करो उर आनि उन्हें, तब सुन्दर बुद्धिहुं ज्ञान जगाई ॥

दो०—इनके पद पूजे तुरत, नाथ मिलेंगे धाय।
महिमा अमित अपार है, कहत सन्त श्रुति गाय ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

इक ते प्रभु अनेक जब होई * कहों कथा जानहु नर सोई ॥
आतम से ओंकार बनत हैं * ओउमकार त्रैदेव लसत हैं ॥
देवन से देवी हो जातीं * ताते पुनि माया बन धातीं ॥
भांति अनेक धरे नर देहीं * कीट पतंग देह धरि लेहीं ॥
नही नार बनें जग आके * पेड़ पल्लवादिक सब जाके ॥
पानी पवन अकाश विराजे * चांद सूर बिजली हो साजे ॥
अनगिन तार प्रकाशक होके * कखगघादि विद्या सब लोके ॥
मैं अरु मोर तोर करि माया * फैला दियो जगत करि छाया ॥
दो०—पूरण ब्रह्म अलख कहि, टेरत वेद रु सन्त ।
भ्रम से दरशत जगत यह, भेद खुले नहि अन्त ॥

* चौपाई *

कोइ इक होत मनुज बड़ भागी * करत खोज मुक्तिहिं निज लागी ॥
धरत ध्यान प्रभु चरणहिं जाके * होवे मगन कृपा को पाके ॥
प्रथमहिं सुन्न भाव उर देखे * मन इकान्त परपंच न पेखे ॥
पुनि कुछ धूम्र प्रकाश बताके * बिजुली तार प्रकास दिखाके ॥
छिपि जा पंचकोस के बीचे * संशय डालि भक्त मन खीचे ॥
साधक उर चिन्ता भइ भारी * ध्यान करत उरजात विचारी ॥
कि भय स्वप्न कि भरम हमारी * यह उर उठा धुआँ क्यों भारी ॥
सोचत ही दिन रैन गयोरी * तीसर जो पुनि ध्यान भयोरी ॥
दो०—देखा अनगिन तार को, कोटि सूर बहु चन्द ।
भय व्याकुल तब उर महा, लखिन परत प्रभु फन्द ॥

* चौपाई *

कहि नहिं सकत मनहिं दुख भारी * प्रभु विनु अबयह दुखको टारी ॥
जाय कहो कोइ समुझत नाहीं * हँसी करें उपहासन माहीं ॥
करते ध्यान और कछु देखे * है मम भ्रम कि सत्य करि पेखे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देखे वृष्टि भई बड़ि भारी * ताल तलैया जल भरि गारी ॥
कोउ बूड़त कोउ तैरत जारी * बहुतन पाव फिसल तहँ गारी ॥
केतिक लोग नाव चढ़ि गयऊ * केतिक चढ़न आस धरि रहेऊ ॥
मैं मग चलन जु कीन्ह विचारा * फिसलो पांव गिरी कइ वारा ॥
धरी धीर बहु भांति सम्हारा * सम्हलि सकी इक नारिसहारा ॥
दो०—नारी रूपी भक्ति सो, यह उपदेशति जाहि ।
करि हरि भक्ती पार हो, नहिं भव धोखा खाहि ॥

* चौपाई *

प्रथम भूमिका जो कछु गायो * पूरो नहिं संक्षेप बुझायो ॥
अब द्वितीय परसंग उठाई * थोड़े में समझो सब भाई ॥
पूरो कह कोइ पार न पावे * ज्ञानी सब थोड़े मँह गावे ॥
सो मुनियों की पद रज जानी * नारी की मानो सत बानी ॥
है वृन्दावन की यह धूरी * नारी रूप ध्यान को पूरी ॥
निज पद से गोपिन जेहि कूँचा * भई नारि कलियुगहिं समूँचा ॥
भव तारन उपकार विचारी * ध्यान ज्ञान विच सार लिखारी ॥
दूसर पद उतपातहुं भारी * सुनिय शब्द कछु ध्यान मझारी ॥
नवों शब्द में गुण बहु भाँती * एक एक सो कला दिखातीं ॥
पहिला शब्द चिड़ी सम बोले * चिक २ करत कला सब खोले ॥
कबहूं शिर चक्कर हो जावे * रोमावलि हो अंग कँपावे ॥
शिर सों जब ग्रीवा विच आवे * झनन झनन चूड़ी सम धावे ॥
साधक ग्रीवा झारन लागे * अनकस लगत भेद बुधि पागे ॥
सो०—है कछु रोग कि शोग, कि भरमति है बुद्धि मम ।
पागल सी गति लोग, मिलत ओर नहिं छोर कछु ॥

* चौपाई *

धरि दोधरी होय जिय ऐसे * पुनि स्थिरता जैसे को तैसे ॥
दूजे शब्द जबहिं सुनि परिहैं * बाजा बज अनन्द मनभरिहैं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इतर गुलाब महक बहु भातीं * हो सुगन्ध नहिं बुद्धि अघाती ॥
धरि दो घरी गन्ध उड़ ताके * आँनन्द में मन अब रह जाके ॥
चौथे नाद द्वितिय पद जाई * सगुण रूप दरशन दे धाई ॥
किय दरशन शंका मन भारी * हरी मिले की भरम हमारी ॥
मानत सत्य भरम जिय छाई * रहेउ इष्ट की मैं पग लाई ॥
लालच लगी रहत जिय माहीं * परमारथ तजता वह नाहीं ॥
दो०—भाग्यवान जे होत नर, साधन कर दिन रैन ।
शंका से नहिं तजत मग, करत ध्यान मिल चैन ॥

* चौपाई *

तीसर पद अवकहतिं कहानी * समझो जन होवे नहिं हानी ॥
बाजत शंख भेरि सहनाई * ताल मृदंग ढोल घहराई ॥
झुण्डहिं झुण्ड भ्रमर बहु आई * कर गुञ्जार कान लगि भाई ॥
पीवत अमिय हीय मह जाके * टपकत अमी उरहिं अब ताके ॥
कबहूँ उड़त गगन महँ जाई * लोटत धरणि पीय निज पाई ॥
हरि ॐकार रूप धरि आवें * त्रैदेवन का भेद बतावें ॥
कखगघादि अक्षर दिखरावा * बड़ो छोट आ ऊ समुझावा ॥
इन अक्षर के जोड़ जुड़ाई * मानुष के हम हृदय बनाई ॥
दो०—ऊँकार का रूप धरि, रहे विश्व भरि छाय ।
यही सकल ब्रह्माण्ड मय, दियो जगत दिखराय ॥

* चौपाई *

सुनत बचन भय लागत जीके * कांपत अंग नयन सुख नीके ॥
चाहत आंख पीय पद देखे * मनहै कुटील न करत परेखे ॥
धरि दो घरी विलम उतकीन्हा * पुनि माया वश जग को चीन्हा ॥
यह चित चंचल धरे न धीरा * कौने विधिहिं हरो प्रभुपीरा ॥
करत जतन लागत बहु बारा * तब कबहूँ हरि जनहिं सुधारा ॥
नहिं प्रतिदिन यह लाग समाधी * नहिंदरशन सुखमिलत अगाधी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है परताप शब्द का याही * भांति अनेक रूप धरि लाही ॥
शब्दहिं ईशहिं अन्तर नाहीं * पर ये सबमाया की छाहीं ॥
कबहूँ हरि विराट धरि देही * रोमहि रोम विश्व भरिलेही ॥
तैंतिस कोटि देव कर शीसा * अपने अंग दिखावत ईशा ॥
पेड़ पलौ नदियां सब धरणी * सात समुद्र जगत महँ बरणी ॥
रोम रोम निज प्रभु दरशावा * कीट पतंग रूप जो गावा ॥
दो०—नहीं भिन्न यहि जगत से, हम हैं सबका रूप ।
माया लसती जगत मय, ताको मैं हूँ भूप ॥

* चौपाई *

देखा रूप काल जिमि खायो * भय विस्मित निज सुरतिहटायो ॥
बोल्यो वचन भेद भय गावा * बड़े भाग्य दरशन कोउ पावा ॥
कोटि जन्म का पाप हरैया * अर्जुन पायो दर्श लरैया ॥
सो निज भक्तहिं सहज दिखावा * माया रचित ज्ञान सिखरावा ॥
कोटिक बचन कोटि तन धरई * कोटि यतन करि जन दुखहरई ॥
नहिं मनका यह भरम नशावे * जब तक जन न चउथ पद पावे ॥
जब देखे तब सत करि माने * पुनिमाया में बुद्धी साने ॥
तब प्रभु विवश होत निज जनसे * आपन रूप बनावत मन से ॥
दो०—जहां धूप नहिं छांह, रोग शोग नहिं व्यापहीं ।
आँनद सिन्धु समाहिं, बुड़त जीव हो ईश तँह ॥

* चौपाई *

नहिं तहँ राम कृष्ण हैं भाई * नहिं तह वेद पुराणहुं गाई ॥
तहं न पाठ पूजा कर कोई * होगय ईश जीव रह सोई ॥
नहिं तहँ स्वामि न सेवक देखा * नहिं कछु ज्ञान ध्यानकर रेखा ॥
चौथा पद तुरिया करि मानो * बोध अखण्ड ज्ञान सो जानो ॥
निर्भय पद सोई सुख राशी * तहँ विलास किय मम मनखाशी ॥
हरि समुझाव देह धरि कोटी * नहिं समुझत भक्तन मन खोटी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सो क्या समुझे वेद पढ़े से * केवल वाचक ज्ञान गढ़े से ॥
समुझोगे मग पाव धरोगे * नहिं पढ़ि वेदहिं वृथा मरोगे ॥
दो०—जगत बड़ाई काम में, वेद पढ़ा जग सार ।
लोग कहत पण्डित बड़ो, शक्ति खोय भव भार ॥

* चौपाई *

विना पढ़े पण्डित जन होके * रामहिं भक्ति करे भय खोके ॥
हरि की भक्ति करन के काजा * विद्या बल बुद्धी जग साजा ॥
नहिं माने कोइ लोग लुगाई * सो परमारथ सहत जुदाई ॥
जननी जिमि बालक फुसलावे * मट्टी छाड़ खांड ले आवे ॥
पुनि कहती सुत गुड़ तजु हाला * मैं मिश्री दैहों तोहिं लाला ॥
जननी जतन करति जिय आनी * बालक हित विचार सो ठानी ॥
तैसे नाथ जगत भरमाया * वेद पुराण भक्ति रस गाया ॥
तजि कुतर्क सब जगत बड़ाई * हठ करि सो मम भक्ति बढ़ाई ॥
वेद पुराण पढ़ो जो गाई * मति माया जग भरमहु भाई ॥
तजि सब यतन भक्ति इक साधो * राम नाम सब जगत अराधो ॥
दो०—पढ़िके पण्डित हठ करत, राम बड़े शिव छोट ।
कोइ कहता भोला बड़े, रघुवर भज नर खोट ॥

* चौपाई *

जो करनी करते जग लोगा * नहिं कहते अस वचन अयोगा ॥
बिन करनी पढ़ते हैं वेदा * करते जै देवन में भेदा ॥
कोइ कहता प्रताप बड़ भाई * राम नाम की महिमा गाई ॥
कृष्ण भजे सो लोग गंवारा * कहु कैसे परलोक सँवारा ॥
ऐसे कहि बहकावत लोगू * कैसे अब छूटे भव शोगू ॥
भक्तनहीं के कारण नामा * कहीं कृष्ण धर नामरू गामा ॥
कहिं वैकुण्ठ कहीं कैलाशा * कहिं गौ लोकहिं कीन्ह निवासा ॥
भक्तहिं भाव बढ़ावत जाई * लै कैलाश बसावत भाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पुर वैकुण्ठ पठावत कोई * सगुण उपासक हैं जन जोई ॥
आखिर पद प्रभु वाही देंगे * चौथे पदहिं सन्त जो लेंगे ॥
दो०—बहरावत लै जायँगे, जहां आदि नहिं अन्त ।
करत जतन जेहि लागि जन, लुब्ध रहें जहँ सन्त ।

* चौपाई *

कहिं शंकर करते हरि पूजा * जाते नर सीखे अब दूजा ॥
मसाने शिव बैठ अराधें * ज्ञान ध्यान जोगहुं ले साधें ॥
है कोइ परम पूज्य जग देवा * सुर नर मुनि करते जेहि सेवा ॥
अवशि खोज करि वाही देखे * को है ईश ताहि हम पेखे ॥
बड़ भागी जन खोज करेंगे * आतम अभुभव जाइ लरेंगे ॥
चाहे शंकर विष्णु कहो जी * है वह आतम एक लहो जी ॥
जाको भाव भक्ति उर माहीं * धरु अब ध्यान सुजन सब ताहीं ॥
जाते आतम अनुभव देखो * त्रै देवन कर करो परेखो ॥
दो०—सगुण उपासन प्रथम हीं, करते हैं सब लोग ।
क्या सतयुग क्या कलि विषे, भक्त छूट भव शोग ॥

* चौपाई *

प्रथमहिं सेवक नाथ बनावें * ता पीछे निज रूप दिखावें ॥
दीखत रूप जीव भय भूपा * तुरिया पद का रूप अनूपा ॥
है यह अगम राह हरि दूरी * नहिं करि सकत सबहिं भरिपूरी ॥
कोइ जनमत जग में बड़ भागी * पूरो राह चलत हरि लागी ॥
एक दोइ पद बहु जन जाई * स्वर्ग पार पहुंचत हैं धाई ॥
करते भक्ति तहां मन लाके * देते मुक्ति समय कछु पाके ॥
वहीं भजन निष्फल कोउ जाई * हैं सब वेद पुराणन गाई ॥
करि विश्वास पढे नर कोई * भव सागरहिं पार कर सोई ॥
छन्द—धन धाम सो नर पाइ अब, करि भक्ति पूरण ज्ञानसे ।
सो लोक अरु परलोक सुख, आनन्द पावत ध्यान से ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब लगि जगत जीवित, रहे न्यारे सुयश संसारसे ।
कबहूं न दृष्टीते हटे, देखत हरी बहु प्यार से ॥
तेहि अन्त में निज लोक दे, गति करें जो सब सन्तकी ।
जो पद सती औ जति लहे, सो नाथ देते अन्त की ॥
सहजे नहीं यह पद बना, है लेख याहि महन्त की ।
सब वेद हूँ का भेद, वत्सल भक्त औ गुणवन्त की ॥
दो०—करि विश्वास जो पढत नर, ध्यान धरत निशि जाय ।
कोटि जन्म का अघ टरे, नाथ मिलें पुनि धाय ॥
तीनि अवस्था तीनि गुण, जागृत स्वप्नरू ध्यान ।
तीन समय में आय प्रभु, सिखय रहे बहु ज्ञान ॥
याहि भाव से जो भजे, शीघ्र पार हो जाय ।
नहीं वार कछु लागिहें, ध्यान धरे सुख पाय ॥

* चौपाई *

साधन की यह बात कही है * धर्म धीर जो भये मही है ॥
अब तिन की हम कहौं कहानी * जा विधि नाथ हीय उन आनी ॥
वोध समय प्रभु मोहिं सुनावा * सो अब कथा हृदय पुनि आवा ॥
कहते नाथ लिखो अब ताहीं * वोध अखंड कहा हम जाहीं ॥
धर्म धीर जो नर जग होंगे * सो समुझे धीरज धरि लोगे ॥
मरना राजा रघुकुल वाकी * रही घड़ी दो अधिक न ताकी ॥
देवन मुख सुनि के निज मरना * लागे यतन करन सुख भरना ॥
ताको तुरत चौथ पद दीन्हा * पल में भव की भय हर लीन्हा ॥
सो०—धर्महिं में मन दीन्ह, जब तक जीवित जग रहे ।
तासु दुःख हर लीन्ह, देकर पद निज भक्त को ॥

* चौपाई *

धनसे धर्म धर्म से मुक्ती * सूझ जात उनको यह युक्ती ॥
मरती वार याद मोहि कीन्हा * बुद्धि इकान्त ताहि हम दीन्हा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

र्म प्रताप साराहत ताके * पर उपकार जन्म भर जाके ॥
भ्यन्तर महँ विनय सुनाई * वेद पुराण धर्म जो गाई ॥
हँ लगि वना निवाहत गयऊ * अब तो अन्त काल मम भयऊ ॥
हो कवन विधि काज सँवारी * कैसे भव बन्धन निरवारी ॥
ह कारज हम सवै विसारी * देवन काज धनुष ले धारी ॥
द कहत तोहि दीन दयाला * अब दुख भवका हर तुम हाला ॥
र्म सहाय कवहुं जो कीन्हा * होहु सहाय आज मन दीन्हा ॥
ो०—दीन वचन सुनि तासु की, तुरतहिं भयो सहाय।
पूरण ब्रह्म लखाय के, अन्तहिं शरण कहाय ॥

* चौपाई *

विरल भक्ति दीन्ह हम ताको * वह उपदेशहिं दिया सभा को ॥
गी सभा ऋषि मुनि की भारी * रघु राजा तन तजत सवारी ॥
रत जतन सव उनहीं लागी * धर्म धुरीण रहे बड़ भागी ॥
ो वह अविरल ज्ञान सुनावा * सुनि ऋषियन के मन अतिभावा ॥
न्य २ कहि सबहिं पुकारा * मरत बार तूं नाथ उवारा ॥
हि कछु ज्ञान नृपति उर धारी * तन तजि आतम रूप पधारी ॥
हिं कलियुग सतयुग कछु भेदा * धर्म धुरीण पार कह वेदा ॥
ो सत ज्ञान चलत सत धर्मा * लीपत ताहि सकल हम कर्मा ॥
ो०—दुर्भागी जन कहत हैं, यहि कलियुग के माहिं।
नहिं सत धर्म न कर्म हैं, यती सती कोउ नाहिं ॥

* चौपाई *

ाप गये वहकावन काजा * औरहुं के यह साजत साजा ॥
नकी कुमति सुनत नर कोई * श्रद्धा हीन होत है सोई ॥
ारो युग का यह शिर मौरा * यहि युग देव करत हैं दौरा ॥
तयुग त्रेता द्वापर माहीं * वचि रह साधक मुक्ति न पाहीं ॥
ो तन धरि जनमत यहि युगमें * पावत मुक्ति यतन करि सुग में ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वहु जनमें जनमें पुनि आगे, * हैं भी मुक्ति पाय वड़ भागे ॥
और युगन में हों वहु लोगे * धर्म धुरीण हरत भव शोगे ॥
यहि युग में थोड़े नर होते * परमारथ जो मारतगोते ॥

दो०—वहु पांखडी मत भये, चोर चमारी लोग ।
जानत धर्म न कर्म कछु, मिटत न भव कर रोग ॥

* चौपाई *

धर्म धुरीण होत नर थोड़े * सवहीं युगन करहुं जो जोड़े ॥
यहि कलियुग आधे पुनि आधे * परमारथ कोई इक साधे ॥
सहसहुं लाखन में कोउ एके * नारि निवाहति सत कर टेके ॥
तैसे पुरुषनहूं के माहीं * गिनती करो निवाहत जाहीं ॥
नहीं धर्म पद लीपहिं जाके * कलियुग को अन्तहुं कहिं पाके ॥
लीपन वार भये जग केते * चाहत लुप्त करन जन जेते ॥
तव तव धरणि लेत अवतारा * भक्त धर्म कर होत सहारा ॥
कवहूँ देव धरणि महं आते * कवहूं भक्त जनम जग पाते ॥

दो०—रौंदत आय कुपंथ को, शुभ मारग दर्शाय ।
टूटी धारा पाप की, धर्महिं सेतु वँधाय ॥

* चौपाई *

भक्ती नाव चलायत तामें * नदिया वही पाप की जामें ॥
वुड़त मुसाफिर गहि २ लादे * रहते ज्ञान प्रताप अजादे ॥
नहिं लज्जा भय लागत इनको * अविरल ज्ञान भक्ति है जिनको ॥
सारा जगत एक हो वोले * ये आनंद सिन्धु में डोले ॥
चौदह भुवन एक पलरे में * है मम भक्त एक डलरे में ॥
तोड़त तौल तराजू डाड़े * चौदह भुवन गिरत हैं खाड़े ॥
को तौले भल भक्त हमारे * आत्म रूप जो रहत निहारे ॥
एक वार की तौल हमारी * पुनि को तौल जगत महँ जारी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—तौलन हारा मरि गया, बूड़े पलरे माहिं।
तोड़ि फोड़ि के निसरिगा, शेर नहरुआ ताहिं॥

* चौपाई *

यह चीता का छौना भाई * वेद पुरान सभी यह गाई॥
यह नहिं बन्धन बँधत काहु के * कोटिक कंचन लादि ताहुके॥
इनको एक फन्द बड़ भारी * प्रेम रज्जु पग दे जो डारी॥
यह नाचे मरकट की नाई * छुअते छांह चौथ पद जाई॥
जाय रिझाय नाथ को लावैं * सारे जग का दुःख हटावैं॥
सुनते नहीं कान जड़ कीलें * नहिं बोलें डोलें जग हीलें॥
अपनी मौज रहत रँग राते * सारा जगत लगत इन ताते॥
काहें को जग दृष्टि लहे जी * यह दुनिया भव भार परे जी॥
दो०—जो कहता कोउ सुनत नहिं, भले धार वहि जात।
याते अन्तर हित करत, ऊपर मारत लात॥

* चौपाई *

सो विधि मुक्त भये बहु लोगा * नहिं देखा समाधि के योगा॥
नहिं तिन शब्द सुना सिधियों का * क्षण में भान मिटा रिधियों का॥
साधन परम पुनीत कहावे * जन कोउ विरल याहि मग जावे॥
जो अतिशय प्रिय रघुवर के हैं * करि निज बलहिं चौथ पद ले हैं॥
हरि भक्तों में नाम बड़ाई * पावत अधिक चतुर ठकुराई॥
ताहि निहारत अति हित जानी * माया विगत भये जग मानी॥
मुद को प्राप्त एक रँग होता * माया में न जाय जग सोता॥
मान बड़ाई कर हरि ताकी * अचल प्रेम निवहा जग जाकी॥
दो०—मान बड़ाई भिन्नता, पद में अन्तर नाहिं।
है रणधीर सुवीर यह, नाथ सराहत ताहिं॥

* चौपाई *

पर वैकुण्ठ बड़ाई होती * ताहि देखि माया हट सोती॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरि से अधिक डरति जिय माहीं * सो जन छांह निरखि सक नाहीं ॥
ऐसे तो सब राम दुलारे * एक एक से अधिक पियारे ॥
को कहि हैं हरि जन गुण भाई * इतनी शक्ति कहां कोउ पाई ॥
हरि हो मगन गाय गुण जाके * कहु कैसे यश गा कोउ ताके ॥
क्षण भर नाथ रखत नहिं न्यारे * अतिशय प्रिय होते हरि प्यारे ॥
जितनी जाहि शक्ति में आवे * सो कहि २ सब जन गुण गावे ॥
भक्त अराधि रीझ प्रभु हाली * ताके गले बांह निज डाली ॥

दो०—भक्तन के गुण गाय के, नाच करत प्रभु जाय ।
पुर बैकुण्ठहुं देखिये, निपुर बजावत धाय ॥

* चौपाई *

ता ता थेइ थेइ करि प्रभु नाचे * कर सो करहिं बजावत राचे ॥
कहि २ के निज भक्त गुनन को * गावत गीत सुना सुजनन को ॥
सखा सखिन संगहिं सँग नाचे * गावत गीत शोर बहु माचे ॥
कितने जन सुन तहँ मन लाई * नाथ वचन सुनते क्या गाई ॥
कितने खाली ताल बजावें * कितने लै बंशी कर धावें ॥
कितने संखरु भेरि बजावें * कितने नट नागर कहि गावें ॥
कितने वृज की नारि बने हैं * लै दधि मटकी कलह करे हैं ॥
कितने मातु यशोदा बनि के * ऊखल बांधत प्रभु भुज हनिके ॥
कितने सखी छुड़ावन आवें * कन्हुआ कहि २ तिनहिं बुलावें ॥
ऋषि मुनि सबहिं वेद ले गावें * पढ़ि के चारो वेद सुनावें ॥
फाटक बाहर धूम मची है * चढ़ी अटारी नारि रची है ॥
जब प्रभु भीतर आवत धाई * नारि अटाते आंगन आई ॥

दो०—होत खेल सब भक्त की, जेते जन जग होय ।
जाहि लहे जेहि भावते, कौतुक तहं तस सोय ॥

* चौपाई *

जेते धर्म ग्रन्थ बनते हैं * उहां नकल प्रभु ले रखते हैं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लेख भक्त करका लखि नाथा * गावत हैं सब गोपिन साथा ॥
नाचत जाय लेख कर लेके * बैठत घुटनी टेकहिं देके ॥
बढ़ि २ हाथ पसारत जावें * निज भक्तहिं समुझावत भावें ॥
करि २ छनन वनन बहु भांती * लै लै लेख लगावत छाती ॥
जैसे जन जो आसन साधे * वा विधि चित्र खींच ले राधे ॥
जैसे ध्यान मगन जन होते * मूरति सोइ देखि प्रभु रोते ॥
भक्त चलत रहता जग जैसे * ताको चित्र खींच प्रभु तैसे ॥
लगी सभा दरवार भगत का * ज्ञान कथा जो होत जगत का ॥
सभा सहित सुचित्र ले राखें * धारि अमर पुर में यह साखें ॥
दो०—गावत नाचत जनहिं जो, धरा चित्र प्रभु सोय।
सुजन करत जो जगत में रहता ना कछु गोय ॥

* चौपाई *

यह सब खेल होत पुर माहीं * कलह कल्पना चित्र खिचाहीं ॥
जो भक्तों से करत लराई * सो चित्रहुं प्रभु देत रखाई ॥
जो भक्तों की पूजा करते * सो लै चित्र नाथ कर धरते ॥
जो भक्तों को भोग लगावें * लै फल फूल डाल सजवावें ॥
जो श्रद्धालू शीश झुकावें * ताहि भांति प्रभु चित्र बुझावें ॥
जैसा प्रेम भाव जग करते * सब की नकल लेइ प्रभु धरते ॥
तपसी योगी मुनि भे जेते * सबका चित्र हरी कर लेते ॥
अन्त सभा शुभ कर्महिं जेते * खिच्यो दिवारिन दर्शन लेते ॥
दो०—यही गीत यहि नाच है, हल चल मचता शोर।
भक्तों का ही नकल है, या कर ओर न छोर ॥

* चौपाई *

थोड़े में समझो नर नारी * शुभ कामना हृदय महँ धारी ॥
जो जन यज्ञ करत सुख लागी * ताकी चित्र स्वर्ग महँ भागी ॥
जो मनसा से यज्ञ किया है * तैसा ताको भाव लिया है ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ब्रह्महिं लोक लागि तप कीन्हा * ताको चित्र विधाता लीन्हा ॥
जो पापी जन हैं जग माहीं * पर नारी मन लावत जाहीं ॥
पर धन लूट धरा घर माहीं * चित्र ताहि यम लोक धराहीं ॥
प्रतिदिन पलहीं घरी छने का * चित्र खिचता पलहिं पलेका ॥
जैसा कर्म करत जग जन में * तैसो चित्र वनत ह्वां छन में ॥
मरि के जीव जात यम लोका * अपनो कर्म देखि भय शोका ॥
निश दिन चित्र खिचाता भाई * पढ़ि लो वेद पुराणन गाई ॥
मैं तो वेद रीति नहिं जानी * अपने हिय की वोध वखानी ॥
पर जानति हम हैं अब नीके * चार वेद षट शास्त्रहुं ठीके ॥
जो प्रथमहिं ऋषि वोध कराई * सोई वेद भेद दिखराई ॥
एकै वोध एक है ईशा * सो मोहि ज्ञान दिया जगदीशा ॥
दो०—यामै अन्तर नेकहूँ, पड़े न कबहूँ जाय ।
समुझ्यों अपने ज्ञान से, दियो नाथ समुझाय ॥

* चौपाई *

निर्भय होय ग्रन्थ लिखती है * नहिं मोहिं सकुच लाज लगती है ॥
लखिहैं निज आखिन जन जाके * वोध महान मिला पिय पाके ॥
उलटी वात न एक मिलैगी * वरु पृथ्वी कहुं जा पलटे गी ॥
कविता दोष गुणहिं नहिं जानो * याको दोष सुजन नहि मानो ॥
एकहु अक्षर प्रभु न पढ़ावा * केवल ज्ञानहिं भक्ति दृढावा ॥
कबहूं हँसी करत प्रभु नाथा * पढ़ लो विद्या की सब गाथा ॥
को अब पढ़े शब्द को रटिहैं * मोहन को तजि जगको सटिहैं ॥
टेढ़े मेढ़े लेख लिखोंगी * अब नहिं जग की पाठ पढ़ोंगी ॥
दो०—लिखि दिखरावत लेख को, सुन्दर अतिहिं अनूप ।
ताहि देखि हंसि देति हूँ, लखों वर्ण की रूप ॥

* चौपाई *

कबहूं निज मुख गाय सुनावत * तरह २ की राग बतावत ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कबहूं लेकर वेद सुनावें * कबहुं शास्त्र को सभी पढ़ावें ॥
यह भक्तन वहकावन काजा * विद्या पढ़न साज सब साजा ॥
भक्तन के मन परख करत हैं * देखें हिय क्या भाव धरत हैं ॥
जन अनुरागी हरि पद लागी * काहें को अब ले यह दागी ॥
भावे तोहि करो अब सोई * हमको दोउ भांति सुख होई ॥
मन वहरत है देखि तमासा * हमको लेन भक्ति है खासा ॥
तेरो सँग प्रपंच है नीको * यद्यपि है माया यह ठीको ॥
दो०—माया रूपी आप बनि, भक्तन दे वहराय ।
काहें को दुख मानिहैं, रञ्चक नहिं घवराय ॥

* चौपाई *

जेतिक माया है तेहि पासा * सबहीं आय करे मम आसा ॥
काहें को मन मलिन करेंगी * तेरे सँग हम जाय लरेंगी ॥
माया कछु न विगारति तेरी * ये सब हैं तेरी प्रभु चेरी ॥
विगड़ेगा तो आप करमसे * निवहेगा प्रभु दया धरम से ॥
पढ़ि गुनि सबै बूझ नर नारी * नाथ भावते हीय पधारी ॥
अपनी करनी पार उतरिहो * जो हरि भक्ती हिय महँ धरिहो ॥
जग हित लागि लिखी यह भाई * नहि हम धर्म सनातन गाई ॥
तिहिं का हू ने मोल लिया है * हरि की भक्ती सेत दिया है ॥
दो०—कोई मत का होय जो, भक्ति किये तर जाय ।
बिना भक्ति बुड़ि जायगा, धर्म सनातन पाय ॥

* चौपाई *

कहत सनातन कौन तरेगा * यहि भवहीं के भान मरेगा ॥
विप्र कहा कर नहिं उवरेगा * कर्म धर्म करि के सुधरेगा ॥
जाकर धर्म जाहि विधि होई * सो करि कर्म तरे सब कोई ॥
अपनो धर्म सबहिं बड़ भाई * यही कर्म संगहिं ले जाई ॥
करि अधम कहते सब लोगू * धर्म निवाहि मिटा भव शोगू ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

का करिहो तन पुरुषहिं पाके * चढ़ा न भक्ती अग्नि जला के ॥
जाट जुलाहा पार उतरि गय * रैदासहुं धन्वा सब तरि गय ॥
यही विचार करो मन मोजी * धर्म निवाह भले सुख लोजी ॥

दो०—मूरख हैं सो बकत हैं, जात पांत अभिमान ।
धर्म कर्म जानत नहीं, पागल के सम जान ॥

छन्द—मोछ मुरेरत पाग सँवारत जातहिं पात बतावत नीको ।
एकहु धर्म न कर्म सुधारत, मानुष देह पशू बुधि ठीको ॥
ताहि कहे कछु कान न दीजिय, हैं उनमत्त सही कह जीको ।
जाति चमार कसाइहुं होइ, जो धर्म निवाहि भजे निज पीको ॥
धन्य सो जन्म भयो जग मंगल, विप्र ते ऊँच कहो उनही को ।
जो कछु वे कहते हैं सही, अब मानो भलो उनसे सुनही को ॥
कांध जनेउ गले रुद्राक्षरु, भक्षत अन्न पगे पनही को ।
जाति बतावत ब्राह्मण हैं हम, ये कलि के सब जीव सही को ॥
धर्मरु कर्म तो छाड़िदिये, अब जातिहिं के अभिमान मरी को ।
भूलि न राम को नाम कहे, अरु धर्म सनातन हेतु लरी को ॥
धन्य वे मानुष वेद कहें, हरि को भजते जगहीं से टरी को ।
सोइ बड़ो जग में सब से, कुलदीपा भजो अब नाम हरी को ॥

दो०—धर्म निवाहा आपनो, सो सबसे बड़ भाय ।
तापर रीझहुं सन्त सब, राम पकड़ि कर धाय ॥

* चौपाई *

प्रथमहिं स्वप्न होत है भाई * ता पाछे पुनि ध्यान समाई
प्रथम नाद जो स्वप्न दिखाई * फिर जागृत वह दसा सुनाई
प्रथम वेद प्रभु स्वप्न पढ़ावें * और ध्यान विच ताहि सुनावें
फिर यथार्थ वह बोध करावें * तुरिया पद तेहि प्रकट सिखावें
नहिं परतीत हात उर माहीं * तीन दशा प्रथमहिं लिख ताहीं
जिय में भरम होत बहु भांती * है नहिं सत्य कि वहम कहाती

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब यह जीव चौथ पद जावे * तहां सकल यह भरम नशावे ॥
जो कछु होत वहां पर भाई * है प्रत्यक्ष प्रगटे हम गाई ॥
दो०—नहिं शंका ह्वां रहति है, तीन दशा हो नाश।
जागृत स्वप्न सुषुप्ति ए, मिटा जगत का हाश ॥

* चौपाई *

जितने नगर वसे जगमाहीं * पूरण ब्रह्म लखे सब ठाहीं ॥
प्रथम दशा अब ताहि नशानी * सकल जगत मिथ्या करिमानी ॥
परलय सिरजन शक्ति बतावे * पालन की वह रीति सिखावे ॥
कपड़ा बीनो धोवो साड़ी * रंगो हरा पीत सब गाढ़ी ॥
रेल चलाय विमान उड़ावो * निज शक्ती सबहीं दिखरावो ॥
डाल चढ़ाकर खंजर मारो * सकल शक्ति ले उरमें धारो ॥
चौदह भुवन आप कर फेरी * चाहे सकल जगत सँग लेरी ॥
पग धरि चल अकाश के माहीं * सिर राखो पताल की छाहीं ॥
दो०—जो चाहे सोई करो, रोकन हार न कोय।
जब जैसी रुचि होति है, तब तस करना सोय ॥

* चौपाई *

ऐसी वस्तु नहीं जग माहीं * जो प्रभु वहां बतावत नाहीं ॥
देव पितर की रहन बतावे * मानुष की सब गहनि सिखावे ॥
भूत प्रेत की योनि दिखावे * सब की रहन सहन समझावे ॥
ऐसी वस्तु बची अब नाहीं * जो सब भक्त न कर सक ताहीं ॥
चोर ठगों की चाल बतावे * छल व छन्द पर जीव सतावे ॥
सब जीवन का है वह ईशा * निज भक्तन यह देत अशीशा ॥
पर हरि दास सुहाता नाहीं * पीठ फेरि सबहीं चलि जाहीं ॥
जग मंगल कारन हरि जन हैं * शत्रू भी मित्रहिं के सम हैं ॥
काकरिहो यह कांट बटोरी * सब जीवन उर जाय धसोरी ॥
हमरो तो इक आप पियारे * घरी पलहुं जनि हो जा न्यारे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—सुनते वचन प्रसन्न हो, आशुतोष करि देत ।
उज्ज्वल मन करि भक्त का, शक्ती सब हरि लेत ॥

* चौपाई *

अविरल भक्ति ज्ञान तेहि देके * पठवत निज जन मन हरि लेके ॥
एकै मन तो रह हरि साथा * कहँलो सीख जगत की गाथा ॥
अवसर पाय मिले सब शक्ती * हरि जन भावत केवल भक्ती ॥
अवसर भक्त काह को आवे * ह्वै निरवैर सबहिं जन भावे ॥
जग हित लागि कबहुं सो नाथा * पठवा कोइ मुनिन के साथा ॥
होत विशेष हानि जग माहीं * तो वह कला दिखावत ताहीं ॥
मान बड़ाई के नहिं काजे * इन सिधियन कर साजत साजे ॥
काकरि हैं जग होय बड़ाई * निज मन तो हरि चरण अड़ाई ॥
दो०—जो इन सिधियन शक्ति को, जगत देइ फैलाय ।
हानि छोड़ कछुलाभ नहिं, और जगत वहि जाय ॥

* चौपाई *

यह कलियुग की रीति निहारी * सिधियन के गुण बन्द करारी ॥
धर्म हीन होइहैं नरनारी * करहिं उपद्रव जगत मँझारी ॥
सब गुण आगर भक्त हमारे * ते अकेल कत धर्म पसारे ॥
नहिं जग है कोउ सुनने हारा * अनगिन भक्त भये भव धारा ॥
व्यास आदि सब टेर थके हैं * नहिं कोउ इनके मतहिं पगे हैं ॥
इनमें भेद बहुत है भाई * बोध अखण्ड कहां ला गाई ॥
सतयुग त्रेता द्वापर माहीं * मानुस देव लोक को जाहीं ॥
जात मनुस सुर लोकहुं भाई * केवल कलियुग बन्द कराई ॥
दो०—निज स्वारथहीं के लिये, यहि कलियुग के लोग ।
गमन करैं सुर लोक में, देहिं देव बहु शोग ॥

* चौपाई *

देव मनुस व्यवहार मिटाई * ये करिहैं सब बहुत ढिठाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब २ आवत कलि की वारी * तब २ नाथ रीति यह टारी ॥
और युगन कोउ जात रहा जो * देव मनुज उपकार कहा जो ॥
अपने स्वारथ लागि न जाई * हैं सब वेद पुराणन गाई ॥
पर उपकार लागि सब देवा * कोउ इक मनुस करत जा सेवा ॥
एक मनुस सेवा कर आवे * सारा जग का दुःख हटावे ॥
अब परतीत करे नहिं कोई * नहिं यहि योग मनुष कोउ होई ॥
कलियुग सदा स्वभाव यही हैं * ऐसे उपजत लोग मही हैं ॥
नहिं यह बात जु होत नई है * सदा सर्वदा यही भई है ॥
यह सब दोष निहारत हारी * नहिं स्वारथ की बात प्रचारी ॥
दो०—जानत वे सब गुणन को, जो पृथ्वी के माहिं।
जो नहिं होता करत सो, सब शक्ती उनपाहिं ॥

* चौपाई *

तरु पत्ता अँग ढाक लिया है * ऋषियों ने उपदेश दिया है ॥
जनमे कोउ भक्त जग माहीं * सो समझे यह चाल सदा हीं ॥
सादी चाल चले नर कोई * सदा सुखी रहता जन सोई ॥
जितनो जग परपंच बढ़ेगा * दूना दुख तब गले मढ़ेगा ॥
हरि से रूठ जगत भय खूबा * दोनों लोक मिला बहु दूबा ॥
काकुल काढ मांग ले फारें * कहु कैसे तेहि हरिहिं निहारें ॥
चटक मटक जो छैल बना है * सो कहु कैसे योग ठना है ॥
जग के रंग रँगा जो चादर * पीव नगर पहुंचे किमि कादर ॥
दो०—दिन नहिं लागत भूख जेहि, रात न आवत नींद।
तारे गिनते भोर भा, जिमि तुरुकों की ईद ॥

* सवैया *

जेहि खान रु पान सुहात नहीं, तन रूखो भये कि रहे चिकनो।
असनान करे तो बेगार भरे, कहुं देर हमें नहिं हो इतनो ॥
पिय प्यारे को ध्यान छुटे न कहीं, मिल जाय हमें तो समय जितनो।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हम हाय निहारें विहारी भले, मुहिं दीजिय काल प्रभू तितनो ॥
दो०—देव मनावत खात हैं, नामहिं ले सोजाय ।
ध्यानहिं समय जगाइये, वांह पकरि प्रभु धाय ॥
तड़पत पलँगन में परे, भोर कहूं मत होय ।
ऐसी नींद न लागि मोहिं, धोका खा जा सोय ॥
बड़े यतन पिय मिलत हैं, हँसी खेल मत जान ।
जान जुआ दे पाइये, सत्य कही मम मान ॥

* चौपाई *

यह पढ़िके बूझे जन सोई * बोध अखण्ड देख जो होई ॥
तपसी मुनी भये जग जेते * जानत रहे सकल गुण तेते ॥
पर परचार किया नहिं जानी * यह माया अधिकी लपटानी ॥
स्वाभाविक स्वारथ रत होते * मोह नींद में जा पुनि सोते ॥
थोड़े में थोड़ा कर जग में * हो निस्तार जात है मग में ॥
अंग छिपानो काम हमारा * जैसे ढके ढकों तनसारा ॥
काहें को बहु दुःख उठावें * नहीं सदा यह कामहिं आवें ॥
जो है अचल सदा सुख खानी * ताही के हित दुख हम ठानी ॥
दो०—जितने सुख हैं जगत के, दुख रूपी सब मान ।
यामे लपटे हानि है, त्याग दिया यह जान ॥

* चौपाई *

चतुरों केर चतुर सरदारा * माया जानि न रीति पसारा ॥
हरि की माया सब जग घेरा * ताही को उन कीन्ह निवेरा ॥
जो माया प्रभु आप बनाया * तामें पुनि जा आप बंधाया ॥
तेहि माया को तप बल तोड़ा * फिरयहि जगत जाल नहि जोड़ा ॥
जाको है यह सकल पसारा * आप होत वह जगत अधारा ॥
जब चाहे जैसी कर डारे * हम काहेंको लें यह भारे ॥
हरि आज्ञा देते सब लोगू * तप भा सिद्ध करो अब भोगू ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पर जन उनकी बात न माने * हरि मूरति निज हिय ले ठाने ॥

दो०—जो देखा उस नगर को, जहां पिया का देश।
तजता तीनों लाक को, काम रहा नहिं लेश ॥

* चौपाई *

मुई नोक से हस्ति निकारे * इच्छा से परलय करि डारे ॥
जो संकल्प करे मन माहीं * सो करि डार जगत में जाहीं ॥
संकल्पहिं सब काम बना है * नहिं उनको कर से करना है ॥
मट्टी की मोती बन जावे * जो कबहूँ इच्छा मन लावे ॥
समय विचारि रख्यो प्रभु गोई * कलियुग में जन करे न कोई ॥
अन अधिकारी लोग भये हैं * स्वारथ से सब काम लये हैं ॥
सब गुण लायक जनहिं बनाके * ताली रखत आप कर लाके ॥
ताली प्रथम रहति मुनि पासा * अब नहिं देत जगत भय नाशा ॥

दो०—करैं उपद्रव भक्त सन, क्रोध काहु मन होय।
जो चाहे कर डालहीं, मम भक्तन जिय सोय ॥

* चौपाई *

याते ताली प्रभु रख लीन्ही * अवसर परे अवशि हरि दीन्ही ॥
मान बड़ाई के नहिं भूखे * ए जन रहत सदा जग रूखे ॥
जहाँ द्वैत तहँ चाह बड़ाई * एकै नाथ सकल जग भाई ॥
को है शत्रु कौन है मीता * काहें को अब धन जन चीता ॥
को अब करिहैं मोर बड़ाई * को जग में अब मान घटाई ॥
कहु अब कासे लड़ दिन राती * अब यह भाव कहाँ उर आती ॥
जग व्यवहार चलत नहिं भाई * ताते अवसर अस कहुं आई ॥
बिना कहे कछु बनता नाहीं * बरबस कहि जाते सो ताहीं ॥
अभयन्तर यह भाव बना है * आतम अनुभव सुखहिं तना है ॥
आपन इच्छा होति न भाई * कर उतपात जगत जो जाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—जबतक जीता जगत में, लगा रहत कछु काम ।
ताते कछु करनाहि है, स्वाभाविक नहिं नाम ॥

* चौपाई *

रहे गँवार ऋषी कह लोगू * नहिं प्रचार कीन्हे सब भोगू ॥
वे दुरदर्शी रहे मुनीशा * सुनि कर होगय विना सुनीसा ॥
जग हित लगि विचार जोकीन्हा * जानत भी सब गुण तजि दीन्हा ॥
माया जाल वँधे सब लोगू * फंसि गय आप अधिक नहिं योगू ॥
याते तीरथ करन विचारी * यात्रा करि सब लोग उवारी ॥
तजि गृह जा तीरथ नर कोई * आतम ज्ञान सीख जन सोई ॥
मुनियन केर समागम होई * आतम अनुभव सिख सब कोई ॥
जबते रेल चली जग माहीं * ठग अरु चोर सबै तहँ जाहीं ॥
दो०—प्रथमहिं वे जन जात रह, जेहि भक्ती उर माहिं ।
करि दर्शन मुनि संगते, मंत्र पाय तरि जाहिं ॥

* चौपाई *

करि अभिलाष तीर्थ को जाते * तहँ सब राम भक्ति को पाते ॥
तीरथ ऋषि मुनि करत तपेसा * अब घूमते चोर ठग भेषा ॥
सन्तों का वे भेष बना के * हरि लेते पथिकन धन जाके ॥
वोध अखण्डहिं नाथ कह्यो है * नहीं बुद्धि मम याहि गह्यो है ॥
होता वोध सुजन उर भारी * नहिं लिख सकत कोउ व्रतधारी ॥
जो जेहि समय सूझ नर जानी * सो लिखि देत समय सत मानी ॥
थोड़े महँ नर थोर बना के * कर निर्देश हृदय बतलाके ॥
थोड़हु में जन बहुत घटाई * लेख करत प्रभु निज उर लाई ॥
दो०—हरि प्रताप उर आनि के, थोड़े में पुनि थोड़ ।
जग उपदेशहिं काज लगि, लिखति बोध सब जोड़ ॥

* चौपाई *

गाइ गाइ सब सुजन तरेंगे * रन भूमी में जाय लरेंगे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लड़त मरत दोऊ इक होंगे * पुनि निर्भय हो भव नहिं भोगे ॥
जहं रह द्वैत सदा भय ताको * एक नाश पुनि डर नहिं वाको ॥
रण में आपहिं जाय मरेगा * आपहिं पूरण ब्रह्म करेगा ॥
ऐसी युद्ध जगत नहिं होवे * लड़त मरत पुनि वह भव रोवे ॥
लड़त मरत कोउ जीत लिया है * हार गया तेहि वंदि किया है ॥
ये प्रभु दीन दयाल कहावें * आप हार जन जीत करावें ॥
भव वन्धन तोड़त जगदीशा * आपन रुप देइ तेहि ईशा ॥
सो०—उलटी है सब चाल, नाथ नगर की हाल यह।
जहां वास नहिं काल, अमरहिं लोक वसावते ॥

* सवैया *

प्रभु से जन जाय लड़ा रण में, अति धीर सुवीर कहावत है।
दुख के बदले दिय आनन्द को, पुनि आपन रूप बनावत है ॥
नहिं आप गये न गवावतु है, निज तेज प्रताप समावत है।
जेहि आसन नाथ विराज रहे, सोइ आसन आप विठावत है ॥
जितनी सुख सम्पति नाथ ढिगे, सब सेवक देइ वसावत है।
जोइ आप रहे सोइ भक्त किये, सब भेदहिं भाव नशावत है ॥
पढ़िके गुनि के सब शोच करो, रण ऊपर जाइ लड़ावत हैं।
अपनो बल बुद्धि जितो उर में, सब सेवकहीं देइ डारत है ॥
विनु हाथ रु पांव से आय लड़े, बल दे जन के ढिग धावत है।
जन आपु न जात तहां प्रभु पै, निज शक्ति सो आपु बुलावत है ॥
दो०—पढ़ि गुनि शोच न कीजिये, धीरज हिय महँ धार।
राम भजन करते चलो, उनहीं के शिर भार ॥
जबहीं अइहैं शुभ घड़ी, तरत लागि नहिं वार।
स्वाभाविक जुट जायँगे, जेहि मन वारन पार ॥

* सवैया *

कोइ गंग नहाइ तरे भवते, कोइ जापरु दानहुं वर्त्त किये।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तरि जात कोई सतसंग किये, कोइ तीरथ का पद टेक लिये ॥
कोइ जा कुल में जन जन्म लिये, यहि आड़हिं से निज धाम दिये ।
सब सन्तति नाथ कहावति हैं, यहि नातहिं अमृत जाय पिये ॥
काहें को शोच करे मन में, वह तारन हार है आप खड़े ।
धरि धीरज रामहिं कृष्ण जपो, वह आपसु आपहिं आय लड़े ॥
वह दीन दयाल जो वेद कहे, यहि भाव से ध्यान तु जाय अड़े ।
धरि आस भरोस पुकार करो, कहुं पाय इकान्तहिं जाय पड़े ॥

यहि भांति सो नेम निवाहत हीं, उनके शिर भार सो जाय परे ।
वह अवगुण हूँ गुड़मान लिये, भवसागर पार सो ताहि करे ॥
अब जो जन जाय गहे पद को, नित पापहिं पून्य न ध्यान धरे ।
अब हारि सुधारि बने उनको, जन आतम बीचहिं जाय मरे ॥
तेरो भेद तो वेद न पावत हैं, कहि बोध अखण्ड जो गाय रहे ।
अपनी निज शक्ति में आप भुले, कहो कैसे तो दासी मनाइ रहे ॥
अपनी महिमा नहिं जानत आप, सोई मुख नारि कहाइ रहे ।
कहो कैसे बखान करूँ गुण को, मम बुद्धि में शक्ति समाइ रहे ॥

अभिलाष हमारे हिये अति है, करुँ अस्तुति तेरी सो बुद्धि नहीं ।
बोलिबो नहिं जानति शुद्ध सो सब्द, कहों अब कैसे सो सुद्धि नहीं ॥
मम वाणि जो बुद्धि जिहा मन है सो तो आपहिं आप सो युक्ति लही ।
नारि सुभाव न जाने तुम्हें भल कैसे कहूँ अब मुक्ति लही ॥
इतनो तो दया भल कीन्ह हमें, पर बोलन शक्ति दई न मही ।
तोहिं लाज न आवत हाय दई, बोलिबो हम जान बखानत ही ॥
मन आनन्द सिन्धु तरंग बुड़े, पर जीभ कहे अधिको सबही ।
गुण सुन्दर तेरो कह्यो नहिं जा, अनमोल गिरा दे तो जाय गही ॥

घबड़ात हिया अकुलाति जिहा, गुण कैसे कहों तेरो आज मही ।
इतनों जो आनन्द दियो हियमें. तो जबान में चूक गयो हमही ॥
है दयामय स्वभाव कलंक लिये, यह नीको नहीं मम हीय दही ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अति शीतलता हिय अन्तर में, पर जारि जवां हम दुःख लही॥
तोहिं खोट कहा करतीं वृजनारी, सो आज हमें यह जान परी।
हिय अन्तर की गति लेत बना, पै जवानहिं में तुम चूक करी॥
इतनी जो कमी तोहि नाथ रही हिय में पुनि काहे अनन्द भरी।
तव भक्त दुखी मनमें रहते, कहि जात नहीं यह दोष धरी॥

यहि बोध अखण्ड से है तु परे, उपमा नहिं जाहि कहे जग में।
अपनो निज शक्ति से है तु परे, अरु ज्ञान जो ध्यान कहे मग में॥
संकल्पहुं से प्रभु है जो परे, नवनाद सोऊ न रहे सँग में।
पर एक मैं जोड़ लगवति हौं, ठग चोरहुं से अधिको ढँग में॥
हरि लेते हैं माल परायन का, अपने दिन रात जो पेट लिये।
तुम तो अपनो सुख सम्मति को, निज भक्तन हाथ गवाइ दिये॥
तू तो आपनहीं वह मोहन रूप सदा निज सेवकहीं को किये।
तेरि एकहिं वात बराबरि है हरिलेत सुजान को जाय हिये॥
वे तो लूटत हाट बजारन में, तुम भक्तन के सब पाप हरे।
वे तो जूटत जा पर नारिन को, तुम जाय के गोपिन चीर धरे॥
वे तो काटत गांठि हैं पंथिन के, दधि काजहिं तू बन में झगरे।
हम हाय तुम्हें कहतीं उनके सम थोड़िन बातन हेत लरे॥

जब बोध दियो तु अगाध महा तब क्यों न ज़बान में शक्ति दिये।
मन जो है मतंग हठीलो महा ठहरात अपारहिं भक्ति किये॥
तुम थोड़ि सि बात बिगाड़ भले, अब चूकि गये ऐसी युक्ति लिये।
अनमोलहिं मोल रह्यो जो तेरो, अब दाग लगी न सुहात हिये॥
तुम चोरन के सिर मौर बने जग के निज जन्महिं मृत्यु हरी।
कइ जन्म के पाप जो पूरण रहे, पलमें सोइ धर्महिं कर्म टरी॥
गुरू परमानन्द दया जो भई, कइ वार कि एकहिं बार मरी।
पर फूंकत चोर जरो सगरी इत लागि है आग सकल्प वरी॥
है चोर दाऊ इक जोड़हिं का कछु अन्तर है तो कहौं इतनो

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

घर वारन को दिय कष्ट उते, जहँ माल खजानो भरो कितनो ॥
इत देते हैं दुःख भिखारिन को, नवद्वार जिते तपसी जितनो ।
कर जोरि मैं लाख प्रणाम करों तजि अवगुण को गुण लो तितनो ॥
जग जेते हैं लोग भगे तुम सो, वरियाइ से तासु हरो मन को ।
अब जोहै कमी सोइ पूरो करो दुर्भागिन चित्त चुरावन को ॥
गुरु श्री पूर्णानन्द कहों टेरि के गुण सुन्दर ज्यों तुम दो जन को ।
तिमि ताहिं तु उज्ज्वल बुद्धि करो हरि के धन को मन को तन को ॥
दो०—भक्त अजामिल तारिके, सुयश लियो जग माहिं ।
सो अब सबै उधारिहैं, आश करो जन ताहिं ॥

* सवैया *

वेद हैं सवरूप रावर, भेद सो पावें नहीं ।
ज्ञानी क्रिया अरु वचन मन, सव रूप तेरोही कहीं ॥
प्रभु आप वोध अखण्ड हैं, पर सकल गुण वेना गही ।
निज शक्ति भर सव कहत हैं, जो सुयश छायो है मही ॥
योगी यती वहु मुनि भये, वे रूप पायो रावरे ।
चाहें सकल निज शक्ति का, जो भेद लेने सांवरे ॥
पायो नहीं है अन्त कोइ, निज शक्ति भर सव गावरे ।
नहिं आदि जाकी अन्त कछु, निज भक्ति भर सब धावरे ॥
कहु नाथ कैसे सुजस तेरो, अधम नारी गावई ।
नहिं पढ़्यो विद्या, बल न कछु नहिं धर्म वल कोइ पावई ॥
तुम जीव देते शरण निज, तो आप शक्ती धावई ।
वह होत सब गुण खानि नर, विद्या सकल उर लावई ॥
तुम देत अपने भक्त को, निज बुद्धि विद्या वलहिं को ।
दे धीरता अरु वीरता हरि लेत छीद्रहिं छलहिं को ॥
सत अरु असत्य लखाइके, हरते हो माया कलहिंको ।
मिटता जगत का भान है, देते अमित सुख थलहिं को ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—यह अस्तुति जो करत नर, संध्या हो या भोर।
सरधा युत नित नियम करि, दोनों करको जोर॥
सो०—भव बन्धन से छूट नर, तरि जा कुल परिवार।
अविगति गतिको पाइ कर, मिटे शूल भव भार॥

* चौपाई *

है यह कथा पुरातन भाई * भवसागर से पार कराई॥
जब भइ भारत भूमि लराई * कौरव दल पाण्डव विच गाई॥
गीता ज्ञान योग समुझाई * औ उपासना मुक्ति बताई॥
बुद्धी बल अरु भक्ति दृढ़ाई * आत्म ज्ञान की शक्ति बढ़ाई॥
अखिल ज्ञान हरि दियो सुनाई * अर्जुन को रण भूमि सिखाई॥
बोध अखण्ड खण्ड करि गाई * भाषा सुगम रीति बतलाई॥
नर नारी सब पढ़ि समझेंगे * अगम पन्थ को सुगम लहेंगे॥
चारहु वेद शास्त्र षट रीती * सुगम बताओ है यह नीती॥
जो कोइ माने सुख बहु पावे * नहिं माने भव बन्ध बधावे॥
जग हित लागि कियो हरि रचना * परमारथ नित शुभ गुण सचना॥
दो०—सनै २ लगि ढेर बहु, टूट्यो पाप पहार।
काम क्रोध मद लोभ सब, वहि चल भव की धार॥

* चौपाई *

तिनका संकल्पहिं का भाई * वहि लागे किनार हम गाई॥
मन निर्मल जन गोता मारे * तुरतहिं आनँद सिन्धु समारे॥
ग्रन्थ प्रताप यही तुम जानो * होइहैं सफल मनोरथ मानो॥
निज मुख से हरि याहि सुनाई * नहिं यामे मम बुद्धि समाई॥
यहि कलियुग के जीव निहारी * रचि डाल्यो निज शक्ति बिहारी॥
गर्भ पात का दोष मिटेगा * गौ ब्राह्मण वध पाप कटेगा॥
चाह अजान जान में होई * यह सब पाप तुरत ले धोई॥
पति वंचक का दोष हटेगा * पर धन चोरी पाप मिटेगा॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सारा ग्रन्थ पढ़ो इक बारा * टूटि जाइ सब पाप करारा ॥
स्नानहिं करि पवित्र हो गाई * तरि जइहैं सब लोग लुगाई ॥
दो०—चार धाम सब तीर्थ का, पढ़े सुफल भय लोग ।
कोटि यज्ञ गौ दान का, सुखसंपति नर भोग ॥

* चौपाई *

नहिं इतनो धन है जग भाई * जो कर वेद पुराणन गाई ॥
याते ज्ञान यज्ञ प्रभु लाई * नारि हृदय महँ आ समुझाई ॥
है यह ज्ञान ध्यान की रचना * जन्म अनेक पूरय की सचना ॥
नहिं कोउ मनुज जन्म जग पाई * विनु निज शक्ति ज्ञान पद धाई ॥
अविगतिहीं गति को जो देखा * वह करि सकत ज्ञान को लेखा ॥
जो कोइ पढ़े सुने जग भाई * रोग महान छूटि तेहि जाई ॥
करि के पाठ सबहिं जन देखो * ज्ञान ध्यान का करो पेरखो ॥
ऐसा कष्ट जगत कोउ नाहीं * जो नहिं छूट पढ़े नर ताहीं ॥
दो०—सकल मनोरथ सिद्ध कर, पुनि परलोक सँवार ।
विना पढ़े जो दोष दे, सो नर जान गँवार ॥

* चौपाई *

चतुर नरन की रीति बताई * साधन करत न दोष लगाई ॥
अपनो कर्म करो जन देखो * वृथा ग्रन्थ में दोष न पेखो ॥
मूरख चाल सदा चलि आई * विना यतन अवगुणहिं बताई ॥
बकि डारत जिय जो कछु आवे * भाव भक्ति सुनिके दुख पावे ॥
करे परिश्रम जन जो गावे * बोध अखण्डहिं नाथ बतावे ॥
सो फल पावत शास्त्र लिखे का * परिश्रमी यह गुणहिं सिखे का ॥
जो आलसी मनुज जग जनमें * धर्म कर्म सब खो नर तन में ॥
आप गये पुनि और गँवावे * कहिके झूठी बात बनावे ॥
दो०—ऐसे नर के संग को, भक्त सुजन तजि देत ।
सद ग्रन्थहिं सतसंग का, आदर करि हिय लेत ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

रहत सतर्क सदा जन इनसे * नहीं मिलाव मन का कर तिनसे ॥
दुर्जन दूर सदा रह भाई * सन्त भक्त लखता जहँ जाई ॥
जहँ लो बने जतन जिय राखे * देत कष्ट अवगुड़ बहु भाखे ॥
सन्त सुजन जन करत विचारा * बने दुःख दुर्जन हर सारा ॥
विवस होत वस चलता नाहीं * तब धरि मौन रहत जिय माहीं ॥
जब चिन्तत तो जग दुख टारी * नहिं वस चलत तब रह चुप मारी ॥
भक्त अभक्त भेद है भारी * यह दे दुःख कष्ट वह टारी ॥
यह जनमतहीं सुद्ध स्वभाऊ * वह छल बल कर घात कुठाऊ ॥

दो०—शेषहुं पावत पार नहिं, भक्तन के गुण गाय।
चार वेद षट शास्त्र का, सार बोध बतलाय ॥
महिमा अमित अपार है, को करि सकत बखान।
गुरूदेव की लहि दया, कुलदीपा किय गान ॥
जो कोइ गावे प्रेम युत, छुटे ताहि भवभान।
याकौ मैं नहिं कहतिहूँ, हरि कहते सतमान ॥

* चौपाई *

कथा पुरातन भक्त बखानों * सतयुग भय प्रसिद्ध तेहि जानो ॥
सो प्रभु मोहिं ध्यान समुझायो * ज्ञान मध्य सो भाव बुझायो ॥
रहेउ सधारण सम्पति बाना * नहिं विशेष धन जन घर पाना ॥
भाव अपूरव तेहि कर जानो * प्रति दिन करत रसोई मानो ॥
सदा एकाकी रहत भवन में * नहिं मन लागत जगत गवन में ॥
ठाकुर को पकवान बनावे * सूखी रोटी आप पकावे ॥
मनहीं में यह कीन्ह विचारा * हरि हैं सारा जगत अधारा ॥
नहिं व सूखी रूखी खावे * याते पूड़ी पूप पकावे ॥

सो०—प्रथमहिं करि पकवान, ढांकि रखत सो थाल में।
सेंकत भौरी जान, यह भी धरि राखत सबहिं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

पाक धरे पट बँद करि जावे * कर जोरे प्रभु विनय सुनावे ॥
प्रथम नाथ कर तुम जिवनारा * ता पीछे हम करव अहारा ॥
ऐसो कहि गृह कारज लागे * कछुक देर पट खोल सभागे ॥
सूखी रूखी दिख तहँ नाहीं * इक पकवान धरा घर माहीं ॥
नाथ खाय कछु देत गिराई * जहँ तहँ परा रहत सब ठाई ॥
वह समझे विल्ली सब खावे * तोड़ि फोड़ि अनतहिं उठिधावे ॥
जूठन सारा करे मजारी * ताते नाथ न भवन पधारी ॥
करि चिन्ता चित होत दुखारी * कैसे पट सब देत उघारी ॥

दो०--सावधान नित रहत वह, पट कीला जड़ देत ।
प्रति दिन वाही हाल तहँ, कारण नहिं लखि लेत ॥

* चौपाई *

या विधि से बीते कछु काला * रोटी धरी नित्य यहि हाला ॥
इक दिन बहु चित कीन्ह गलानी * पाक भवन महँ मनहिं मलानी ॥
हमसे प्रभु रहते मन रूखे * ताते यह मुहिं मिलत न सूखे ॥
कैसे सब घर भोग लगावें * सुर मन्दिर सबहीं घर धावें ॥
मेरे घर नहिं आवत नाथा * अपवित्र है कहुं मम हाथा ॥
काटूँ कर या तन विनसाऊँ * या तीरथ महँ जाकर धाऊँ ॥
कैसे मेरे गृह प्रभु आवें * अरु पकवान सभी जो खावें ॥
नाथ दया हा चित में नाहीं * धर पकवान खात नहिं ताहीं ॥

दो—क्यों न बतावत आय मुहिं, कारण देहु जनाइ ।
है अपराध कि और कछु, हरि कर जोरि मनाइ ॥

* चौपाई *

दीन वचन सुनि हरिहिं पधारी * भय तव प्रकट भक्त दुख हारी ॥
कहत बचन सो भक्त बुझाई * श्रुति पुराण की कथा सुझाई ॥
भक्त हमारे जो कछु खावें * बचि रह जूठन सो हम पावें ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तुम तो करत रसोई जाके * भेदहिं भाव हीय विच लाके ॥
इक तो है अनरीति तिहारी * दूजे भक्त भोग हम खारी ॥
जो पकवान होत अति नीको * तो तुम खाउ मोहिं लग फीको ॥
सूख रूख पकयो निज लागी * सो मोहिं मीठ लाग बड़भागी ॥
भक्त बनावत रुचि निज जानी * तामें तृप्ति होत मम मानी ॥
दो०—नहीं अलग कर खाय हम, जो धरि दे पकवान।
मैं तो खाते वाहि को, भक्त सोइ भगवान ॥

* चौपाई *

साग पात घर जो बन जावे * भक्त हमारे खा सो खावे ॥
तेरे हित तजि देत पुआ को * सो न खात तूँ करहिं छुआ को ॥
प्रथम कवर जो जन ले खाही * सीश नवाय नाम ले ताही ॥
वे देवन महँ जो कोइ होई * खात भये सो तासु रसोई ॥
सुनि हरि वचन प्रेम रस सानी * प्रभु की गिरा सत्य करि मानी ॥
ज्ञान सिखा प्रभु भक्ति दृढ़ाई * आतम ज्ञान प्रताप बढ़ाई ॥
अन्तर ध्यान भेद प्रभु ताके * दृष्टि ओट लखि परा न वाके ॥
भय व्याकुल हरि पद अनुरागी * ढूढ़त फिर जंगल तेहि लागी ॥
जो देखा खोजत अब ताहीं * विरह अग्नि लागी उर माहीं ॥
कच्छप अरु वराह धरि देही * दस अवतार दिखावत तेही ॥
दो०—जा विधि लीन्ही देह जब, जेहि कारण जग माहिं।
सो अब ताहि दिखाव प्रभु, भेद बतावत ताहिं ॥

* चौपाई *

तासु नाम गुण हरि न बतावा * है सब वेद पुराणन गावा ॥
यह सब लेख किया हिय देखी * नहिं तेहि जाति नाम कछु पेखी ॥
हरि आयसु शिर धरि हम लीन्हा * भक्त अमुक कर जस लिखदीन्हा ॥
हरि चौबीस लियो अवतारा * ताको रूप भूमि भय हारा ॥
जो पढ़ि हैं यह कथा रसाला * सो होइहैं हरि गर कर माला ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भक्तहिं भाव देखि हरि फूला * हर लिय त्रिविध भवहिं कर शूला ॥
जब जहँ भक्त हरिहिं गुड़ गावा * तजि बैकुण्ठ तुरत सो धावा ॥
भक्तहिंवश रहते रघुराई * है यह सुयश वेद सब गाई ॥

दो०—भक्त तजत परिवार सब, पुत्र पौत्र का नेह ।
हरि तजते निज लोक को, अचल अपूरव गेह ॥

* चौपाई *

फैल रही नास्तिकता भारी * भ्रष्ट भयो मारग श्रुति चारी ॥
तब देवन मिलि कीन्ह विचारा * हरिविनु कौन जगत दुखटारा ॥
पशु वध करते रह सब लोगू * भय तब धरणि भयानक शोगू ॥
वेदों से यह रीति निकारी * यग्य बहाने जी सब मारी ॥
सो यज्ञों को बन्द कराके * वेद रीत को झूठ बताके ॥
सब जीवों का किय निरवारा * महि में नइ इक रीत निकारा ॥
जब जस होत धर्म की हानी * तब तस श्रुति की रीति मिटानी ॥
करिके यतन अनेक विधाना * नई रीति आ नियम बताना ॥

दो०—सदा नहीं चलि सकत सो, है जु वेद की रीत ।
भरमित होती बुद्धि है, लोग होत भयभीत ॥

* चौपाई *

तब धरि देह मनुज हम आते * जस भे लोग वेद हम गाते ॥
वही वेद हरि हीय बसत है * वही बोध जन हीय लसत है ॥
यामे अन्तर नेक न होता * प्रथम लेख करि गय सब स्रोता ॥
गुरु मुख की सब सुनी कहानी * निज हिय की सब बोध बखानी ॥
ज्ञान वारता नहिं बूझत हैं * अन्धन को उलटे सूझत हैं ॥
भ्रष्ट करत सन्तन की बानी * अपने मन से अर्थ बखानी ॥
देखा जब जग बहु बिगड़ा है * मन माने निज टेक अड़ा है ॥
तब धरि देह आइ जग माहीं * सीधी उलटी जात बताहीं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—हेर फेर ले जायँगे, जो प्रथमहिं का चाल।
दुष्ट सुधारन काज में, नई बतावत हाल॥

* सवैया *

लिया बुद्ध अवतारहिं जाके * पंच मकार भाव दिखलाके॥
नहिं समझत कोऊ नर नारी * पाखण्डी मत को उर धारी॥
जगहित लगि यह रीति प्रचारी * सुगम अगम भक्ती उरधारी॥
पांचमकार कहूँ मैं गाई * भिन्न २ सब भेद बुझाई॥
कहुं विस्तार होय बड़ भारी * ताते थोड़े महँ सब गारी॥
जन मकार कर करो उपासन * हरिमय सृष्टि बसी जग तासन॥
हरि तजि और जगत कछु नाहीं * यही भाव सब उरहिं समाहीं॥
प्रथम मकार यही उपदेशा * द्वितिय मकार कहूं उद्देशा॥
दो०—ममता मद को त्यागि जन, मस्त प्रेम मद पीव।
याको पीवत जग छुटे, जुटे राम से जीव॥

* चौपाई *

त्रितिय मकार भेद हम गावैं * पूरण ब्रह्म सो निज कर भावैं॥
मैं हूँ अलख अचल अविनाशी * जहां जाय जग भान विनाशी॥
चौथ मकार कहों जो भेदा * गावत शास्त्र चारहूँ वेदा॥
मैं हूं एक जगत भ्रम छाई * माय बबा निज पुत्र बताई॥
जेहि धाई जो गोद खिलावे * दूध पिला पालन हलरावे॥
रही भरमि जग बुद्धि हमारी * सन्निपात माया महं जारी॥
अब हम पंचम कहों मकारा * अष्ट भुजी माता जग सारा॥
जाही से उत्पत्ति भइ मोरी * तासन जाय विषय रस जोरी॥
दो०—नेक विचार करत रहे, ऋषि मुनि प्रथमहिं कोउ।
तजि देते व्यवहार जग, करत विवाह न सोउ॥

* चौपाई *

जाही पंच मकार विचारी * निज सेवक उपदेसेंउ जारी॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करो उपासन पांच मकारा * उलटी रीति लेहु सब धारा ॥
शब्द उलटि के कह हम ताके * तबहीं समझ समय अस पाके ॥
अब नहिं समुझत लोग गँवारा * है कछु समय भयानक भारा ॥
लुप्त भये सद्ग्रन्थ हमारे * जामे लेख किया है सारे ॥
जामे निज मत को ठहराई * भया लुप्त जो राह धराई ॥
मन माने रचि कथा बनाई * उलटि कहा नास्तिक बतलाई ॥
है विपरीत कली कर चाला * समझत नहीं शब्द कर हाला ॥
दो०—उलटि कहा जो शब्द मैं, निज स्वारथ गहि लीन्ह ।
परतिय औ निज मातुसन, गमन करन मन दीन्ह ॥

* चौपाई *

ममता तजि मद पान न कीन्हा * मीन मांस को सब गहि लीन्हा ॥
पांच मकार कहा मन माना * ये सब करन लगे कछु आना ॥
मन मारो पाँचों सन भाई * सेवक दलहिं बीच हम गाई ॥
उलटा करो उपासन जाके * होवै सिद्ध समय कछु पाके ॥
जाही समय दियो उपदेशा * रह्यो न तबहिं धर्म कर लेशा ॥
ज्ञान कथा सबहीं जन गावें * है जो मुनियन के मन भावें ॥
साधन रहित ज्ञान कथि जावें * नहिं कछु भाव भक्ति उर लावें ॥
उलटी चाल देख जग माहीं * दिय उपदेश उलटि हम ताहीं ॥
दो०—पहिले पंच मकार से, दिया ज्ञान उपदेश ।
यही करम करि पावहीं, प्रेम भक्ति कछु लेश ॥

* चौपाई *

प्रेम भक्ति को प्रथम उपासे * ता पाछे भव भय कर नाशे ॥
यह मुनियों की रीति सदा से * चलि आई सतयुगहिं यदासे ॥
सच्चे भक्त स्वभाविक ही से * प्रेम भक्ति धरि लेत मही से ॥
जन्मतहीं हरि भक्ति सुहाती * छल अरु छन्द नाहिं कछु भाती ॥
ले जनमत पूरब निज कर्मा * प्रथमहि संचित रह तिन धर्मा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सुनते एक अनेक गहैंगे * निज करणी बहु भांति लहैंगे ॥
अवगुण एक तजन कोउ कहि हैं * तजत अनेक छांह नहिं गहि हैं ॥
सद्गुरु एक देत उपदेशा * गहि लें कोटि सन्त कर भेषा ॥
दो०—सन्त असन्तहिं भेद बहु, कहँलों देंउ गिनाय ।
कोटि सन्त उपदेश कर, दुर्जन हिय न समाय ॥

* चौपाई *

सीधी राह अनेक बुझावा * पर तिनके हिय एक न भावा ॥
हिय की आंख खुले नहिं ताके * कोटिक ब्रह्मज्ञान भरि जाके ॥
कोटिक ब्रह्मा शंकर आवें * धरि निज रूप विष्णु जो गावें ॥
दुरजन हिये न एक समावे * सद्भक्ती सद्ज्ञान न भावे ॥
धोखा धड़ी कि बात सुहाई * अति शीघ्रहिं तिनमें मन जाई ॥
पावैंगे बहु सुख ता माहीं * पर आपन हानी हो जाहीं ॥
करें वाहि कारज जग आके * होवे हानि दोउ दिशि जाके ॥
पूरव पाप किवाड़ जड़ी है * बेड़ी आवागमन पड़ी है ॥
दो०—कोटि यतन करि तोड़िये, टूट न पाप कपाट ।
करे न जब लों भक्त संग, बेड़ी हो न सपाट ॥

* चौपाई *

सत संगति कछु काल करे जो * खुलि जा पाप किवाड़ जड़े जो ॥
ये होनिहार सन्त की बातें * नहिं कहते सब जगहिं जहाँते ॥
नहिं सब के हिय पटहिं खुलेंगे * नहिं सब जग का भान भुलेंगे ॥
पढ़त लिखत सबके भल होंगे * होइहैं लाभ सबहिं जग लोगें ॥
संश्चित पाप दहे सबहीं के * श्रद्धा सहित सुने नरहीं के ॥
आय समय पट सबहिं खुलेंगे * कई जन्म में जा सुलझैंगे ॥
श्रद्धा हीन रहे मुख फेरी * ताको यम निज नगरहिं टेरी ॥
सुनि के कथा करे नर निन्दा * कुम्भी पाक गिरे शरमिन्दा ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—कहुं जनमें जग आय नर, अन्धा लँगड़ा मूक ।
भटकत फिरता जगत में, श्वान गली जिमि भूक ॥

* चौपाई *

उपदेशेंउ जड़ता जड़ पाई * उलटे हो मारग समझाई ॥
पांच मकार पंच सुर लाई * उलटा कहि सीधे समझाई ॥
रहेउ कोउ तामें बड़ भागी * पूरा समझ शब्द हिय लागी ॥
खुल गइ हीय ताहि की आंखें * लखन लगे अलखहिं जिय साखें ॥
को कहिहें को समझन हारा * जन वहि जा अनन्द की धारा ॥
सन्त असन्त रहे दल दोऊ * जग कारज करते सँग ओऊ ॥
संग लेन कारन बहु भाई * कहँले कहों कथा सब गाई ॥
स्वाभाविक जानत सब लोगू * नहिं अकेल मिटता भव शोगू ॥
दो०—चाहें तो बिनु तन धरे, धरणि उलटि सब देहिं ।
होता नहिं कछु लाभ जग, तबहिं देह धरि लेहिं ॥

* चौपाई *

जग उपदेश देत बहु भांती * प्रेम भक्ति की राह सुहाती ॥
गाय गुणहिं बहु लोग तरेंगे * जग विच जा बहु खेल करेंगे ॥
कहुं भक्तन हिं कष्ट लखि आते * कहुं बहु भाव भक्ति वश गाते ॥
पंच मकार भेद बहु भाई * पंच देव तामे बस जाई ॥
ले मकार जग को जाड़त हैं * तजि मकार को जग छोड़त हैं ॥
जग छोड़न के काजहिं नाथा * तजो मकार लाभ दोउ हाथा ॥
तजने की यह रीति बताई * नहिं गहने की चाल जताई ॥
ब्रह्मलोक तजता जन जाके * पुर बैकुण्ठहिं को भी पाके ॥
पुर बैकुण्ठ कहत आतम को * जहां जाय लखि परमातम को
जीवत ही जन देखत जाके * पूरण ब्रह्म हीय महँ पाके ॥
यहि बैकुण्ठ सरिस वह ना है * लखे कोउ परलोकहिं जा है ॥
खोलि भेद सब देत लिखाई * सहज रीति समझें सब भाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—सन्त असन्त रहत मिलि, पाप पूण्य जिमि साथ ।
याको निर्णय होत नहिं, लगे रहत दोउ हाथ ।

* चौपाई *

यह उपदेश सन्त जग तारे * नरक असन्तन को ले डारे ॥
माने तो परमातम पाके * होत सुखी चौथा पद जाके ॥
नहिं मानेपर गिरत अखाड़े * बढ़ि जाता तेहि पाप पहाड़े ॥
नहिं यह ग्रन्थ सबहिं सुख दाई * नहिं नर सबहिं होइ दुख भाई ॥
जाको भाव रहे जग जैसे * पावेगा फल जन सो तैसे ॥
सुतहिं सुता घर बारहिं तजते * हरि भक्तो के कारण भजते ॥
कहु सो कस अनरीत चलाई * पर नारी पर जीव सताई ॥
खावो मारि मत्स मद पीके * पर नारी लूटो धन जी के ॥
दो०—नहिं स्वारथ बसहो करो, अस उपदेशहिं कान ।
धोखे में कोउ जाय जो, तुरत तजो सत मान ॥

* चौपाई *

नहिं यह सहज ग्रन्थ बनि जाई * पूरण ज्ञान न हृदय जगाई ॥
सोइ लिखे यह ज्ञान कहानी * चारों वेद परे सत बानी ॥
ज्ञान ध्यान से पर पद पाई * सो यह कथा सुजन जन गाई ॥
चारों वेद पढ़त जन थाके * युग सहस्र पण्डित तन पाके ॥
काहें को यह भेद लहेगा * नहिं जबलों गुण ज्ञान गहेगा ॥
पूरण भक्ति बसे उर जाके * सहजहिं सो लिख जा पद पाके ॥
नहिं अब थाह पाय जन कोई * विधि शंकर सम नर हो सोई ॥
भूले रह वे सृष्टि बनाके * वे रह भूल प्रलय बुधि लाके ॥
विष्णु भूल पालन करता में * भक्त जगत आतम पद जामें ॥
भक्तन सन जब होत लड़ाई * हारि जात प्रभु करत बड़ाई ॥
दो०—भक्त पाव पद जागि के, प्रभु को देत जगाय ।
तब जानत निज रूप को, आतम अनुभव आय ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

नहिं तो भूल रहत जग माहीं * करि विस्तार प्रपंच समाहीं ॥
हरि जन जन्म होत जग माहीं * तीनो देव जगावन काहीं ॥
होत लाभ उनको निज जन से * टूटत बन्धन भवहिं कसन से ॥
हरि से बड़े होत जन भाई * गुण यह एक वेद सब गाई ॥
बंधन तोड़ि आप जन जाते * हैं प्रभु देत परम पद ताते ॥
परम शक्ति यह भक्त न हाथा * जाइ जगावत हैं वह नाथा ॥
करि के भक्ति शक्ति जन पावे * तब यह चौथा पद को धावे ॥
भक्त जनम होता जग नाहीं * स्मरण शक्ति भूल सो ताहीं ॥
आतम अनुभव को यह रोवे * तब वह आप रूप निज होवे ॥
आपन रूप अचल हरि पावे * तब यह सुजन चौथ पद धावे ॥

दो०—भूलि जात दिखलाइ के, यह न भूल भव आय ।
पुनि पुनि रोवत स्मरण करि, ब्रह्म देखि ललचाय ॥

* चौपाई *

जग प्रपंच रचना हम लपटे * नहिं निज रूप जाय कर सपटे ॥
हरि से विनय करत सो जाई * दूजो ब्रह्मा लेहु बनाई ॥
बड़ भागी हैं जनहिं तिहारे * आतम अनुभव रहत निहारे ॥
मैं रज गुण ले रच जग सारे * रहत भूल तुहिं भक्त दुलारे ॥
करि परितोष ब्रह्म हिय लाके * भांति अनेक बुझा रच जाके ॥
कहँ लों लिखों गुणहिं हम इनके * पार न पाव वेद हैं जिनके ॥
थकित होति गति देखि तहाँ की * निज रूपहिं जन देत जहां की ॥
देखि देखि मन मोद लहत है * कोटि जुगन जो जीव कहत है ॥

दो०—जब लखता तो कहत यह, नहिं देखे रो देत ।
छूटि जात जो अवहिं तन, आतम पद लखि लेत ॥

* सवैया *

अब होश सम्हारि चलो जग में, मति मान करो कोउ ए मन में ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरि भक्ति कि खोज करो तन में, मति देर लगाव तु ये जन में ॥
सत भक्ति कहो सत ज्ञान गहो, मति धोखहुं भूल तु ये पन में ॥
यमराज जबै कर आइ गहे, तब भूलहिं चातुरता फन में ॥
धुनि शीश तबै पछिताइ हो जा, नहिं सन्त सुजान कि मान किये ॥
अब पावत दुःख महान दई, सत संग निरादर जान लिये ॥
सब वेद पुराण हुं झूठ कही, अब होत महानहु शोक हिये ॥
जग जाना जु होत कहूँ फिरि के, धरि ध्यान रू भक्ति करूं जो जिये ॥
जब कर्महिं भोगि फिरे जग में, फिर भूलत आपहिं भा इनसो ॥
तब पूरब पाप रहे शिर पै, नहिं लागन दे मन आ इनसो ।
फिर सन्तरु शास्त्र निरादर ही, मन जाय लगा भुल गा इनसो ॥
घटि जाति है आयु यही विधि से, फिर रोवत मोह निशा इनसो ॥

* चौपाई *

जीवहिं ईश मिलत जेहिं भांती * कहुँ प्रसंग जो भक्त सुहाती ॥
कारण कवन विलम्ब न लागे * होता तुरत वियोग सभागे ॥
कोटिक युग सम सुख जो भोगा * तद्यपि क्षण न भयउ संजोगा ॥
सो सुख नहिं विसरत जन तेही * जो यह आनन्द अनुभव लेही ॥
जीवत सो भय मृतक समाना * सुधि बुधि खोय गई जन जाना ॥
कारज बस कबहूँ सुधि आहीं * नहिं बुड़ि रह अनन्द के माहीं ॥
सोच २ दुख होत महानी * नहिं यह दुख समुझत अज्ञानी ॥
विकल जबहिं तेरो जन होई * सुमिरण करि अनन्द महँ रोई ॥
दो०—तब तुम मिलते आय प्रभु, जो जन दिय विसराय ।
अपनी इच्छा होत जब, प्रगटत तुरतहिं धाय ॥

* चौपाई *

जनहिं बुलावत आवत नाहीं * विना बुलाय हीय प्रगटाहीं ॥
जब तुम जीव किये निज रूपा * कर दिय अचल सदा नर भूपा ॥
यामें भई हानि क्या तेरी * सुधि बुधि ले पलट्यो तन मेरी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नहिं समुझति तूँ नारि अयानी * यद्यपि हौ सब भांति सयानी ॥
आनन्द रूप अचल अविनाशी * जाते भक्तन का भय नाशी ॥
इतनो काज धरत यह रूपा * है जो सब आनँद का भूपा ॥
जब यह खेल मिटत भवनाशी * तब आनन्द सिन्धु हम वासी ॥
नहिं तो गुप्त रहत दिन राती * कीट पतंग मनुज सब जाती ॥
दो०—करि जप तप जो जीव सब, ध्यान धरत हिय जाय ।
तब हम प्रगटत ताहिं उर, जीवहिं ईश बनाय ॥

* सवैया *

जब आकर ईशहिं जीव मिले, भय भीतहिं हो तिहुं लोक कहूँ ।
हिलि जात सुरेश दिनेश तबै, डिगि जात है ब्रह्महिं लोक तहूँ ॥
तब हाय प्रभू कहि कापैं सबै, अबजा न बिलम्ब करो उतहूं ।
कहुं भक्त सनेह में जाय सने, गिरि जा सब शोक समुन्द्र महूँ ॥
तेरो सुन्दर कीर्ति कलंक लगे, इक भक्त के काज प्रलय जो किये ।
याते दया करिके जन पै, लहि योग तुरन्त वियोग लिये ॥
मिलते नहिं देर किये पलहूं, पल आधहुं में पुनि आध दिये ।
पुनि ताहु में आध घटाय हरी, तब भक्तन से मिल आप हिये ॥
दो०—प्रथक भक्त से होत प्रभु, तब देवन धरि धीर ।
अस्तुति करते नाथ की, दया कीन्ह रघुवीर ॥

* चौपाई *

चार मुखन से ब्रह्मा गावें * चारों वेद लेइ कर धावें ॥
तेरी सृष्टि तु आप बनावे * पर हम सब सन्तोष न लावें ॥
तेरी माया देव भुलाई * तव महिमा हिय में नहिं आई ॥
सो अपराध क्षमा करु नाथा * देवन शिश फेरा दोउ हाथा ॥
तेरो भक्तन को ये बाधा * प्रतिदिन क्षीण करत तप आधा ॥
जीते तो भय परलय लागे * हारे देव लोक को मांगे ॥
याते विघ्न करत दिन राती * कवनो विधि मारग रुक जाती ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पर मारग रुकता नहिं जन के * तेरे चरण अटकि जा मनके ॥
दो०—सो अब नहिं मन निसरि सक, कोटि यतन करि जाय।
हारि गये सब देव अब, नाथ मिले जन धाय ॥

* चौपाई *

सो अपराध न चित में लावो * दया दृष्टि करि इन ढिग आवो ॥
अब निज स्वारथ भाव भुलाई * तेरो भक्त सुजश सब गाई ॥
देवन सबहिं चरण सिर नावें * तेरे जनको बहु कर भावें ॥
करुणा अयन वेद यश गावे * कोटिक पाप क्षमा करि जावे ॥
कर जोरे कोइ अर्ज सुनावे * सो अपराध न उर प्रभु लावे ॥
पापिहुं को निष्पाप करत है * जो कोउ हरि का ध्यान धरत है ॥
ए सब देव तुम्हार निहारे * बसे रहत अमरावति झारे ॥
कोटिक भक्त होत जग माहीं * जाकर विघ्न करत सब ताहीं ॥
कोटिक बार क्षमा किय ताहीं * वैसे क्षमा मांग फिर याहीं ॥
अपनी माया आप भुलाये * फिर देवन क्यों अवगुण लाये ॥
होत हीय मह शब्दहिं जाके * सुखी होत हरि वचनहिं पाके ॥
तब फूलन की वर्षा करते * हरि का भाव हीय महँ धरते ॥
दो०—भू मण्डलहिं पवित्र कर, जहँ २ धरते पाव।
पुनि देवन के लोक यह, करि पवित्र उत धाव ॥

* चौपाई *

लगी रही अब आश हमारी * हमरो नगर कबहुँ पग धारी ॥
आश पुरावन हारा हौ जी * सुधि ता समय हमारिहुं लीजौ ॥
देव नगर दिखरावत जइये * जब निज लोकहिं भक्त बलइये ॥
करि दर्शन हमहूँ सुख पावें * तेरो जन मूरति उर लावें ॥
सात भुवन ऊपर के जेते * लै जैहो सब दर्शन देते ॥
पुर पट्टन जेते सुर टोली * सबहिं घुमावत खेलत होली ॥
मग दिखरावत देव बतावत * दे दर्शन जन मन बहरावत ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सब हीं देव नगर महँ होके * लै जइहो हमरो हिय खोके ॥
दो०—यह विनती सुनि लीजिये, जौ प्रभु दीन दयाल ।
ता दिन देवन सुधि लहो, भूलन कबहूँ ख्याल ॥
छन्द—देव दिखावन काजहिं तो, हम आय के ब्रह्म खड़े जो लड़े ।
तेरो हि शक्ति से पार भये, सब देवहुं से भि हुए जो बड़े ॥
जब से तुम जाय मिले जन सो, तब से सब देव रहे हैं खड़े ॥
तब से उर आशहिं आनि गहे, अरु दर्श निमित्त रहे जु अड़े ॥
दो०—सुनि विनती सब देव की, नाथ हीय हर्षाय ।
आसुतोष करि सुरन को, हिय महँ भाव बताय ॥

* सवैया *

दे दर्श सुखी करिहों सबको, जब लो जन आय बसाय पुरे ।
सब धीर धरो निज भक्तहिं को, दिखरावहिंगे, जितने हैं सुरे ॥
तेरे आसन को अभिलासन को, सब पूर करें भ्रम जाय दुरे ।
मन धीर धरो न दुखी चित में, सत होत सदा जो कहूंकछुरे ॥
दो०—जन मिलते प्रभु आनके, नेक न लागत वार ।
अति शिघ्रहीं चढ़ावते, जहां ज्ञान की धार ॥
बहुरि तुरंत उतारते, सकल श्रृष्टि के काज ।
जौ भूले निज रूप में, प्रलय होन की लाज ॥
तजते हरि निज रूप को, गुप्त करत नर देहि ।
माया सँग में भूलि रह, भक्त रूप सो लेहि ॥
को देखे अब को सुने, अस उदार महाराज ।
अपने आप गँवाइ के, सेवक किय सिरताज ॥
धनि गुरु परमानन्द हैं, धनि कुलदीपा भाग ।
सुनि ऐसे गुण स्वामि के, सोते से नर जाग ॥

* चौपाई *

जीवहिं जब निज रूप बनाई * सदा नहीं राखों सो गाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लीन करों पुनि दे विलगाई * याको भेद कहों बतलाई ॥
तन से विलग होत जी जाके * सुखी होत यह आनन्द पाके ॥
सो संयोग वियोग कराते * छुटे न भक्त देह डरि जाते ॥
इच्छा करत भक्त तनहूँ के * इत निज रूपहिं देत जनहुं के ॥
अति शीघ्रहीं भक्त मन लाके * जी से ईशहिं तुरत बनाके ॥
पठवत जीव तनहिं पुनि जावो * ज्ञान ध्यान जग के विच गावो ॥
जाते हो उपकार महाना * जीव तरें यह पाय बहाना ॥
दो०—जो कोउ ज्ञानहिं ध्यान की, बात सुने मन लाय।
ताकी निर्मल बुद्धि हो, पहुंच अमर पुर धाय ॥

* चौपाई *

कोटिक यज्ञ दान फल पावे * कोटिक तीर्थ पयादे जावे ॥
कोटि सन्त कर किय जो संगा * कोटिक जन्म नहायो गंगा ॥
कोटि जन्म जो किय तप योगा * कोटिक भक्त संग सुख भोगा ॥
सो फल पाव ज्ञान पद गाई * कहुं भक्तन मुख से सुन पाई ॥
याको फल कहि सक न महेशा * ज्ञान रूप जो रहत हमेशा ॥
ब्रह्मा विष्णु कहत बहु बारा * तौ नहिं पाय सकत कहुं पारा ॥
बुद्धि शेषहूं जाय थकाई * सरस्वती नहिं कहि सक गाई ॥
सो "कुलदीपा" कहँ यह पाई * थोड़ी लेखनि देइ सुनाई ॥
दो०—सो पद गावन हेतु हम, भक्त जुदा करि देत।
आनन्दहुं से अधिक जन, प्रिय करि हिय भरि लेत ॥

* चौपाई *

इनहीं से जग लागत नीको * माया गहि अनन्द करि फीको ॥
हम तजि आनन्द माया लेई * भक्तन को निज रूपहिं देई ॥
ये अति प्रिय लागत हैं मोहीं * तजते आनन्द हम इन छोहीं ॥
इन भक्तन हित खेल करत हैं * चौदह भू पल में सिरजत हैं ॥
इनके विन रहि जात न नेकू * माया को गहते हम टेकू ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ये गावत मम गुण जग जाके * मैं गावत गुण भक्तन पाके ॥
इनहीं से यह खेल पियारी * भव प्रपंच रचते बहुवारी ॥
याको ओर छोर जग नाहीं * केतिक प्रलय भई जग माहीं ॥

दो०—कितनो भव रचि खेल किय, कितनो जन गुण गाय ।
केते भक्त उपजि महि, मैं केतिक जग जाय ॥

* चौपाई *

इन कर आदि अन्त भव नाहीं * कितने तन धरि जग हम जाहीं ॥
कितनो जग कारज है भाई * नहिं कोउ सन्त वेद यह गाई ॥
अकथनीय जग कारज जानो * नहिं कछु वार पार यह मानो ॥
यह माया मम उर ते आई * रही सकल भव मैं भरमाई ॥
संकल्पहिं मम माया जानो * कहिं दुर्गा कहिं देवी मानो ॥
कहीं विष्णु ब्रह्मा हो खेला * या विधि लाग भवहिं में मेला ॥
जो उतरा यहि बीच बजारी * दे तन मन सरबस उन हारी ॥
मैं ३ करते चलि जाहीं * खाली हाथ संग कछु नाहीं ॥

दो०—देखत हैं दिन रैन सब, यही जगत की हाल ।
भक्त बतावे सूझ नहिं, उलटि चलावत गाल ॥

* चौपाई *

यह माया कितते धौं आई * राम कृष्ण जो बांधत भाई ॥
ऐसी झूठ मसखरी ठाने * भक्तन कही सही नहिं माने ॥
आपहिं सदा नरक बसि जावें * जग से बहुत जीव ले धावें ॥
उनके संग किये दुख भारी * जा गिरि हैं सो नर्क मझारी ॥
यही भान भव ज्ञान मिटाई * दुष्टन उर जमि जात ढिठाई ॥
जो असत्य सो सत करि जानी * सन्तन शब्द झूठ सब मानी ॥
दुष्टन की अति मान बड़ाई * यहि कलियुग हरि करहिं कराई ॥
नहिं यामें कछु दोष कहो जी * स्वाभाविक युग भाव गहोजी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—होइहैं जग में भक्त जे, कछु धरमी जो लोग।
सो आपहिं निरवाहि हैं, भव का लगे न रोग॥

* चौपाई *

यहि माया बजार में आके * सौदा एक न करत यहां के॥
भक्ती भाव दुकान लगाके * करत बनिज व्यापार बढ़ाके॥
धक्का देत बजारन माहीं * ठेला ठेल करत चलि जाहीं॥
सौदा लेत नहीं ठगिनी का * हैं बेचत अपने गठनी का॥
लदा कर्म है बहु जनमों का * देते सो गँवाय भव शोका॥
हेरि फेरि माया कह टेरी * एकहुं नहिं चलती अब मेरी॥
भक्त मोहिं ए देत उजारी * जग उपदेशत करत पुजारी॥
कलियुग एक कोन में रोवे * एक भक्त हरि मल सब धोवे॥
दो०—मैं अनेक जग हो बसत, ए अकेल जग माहिं।
हम सब मिल कर हारिगे, ए जीतत चलि जाहिं॥

* चौपाई *

एक जगत कोउ होत पुजारी * हरत भूमि कर भार जुआरी॥
जुआ खेल जग पातक भारी * गांजा और तमाखू धारी॥
यह कलियुग तहँ नित्य पधारे * जुवा खेल चौपर जहँ ढारे॥
इन अवगुण महँ एकहुं भाई * है भक्तन महँ सो हम गाई॥
अवगुण को गुण लेत बनाई * राम भक्ति जेहि उर महँ धाई॥
अवसर पाइ घात करि जाई * हरि जनहुं निज गुण दिखराई॥
तप की हानि करे कछु नाहीं * कलियुग में हरि यह ठहराहीं॥
इससे प्रथम बीति युग तीनी * कोउ कर तपहिं नाश इनकीनी॥
दो०—इस युगकाहि विचार करि, महा अन्ध संसार।
धर्म नाश चहुं ओर भा, कोउ इक भक्तिहिं धार॥

* चौपाई *

तातें नाथ शक्ति हरि लीन्हीं * तप के बीच प्रभाव न दीन्हीं॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

स्वाभाविक है गुण इन माहीं * तप में विघ्न करत ये नाहीं ॥
खेलत रहे युवा नर नाहा * धर्म धुरीण युधिष्ठिर माहा ॥
समय पाइ भवदिय भरमाई * पर परमारथ में न वसाई ॥
युग प्रभाव होता सब लोगा * ताते कह्यो भक्त कर जोगा ॥
ताते प्रथम लीप हम दीन्हीं * महाराज के राजहिं कीन्हीं ॥
भक्तन के हित यह हर लीन्हीं * नहीं तमो गुण तपसिन दीन्हीं ॥
तपके रंग रंग यह जावे * यती सती का धर्म बचावे ॥

दो०—हरि भक्तों के संग में, रंग भक्ति का लेइ ।
दुर्जन के ढिग जायके, दुर्बुद्धी करि देइ ॥

* सवैया *

तजिदे तो भला सबहीं जग हो, तपसी मुनि योगि यती जो कही ।
जेहि ज्ञान महान गुरू कि गही, तहँ सापिनि पापिनि की न लही ॥
जेहि राम को नाम सुहात सदा, यह अवगुण हूँ गुण लेत गही ।
मति जानि के बूझि फसों इनमें, अनजाने कि बात कही जो मही ॥
कहुं रोग की औषधि जाय करे, नहिं पाप लगे जहँ कष्ट हरे ।
गुरु आयसु जो कहुं पाय गये, पिय ताहि नहीं अब दोष धरे ॥
गुरु ज्ञानी कि आयसु होत जबै, तजि अवगुण को गुण माहिं भरे ।
कोउ सन्त महन्त से पूछ पियो, समता यह अमृत जाय करे ॥
जोइ दोष कछू रहता इन में, सोइ सन्त सुजान के सीश परे ।
ये हैं समरथ्य सबै विधि से, इनके ढिग जाय सो जात जरे ॥
गुरुदेव दया से भले बनि हैं, "कुलदीपा" तिहारे तो हाथ तरे ।
इक अवगुण मोहुं गहे इनमें, सो तो तेरेहि तेज में जाय बरे ॥
है रही अति दीन मलीन दुखी, हम होय सुखी तेरो शरण मरे ।
गुरु देव हमारे कहाते वही, जोइ "पूरण आनन्द" देव परे ॥

दो०—महा मृत्यु मम हो गई, अन्त शरण दिय मोहिं ।
जग में जीती ज्ञान बल, धन्य कहों अब तोहिं ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

माया ईश्वर अन्तर केतो * सो अब कहों समझ मम जेतो ॥
हरि के जन अनेक जग माहीं * पहुंचे चौथे पद बहु जाहीं ॥
पर सबहीं विचार यह कीन्हों * माया विलग हरी मन दीन्हों ॥
लगे विलग करने दोऊ से * नहिं विलगाति भयो कोउ से ॥
सो मति भक्तन की थकि जाती * विहँसत नाथ बुद्धि खो जाती ॥
कहे अलग बनता सो नाहीं * सकुचति बुद्धि एक कह ताहीं ॥
जौ माया हरि एकहिं भाई * तौ तजि किमि चौथे पद जाई ॥
कहुं यह माया दूसर है जी * तौ नहिं बनत कहौं कैसे जो ॥

दो०—भक्त विचारत हारि जब, विहँसि नाथ कहि आइ।
बोध अखण्ड बताइ तब, जन समुझावत धाइ ॥

* चौपाई *

माया रहित अचल यह रूपा * जो कहुं आनद केर स्वरूपा ॥
यही रूप धरि भक्त उबारे * यही स्वरूप प्रलय कर सारे ॥
है सच्चिदानन्द यह गाई * यामे माया कबहुं न आई ॥
यामे अचल एक अविनाशी * जाते सकल जगत भ्रम नाशी ॥
जब हम होत एक जग माहीं * तब सब जग का भान मिटाहीं ॥
एक अनेक लखत जग माहीं * सो मैं इक अनेक हो जाहीं ॥
यही रूप चौथे पद माहीं * भक्त लखावत समुझहु ताहीं ॥
यही स्वरूप विचार करो जी * हमसे माया भिन्न कहो जी ॥

दो०—जब करते संकल्प हम, माया सो बनि जाय।
इक से तबहिं अनेक हों, विश्व भरे मैं धाय ॥

* चौपाई *

यह जग भान हीय मँह आनो * तब माया हरि एकहि मानो ॥
झूठी वस्तु होत जग माहीं * हरि हैं सत्य कहों किमि ताहीं ॥
यह कहि भक्त विकल हो जाते * तब हरि जनहिं हीय मह लाते ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भांति अनेक भक्त समुझाते * ब्रह्म, विष्णु शंकर बनि जाते ॥
जो अवतार जगत के माहीं * सगुण रूप जो भक्त दिखाहीं ॥
दुर्गा देवी और बराहिन * पूजत भक्त चढ़ाइ कराहिन ॥
देव पितर बहु तीर्थ बने हैं * चार धाम ये सगुण तने हैं ॥
श्राद्ध पिण्ड अरु दानहु देई * सो हम सगुण रूप धरि लेई ॥
दो०—सो सब माया खेल है, यह निश्चय कर जान ।
लेते पूजा भाव से, यह काया मोहिं मान ॥

* चौपाई *

माया से काया बनि जाते * भाव भक्ति पूजा ले ताते ॥
जन्म अनेक जतन जन कर सो * ताको मैं निज करसे पर सो ॥
परसत ही माया हरि लेते * तब हम इसे चौथ पद देते ॥
सो अब कह माया है दूजी * नहिं यह हरि चरणन तक पूजी ॥
सो अब दृष्टि रहे जग नाहीं * जिन हिय नैन अलख लख ताहीं ॥
तहं हरि माया एक कहे जी * याही ले अब कहत बने जी ॥
शंकर ब्रह्मा विष्णु बने जी * तब यह माया साज तने जी ॥
परे दृष्टि से मिथ्या मानो * राम कृष्ण अवतारहिं जानो ॥
दो०—सत्य कहे नहिं बनत है, मिथ्या कह दुख होइ ।
राम कृष्ण जो सगुण हैं, झूठ कहो कस सोइ ॥

* चौपाई *

यह माया देखत जग झूटी * माने सत्य भाग्य तेहि फूटी ॥
रामहिं कृष्ण झूठ किमि कहिये * जाके भजे पाप जन दहिये ॥
ऐसे कहत सुजन मन हारे * माया हरि बिलगा नहिं जारे ॥
तब धरि धीर कहत जन ऐसे * संकल्पहिं माया बन तैसे ॥
तुमसे अवशि अलग हम मानें * मिथ्या यह माया करि जानें ॥
माया सहित सगुण बनि जाते * सगुणहिं से निर्गुण लखि पाते ॥
दोऊ रूप सत्य हम मानें * सगुणहिं से निर्गुण को जानें ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कहु माया ममता किमि दीजे * तेरे सगुण रूप महँ लीजे ॥
दो०—यह अनरथ समरथ्य को, कहु कैसे गुन लेइ।
माया तेरी चेरि है, यही हेरि मन देइ ॥

* चौपाई *

तब आयशु माया बन जाती * होय अनेक जगत महँ धाती ॥
अचल और तुम आनँद राशी * याही ते भक्तन दुख नाशी ॥
याते तुम से भिन्न कहूंगी * याही में हम सुखहिं लहूँगी ॥
सुनि मन बचन हँसे जगदीशा * जो हैं सारे जग के ईशा ॥
भये अनेक भक्त जग माहीं * माया ईश विचारत जाहीं ॥
पावत नहिं जब वारहिं पारा * तब हिय मेंहठ करि कछु धारा ॥
यह भक्तों की है परिपाटी * माया पर फेरत हैं साटी ॥
नहिं यह है कछु नई कहानी * कुलदीपा कहती जो बानी ॥
दो०—अकथ नगर की बात है, हिय महँ यह जमि जात।
जैसे जमती दही है, पाय दहेड़ी तात ॥

* चौपाई *

लै रज्जू जब मथे मथानी * निकलत घृत बल पाय सथानी ॥
ज्ञानी ढिग साधक जब बैठे * साधन रज्जु लेइ कर ऐंठे ॥
तब बकि जा समुद्र महं पैठी * आनँद रूप सुमिरि मन लैठी ॥
तब निसरत यह रतन अनूपा * जो है चौथे पद कर भूपा ॥
सोइ कहे यह अकथ कहानी * नहिं कोउ वेद शास्त्र पढ़ि आनी ॥
अन्धा नर सो बूझत नाहीं * कहँ पावे परिडत बुधि ताहीं ॥
पढ़ते चार वेद मरि जावे * नहिं ऐसी युक्ती कोउ पावे ॥
ज्ञान अगाध सोइ जन गावे * जो कोउ चौथे पद को धावे ॥
दो०—नहिं मिलता सत संग करि, नहिं पढ़ि वेद पुरान।
मिलता है हरि पद लिए, जहं जा आप भुलान ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

सत संगति हरि भक्ती पाई * यह सब वेद पुरानन गाई ॥
वेद पढ़े कर ढाल बनेगी * हरि भक्ती तलवार तनेगी ॥
साधन की रण-भूमि बनेगी * दृढ़ता बल जन जाय लड़ेगी ॥
तीनहिं पद तक ढ़ाल चढ़ेगी * चौथे में वह जाय गिरेगी ॥
गिरतहिं शस्त्र शीश कटि जावे * तब वह जीव अमर पद पावे ॥
बोध अखण्ड तबहिं यह गावे * ले षट शास्त्र वेद उर धावे ॥
सद्गुरु हैं वे भी मिट जावें * वेद पुराण कहां तक धावें ॥
अपनो आप गँवावत जाई * तब वह जीव चौथ पद पाई ॥
कहु कैसे अब वाहि कहेगा * पढ़ कर वेद पुरान लहेगा ॥
सूद कारणे मूर गवाँ के * निबहन चाहत जग भरमा के ॥
दो०—हरि लिखवावत शोचि उर, पढ़ि ऋण देइ चुकाय।
देव पितर ऋषि ऋणहुं से, सो उतृण हो जाय ॥

* चौपाई *

तपका भार परत शिर सबके * सतयुग त्रेता द्वापर तबके ॥
नहिं कलियुग नइ रीति चलाई * तप का ऋण सबहीं शिर भाई ॥
पढ़ि गुनि ज्ञान कथा जन ताके * तरिहैं जाइ समय कछु पाके ॥
सोइ कलंक लगावत भारी * यह कोइ आन पुरुष लिख डारी ॥
नेकहुं मन नहिं करत विचारा * है हरि कृत अकृत्य क्यों धारा ॥
क्या इसमें है हानि हमारी * चाहे कोउ हरि जस लिख डारी ॥
पढ़ने से हित होय हमारी * नहिं इसमें कछु पैसा जारी ॥
फिर हम क्यों तव दोष लगावें * क्यों नहिं भाव भक्ति पढ़ि जावें ॥
दो०—पढ़ते बढ़ि हैं भाव कछु, जो शंका तजि देइ।
करि कुतर्क जो पड़त नर, दुर भावहिं कर लेइ ॥

* सवैया *

करि सकत नहिं कोउ ईश माया, अलग ईश जो जगन में।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब लखत जीवहिं जाय पूरण, मस्त हो उस मगन में॥
सो अपहीं को आप भूलत, सुरत नहिं उस भजन में।
आत्मा स्वयंही जीव बन, हंकार मिट उस लगन में॥
यह जीव सारे अमर हैं, नहिं मरत कोउ पतंग भी।
सबके तनहिं का नाश है, यह कर्म करि है बँधत भी।
मिटि जात सबहीं कर्म धर्म, रु अलख जी जब लखत भी॥
बस याहि को अब भक्त कहिये, कह अमर पद प्राप्त भी।
निज रूप भूला मृत्यु कह, संकल्प ही तो जन्म है॥
निज कर्म का रज्जू बना, अब तो यही तव बन्ध हैं।
मिटि जात चौथे पदहिं में, यह ज्ञान अमर जु करत है॥
भूले नहीं यह जीव को, अब कोटि तन जो धरत हैं।
दो०—अमर याहि को कहत हैं, पूरण ब्रह्म जु ज्ञान।
सुमिरन करि हरि होत है, निश दिन कर जो ध्यान॥

* सवैया *

यह माया है अजब खेलारी, कहुँ नर नारी की तन धारी।
कतहूं कीट पतंगहुं बनके, कहुं चींटा चींटी हो टनके॥
कतहूं जुवा जुवारी खेले, कहीं तास पच्चीसी मेले।
कतहूँ भाँग तमाखू ऊड़े, कतहूँ भव सागर में बूड़े॥
कतहूँ काम क्रोध हो बोले, कहुं रण्डी मुण्डी बनि डोले।
कहीं आपनो धर्म गँवावे, कहिं कन्या को भी बिकवावे॥
कतहुं चोरी डाका डाले, कतहूँ पर नारी ले हाले।
औ कहुं आलस कर गिर जावे, हरि भक्ती की डगर भुलावे॥
कतहूँ दया धर्म छुट जावे, कतहूँ निर्बल जीव सतावे।
धोखा धड़ी केर कहुं बाते, औ कहुं झूट मसखरी भाते॥
दो०—माया गरसित लोग हैं, भूल रहे इन माहिं।
दया जाहि पर करत हैं, यह न सुहाता ताहि॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

जाकहं माया छांह न छुई * सो देखत जग को जन रुई ॥
जिमि कोरे कागद को देखा * कहुं इक अक्षर हूँ नहिं लेखा ॥
वैसेही जन जग को देखी * सब जन का इत करत परेखी ॥
कतहूं भान जगत नहिं होई * सदा आतमा सुरति समोई ॥
जाकर मन साधन में लागी * सो जन्मा जग में बड़ भागी ॥
माया संग तजा तब जानो * तापर कृपा भई जन मानो ॥
यह हरि का जन होगा आगे * यही सोचि सँग सुख नहिं लागे ॥
दूरहिं से देखति ही जावे * कहुं पावति नहिं अन्तर धावे ॥
तब लौं असर आपनो डाले * पर है तजती संग विहाले ॥
हरि के चरण शरण महं जाके * बहु विधि विनय सुनावति वाके ॥
विघ्न किया हम तेरे जन को * हर लिय आय तुरत वे मनको ॥
क्षमा करो अब दीनहिं जानी * हम इतनेही में सुख मानी ॥
माया ने धक्का बहु दीन्हा * सुजन सम्हारि सुरति उत लीन्हा ॥
दो०—यामे नहिं कछु हानि है, मम इच्छा तू जान ।
विघ्न पाइ जन सम्हलि हैं, ठोकर खात सुजान ॥

* चौपाई *

सो जन चतुर सदा जग रहहीं * तजि अवगुण गुण को वे गहहीं ॥
नहिं अभिमान होय उर माहीं * हरि माया डरपति जिय जाहीं ॥
सदा सतर्क रहे जन सोई * है न पुराण वेद महँ गोई ॥
दुरजन रह माया रत मानी * इनहीं संग सदा सुख ठानी ॥
हरि जन भूल भटक गहि लीन्हा * करि विचार तुरतै तजि दीन्हा ॥
नहिं इन संग रहे सुख मानी * दुखित होत कीन्हे अनजानी ॥
बार अनेक क्षमा जन मागे * कर जोरे विनवत मम आगे ॥
तेरी माया मोह लियां है * मैं पूरव कछु चूक किया है ॥
सो अब नाथ क्षमा करु आके * निज जन जानि दया बहु लाके ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सुखरु शान्ति हिय अन्तर देके * करत क्षमा शोकहिं हर लेके ॥

दो०—प्रथम भाव से द्विगुण जन, भक्ती में मन देइ।
चित गलानि मन लाज से, अन्त शरण जन लेइ ॥

* चौपाई *

माया ग्रसित रहे सुख मानी * अपने को बड़ भागी जानी ॥
धन्य भाग जूआ जित आई * आज द्रव्य मैं बहुत कमाई ॥
मो सम को जग है बड़ भागी * सुन्दर नारि संग हम लागी ॥
जो चाहें सोई कर लेते * यामे देर तनक नहिं देते ॥
मम इच्छा पूरी जग माहीं * नर्क जाय सो सुधि नहिं ताहीं ॥
वेही कर्म सुजन करि जाते * हिय महँ दुःख बहुत पछिताते ॥
पछिताये कर यह फल भाई * प्रभु कर अविरल भक्ती पाई ॥
एकहि कर्म फलहिं दो देखा * यह मैं गलित नगर महँ पेखा ॥
पर परतीत करहिं कोउ नाहीं * जो जन्मा अभागि जग माहीं ॥
शोच हिये होता दुख भारी * करते कलम देति हम डारी ॥

दो०—बार हजारहिं नाथ मुहिं, समझावत हिय आय।
तब मैं लेखनि लेति कर, हारि मानि जिय जाय ॥

* चौपाई *

अब कलियुगहिं गीत हम गाई * कन्या दान महातम भाई ॥
सुन्दर कुल सुजातिहीं जानी * वर अरोग्य श्रीमानहिं मानी ॥
कन्या जोग्य जोग वर देखी * अपने से दूनों धन पेखी ॥
कुल परिवार ससुर घर नीको * जाके वंश बुद्धि है ठीको ॥
ऊंचे कुलहिं जान कर दीजे * कन्या दान महा फल लीजे ॥
यासे जो विपरीत करेंगे * सो सौ जन्महिं नर्क परेंगे ॥
सुता दान सम यग्य न होई * अश्वमेध कोटिहुं कर सोई ॥
ता सम भूमि दान नहिं भाई * नहिं गज तुरँग अन्न फल गाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दो०—करहिं कोटिहूँ यज्ञ नर, कोटि विप्र जिवनार ।
कोटिक गोत्र जिवाइये, घृत वहाव पव नार ॥

* चौपाई *

कोटिक रंकहिं दीजै दाना * कन्या सम यहभी नहिं माना ॥
कोटिक धरणि अताल पताला * दीजै दान वली सम लाला ॥
नहिं हो सक कन्या सम भाई * है सव शास्त्रहिं बोध बताई ॥
इक कन्या कर दीजै दाना * वस सो चन्द्र लोक जन जाना ॥
अंगहिं के रोमहिं गिन जाई * चन्द्र लोक सुख नहीं गिनाई ॥
पीवत अमी वहां के वाशी * सुख बहुभांति दुःख सव नाशी ॥
कोटिक युग बहु वारहिं होई * तब तक वास करे नर सोई ॥
पुण्य क्षीण मृत लोकहिं आई * पुनि त्रिभुवनपति सोइ कहाई ॥
दो०—थोड़े कालहिं जतन करि, चौथे पदहिं समाइ ।
जवतक जिवित देव सम, अमर लोक पुनि धाइ ॥

* चौपाई *

कन्या दान करे जव जाके * देइ दक्षिणा संपति पाके ॥
दानहुं वाद महाफल दछिना * दे समधी घर दुख ले छिना ॥
रंक दुखी पाके पुनि दीजै * बने तो सव का दुख हर लीजै ॥
अपने शक्ती भर दे दाना * शक्ती वाहर कभी न जाना ॥
यही विवाह महाफल गाई * अहंकार ममता तजि भाई ॥
देकर दान करे अभिमाना * निष्फल हो सो जान जहाना ॥
सव कछु दे मन सोचत रहिये * नहिं कछु दिया यही जिय कहिये ॥
जहँ तक होइ ग्राम के पासा * करे विवाह जीय धरि आसा ॥
पास रहे नित की सुधि लइये * दुख सुख में शामिल हो जइये ॥
केवल धनहिं देखि नहिं भूलो * करो विचार अमित सुख मूलो ॥
दो०—संपति है घर बहुत जो, हैं मूरख सव लोग ।
जानत धर्म न कर्म कछु, भय परलोक न शोग ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

जो जन सुधि परलोक विसारी * कहु सो अब भव सुख को धारी ॥
जो मानत नहिं तात न माता * सो करिहैं पत्नी सँग घाता ॥
जो निर्भय जग में हो जाई * तजि परलोक लोक का गाई ॥
भय बिनु प्रीति होत नहिं भाई * तजे लोक परलोक न पाई ॥
दुहूं लोकहूँ देत गँवाई * कहु उन घर का बजे बधाई ॥
इनके घर कन्या नहिं दीजे * जो इन्द्रहुं सम सम्पति लीजे ॥
जो आपन नहिं धर्म बचावा * तहँ नारी भल किमि सुख पावा ॥
जोइ जाति अभिमान नसाई * ताकी भल जग काह बसाई ॥
दो०—भांति अनेक विचार कर, तब दीजे यह दान।
केवल विद्या पढ़ि रहे, जाति पांति नहिं मान॥

* चौपाई *

बने तो इनका मुख नहिं देखो * इनको मनुजन में मति लेखो ॥
जातिहिं का अभिमान मिटाके * चाहत पर जातिहीं टिकाके ॥
धनी बना रह अरु अभिमानी * फैल सुयश जहँ लागि जहानी ॥
सकल मनोरथ खाली जावें * ये यमपुर नगरी में धावें ॥
सोचतही दिन रैन रहो जी * धर्म निबाहे सुखहिं लहो जी ॥
होय दरिद्र धरम धन जाके * कन्या दान देहु अब ताके ॥
धर्म देत धन धन से धर्मा * ए दोउ एक संग रह कर्मा ॥
जहां धर्म तहँ धन हो जाई * जहां धर्म नहिं धन तजि जाई ॥
धर्म रुप हैं श्री भगवाना * जहं वह नहिं तजि धनहिं गवाना ॥
दो०—तहं लक्ष्मी नहिं रहति हैं, जहां न हरि का वास।
कछु दिन गृह तेहि वसति हैं, नर्क पठावन आस ॥

* चौपाई *

देकर धन नर अन्ध बनाई * कछुक काल लहि नर्क पठाई ॥
है माया ठगिनी बड़ि भाई * चित चंचल प्रभु पद को पाई ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हरि विमुखिन मति देति गँवाई * कछु दिन सुख संपतिहिं लखाई ॥
धरमिन के घर प्रथम उदासी * अन्त समय तो घर कर वासी ॥
चंचल सदा अचल हो जाती * जा घर धर्म लेश कछु पाती ॥
पामर के घर प्रथमहिं आवे * मद दे पुनि अनतहिं को धावे ॥
यासे चतुर रहो नर नारी * दगा देति अवसर जब पारी ॥
धर्म विचार सदा उर राखो * जाते लक्ष्मी सब सुख भाखो ॥
लोकहिं अचल देइ धन तोके * परलोकहुं सँवार पा मोके ॥
लक्ष्मी एक दोउ रँग देखा * चौथे पद हम इनहिं परेखा ॥
सुख का चाह धर्म उर राखो * घर संपति लखि कभी न माखो ॥
तुमको अन्ध बना कर माया * पुनि हरि ले यह तेरी काया ॥
प्रथम होत दुख सुख करि मालो * यह माया ठगिनी करि जानो ॥
तब यह तोपर होय दयालू * हरती संकट विकट कराल ॥
दो०—जिनके उर प्रभु आ बसत, पुनि तहँ आवति आप।
सनै २ पग डालती, जन कर हर सब पाप ॥

* चौपाई *

जेते घर बस नारी तेरे * सबके उर यह लेति बसेरे ॥
आप न प्रगट नारि मय होके * देती सुख अनेक घर तोके ॥
चारो युगन रीति चलि आई * नारि रूप से बजत बधाई ॥
अन्ध भये नर कहत अयोगू * नहिं यलियुगहिं धर्म कर जोगू ॥
धर्म धुरीण जोइ नर नारी * यहि कलियुगहिं सतो गुण धारी ॥
हरि विमुखिन कलि असर करेगा * धर्म धीर सतयुगहिं लहेगा ॥
यह सब निज नैनन हम देखी * हरि पुर में सब कीन्ह परेखी ॥
माने जो जन लाभ उठावे * नहिं तो वेद पुराण झुठावे ॥
का गिनती नारी की है जी * सनक सनन्दन झूठ कहै जी ॥
कहते हैं यहि युग सब लोगू * ग्रन्थ बना तब का यह योगू ॥
ऋषियों ने सतयुगहिं विचारी * यह सब धर्म नीति लिखि डारी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आप चतुर उन मूर्ख बतावें * केवल सतयुग धर्महिं गावें ॥
नहिं इस युग के लिय लिख डारा * समझा पातक का भण्डारा ॥
जो मन आव वही बकि जाते * निज स्वारथहिं देखि कह ताते ॥
जा दिन मैं संकल्प कियारे * चार वेद षट शास्त्र दियारे ॥
चार मुखन विधि उर महँ धारी * चारो युग यह धर्म पसारी ॥
दो०—कहता सो जाने नहीं, युग विचार लिख दीन्ह।
नया पंथ अरु धर्म लगि, यह विचार मन कीन्ह ॥

* चौपाई *

नये पंथ कछु दिन चलि जावें * तव मैं पुनि धरणी महँ आवें ॥
पंथ अनेक करव हम एका * जाति वरण कर अलग विवेका ॥
तुमतो ग्रन्थ माहि लिख जावो * जाते कोउ इक धर्म बचाओ ॥
मम इच्छा होती जग करणी * जा अवतार लेहिं हम धरणी ॥
मम इच्छा विनु पात न हीले * चौदह भुवन चहें भल डीले ॥
मत अनेक होइहैं जग माहीं * मम इच्छा समझो अब ताहीं ॥
यह सब है जग खेल हमारी * यह तन लीला हेतु पसारी ॥
जाति पांति जग सकल नसाई * वेद पुराणन की न वसाई ॥
कोउ इक होइ धर्मव्रत धारी * सो निज धर्महिं राख विचारी ॥
अन्त समय डंका तव वाजी * ले सो धर्म करव सब काजी ॥
दो०—भक्तहिं देत गुहार जग, तस तुमहूं कर देहु।
कछु चिन्ता मति उर करो, अन्त समय सुधि लेहु ॥

* चौपाई *

यह पति तोर रहे तूँ नारी * पुनि मम संगहिं भवहिं पधारी ॥
रखहुगी करणी जग कैसी * तव तस पुनि सहाय कर तैसी ॥
एक सहारे कर सब काजा * नहिं नइ रीत निसर यह आजा ॥
मेरे हिय की भरम नसेगी * जब निज नैनन आप लखेगी ॥
अभिलाष यही उर भारी * अन्धकार दिखराउब आरी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मेरो कही सही नहिं जाने * नारि स्वभाव उलटि सब माने ॥
ज्ञान गर्व तूं रहति भुलानी * यह प्रपञ्च मिथ्या कर मानी ॥
टरे नहीं जो कह मुख बानी * नारि स्वभाव झूठ तूं जानी ॥
स्मरण होत आज इक लीला * करत विचार तोर गुड़ शीला ॥
वृज गोपी मुहिं झूठ बतावें * सपथ नन्द बाबा जो खावें ॥
दो०—दान दधी का देति नहिं, गोपहिं भेष निहार ।
कोटि यतन करि फेरि मति, तव यह कीन्ह बिहार ॥

* चौपाई *

तूं लिखती नहिं जगहिं निहारी * हम हैं सदा जगत भय टारी ॥
कबहुं भक्त उर माहिं पधारी * कबहूं निज तन धरि हमआरी ॥
जाने दो यह रुचिर कहानी * कन्या दान लेहु उर आनी ॥
जो कन्या को बेंचत भाई * सो सौ कल्प नरक महँ जाई ॥
जितनो रोम अंग महँ होई * उतनो समय नरक महँ रोई ॥
गिनती रोमहिं नर्क बसेगा * एक एक सौ कल्प फँसेगा ॥
पुनि जनमें जग सो नर आई * अन्धा बधिर गूंग हो भाई ॥
होय दरिद्र दुखी अति दीना * काया हीन रहे अति खीना ॥
दो०—जो कन्या को दान दिय, दुखी होति घर जाय ।
रोवत आंसू रोम भिज, सो पितु नर्कहिं धाय ॥

* चौपाई *

दान दिये कर यह फल होई * गिनि प्रति रोमहिं नर्क बसोई ॥
जितने रोम आंसु भिज जाई * सो बस नर्क वेद सब गाई ॥
सो अब कन्या बेचत जाके * कहो नर्क कस होय न ताके ॥
निज शक्ती भर दानहिं कीजे * कन्या धन दोनों अब दीजे ॥
अपने कुल परिवारहिं जोगू * धन को रख जो कर सब भोगू ॥
अधिक होय धन कन्या दीजे * दोनों लोक सुयश भर लीजे ॥
दुखित न होन पाव वह नारी * सदा सर्वदा यतन बना री ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जो बनि जाय देत कछु चलना * नहिं इनसे धन धामहि हलना ॥
इनकी मान करे जन जाके * सुखी होत परलोकहिं पाके ॥
अपनो वंश अंश तो हैं री * नर इनको नहिं देखि जेरे री ॥
दो०—जहँ लो बने विचार कर, ऊँचे कुल दे दान।
जो दुख पावे भाग्य वश, तामे दोष न मान ॥

* चौपाई *

समय विचार व्याह करि देहू * मति अति देर वेर कर लेहू ॥
कन्या शील सुभाव निहारी * ताके योग कुँवर अनुहारी ॥
करो विवाह समय जस देखी * नहिं कर तूँ अति काल परेखी ॥
यह कलियुग की हाल निहारी * दुखी होत आनन्द विहारी ॥
बिचत लड़कों को सब लोगू * कर न विचार धर्म के योगू ॥
धन से हीन भये जग माहीं * समय भयानक देखत नाहीं ॥
मांगत दान आप कर जोरी * नहीं देत लेते बर जोरी ॥
निज वाजी कर मूल धरा है * निज पुत्रों का मोल करा है ॥
घर कन्या दोऊ बेचत हैं * धर्म गर्वा कर खेल रचत हैं ॥
नहिं अब व्याह करत जन कोऊ * बेंचत भये दोउ दिसि दोऊ ॥
इनसे जो सन्तानहिं होंगे * नहीं पित्र पानी के योगें ॥
बेचे को फल नर्कहिं होगा * ले पानी सो भोगत शोगा ॥
इनको खबर तहां की नाहीं * बेंचत सुत धन इच्छा माहीं ॥
धर्म गर्वां घर धन ले लेई * धन अरु धर्म नाश नर देई ॥
दो०—दान देइ निज वित्त भर, जेहि घर कन्या होय।
लोक सुखी परलोक महँ, लेन वार है सोय ॥

* चौपाई *

परवस नहीं दान को लीजै * दोनों दिसि यह दुख नहिं दीजै ॥
होत हानि पर सूझत नाहीं * अन्धे नर माया फँस ताहीं ॥
श्रद्धा दान एक घर आवे * दोउ लोक आनन्द मचावे ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

करि वरिआइ दान जो लेई * दोनों लोक द्वन्द कर देई ॥
अपने योग्य देखु घर जाके * कन्या दान लेहु अब ताके ॥
अपनी इच्छा धन जो देवै * श्रद्धा सहित ताहि जन लेवै ॥
देखो कैसा फलहिं फलेगा * अमृत सम सो सुखहिं मिलेगा ॥
कोउ इक होत धर्म व्रत धारी * कर विवाह सो नीति विचारी ॥
ता घर सुख सम्पति नित आवे * निज पायन से लक्ष्मी धावे ॥
जो बेचत निज सुत को भाई * ताको तजि लक्ष्मी चलि जाई ॥
रहि हैं जो जड़ मुद्रा धारे * सोइ जुआरी सम जा हारे ॥
आपहिं नहिं वह आय कहेगी * कुमति देइ कर आप वहेगी ॥
दो०—दुरभागी नर शोच अब, लेन देन तजि देहु ।
श्रद्धा युत अब व्याह करु, धर्म रूप धन लेहु ॥

* चौपाई *

जबहिं सुता सुत बेचन लागे * भाग्य तबहिं से फूट अभागे ॥
हारत धन दिन रैनहिं जाके * तुमको पता लगत नहिं ताके ॥
कहिं पानी कहिं पथर वहाने * कहिं भूडोलहिं डोल डुलाने ॥
कन्या पाप परत शिर तोरे * अजहुं हरी से है मुख मोरे ॥
नहिं इतनो धन है घर माहीं * करै व्याह कन्या घर ताहीं ॥
कितनी क्वारीही मरि गइ हैं * कितनी अग्नि मांह वरि गइहैं ॥
कितनी कलपति हैं दिन राती * नहिं उनको यह जगत सुहाती ॥
कितनी जातिहिं पांति गवां के * हो परजाती धर्म बहा के ॥
अपनी कन्या सम तुम जानो * इनहूं को निज पुत्री मानो ॥
तबतो मंगल होय तिहारी * जा कारण तुम नर तन धारी ॥
दो०—नहीं आपने पेट लिय, यह मानुस तन पाइ ।
खा कर भले डकारि के, पलँग परो तुम जाइ ॥

* चौपाई *

पर उपकार हेत तन धारी * राम भजन कर होय उधारी ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अधिक आप से पर दुख जानो * नहिं यह देह पशू की मानो ॥
नहिं उपकार भजन तन होई * मानुष तनहिं व्यर्थ सो खोई ॥
समुझोगे आगे अब जाके * समय भयानक को कछु पाके ॥
पहले से जो जन समझेंगे * सो नहिं आपति विपति फसेंगे ॥
धर्म जहाज चढ़त नर जोई * नहिं डूबता पवन बहु होइ ॥
जो पर कन्या व्याह करावे * कोटि यज्ञ अरु धर्म धरावे ॥
कन्यादान फलहिं को पावे * यह सब वेद पुराणन गावे ॥
दो०—जो काटत है व्याह कहं, कोटि गऊ बध होय।
कोटि जतन कर टरत नहिं, नर्क जाइ जन सोय ॥

* चौपाई *

नहिं कुलदीपा है यह गाई * नारि कहां बुद्धी अस पाई ॥
नहिं यह वेद नीति कछु जाने * कैसे पायो ज्ञान महाने ॥
हरि का वचन सत्य करि मानो * जो कछु कहे वही सब जानो ॥
ऐसो व्याह करो सब भाई * है जस वेद पुराणन गाई ॥
नहिं बेचो निज पुत्र दुलारे * करो व्याह जो धर्म पुकारे ॥
रंकहिं और दुखी सबहीं का * हो जा व्याह सुलभ जनहीं का ॥
ऐसा लेन देन करु भाई * जामें धर्म सबहिं बचि जाई ॥
दान प्रसन्नताहि का लीजे * हठ करि सुत को बेच न दीजे ॥
दो०—हठ त्यागो यह मोह का, धर्म टेक नहिं देइ।
सहजहिं कन्या व्याह हो, यही गांठ गहि लेइ ॥

* चौपाई *

कन्या व्याह होन जब लागे * तब यह जग की भागहिं जागे ॥
इनके सुखहिं पितर दुख छूटे * भव बन्धन की गांठहिं टूटे ॥
इनमें है लक्ष्मी कर वासा * इनके सुख से जग दुख नासा ॥
इनहीं ते सब नर उपजे हैं * ध्रुव प्रहलाद भक्त जेते हैं ॥
धर्म धुरीण मही जग जेते * सब अवतार इन्हीं से लेते ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

राम कृष्ण चौविस अवतारा * उदर माहिं इनहीं ने धारा ॥
जेते हैं जग जीव जहांते * पालत पोषत इनहिं तहां ते ॥
इनके व्याह बेच सुत जाके * हुआ हरामी तन को पाके ॥
इनका जन्म होय जग नाहीं * होवे प्रलय सृष्टि सब ठाहीं ॥
पुरुषारथी पुरुष तन पाके * कर अपमान व्याह में जाके ॥
जो तेरो पालन अब कीन्हो * उनको दुःख देन मन दीन्हो ॥
नहिं सोचत अपनी वह करनी * जा दिन जन्म लिया तुम धरनी ॥
दो०—कोटि कष्ट सहि के मही, तब पालन कर दीन्ह ।
विसरा सो अब तेहि दिन, नेक विचार न कीन्ह ॥

* चौपाई *

ये तेरो घर बार सुधारें * शंकट विकटहुं बीच उवारें ॥
इनका सत निबहा जग माहीं * तुहिं परलोक देति सुख जाहीं ॥
इनके सत्य धर्म ते भाई * मंगल परलोकहुं हो जाई ॥
इनहीं का सत धर्म नसाते * तुम परलोक लोक दुख पाते ॥
इन पर दया करो सब जाके * सुत वेचन की रीति मिटाके ॥
जो कछु देइ लेहु मन राजी * कन्या सुखहिं हेतु के काजी ॥
मति मुह खोलि मांगु अब दाना * इनसे घटि जाता तब माना ॥
देत दान इच्छा मन माहीं * सो घर लाव कहति हम ताहीं ॥
दो०—यही परीक्षा लीजिये, कछु दिन चलि यह चाल ।
जो न मिले सुख तोहि अब, तब झूठी कहु हाल ॥

* चौपाई *

विनु सत धर्म साधना कीजे * नहीं ग्रन्थ महँ दोषहिं दीजे ॥
सत अरु असत् जान तुहिं परिये * कछु दिन यही नियम उर धरिये ॥
जग में बहुत मनुज हैं भाई * धर्म कर्म निज उरहिं बसाई ॥
सत्य पंथ सत् मारग चलते * याको सुख अनुभव वे करते ॥
हैं प्रभु इसे बोध महँ गाये * उनके आशहिं ग्रन्थ बनाये ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वे सत्कार करत पहिले से * पढ़ि गुनि और करें महिले से ॥
हम अजान जानति कछु नाहीं * देखत नैन कहति सब ताहीं ॥
जहँ लगि देखा मैं कहुं नारी * राम नाम नहिं कोउ उचारी ॥

दो०—अपने टोल महाल में, देखति हौं दिन रैन।
धन सुत लगि करतीं कछु, देवी दुर्गा ऐन ॥

* सवैया *

नहिं धर्म रु कर्म को नाम कहैं, नहिं वेद पुरान कि रीति गहैं ॥
इतनो हम तिन्हैं सराहति हूं, उपदेश करैं नर तो वे लहैं ॥
हैं कोमल चित्त महा उनके, कोउ भक्ति को मारग जाय कहे ॥
होत अनेकहुं विघ्न महा, तब शीत रु घाम बयारि सहे ॥
हठ वे करिके तो निबाहैं सबै, उनके उर बीच श्रधा बसती।
विश्वास घनिष्ट महा उनके, अरु ले नव भक्ति भले कसती ॥
तप शीघ्रहिं सिद्ध तो हो तिनके, पद चौथ तुरन्त वे जा लहती।
गुरु देव कृपा "कुलदीपा" गई, वह बोध महान को आ कहती ॥
पुरुषों कर चंचल चित्त महा, यहि साधन देर लगे जो कहे ॥
जबलों नहिं नारि सुभाव बने, तबलों नहिं मारग जात गहे।
जब काढ़त घूंघट ले पट को, कहुं बैठत जाय इकान्त महे ॥
"कुलदीपा" कहे तु सम्हार हिये, तब आनन्द रूप को जाय लहे ॥

दो०—आनन्द रूपी नाथ को, सबसे परे तु जान।
जो कहता इससे परे, ताको सत्य न मान ॥
आप गया बहि मनुज तन, और बहावन काज।
ऐसो झूठो शब्द कह, निज स्वारथ को साज ॥
मेरी कही न मानिये, पढ़िलो वेद कुरान।
क्या हिन्दू क्या मुसलमां, जहँ जा आप हिरान ॥
सत् भक्ती सत् मार्ग वह, वही सत्य कह लोक।
जहां जाय जन छुटत है, महा भयानक शोक ॥



CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

* चौपाई *

करिके यतन देख ले जाके * पढ़िके ग्रन्थ फालहिं को पाके ॥
एक बार पढ़ि जो धरि दीन्हा * ताको नाथ कबहुं नहिं चीन्हा ॥
करि के यतन तुरत तजि देई * सो नर यत्न फलहिं नहिं लेई ॥
करिये भक्ति यतन कछु काला * तब हरि तोकों करें निहाला ॥
बारह वर्ष यतन करु भाई * जो मैं ग्रन्थ बीच में गाई ॥
हरि न मिलें तब मृषा बताओ * ऐसे नहिं सब दोष लगावो ॥
कपट सहित नर याहि पढ़ेगा * सो न ज्ञान की धार चढ़ेगा ॥
त्यागि कपट श्रद्धा से पढ़िये * तबतो जा रण ऊपर चढ़िये ॥

दोहाः—

युद्ध होइ नन्द लाल से, कसें कसौटी नाथ ।
पक्का रंग उतरतहिं, तब पकड़ें प्रभु हाथ ।
कर जोरे नित हरिहिं से, यही मनाते जाव ॥
असल रंग में रँगिय मुहिं, शक्ती भर मैं धाव ।
शक्ती बाहर जा बसा, नाथ तुम्हारो गांव ॥
अपने बल से आइके, पार उतारो नाव ॥
नहिं बलहै मोहिं भक्ति का, नहिं बल प्रेम अधार ।
बुद्धिहुं का बल मोहिं नहिं, केहि बल तुहिंउर धार ॥
मै उड़ता निज शक्ति भर, तुम पकड़ो प्रभु धाय ।
प्रेम कसौटी मोहिं कसि, निज बलको तुम लाय ॥
मेरे बल से जो कसो, मैं न उतरिहों नाथ ।
दया दृष्टि से आपनी, मम शिर राखो हाथ ॥
दीन बचन सुनते प्रभु, कर पकड़ेंगे धाय ।
रूप आपने बीच में, लइहैं तोहि छिपाय ॥
छिपते ही गलि जावगे, ब्रह्म रूप ले धार ।
पुनि पलटोगे जगत में, मेटि कर्म का भार ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सन्ध्या के नित समय, तू पाठ करो मन लाय।
औरो प्रातःकाल में, दोह अष्ट पढ जाय॥
तुरते रीझैं नन्द सुत, दान भक्ति का देहिं।
हरि पूरब के पाप सब, निज चरणों मे लेहिं॥

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc· No. 3513

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पुस्तक मिलने का पता—

पं० रामनारायण शर्मा,

मुन्सरिम जजी, काशी

अथवा

श्रीमती कुलदीपा देवी

ग्राम ताजपुर, पो० ज़मनिया ( यमदग्न्याश्रम )

जि० गाजीपुर ( गाधिपुरी )

वर्तमान उपस्थिति-छोटी गैवी, केशोपुर, काशी ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आशा है कि सर्व मतवाले इस अनुभव गम्य हरिभक्ति रसायन नामक निष्पक्ष ग्रन्थ को पढ़ते हुए मेरे परिश्रम को सफलीभूत करेंगे।

—कुलदीपा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection. Varanasi. An eGangotri Initiative